सो त्राटन वादन जांनिये ॥ यारीतिसों और सीगरेवाद प्रकार जांनिये ॥ इति वाद्यको लछन संपूर्णम् ॥

जो नृत्य । १ । गीत । २ । प्रबंध । ३ । इनकों बाजेममें रचायके निर्वाह करे। और गुरुमुखसों पढके सास्त्र होय ता रीतिसे बाजेके तोड जोडकों जानें ॥ और सभानमें कोऊ को भय नहील्यावे ॥ अपनी विद्यामें । प्रवीण और चतुर जो नटुवा । अथवा भगतण जो प्रबिनके बाजेके संग दूनो दूनों नृत्य करे। नृत्यमें आनंद रचावे ॥ सो बजाय बेवारो मुखरी जांनिये ।२। बजायवेमें चतुर होय । गायवेको अभ्यास जामें थोरो होय । सो प्रतिमुखरी जांनिये । ३ । जो सुद्ध । १ । सालंग । २ । रागनीके जातिनके सुधे बाजेके भेदनको बजावेके । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानक कोमल । १ । कठीन । २ । अछरनको जे संगीतमें होय ॥ तैसों वरन ध्रुवा । १ । आभोग । २ । ताल । ३ । गमकनमें तिनों लयमें निछरि मधुरि धुनिसों संगीत शास्त्रकी मर्यादासों गीतको निर्वाह करे ॥ और आरंभमें तकार राखे ॥ और याका समाप्तभेभी थोंकार राखे ॥ सो बजायवेबारो गीतानुग जांनिये ॥ इति च्यारी प्रकारको मृदंग बजायवेबारेको लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंग बजायवेवारेका समूहको लछन लिख्यते ॥ जहां ऐसें मृदंग बजायवेबारे नृत्यकी पुष्टताके लिये । दोय । अथवा । तीन । अथवा । च्यार । उत्तम ॥ १ ॥ मध्यम ॥ २ ॥ कनिष्ठ ॥ ३ ॥ मृदंगकी रचनाको राखिये । सो मार्द्दलिक मृदंग जांनिये ॥ इति मृदंगका वृंदक लछन संपूर्णम् ॥

अथ मृदंगको भेद हुडुकाहै ताको लछन लिख्यते ॥ जो लंबो अठाइस आंगुलको दूसरी चोवीस आंगुलको आछे काठको छोटो तबला दोय बनाइये ॥ तहां निचेकी परिघि गोल आकार कीजिये । दोऊ मुखकी तरफ सात सात उतार चढाव राखिये ॥ इनके मुखमें चढायवेकों जवरको उछेलिके अथवा काठके ॥ दोय सवा आंगुलके मोठे कडा कीजिये उनको नरम चामसों लपेटि गाढे करिकें । दोऊ मुखपें चढाइये । मृदंगकी सिनाइ । दोऊ मुख चामसों मढिये । ऊन दोऊ कडानमें डोरा बांधिवेके छह छह छेद होय तिनमें डोरा राखिये । मृदंगकी तरह

बांधिये ऊहां आगें पिछेके भागमें दोय दोय काठके टूककी आंगल जामें लगाइये। ओर दोय च्यारी काठके टूकी । सुंदर बनाइकें । बांधिवेकी डोरिमें लगाइये । जासों स्वर ऊचो नीचो होय । याके धारन करिवेकों रेसमके कपडाकी दो बडा चोडी तीन आंगुलकी दोऊ तबलानके बीचमें बांधि गलेमें पहरे । ओर बत्तीस बत्तीस डोर दोऊ तबलानके कडामें बांधिकें वा डोरेमें छह छह आंगुलकी चोडी रेसमी कपडाकी दोवडा पटि झोबडा बांधिकें छोटे तबलाकी मुखकी पटिवाके कंधापें पहरिये ओर बडे तबलाकी मुखकी पटि दाहिणे कंधापें पहरिये ॥ तब छोटे तबलाको मुख बांई ओर-कों आवें बडे तबलाको मुख दाहिणे ओरकों आवें । तहां दोऊ तबलाकी पेंदी फेटाके सहारेसो गांठि बांधिये हलेनही ऐसें कीजिये । तहां बडे तबलाके मुखमें लोहचुरकी स्थाई दीजिये । यातें दाहिणें हातसों मृदंगके दाहिणे मुखके पाठाछरजुत बजाइये । ओर छोटे तबलाके ऊपर । गेहूंको चून लगाय वामें हातसों मृदंगके । बांये मुखकी सिनाई पाठाछर जुत बजाइये । याको अधिष्ठाता माता सात हैं । ताको नाम लिख्यते ॥ ब्राह्मी ॥ १ ॥ माहे-श्वरीश्चैव ॥ २ ॥ कौमारी ॥ ३ ॥ वैष्णवी तथा ॥ ४ ॥ वाराही ॥ ५ ॥ चैव इंद्राणी ॥ ६ ॥ चामुंडा सप्तमा ॥ ७ ॥ तरः ॥ १ ॥ इन श्लोकनसुं सातों मातानके नाम जांनिये ॥ इन तबलानके पाठाछरमें । बि । नि । हि । दे । ये अछर नही लीजिये इहां देंकार पाठाछरनमें समझिये यह तबला जांनिये ॥

इति हुडुक्का संपूर्णम् ॥

अथ करटा कहते ढोलको भेद है ताको लछन लिख्यते ॥ विजे सार काठ चोविस आंगुल लंबो ॥ अथवा ऐकीस आंगुल लंबो कीजिये ॥ बीचको पिंड चोथाई आंगूल ढालु कीजिये ताको मोटो-पणों चालिस आंगुलको कीजिये। ताको नाम परिघ कहे हैं ॥ तहा वांके दोऊ मुखपें मढावकी रीतिसों तीन तीन तांतके तार बांधिये ॥ फेर दोऊ मुखपें गाढे दोय वेलके वा काठके वा लोहके कडा । दोऊ मुखमें पहराइये । वह कडा दोऊ कोमल चामसों गाठे मढिये । ऊन दोऊ कडानमें । चोदह चोदह छेद कीजिये । फेर वांके मुख दोऊ आछि चामसों ढोलकी सिनाइ मढिये । उदपत्त उन चोदह

छेदके बिचबिचको एक एक छेद छोडिकें । बांधिवेकों चामका डोरा गरिकेंडु बांधिये । बाकी जो खाली छेद हें । तिनमें पतरे चामको डोरा डारि । उन डोरानसों पहले छेदके । दोय दोय बंधनमें छके आकार बांधिये । चढाव उतारसों । यह ढोलको भेद करटा बाजो जांनिये । याके दोऊ कडाके पास चोडी चामकी पटि तीन आंगुल चोडी ताके दोऊ अग्र कडाके पास करटामें । बांधिकें गरेमें पहरि । डंकासों बजाइये । अथवा कमरमें बांधिकें बजाइये । याको देवता चामुंडा माता जांनिये । या करटाके बांये मुखमें । टिरीकी ये अक्षर बजाइये । कटिरि ये दाहिणे मुखमें बजाइये ॥ **इति करटा लछन संपूर्णम् ॥**

अथ घडाको लछन लिख्यते ॥ जाको बडो पेट होय कंठ जाको लंबो होय मुख जाको गोल संकोच होय । घडा याको लोहेको होय रंगीन होय । ताको मुख चामसों मढि कडा लगावे । याको मृदंगकीनाई बजाइये । जे मृदंगके पाठाछर हें । तेहि पाठाछर घडाके जांनिये ॥ **इति घडाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ घडसको लछन लिख्यते ॥ याको लोकिकमें डिमडिमा कहे हें ॥ तहां हुडुका सिनाई दोय तबला करे । तबलाके पिंदामें ॥ एक एक छेद करे ॥ तहां दाहिणे हातके तबलाकों चामकी झिलिमिहि तासों मढिये ॥ बांये हातसों तबला मोटेसे चामसों ढीलो मढिये । वा चामके किनारेमें डोरे बांधि नीचे पींदिके । छेदमें काढिकें बांये हातके अंगुठामें वा डोरको अग्र बांधिके । बांये हातसों बांया तबला बजाइये । तब अंगुरीसों बजावेत । अंगुठासों डोरिकों खेंचिये । तब बांये तबलामें गोंकार निकसे । याको लोकीकमें गुटक सब्द कहे हें । ओर दाहिणे हातसों हुडुक्काके दाहिणे तबलाकी सिनाई बजाइये । तहां दाहिणे हातकी मध्य अंगुरी अंगुठासों बजाइये ॥ दाहिणे हातसों रगडतो या तबलामें मोंकार निकसेहें ऐसें यह यडक जांनिये ॥ **इति घडसको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ ढवसको लछन लिख्यते ॥ विजेसारको काठ चोवीस अंगुलको लंबो कीजिये मोटो गुण चालिस अंगुलको होय । याको परिध कहे हें । याके बारह बारह अंगुल चोडो दोऊ मुख कीजिये । ऊन दोऊ

मुखमें कडा चामसों मढि । उनमें सात सात छेद करि दोऊ मुखपें चढाइये वे दोऊ मुख चामसों मढिये । वांके छेदनमें गाढोडोरा राखिये । ऐसों जो बाजो होय सो ढवस जांनिये । याको करटाकी सिनाइ पहर बजाइये ॥ बांये मुख बांये हातसों बजाइये ॥ दाहिणे मुख दाहिणे हात पतरी बांसकी फाडलेके बजाय । यामें पाठाक्षर । टट जांनिये ॥ **इति ढवस लछन संपूर्णम् ॥**

अथ ढक्काको लछन लिख्यते ॥ जेसें ढवस कीजिये । ऐसें ढक्का रचिये ॥ परंतु या ढक्काके दोऊ मुख । तेरह तेरह आंगुल चोडा कीजिये । वांको बांये हातसों काठमें लेकें । दाहिणे हातसों डंडुकासों बजाईये ॥ याको धौसा कहतहें । याके । टेटे । पाठ वरनेंह ॥ **इति ढक्काको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ कुडुवाको लछन लिख्यते ॥ विजय सारको काठ । इकइस आंगुल लंबो कीजिये ताके सात सात आंगुलके चोडे दोय मुख कीजिये ॥ इहां उतार चढावको काठको आकार नही राखिये ॥ सिगरो काठ बराबरा राखिये ऊनके दोऊ मुखपें वेलको दोय कडा चढाइये ॥ दोऊ मुख चामसों मढिये । ऊन दोऊ कडामें ॥ सात सात छेद कीजिये ॥ तिनमें चामको डोरा डारीके गाढो बांधिये ॥ वा दोऊ मुख डंकासों बजाइये । यामें ॐ । पाठाछर जांनिये । इहां देंकार नही लीजिये । इनको देवता क्षेत्रपाल है ॥ **इति कुडुवाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ रुंजाको लछन लिख्यते ॥ विजय सारको काठ ॥ अठारह अठारह आंगुलको लीजिये ॥ वांके दोऊ मुख ग्यारह ग्यारह चोडे कीजिये । उनमें कडा चढाये ॥ चामसों मढिये । तहां बांये मुखकी । ओर दोय कडा कीजिये ॥ एक कडा मुखके पास बराबर कीजिये ॥ दूजो कडा मुखतें च्यार अंगुल आंतरे लगावे । ऊन कडानको तांतिसों जालिदार कर बांधिये ॥ जाके कडामें सात सात छेद करि । पहले बांधि तैसेंही बांधिये पीछे वामें एक पोंण हातकी तीन आंगुल चोडी पटि बांधिकें । कांखिमें लेकें बजावें । श्रीमहादेवजीको गणभ्रंगी याकी देवताहें ॥ ओर महामुनि राजश्री मतंगजीनें याके वरन कहे हें । क । १ । ब । २ । दा । ३ । ट । ४ । न । ५ । मा । ६ । र । ७ । ख । ८ । ओर कोऊ आश्चर्य अछिर कहे हें । क । १ । र । २ । ग । ३ । घ । ४ । द । ५ ।

न । ६ । ख । ७ । हो । ८ । जो वंध्यो वाजो होय सो कर्कस जांनिये ॥ इति रुंजाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ डमरुको लछन लिख्यते ॥ एक विलस्त काठ लंबो लेके। आठ-आठ आंगुलके चोडो दोऊ मुख कीजिये बिचमें पतरो कीजिये ॥ याके दोऊ मुख चामसों मढिये ॥ वा चामके बंधेजके डोरा बिचमें बांधीये ॥ इहां बिचमें पकरिके डारामकों दाबि दाहिणे हातके डंकासों बजाइये । दोऊ मुखमें सों डमरु जांनिये । यामें ड पाठाक्षर हैं ॥ ओर कोऊ आचारीजके मतसों । क र ख ट । ये च्यारि वरन कहे हैं ॥ इति डमरुको लछन संपूर्णम् ॥

अथ करचक्रको लछन लिख्यते ॥ यांको लौकीकमें दायरा । १ । अथवा खंजरि कहेहें ॥ दस आंगुलको मोटो च्यारि आंगुलको लंबो ॥ एक गोल चक्रके आकार बनाइये ॥ यांको बिचमें पोलो आरपार कीजिये । एक आंगुलको दल रहें ऐसो पोलो कीजिये । ताको एक मुख चामसों मढिये ॥ बजायते वेर चामको पांणीसों भीजाय । बांये हातसों वांटो दाबि दाहिने हातसों बजाईये । वामें । डवक । यह पाठाक्षर होत हैं । इति करचक्रको लछन संपूर्णम ॥

अथ रबाबको लछन लिख्यते ॥ यह रबाब एक हातको लंबो कटहके काठको कीजिये ॥ तहां एक काठको आधे तुंबाके आकार कठोता दंडाके आगलेको लगाइये कठोता चामसों मढिये । ओर कठोताकी सनमुखकोर पे सात छेद करि सात तांति बांधि दंडाके अग्र भागमें । खूंटी ढीली गाढिके सातों तांतिनके अग्र बांधिये । ऊन सातों तांतिनमें । षड्जादि सातो स्वर क्रमसों राखिये । हा तिदांतिके टूकसों तांति बजाइये । बांये हातसों मढे चामको बजाइये । यामें मृदंगकेसे पाठाछर जांनिये । इहां कोऊ आचारिज पहले च्यारि तारमें मध्यम । १ । पंचम । २ । धेवत । ३ । निषाद । ४ । यह च्यारि स्वर पिछले तीन तांतनमें । षड्ज । १ । रिषभ । २ । गांधार । ३ । यह तीनो भेद क्रमसों कहेहें ॥ इति रबाबको लछन संपूर्णम् ॥

अथ दुंदुभिको लछन लिख्यते ॥ याकों लौकिकमें नगारो कहतहें ॥ तांबेके वा लोहके वा अष्ट धातुके होय बडे बडे । अथवा छोटे ।

कटोराके आकार कराइये उनकीपेदिमें । एक एक छेद कीजिये । तहां छोटो होयसो मादी अर बडो होयसो नर जानिये । तहां मादीको मुख बारिक । चाममें राल लगाय मढिये । वा चाम छेद करिकें डोरा चामके लगाइं । नीचें पेदिमें एक चामकी एडी धरि वामें डोरा सिगरे बांधिये । याको बजावतीवेर आगीकी आंचसों वा सूरजकी आंचसों तपाय बजाइये काठके दोय डंकातें दोनु हातसों बजाइये । याको लौकिकमें कुंडकुंडी कहत हें । इहां ज्यो नर होई ताको मुख मोटे चामसों मढिये । पहले मादीकी सिनांई। खालके तसमानसो गाढे कीजिये । ओर काठको मोटो डंकासों बजाइये । तहां जात्राके समय ताल नही बजाइये । जहां जुद्धमें जाइये । तहां जुदेजुदे बजाईये । जहां उछवादिक वा विवाहादिकमें । दोऊ मृदंगके पाठाछर जुत मिलाकें बजाइये । दोऊ जब मिले तब नोबत कहे हें । नगारे बडेकी बडी धुनि होत ह । छोटीकी छोटी धुनी होत हें । इनको चोडे लंबे बनावना होय । सो अपनी इच्छासों बनाइये । जेसी चाहे होय तेसी तरहके नगारा बनाइये । यह देवस्थानके मंदिर वा सिगरे उछवमें बजाइये ॥ इति दुंदुभिको लछन संपूर्णम् ॥

अथ डंकाको लछन लिख्यते ॥ जहां एक विलस्तको लंबो लेकें काठ । बीचमें पतलोकरि पोलो कीजिये ॥ मुख आठ आठ आंगुल चोडो कीजिये ॥ तहां आधे आंगुलको पिंड कहिये ॥ किनारी राखिये ॥ ओर दोऊ मुखमें च्यारि च्यारि तांबेकी कील राखिये । तहां दोयतो मुखके ऊपरकों दोय नीचेकों । तहां ऊपरके अग्रभागमें दोय तांति बांधिकें मुखके उपर दोय दोय तांत बांधिये । दोय तांत उनके कीलतें उपरके अग्रभागमें बांधिये । दोय तांत नीचेके अग्रभागमें बांधिये । उन तांतके काठतें बीचमें दोऊ एकसी कत्रण कीजिये ॥ तब तांतनमें मधुर धुनि होय । वह दोऊ मुख चामसों हुडुक्काकी तर हें मढिये ॥ ओर बारह आंगुलको डंका लेकें बजाइये । बांये हातमें हातिदांत कोंटूक लेकें ऊन तांतनको बजाइये । तालके अनुसार यामें हुडुक्काकी सिनांई पाठाछर जांनिये ॥ इति डंकाको लछन संपूर्णम् ॥

अथ मण्डिडक्काको लछन लिख्यते ॥ जहां सोहले आंगुलको लंबो काठ लेकें ॥ ओर डंकाकी सिनाई बिचमें पतलो करि ॥ आठ आंगुलकें

चौडे दोऊ मुख करि च्यारि तांबेकी किल डंका कीनांई लगाय उनके ऊपर नीचें दोय दोय तांति बांधिये वे दोऊ मुख चामसों मढिये। ऊन तांतनके दोय तांतनको छला बांधिये। वे दोऊ छला बांये हातके ॥ अंगुठा चटि आंगुरि ॥ आदि तीन अंगुरीसों पकरिकें। बांये हातके अंगुठा पासकी आंगुरी सो कीनारेके ऊपर चाम दाबिके दाहिनें हातसों बजाइये ॥ अथवा बांये हातके पहुचामें दोऊ छलानको पहरिकें बांये अंगुठा अरु चटि आदि दोय आंगुरीसों किनारेके चाम दाबिकें बांये हातकी मध्य आंगुरीसों वा अंगुठा पासकी आंगुरीसों सहारो देकें दाहिणें हातसों। अथवा डंकासों बजाइये। यह बाजो श्रीभवानी माताजीकी पूजामें। अथवा स्तोत्र गावनमें बजाइये। यासों माताजी प्रसन्न होत हैं॥ इति मण्डिडक्काको लछन संपूर्णम॥

अथ डक्कलीको लछन लिख्यते ॥ जहां नवम अंगुलको वृषभको सिंग। अथवा हातिको दांत। अथवा कांसेकी नव आंगुलकी भोंगली लीजिये। जाके मुख च्यारि च्यारि आंगुलको दोऊ चोडे कीजिये। भिढाकी खालसों दोऊ मुख मढिये। ऊन दोऊ मुखमें कांसेके वा तांबेके। वा लोहके कडा दोय लगाइये। दोऊ कडामें पांच पांच छेद राखिये। ऊन छेदनमें चामके तस मां डारिकें। करडो नही ढिलो नही ऐसो बांधिये। बीचमें सब डोराके ऊपरि एक डोरा बांधिये। कमरबंधाकी तरहसों। तहां बिचके डोरापें चटी पासकी आंगुरी राखिकें। बीचली अंगुठा पासकी आंगुरी निचेकं। मुखके कडापें राखिकें। अंगुठासों ऊपरके मुखके सहारेसे ॥ लगायो जो चामको छला ताको खेंचिकें दाहिणें हातसों बजाइये। यामें टंटंतंतं। ये पाठाछर जांनिये ॥ इति डक्कुलीको लछन संपुर्णम ॥

अथ सेल्लुकाको लछन लिख्यते ॥ जहां छविस आंगुलको लंबो विजयसारको काठ लीजिये॥ ओर तीस आंगुलको मोटो कीजिये ॥ ताको पोलो करि। वाके दस दस आंगुलके चोडे मुख कीजिये। दोऊ मुख कोमल छालसों मढिये। अंगुठा पासकी आंगुरीमें। मोटे वलके दोय कडा लगाइये ॥ ऊंन दोऊ कडामें छह छह छेद कीजिये। ऊंन छेदममें छालके डोरा बांधि मोठो बांधिये। तहां बांये मुखके चामसों लगाइये। एक तांति कडासों बांधिये। बांये

मुखको बांये हातसों बजाइये। दाहिणे हातमें डंका लेकें दाहिणे मुख बजाइय तहां बांये मुखमें झें। पाठाक्षर ओर दाहिनें मुखमें। धिं। पाठाक्षर होय हें॥ इति सेल्लुकाको लछन संपूर्णम्॥

अथ झल्लरीको लछन लिख्यते॥ जहां पचीस टक्का भार तांबेकी बारह आंगुलकी लंबी। अठारह आंगुल चोडी गोल कोठी कीजिये॥ बराबरकी करे। यामें उतार चढाव नही कीजिये। ओर वाके कंठमें बराबर दोय छेद कीजिये। तामें डोरा पोयकें। गांठी देकें बांये हातके अंगुठामें राखियें। वांको मुख चमासों मढि डोरासों जवर बांधिये॥ दाहिणे हातसें डंका लेकें बजाइये॥ इति झल्लरीको लछन संपूर्णम्॥

अथ त्रिवलीको लछन लिख्यते॥ एक हातको लंबो काठ लेकें। बीचमें पतरो कीजिये। जेसें मुठिमें आवे। वांके दोऊ मुख सात सात आंगुलके कीजिये। चोडो। ऊनसों चामसें मढिके। ऊन दोऊ मुखपें सात सात छेदके दोय लोहके कडा चढाइये। ऊन छेदनमें। चामक डोरा बांधिये॥ फेर ऊन डोराकों दाबिके बीचमें गाठा बांधिये॥ फेर बांये एक डोरा जवरकर बांधिकें कांधापें पहरिये। वाकों दोऊ हातसों बजाइये॥ या त्रिवली बाजेमें॥ तं। दों। दों। द। यह पाठाक्षर जांनिये। याकी देवता त्रिपुरादेवीहे॥ इति त्रिवलीको लछन संपूर्णम्॥

अथ धोंसा दुंदुभिको भेद हे तिनको लछन लिख्यते॥ आंमके काठको बडो नगारो बनाइये। ताके भीतर कोसेकी दाल तांतसों बांधिये। यांके मुख ऊपरज नही लगावे। मुख चामसों मढिये। पीछे छालके डोरासों गाढो खेंचि बांधिये॥ पिछे काठके दोय बडे भारि डंकासों दोऊ हातसों बजाइये। यामें गें पाठाक्षर हें। यामें मेघ गरजेकी धुनि होत हें। मंगलमे विजयमें देवतानके मंदिरमें बजाइये॥ इति दुंदुभिको भेद–लछन संपूर्णम्॥

अथ भेरीको लछन लिख्यत॥ तांबेको तीन विलस्ति लंबो ढोल कीजिये। वांके दोय मुख चोविस अंगुलके चोडे कीजिये। ऊनमें काठके वा लोहके वा चामके तातके दोय कडा लगाइये। दोऊ मुख आछी जवर चामसों मढिये। ऊन कडामें छेद करि छालके तसमासों ढोलकी सिनाई बा।धिये बीचमें

चोडो तीन आंगुलके चामकी पटि बांधी गरेमें पहरिके ॥ दाहिणे मुख डंकासों बजाइये । बांये मुख बाये हातसों बजाइये ॥ तब बडी गंभीर धुनि होय । ता धुनि सुनते वेरीनके समूहकी छाति फटे । याको ट पाठाक्षर हैं ॥ याको लौकिक-में आरबी बाजा कहावे हैं ॥ इति भेरीको लछन संपूर्णम् ॥

अथ निशानको लछन लिख्यते ॥ कांसेको अथवा लोहको अथवा तांबेको एक मुखकों । तीन हातको लंबो । जवको आकार ऊचो लंबो नगारो कीजिये तामें कासेकी छोटि कटोरी झांझ उनमाहि धरिये । उपरको मुख भेंसाकी मोटि चामसों मढिये । बांये मुख चामसों कडा चढाय वा कडाके छेदमें चामके तसमा बांधि गाठो कीजिये । पीछे हातमें मोटो डंका काठको लेकें । बडे जोरसो बजाइये ॥ यामें ढंढं पाटाक्षर होय । या नगारेकी धूनिसों संग्राममें कायरकी छाति फाटे । सूरविरकों उछाह करे रोमांच करे ॥ इति निशानको लछन संपूर्णम् ॥

अथ निशानको भेद तंबकी होत हें । ताको लछन लिख्यते ॥ जो निशानको प्रमानमें । वा धुनिमें कछुइक घाटि होय ॥ ओर तरहके निसानकीसि होयसो तंबकी जांनिये ॥ इति तंबकीको लछन संपूर्णम ॥

इहां जो काठ वा चाम लीजिये ॥ सो घणों श्रेष्ठ काठ छेद आदि फाट रहित घणो साचिक्कण उत्तम होय सो निरविकार काष्ठ लीजिये ॥ ऐसेंहि उत्तम निरविकार चाम लीजिये । यामें बडे गुन हें तीन जगतमें व्याप्त हें ऐसो अनिबद्ध बाजोहें ॥ इति अनवद्ध बाजेको भेद–लछन संपूर्णम् ॥

॥ घनबाजोंके भेद ॥

अथ घनबाजेके भेद–लछन लिख्यते ॥ तहां प्रथम तालको लछन लिख्यते । यह घन वाद्य कांसेको होत हें । तासों कांसेकों अग्निमे सुद्ध करि ॥ फुल कांसेके करिवांके दोय ताल बनाईये । अठाईस आंगुलके चोडे मुख नीचेकों झारिलिये होय । पेंदिमें आंगुल विस्तार डाखुपेंदि राखिये । नाभिके आकार वा नाभिमें चोथाई गुंजा प्रमान डोरा पोइवेको छेद कीजिये । तालसों ते आडेजव बराबर राखिये उंचे डेड आंगुल नाभि संधि बनाईये । गोल आकार कीजिये ॥

ऐसें ऊंनकी धुनि कांनकों प्यारि लगे तैसी कीजिये । वा तालनके छेदमें एक मिहिने तीन डोराकी बनाय । बाके दोनु तालनमें पोय गाढि दीजिये । इनमें जो छोटो मादी ताल होय सो ताकी डोर दाहिणें हातसों अंगुठा पासकी अंगुरीमें लपेटिये । बांये हातमें सुधा ताल राखिये ओर जो बडो ताल होय । सो तांकि डोर दाहिनें हातकी अंगूठा पासकी अंगुरींमें लपेटि । नरको मुख निचेको राखि बांये हातके तालपें दाहिणें हातको ताल । अणु । १ । द्रुत । २ । द्रुतविराम । ३ । लघु । ४ । लघुविराम । ५ । गुरु । ६ । प्लुत । ७। इन सातों अंगके प्रमाणसों मार्गी देसी तालनमें बजाइये । इन दोऊमें जाकी लघु धुनि होय सो मादी हें । याको देवता श्रीपार्वती माता हें । अरु जो बडो ताल ताकी बडी धूनि होय सो नर हें । ताको देवता श्रीशिवजीहें । इहां बांये हातसों पार्वतीजिको ताल लीजिये । दाहिणे हातसों शिवजीको ताल लीजिये तब अश्वमेध यज्ञ कीयेतें फल होय । सो सुनिवेंवारेको होय । ये नवरसमें बजाइये । इनको देवता गंधर्वराजातुंबर हें । शिवको ताल बांये हातसों लिये । अरु पार्वती ताल दाहिनें हातमें लिये तो । महापातकी होय नरकमें वास करे ॥ तासों सास्त्रकी रीतिसों शुद्ध गुरुकी संप्रदायसों ताल वरतिये । तब सब पातक मिटत हें । सिगरे देवता पितृमुनिस्वर वरदानदेकें मनोरथ सफल करत हें । इति ताल लछन संपूर्णम् ॥

अथ कांस्य ताल कहिये झांझताको लछन लिख्यते ॥ जेसें कमलनिके पत्रके प्रमाण । तेरह आंगुलके चोडे । लंबे गोल आकार दोय ताल कीजिये । बीचमें दोय आंगुलके प्रमान । गोल एक अंगुलकी गहरि नाभि कीजिये । तांके बीचमें पहले तालकी सीनांई छेद करि डोरा बांधिकें तालकी तरह बजाइये । यामें । उनकट पाठाछर हें । यह श्रीभगवानके भजनमें मुख्य हें । याको अपनें हातसों भगवानके भक्तजन बजायकें भजन करें तब श्रीराधाकृष्ण भगवान प्रसन्न होयकें ॥ च्यारों पदारथ देत हें या तालके देवता नारद जांनिये ॥ इति कांस्य तालको झांझको लछन संपूर्णम् ॥

अथ घंटाको लछन लिख्यते ॥ जहां कांस्यकी घंटा आठ आंगुल ऊची कीजिये । तांके उपर पिंड छेदजुत आठ आंगुलको राखिये । मुख चोडो

गोल आकार च्यार आंगुलको कीजिये । वांके मूलमें एकदंडी पीतलकी मूठीमें मावे इतनी पिंडके छिद्रमें लगाइये । वा दंडीके ऊपर कमलके फूलको आकार करि गरुडजीकी मूर्ति वा हनुमानजीकी मूर्ति । वा अपनें इष्टकी मूर्ति वा रुचि होय तसी राखिये । वा दंडके नीचले भागमें । एक कुंदा करि वामें लोहको आकडा डारि वा आकडामें डेड आंगुलको । एक आंगुलको मोटो लोहको । लोलक डारिये । पीछे वा दंडकाकों दंड बांये हातसों पकडीकें बजाइये । जहा अपनें इष्ट देवकों पूजनें होय । तहा समयमें स्नान ॥ १ ॥ आरती ॥ २ ॥ भोग ॥ ३ ॥ उत्थापन ॥ ४ ॥ शयन ॥ ५ ॥ आदि मंगल समयमें घंटा बजावे। सो यह घंटा श्रीविष्णु भगवानके पूजनमें मुख्य हें । जो शालिग्रामजीकी पूजा करिये तब राखिये । या सों विष्णु भगवान् बहोत प्रसन्न होयहें च्यारि पदा-रथके वरदान देत हें यासो घंटा विना पूजा नही कीजिये ॥ **इति घंटाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ क्षुद्रघंटाको लछन लिख्यते ॥ याको नाम लौकिकमें घुंघरा कहतहें ॥ जहां कांसिकें दोय पुट । झारिवेकी गुटलीमावे । इतने लीजिये ॥ पीछे दोय पुटनकें बीचमें लोह कोणां वा पाथर कांकरो घालि दोय पुटनको आपसमें आवें तामें छोडीये वांके ऊपर डोरा पोयवेको एक नाका लगाय दीजिये ॥ सो याको नाम लौकिकमें घुंघरा कहत हें ॥ ये दस विस तीस एक डोरामें पोयकें ॥ नृत्य करती वेर दोऊ पायनमें बांधिकें। तालनमें नाचिये अथवा कमरमें बांधिके नाचिये । इनमें झुण झुण सब्द निकलतेहे । सो घुंघरा जांनिये ॥ **इति घंटिका कहिये घुंघरा ताको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ जयघंटाको लछन लिख्यते ॥ या जयघंटाको नाम लौकीकम झालरि कहतहें सो ताके दोय भेदहें। जो घडिघडिके प्रमानपें । तास बजावे सो बडेके आकार कांसेकी वा अष्टधातुकी । मोटि होय सो घडी बजायवेकी घर घोर महाघंटा जांनिये ॥ सो याको पृथ्वीपतिमहाराज मनावे । ऊत्तरायनमें । पुष्यार्कमें । हस्तार्क योगमें ॥ जब सुतके रसीकों बांधीके लटकावे तब घडी एक पूरि होय ॥ तब डंका एक दीजिये । या रीतिसों आठ पहर राति दिनको प्रमान जांनिये। याको घटि पल जांनिये। १। ओर जो फूल

कांसिकी एक हात प्रमान ॥ लंबी गोली चोडी तथा लीक कीजिये। मोटि सवा जव आछो होय ताको प्रमान। अथवा आपकी इछा होय जितनी। मोटो बनावे ताकी कौरमें दोय बराबर छेद करि। एक आंगुलके आंतरेसूं। वामें डोरा पोयकें। वामें हातमें। वा अंगुठामें गेराकों राखे। दाहिणे हातमें काठको डंका राखिकें बजावे तब तामें। टंटंटं। पाठाछर होत हें। यह श्रीभगवानको प्यारि हें याकों आरतिके समें देवताके मंदिरमें बजाइये॥ प्रातसमये संध्यामें। याको झालर कहत हें। याकी धूनिसों भूत प्रेत पिशाच्च डाकिनी आदि। दुष्ट उपद्रव रोग दोष सब मिटत हें॥ झालरि छोटि मोटि। अपनी इछासों चाहो जैसी बनावे॥ इति जयघंटाके दोय भेद संपूर्णम्॥

अथ कम्राट कहिये काठकी पाटि बजायवेकी ताको लछन लिख्यते॥ जहां खेरकी लकडीकी वा टोसबांसकी दोय दोय आंगुलकी चोडी बारह बारह आंगुलकी लंबी। बिचमें इछा होय तैसी मोटि राखिये। दोनु अग्र कछूइक पतरो होय। ऐसो च्यारि खपाट कहिये। इनमें दोय दोय खपाट दोऊ हातमें लीजिये। तहां एक पाटतो अंगुठा अंगुठाके पासकी अंगुरीकी संधिके बिचमें पहरिये॥ जेसें आगे पिछे बरोबर नीकसी रहें॥ ओर दुसरी खपाट बीचरी आंगुरीमें अंगुठा पासकी। अंगुरीके संधिमें लीजिये॥ ऐसें दोऊ हातनमें। च्यारों खपाट लीजिये पीछे उनको ढीलीसि करि पहुचाकें कंपसों आपसमें बजावे वामें। किटकिट। यह पाठाक्षर हें॥ कोऊक आचारिज ऐसें कहत हें। दोऊ हातकी कपाट। नीचे ऊपर मिलायकें हातकी हतेरेके रगडेसों आपसमें सब्द मनोहर होत हें। **इति कम्राट लछन संपूर्णम्॥**

अथ सुक्ति वाद्य कहिये। किरकिट्ट तालको लछन लिख्यते॥ कांसिकी वा लोहकी सर्पके आकार बिचमें॥ आंगुल आंगूलके अंतरसों ऊंचि ऊंचि लीक आधे जवप्रमान कीजिये। वांको हिरदेके संगके आकार किरविरि जामें होय ऐसो लोहके डंकासों उन लीकनके ऊपरि आडो तिरछो रगडिये। तब। किरकिट। यह पाठाछर होय हें॥ याको देवता कुबेर हें। यह बाजो ग्यारह। ११। रुद्रको प्यारो हें॥ सो याके बजायो शिवजि प्रसन्न होय हें॥ इति **सुक्ति वाद्यको लछन संपूर्णम्॥**

अथ पट वाद्यको लछन लिख्यते ॥ जहां वेतके काठका चोकुट बत्तीस आंगुलको वा तीस आंगुलको कीजिये ॥ एक हातको चोडी कीजिये ॥ वा पाटाके ऊपर नीचें दोय बंधक कीजिये ऊंन बंधनकमें लोहकी एक पतरिकोर छोटिछोटि कडीदार बजाइये ॥ याकों गोडाके ऊपर धरिकें । याकी छोटि छोटि कडिनकी पांति ॥ जो लोहकी कोरमें हे तिनकों अंगुरीनमें राळ लगाई बजाइये । यामें कग्टा । पाठाछर हें । याके देवता सात रुपेश्वर कहत हें ॥ **इति पट वाद्यको लछन–भेद संपूर्णम् ॥**

अथ घटको लछन लिख्यते ॥ जहां घडा खापरको लेकें वांके मुख-कों हातसों बनावे वांको मुख चामसों नही मंढ होय । सो घडा इमकोरो बाजेमें जांनिये । यांको देवता प्रजापति सूद्र कहत हें सो जांनिये ॥ **इति घटको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ जलजंत्रको लछन लिख्यते ॥ बाईस । २२ । कटोरि कांसेकी अथवा चिणीकी कटोरि बाईस । २२ । लीजिये । सो पूरनजंत्रजलवाद्य जांनिये । यामें पनदरे । १५ । कटोरि होय सो । मध्यमं जलजंत्रजांनिये । इहां पात्र पहले सों लेकें सब अनुक्रमसों ऊंचे ऊंचे राखिये । ऊनमें जल भरिये । सो जलस्वरके अनुसारतें घटि वधि कीजिये । ऊन कटोरीनमें वीणांके अथवा मुरलीके । अथवा कंठके अनुस्वर शुद्ध विकृत षड्जादि सात स्वर राखिये । फेर वीणाकी सीनाई राग उपजे । एक एक बिलसतके दोय डंका दोऊ हाथमें लेकें । चतुर इष्टगुनी रागनी उपजे । अपने चतुराईसोंज होयतसेंही बजावे । या जलजंत्रमें स्वरकों दावि वो जलजुत कटोरिके किंनारेके छुयेतें होत हें एसेंहि यामें । आंदोलन । १ । मीडन । २ । आदिक स्वरनके वरतावे । सास्त्र-की रितिसों गुरु मुखसों जांनिये ॥ यांको लोकीकमें जलतरंग कहे हें ॥ **इति जलजंत्रलछन संपूर्णम् ॥**

अथ कल्पतरुको लछन लिख्यते ॥ जहां दंडमें सात घंटा लगायकें कुंदा बजावे । ऊंन घंटामें पकरिवेकी डांडी नही होय ॥ ओर जा घंटाके ऊपर लगायघडी बनाइये । सो श्रीविष्णुभगवान ॥ १ ॥ ओर शिवजी-महाराज ॥ २ ॥ ओर महाशक्तिजी ॥ ३ ॥ विघन हरता गणेशजी

॥ ४ ॥ ओर श्रीप्रत्यक्ष सूर्यनाराणजी ॥ ५ ॥ यह पांचो देवता । इनके मंदिरनके छताके कडामें बांधि दीजिये। निचेको लोलक बाजतीतरफ लटकती रहैं। सो दरसन करिवेवारे। प्रभूको दरसन करतें वा घंटाके दाहिणे हात लगायें बजावे। ता घंटाके नादसों सिगरे उपद्रव मिटे। यह मंदिरनमें सर्वत्र राखिये। याको महा पुण्य हैं कल्पवृक्षकी सिनांइ कांमनादेहें॥ **इति कल्पतरुको लछन संपूर्णम्॥**

अथ काठके तालको लछन लिख्यते॥ जहां मृदंग बाजे तहां करताल बाजे। काठकी वा कांसीकी बनावे। ग्यारह। ११। आंगुलकी प्रमान यत्न करिकें सिधे राखिके बजाइये। मनकों सुख उपजावे॥ **इति काठके तालको लछन संपूर्णम्॥**

॥ सुषिर–वंसीके भेद ॥

अथ सुषिर बाजेको नाम लिख्यते॥ वंस। १। पावा। २। पाविका। ३। मुरली। ४। मधुकरि। ५। काहल। ६। तुंझकिनी। ७। चुक्का। ८। सींग। ९। शंख। १०। सुनांदी। ११। नागसर। १२। मुखवीणा। १३। चक्र। १४। चंग। १५। पत्रिका। १६। स्वरसागर। १७। ये सुषिर बाजे जांनिये॥

तहां प्रथम वंस बाजेको नाम लिख्यते॥ घणों सुंदर सरल बांसकों वाखरेको वा हाति दांतको। वा रक्तचंदनको। वा श्रीचंदनको। वा लोहके। वा कांसीको। वा रूपेको वा सुवरनको वंसी बनाईये। सो गोल आकार सचिक्कन सूधी कीजिये। एक चटी आंगुरी वांके भीतर आवे। इतनी पोलि सीगरी कीजिये। वाको उपरको मुख मूंदो राखिये। सो सास्त्रोक्त प्रमानसों लंबी। अठारह आंगुल। १८। कीजिये। ताके उपरके भागपे। दोय आंगुल वा तीन आंगुल वा च्यार आंगुल छोडिके। बजायवेको एक आंगुलको प्रमान। एक छेद कीजिये। सो छेद चोकुंट कीजिये। वा चोकुंट छेदको नाम मुखरंध्र कहिये। या मुखरंध्रतें एक आंगुल जमों छोडि। दाहिणें ओर एक छेद गोल कीजिये। याको नाम नादरंध्र जांनिये। चिरमीके प्रमानसों

लीजिये । फेर वा गोल छेदकें । आगें तीन आंगुल वा च्यार आंगुल छोडि । एक एक अंगुलके अंतरसों । सात छेद गोल आकार मावतामें चिरमी वा डांडिके बेर बीचमाही आवे । ऐसें छेद कीजियें । ये छेद सातों स्वरनके जांनिये ॥

और एक आठमों छेद धुनिको कारन हें ॥ सो मुखरंध्रके पासको जांनिये । नवम मुखरंध्र हें । ऐसें आ वंसीमें नव छेद होय । सो वंसी एक वीर नाम जांनिये । नव मुखरंध्र । १ । धुनि कारण रंध्र याके पासके इन दोनुनमें बीचमें । एक एक अंगुल जगोंके वधायवेतें चोदह वंसीके भेद और होत हैं ॥ तिनके नाम—लछन लिख्यते ॥

जहां मुखरंध्र । १ । नादरंध्र । २ । इन दोऊनके बिचमें दोय आंगुलको अंतर होय ताको नाम उमापतिहें । या वंसीका प्रमान उगनीस आंगुल लंबी होत हें । १ ।

जहां मुखरंध्र । १ । नादरंध्र । २ । या दोनुनके बीचमें तीन आंगुलको अंतर होय सो त्रिपुरुष जांनिये । याको प्रमान बीस आंगुल जांनिये । २ ।

जहां मुखरंध्र । १ । नादरंध्र । २ । इन दोनुनके बीचमें च्यार आंगुलका अंतर होय सो चतुरमुख जांनिये । याको इकविस आंगुलको प्रमान जांनिये ।३।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें पांच आंगुलके अंतर होय । सो पंचवक्र जांनिये । याको प्रमान बाईस आंगुल जांनिये । ४ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें छह अंगुलको अंतर होय सो षण्मुख जांनिये । याको प्रमान तेवीस आंगुलको जांनिये । ५ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें सात आंगुलको अंतर होय सो मुनिराज जांनिये । याको प्रमान चोविस आंगुलको जांनिये । ६ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें आठ आंगुलको अंतर होय सो वसु जांनिये । याको प्रमान पचीस अंगुलको जांनिये । ७ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें नव अंगुलको अंतर होय सो नाथेंद्र जांनिये । याको प्रमान बीस आंगुलको जांनिये । ८ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें दस आंगुलको अंतर होय सो महानंद जांनिये । याको प्रमाम सतावीस आंगुलको जांनिये । ९ ।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें एकादस आंगुलको अंतर होय सो रुद्र जांनिये। याको प्रमान अठाइस आंगुलको जांनिये। १०।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें बारह आंगुलको अंतर होय सो आदित्य जांनिये। याको प्रमान गुणतीस आंगुलको जांनिये। ११।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें चोदह आंगुलको अंतर होय सो मनु जांनिये। याको प्रमान इकतीस आंगुलको जांनिये। १२।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें सोलह अंगुलको अंतर होय सो कलानिधि जांमिये। याको प्रमान तीस आंगुलको जांनिये। १३।

जहां मुखरंध्र नादरंध्रके बीचमें अठारह आंगुलको अंतर होय सो अन्वर्थ जांनिये। याको प्रमान पेंतीस आंगुलको जांनिये। १४। यह चोदह भेद जांनिये। १४। यह चोदह भेद तो यह ओर पहलो एकवीर ऐसें मिलिकें। पनदरह भेद वंसीके जांनिये॥

ओर कोऊ आचारिज वंसीको प्रमान वीस आंगुलको कहत हें॥ ताको नाम सुरुभवंसि जांनिये। १। कोऊ मुनिराज। बत्तीस आंगुलके प्रमान वंसी कहत हें। ताको नाम श्रुतिनिधि कहत हें। या बत्तीस अंगुलकी वंसीमें अतिमंद्र धुनि होत हें। यातें याको ग्रहण कोऊ करे है। कोऊ नही करे हें। ओर च्यार आंगुल तीस आंगुल एक आंगुल जिनको अंतर होय सो वंसीमें अतितार धुनि होत हे यातें ऊनहूको कोऊ कोऊ अंगीकार करे॥

अब नव आंगुलके अंतर तें लेकें अठारह अंगुलके अंतर तांई। सात वंसीके भेद हें॥ तिनके उलटी रीतिसों षड्जादिक सात स्वरनकी उत्पत्ति कहे हें॥

तहां अन्वर्थ नाम पीछलोंमें तीस अंगुलकी वंसी तामें नादरंध्र खुलो राखिये मुखरंध्रमें। पवन पूरन कीजिये। बाकीके सात नीचले स्वरनके छेद दोऊ हातकी अंगुरीनसों मूंदी दीजिये। तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको षड्ज जांनिये। ऐसेंहि तेतिस अंगुलको वंस कलानिधि तामें सातों छेद मुंदेसों जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको रिशभ जांनिये॥ एसेंहि इकतीस अंगुलको वंसको नाम मनु हें। तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको गांधार जांनिये॥

ओर जो गुणतीस अंगुलको वंस आदित्य है। यामें सातों छेद मूंदिये। तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको मध्यम जांनिये। ऐसेंहि अठाईस अंगुलको वंस रुद्र हें॥ तामें सातों छेद मूंदिये। तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको पंचम जांनिये॥

ओर सताइस अंगुलको वंस महानंद हें॥ तामें सातमों छेद मूंदियेतें॥ तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको धैवत जांनिये॥

ओर छविस अंगुलको वंस नादेंद्र हें॥ तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मंद्रस्थानको निषाद जांनिये॥

ओर पचीस अंगुलको वंस वसु हे॥ तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मध्यस्थानको षड्ज जांनिये॥

ओर चोविस अंगुलको वंस मुनिराज हें। तामें सातों छेद मूंदिये तब जो धुनि होय सो मध्यमस्थानको रिषभ जांनिये॥

ऐसें हि तेइस बाइस इकइस वीस उगनीस। अंगुलके वंसनको नाम षणमुख। २३। पंचवक्त्र। २२। चतुर्मुख। २१। त्रिपुरुष। २०। उमापति। १९। इनमें सातों छेदमों दियेतें क्रमसों मध्यमस्थानके गांधार। १। मध्यम। २। पंचम। ३। धैवत। ४। निषाद ये स्वर होत हें। ओर अठारह अंगुलको वंस एकवीर हें। तामें सातों छेद मूंदियेतें। जो धुनि होय सो तारस्थानको षड्ज जांनिये। इन पनदरह वंसनीमें। पिछलो दोय दोय खोलिकें पांच छेदनें मूंदिकें बजावे तब दूसरे दूसरे स्वरकी उतपत्ति होय ऐसेंहि तीन छेद खोलिकें। च्यारि छेद मूंदिकें। तीसरे तीसरे स्वर होत हें। ऐसे च्यारि खोले तीन मूंदे। तब चोथे चोथे स्वर होत हें ऐसें पांच छेद मूंदे तब पंचम स्वर होत हें ऐसें छह छह खोले। एकमूंदे तब छटे छटे स्वर होय हें। ऐसें सातों छेद खोलिकें ऊभी छेद मूंदे नही। तब सातमें स्वर होव हे। ऐसें अन्वर्थ नाम पेंतिस आंगुलके वंसमें दोय रंध्र पिछले खोले तब मंद्रस्थानको रिषभ। तीन छेद खोले गांधार च्यारि खोले। मध्यमें पांच खोले। पंचममें छह खोले। धैवतमें सात खोले। निषादमें मंद्रस्थानके स्वर होत हें॥

ऐसेंहि कलानिधिमें । गांधार आदिकें । मनुमें मध्यमादिक । आदित्यमें पंचमादिक । रुद्रमें धैवतादिक महानंदमें निषादादिक नाथेंद्रमें मध्यमस्थानके षड्जादिक स्वर होत हें । दोय आदिक छेद खोले । तब छह स्वर होत हें । ओर वसुमें । १ । मुनिराज । २ । षण्मुख । ३ । पंचवक्र । ४ । चतुर्मुख ।५। त्रिपुरुष । ६ । उमापति । ७ । इन सातोंनमें दोय छेद आदिक छेद खोले तें । मध्यमस्थानके रिषभादिक गांधारादि । मध्यमादि । धैवतादि । निषादादि । तारस्थानके षड्जादिक छह स्वर जांनिये । ऐसेंहि एक वीरमें दोय आदिक छेद खोले ते तारस्थानके रिषभादिक छह स्वर जांनिये । इन समेरे बंसके भेदनमें । नादरंध्र खुल्यो राखिके सातों स्वरनके छेद मूंदे । तब पहलो स्वर पिछलेतें ॥ आठमो उपजत हें । यह रीति भरतादिक अनुष्टुप् चक्रवर्ती आदि राजरिषि । साङ्र्देव विसाखिल हनुमान आदि मुनीजन कहत हैं ॥ इति पनदरे भेद वंसीके तिनमें स्वर उत्पत्तिप्रकर्ण संपूर्णम् ॥

अथ वंसीके स्वरनको भेद लिख्यते ॥ जहां जो स्वरके छेदसों अंगुरी दूरि ऊंचि उठाइये स्वर अपनी जितनी श्रुति होय । तितनी श्रुतिकों जांनिये । जो अंगुरी छेदसों दूरि नहीं कीजिये । थोरोसो अंगुरीको कंप करि। फेर अंगुरी चाहीय राखिये । तब एक श्रुतिहीन स्वर होय । जहां आंधो छेद खोलिये । आंधो मूंदि राखिये । तहां दोय श्रुतिहीन स्वर होय । ओर जहां आधो छेद खोलि आंधो छेद मूंदि कंप कीजिये । तहां तीन श्रुतिहीन रहे हें । यह रीति च्यार श्रुतिके स्वरकी कहीहें यही रीति तीन श्रुतिके दोय श्रुतिके स्वरमें जांनिये ॥

इहां कोऊ आचारिज ओर प्रकारसों सात स्वर कहे हें । जहां बांयो हात रहें । तहां दाहिणें हात । ओर जहां दाहिनो हात रहे । तहां बांयो हात राखिये । ऊन दोऊ हातनकी अंगुरीनके अग्रके छेद मूंदवेकों नीचेको बांके कीजिये । दोऊ हातनके अंगुठा वंस पकरिवेकों वंसके निचें लगाइये । जेसें दोऊ हातनके बीचमें वंस आवे । तब अर्धचंद्र हस्तक ॥ १ ॥ नागफण हस्तक ॥ २ ॥ ये दोऊ जांनिये ॥

ये दोऊ हस्तक वंसमें मुख्य कहत हें । तहां सातों छेदनमें । षड्ज

॥ १ ॥ रिषभ ॥ २ ॥ गांधार ॥ ३ ॥ के पिछले तीन छेद बांये हातकी चटि अंगुरी पासकी आंगुरी अनामिका। तासों ओर बीचली अंगुरी मध्यमासों। अंगुठा पासकी आंगुरी तर्जनीसों। इन तीनों अंगुरीसों तीनों स्वरके छेद मूंदिये। ओर दाहिने हातकी चटी अंगुरी आदिकें च्यारों अंगुरीसों। मध्यम ॥ १ ॥ पंचम ॥ २ ॥ धैवत ॥ ३ ॥ निषाद ॥ ४ ॥ यह च्यार छेद मूंदिये। ऐसें वंसधारण कीजिये या रीतिसों वंसधारण करि बजाइये ॥

अब या वंसमें मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थाननकी रचना कहत हें। या रीतिसों वंसकों धारणकरिकें। साधारण रीतिसों मुख राखि। बजायवेको छेद जो मुखरंध्र तामें पोंन भरिये। तब मध्य सप्तकके स्वर होत हें। जहां मुखसों आधो मुखरंध्र दाबी मुखकों संकोच। बलसों पोंन भरिये। तब तारस्थानके स्वर होत हें। याको नाम टीप कहत हें। यह मध्यस्थानकी दून हें यातें मध्यमस्थान सें दुनों जांनिये ॥ २ ॥

जहां मुखरंध्रके निकट राखि मुख ढीलो करि मंद पोंन भरिये। तब मंद्रस्थानके स्वर होत हें। याको नाम गंभीर कहत हें। यातें मध्यस्थानसें आधो जांनिये। तारस्थानतें चोथे वाटो जांनिये॥ ऐसें मुखके पोंनकी जुक्तिसों गुरु संप्रदाय अनुसारसों तीनों स्थानक बुद्धिसों रचिये ॥

अथ मुख पोंनके भेदसों स्वरके पांच प्रकार लिख्यते ॥ जहां जो तीछन ॥ १ ॥ कोमल ॥ २ ॥ शीघ्रता ॥ ३ ॥ सिथिलता ॥ ४ ॥ पूरनता ॥ ५ ॥ अपूर्णता ॥ ६ ॥ ऐसें मुख पोंनके भेदसों स्वरनके अनेक भेद हें। तामें मुख्य पांच भेद प्रसिद्ध हें। कंपित ॥ १ ॥ वलित ॥ २ ॥ मुक्त ॥ ३ ॥ अर्धमुक्त ॥ ४ ॥ निपीडित ॥ ५ ॥ ये पांचोके नाम जांनिये। अब इन पांचोको लछन कहत हें। तहां स्थाइ आदिक वरन च्यारी प्रसन्नादिक ॥ ४ ॥ अलंकार तरेसटि ॥ ६३ ॥ ओर सगरि गमक विकृत स्वर रचायवेकों अंगुरीके चलनसों स्वरकों कंप कीजिये। सो कंपित स्वर जांनिये ॥ १ ॥ जहां संचारि वर्ण एक ॥ १ ॥ वरतिवेकों स्वरके छेदपें। अंगुरीकों टेडी सूधी दाहिने बांई। स्वरमें रंग रंग उपजायवेकों रगडीये। सो वलित जांनिये। जहां शुद्ध स्वर दिखायवेकों स्वर छेद कंपके अंगुरी ऊंच उठाइये सो मुक्त जांनिये ॥ ३ ॥ जहां आधो

छेद खोलिके। आधो छेद मूंदिके विकारस्वर दिखायवेको स्वरकी आधी धुनि रोकीये सो अर्धमुक्त जांनिये ॥ ४ ॥ जहां अंगुरीसों संपूर्ण छेद गाढा मूंदिये। अथवा धुनि जनायवेकों सातों छेद मूंदि वंस बजाइये। सो निपीडित जांनिये। ॥ ५ ॥ इति मुख पोंनके भेदनां पांच भेद लछन संपूर्णम् ॥

अथ वंसीनिमें मुख्य श्रीमहाराज राजेंद्र अनेक यज्ञरचित दानेंद्र श्रीकीर्तिधर राजरिषिके मतसों मंद्र ।१। मध्य।२। तार इन तीनों स्थानकके जुदे।२। ओर तीनो स्थानकके सों मिलायत वंस कहे हें तिनके भेद लिख्यते ॥ जहां षणमुख।१। मुनिराज।२। वसु ।३। ये तीनो वंस तारस्थानके है। इनमें तारस्थानके स्वरनकों वरतावे जांनिये।१। नाथेंद्र।१। महानंद।२। रुद्र।३। ये तीनों वंस मध्यस्थानके स्वर जांनिये ।२। आदित्य।१। त्रयोदस।२। इन दोऊ वंसमें। मंद्रस्थानके स्वर जांनिये।३। मनुनाम वंसमें। मंद्र ।१। मध्य ।२। तार।३।इन तीनों स्थाननके स्वर जांनिये ॥

यातें मनु नाम वंस। सर्व समय पुरुषरूप हें ॥ पुरुष जो नारायण ताके समान हें। ऐसें नववंस कीर्तिधरजी प्रमाण करिकें सास्त्रमें लिखे हें। इनही वंसनीमें स्थाई आदि वरन।१। प्रसन्नादि अलंकार।२। प्रस्तारादि धातु।३। आश्रवणादि सुस्कवाद्य।४। ये बजायवेकी रचना कीजिये। इहां कोऊ आचारिज वंसके प्रमान भेद कहे हें। तहां एक वीर वंसतें लेकें। आदित्य वंस तांइ बारह ।१२। वंसमें पांच जव आडे प्रमांनकों एक अंगुल लीजिये। ओर मनुवंस।१। कलानिधि ।२। अष्टादशांगुल ।३। इन तीनोंमें। साडेपांच।५॥। जव प्रमांन आंगुलीकी लीजिये ॥

एकवीरवंस चोदह अंगुलको ऊंचो लीजिये। वांके आदि अंतमें। डचोड डचोड ॥ १॥ ॥ अंगुल छोडिये। ओर बजायवेको मुखरंध्र एक अंगुल प्रमान कीजिये। वांसों एक अंगुल अंतरसों आडे तीन जव प्रमांन गोल एक छेद कीजिये। ताके ऊपरांत डेड आंगुल वंसको अंत्य भाग छोडिकें षड्जादिक सात स्वरनके सात छेद कीजिये। वे छेद तीन तीन जवके प्रमांनसों। आडेतीन जव प्रमान गोल कीजिये। यह एकवीर । वंसको प्रमांन जांनिये।१।

उमापतिवंसको प्रमान । पोणिदोय जव ।१॥। अधिक पनदर । १५। अंगुलको दंड होय स्वरनके छेदके अंतर सवातीन जवको कीजिये । ओर एकवीर वंसकीसीनाई जांनिये । २ ।

त्रिपुरुषवंसको प्रमान दोय जव अधिक । सतर । १७। अंगुलको कीजिये । स्वर छेदके अंतर च्यारि जवके प्रमान राखिये । बाकी रीत एकवीरकीसीनाइ जांनिये।३।

चतुर्मुखवंसको प्रमांन आधे जव घाटि उगनीस। १९। आंगुलको होय। आदि अंत भागमें पोणि दोय दोय आंगुल राखिये । बाकी क्रिया पहले वंसकीसी-नाई जांनिये । ४ ।

पंचवक्रवंसको प्रमांन। एक जवके तीन आठवा अंसघाटि । बाइस आंगुलको कीजिये । आदि अंतमें अढाई अढाई आंगुल छोडिये । स्वरके छेदको अंतर । एक जवके तीन अष्टांस अधिक च्यारच्यार जवको कीजिये । बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये । ५ ।

षण्मुखको प्रमाण पोण जव अधिक चोबिस।२४। अंगुलको हैं। नादरंध्र एक सुर छेद सात । ७। सवातीन जव आडे प्रमान गोल कीजिये॥ ओर इन छेदनको अंतर जवको एकको सोलह । १६। अंस घाटि पांच जवको जानिये । बाकी रीति पंचवक्रकीसि जांनिये ॥ ६ ॥

मुनिदंडको प्रमान डोड जव अधिक विस अंगुलको हें । ओर आठो छेदनमें तीन अथवा अर्धपाद अधिक तीन जवको प्रमांन जांनिये । साडेपांच ।५॥। यवको इन छेदोमें अंतर जांनिये । बाकी पहली रीति जानिये । ७ ।

वसुको प्रमान एक जव अधिक अठाइस । २८। आंगुल हे बजाय-वेको छेद एक जव अधिक एक अंगुल हें ॥ आठो छेदनको अंतर एक अंगु-लको । एक जव आधिक जांनिये । बाकी पहली रिति हें। ८ ।

नाथेंद्रको प्रमाण चोथाइ जवको अधिक तीस आंगुलको हें । आदि अंत्य भागमें पोणेतीन तीन अंगुल छोडिये । आठो छेदनको अंतर सवा अंगुलको हें । बाकी रिति पहली कीसिनाइ । ९ ।

महानंदको प्रमांन एक जवको तीन सोलह अंस अधिक बतीस अंगुल हैं आदि अंत्य भाग तीन तीन अंगुल छोडिये । बजायवेको छेद एक

अंगुलको ॥ आठों छेदकों अंतर कछूइक अधिक सवा अंगुलको हें । बाकी रीति पहलीकीसिनांइ हें ॥ १० ॥

रुद्रदंडको प्रमान आध जव अधिक सवा चोंतिस अंगुलको हें । आठो छेदको अंतर ड्योड ड्योड अंगुलको हें ॥ ओर चटी अंगुलीके बिचलीके बीचलि पौरवामावे छेद स्वरकों विस्तार कीजिये । बाकी पहली रीति । ११ ।

आदित्यको प्रमान आध जव अधिक सेंतीस अंगुलको हें । आठो छेदको अंतर पोणिदोय दोय अंगुलको बाकी रिति रुद्रदंडकी जांनिये । १२ ।

मनुदंडको प्रमांन एक जव अधिक एक जवके पांचवा अंस अधिक सवागुणतालिस आंगुलको । आदि अंत भाग पोणे तीन तीन अंगुल बजायवेको छेद कछू घाटि सवाअंगुलको आठो छेदनको प्रमांन साडेतीन तीन जवको । ओर आठो छेदनको अंतर चोथाइ जव घाटि दोय दोय अंगुलको । बाकी रीतिआदित्य वंसकी जांनिये । १३ ।

कलानिधिको प्रमांन । एक जवके तीन अष्टमांश अधिक पोणे-चंवालीस आंगुल हें । आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये ॥ आठो छेदको अंतर। सवाजव अधिक दोय अंगुलको हें बाकी रिति मनुवंसकीसि जांनिये ।१४।

अष्टादशांगुलको प्रमान एक जवके पांच बतीसमें अंस अधिक पोणे-अडतालिस ॥ ४७॥ ॥ आंगुलको हें । आठो छेदनको अंतर अठाईस अठाईस आंगुलको लीजिये । कछू अधिक बाकी रीति कलानिधि कीसि जांनिये ॥१५॥ इहां तेरह ॥ १३ ॥ आंगुल पनदरह ॥ १५ ॥ आंगुल सतरह ॥ १७ ॥ आंगुलके वंस मही कीजिये ॥

एसें पनदरह वंसको विचार आचारिज कहत हें । इन वंसनमें मधुर धुनि अनुरंजन रागको वरतिवो होत हें ओर जो लछिनहीन वंसि होय हें । ओर देसी रीतीसों कोऊ अपनी बुद्धिसों रचेसो वंस गुणीनके कामको नही ॥ इहां दोऊ आचारिज कहे हें ॥ तेरह ॥ १३ ॥ आंगुल ॥ १ ॥ पनदरह ॥ १५ ॥ आंगुल ॥ २ ॥ सतरह ॥ १७ ॥ आंगुल ॥ ३ ॥ नादरंध्र मुखरंध्रके बीच अंतर होय । ते वंस त्रयोदस ॥ १३ ॥ पनदरह॥ १५ ॥ सतरह ॥ १७ ॥ कहिये ॥

तहां त्रयोदसको नाम विश्वमूर्ति हें । याको प्रमान पांच जव अधिक

चवालीस ॥ ४४ ॥ आंगुलको हे ॥ आठो छेदको विस्तार साडेतीन तीन जवको हें । आठो छेदनको अंतर दोय दोय आंगुलको हें । बाकीकी रीति आदित्यवंसकी जांनिये ॥ १ ॥

पंचदसको प्रमान एक जव ॥ ओर एक जवके पांच बतीसमें अंस अधिक बयासी आंगुलको हें । तहां आदि अंत्य भागमें तीन तीन आंगुल छोडिये आठो छेदनको अंतर डयोढ जव अधिक आंगुल दोयको हें । या रीति मनुवंसकी जांनिये ॥ २ ॥

समदस वंसको प्रमाण एक जवके सातबत्तीसमें अंस अधिक पोणे-छियालीस आंगुलको हे । आठो छेदनको अंतर दोय जव अधिक दोय आंगु-लको हे । बाकी रीति कलानिधिकीसि जांनिये ॥ ३ ॥ ऐसें तीन वंस रागकी धुनि उपजावत हें । तो तीन ओर प्रथम कहे सो पनदरह ॥ १५ ॥ ऐसे सब मिलिकें अठारह वंस जांनिये ॥

अथ सारंगदेव कवि अपनी बुद्धिसों वंसनीके लछन कहेहें । सो लिख्यते ॥ तहां अंगुलको प्रमान विना तुसके आड जव छह बराबर एक आंगुल जांनिये । ओर आठो छेदको विस्तार चटी आंगुलीको अग्रभाग मावेसो छेद गोल कीजिये ॥ बांको टेडो अथवा अणभिल होयतो । सुद्ध स्वर उपजे नहीं तहां एक वीर वंसको प्रमाण है सो छह ॥ ६ ॥ जवके प्रमान चोदह अंगुल होय । आदि अंत भागमें दोय दोय आंगुल छोडिये । बजायवेके छेदको विस्तार । चोकुटो एक आंगुलताके नीचे । एक अंगुल जाय छोडि । बराबर नादरंध्र कीजिये । नादरंध्रको विस्तार एक जवके लवे अंस अधिक । आधे आंगुलको होय । ता आगें सात स्वरके सात रंध्र कीजिये । जिनें सातों स्वर उपजे । आठो छेदनको अंतर । आधे आधे आंगुलको कीजिये । ओर या वंसकी पोलि चटि अंगुलीके बिचली वा भीतर । आवे ऐसो पोलो वंस कीजिये । या पोलकी वंसकीको नाम खानि कहे हें । यामें स्वर पहलेकी सिनाइ होय हें ॥

याही वंसमें । नादरंध्र ॥ १ ॥ मुखरंध्र ॥ २ ॥ इन दोऊनके बिचमें । एक एक अंगुल अधिक करि क्रमसों चोदह अंगुल तांई । बधावे तब उमापति

आदि वंससूं लेकें मनुवंस ताई। तेरह वंस जांनिये। उमापति वंसको पनदरह अंगुलको प्रमान हें। बाकी रीति एक वीरकीसी हे ॥ १ ॥

त्रिपुरुषको प्रमाण आधे जव अधिक साडेसोलह ॥ १६॥ ॥ आंगुलको हें आठो छेदनको अंतर साडेतीन जवको हें बाकी रीति पहली हे ॥ २ ॥

चतुर्मुख वंसको प्रमाण साडेअठारह आंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर सवाच्यारि जवको हे। बाकी रीति पहली हें ॥ ३ ॥

पंचवक्र वंसको प्रमान दोय जव अधिक वीस अंगुल हें। आठो छेदनको अंतर पांच जवको हे। बाकी रीति पहली हें ॥ ४ ॥

षण्मुख वंसको प्रमाण आधे जव अधिक बाईस अंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर पांच जवको हे। बाकी रीति पहलीकीसी जांनिये ॥ ५ ॥

मुनिवंसको प्रमाण साडेतेईस आंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर एक अंगुलको कहत हें। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ६ ॥

वसुको प्रमाण च्यार जव अधिक पचीस ॥ २५ ॥ अंगुलको हें। आठों छेदनको अंतर सात जव प्रमाण हें। बाकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

नाथेंद्रको प्रमाण सव्वासताइस आंगुलको हें। आठों छेदको अंतर सवा १। अंगुलको हें छेदको विस्तार चटी आंगुली मावे। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ८ ॥

महानंदको प्रमाण तीस आंगुलको हें। आठो छेदको अंतर डेड अंगुल हे। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ ९ ॥

रुद्रको प्रमाण सवातेतिस ॥ ३३। ॥ अंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर पोणीदोय अंगुलको। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये ॥ १० ॥

आदित्यको प्रमाण एक अंगुलको हें। आठोंअंस अधिक पेंतिस आंगुलको हें आठ छेदनको अंतर। अष्टमांस घाटि दोय अंगुलको हें। बाकी रीति रुद्रकीसि हें। १।

विश्वमूर्तिको प्रमान एक अंगुलके सोलहों अंस घाटि। साडेसत्तीस। ३७॥। आंगुलको हें। आठों छेदनको अंतर। अंगुलीके सोलहो अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हें। बाकीकी रीति पहलीकीसि जांनिये। १२।

मनुवंसको प्रमाण पोणीइकतालिस अंगुलको हैं । आदिअंत्य भागमें अठाईस अठाईस अंगुल छोडिये । आठों छेदनको अंतर सवादोय अंगुलको हैं । बाकीकी रीति पहली कीमि जांनिये । १३ । यह एकवीर वंसादिक चोदह वंस । सारंग देवराज रिषिनें कहे हैं ॥

आगेके वंस च्यार । पंचदस । १ । कलानिधि । २ । समदस । ३ । अष्टादस । ४ । ये अतिमंद धुनि कहे हैं । यातें बजायवेमें थोरे लीजिये । और एकवीर । १ । उमापति । २ । त्रिपुरुष । ३ । ये तीन वंस अतितार धुनी कहे हैं ॥ यातें इनही लीजिये । ऐसें चतुर्मुख आदि मनुवंस ताई । ग्यारह वंस मनोहर है । ते बजायवेमें लीजिये । इहां दूसरे प्रकार विना तुसके आडे साडेच्यारि जवको । एक अंगुल प्रमान जांनिये । एकवीर आदिक वंसको प्रमाण समझिये । और रीति पहलीकीनाई समझिये । तहां एकवीरके नादरंध्र ॥ १ ॥ मुखरंध्र ॥ २ ॥ इन दोऊको अंतर एक अंगुलको हैं । या अंतरमें एक एक अंगुल अनुक्रमसों अधिक करि बाईस अंगुल ताई वधायकें बाइस वंस होत हैं। परंतु बजायवेको जोगतो चतुर्मुख आदिक मनुवंस ताई ग्यारह ॥ ११ ॥ वंस मुख्य जांनिये ॥

इन वंसनमें । पहले वंस । सातों छेद मूंदियेके बजाइये । आगेको वंस सातों छेद मूंदिके बजाइये तब पहले वंसतें । आगिले वंसकी आधिमात्रा अधिक धुनि होय हैं । ऐसें पहले पहले वंसनिके एक आदि अनुक्रमसों छेद खोलिकें बजायेतें । आगले वंसनिके छेद मूंदियेतें वे धुनि मिले । जेसें एकवीर वंसको । एक छेद खोलि बजावे । और उमापतिके साति छेद मूंदि बजावे। तब उमापतिकी । अरुणक वीरोकी एक धुनि होय । एकवीरके दोय आदिक सात ताई छेद खोलि बजाइये । त्रिपुर आदिक वंस ताई आगले वंसके सातों छेद मूंदि बजाइये । तब एकवीर त्रिपुरुष आदिककी एक धुनि होय हैं ऐसें सिगरे वंसनिमें स्वरके मिलाय जांनिये । इहां जो जो छेद जा जा स्वरको हैं । सो सो छेद चढे वा ऊतरे । ताही ताही स्वरमें मिलत हैं । यह श्रीहनुमानजीको मत हैं । जो छेद विना प्रमानको होय सो अपने अपने स्वरकी धुनिमें नहीं मिले ॥

अथ पहलो वंस सात छेद मूंदि बजाइये ॥ ओर आगिलो वंस सात छेद मूंदि बजाइये । तब पहले वंसतें आगिले वंसकी धुनि एक मात्रा अधिक होय सो भेद लछन लिख्यते ॥ इहां विना तुसके आडे छह जवको एक अंगुलको प्रमान हें । एकवीरको प्रमान सवाबारह अंगुलको हें । आदि अंत भागमें । आधे जव अधिक दोय दोय अंगुल छोडिकें मुखरंधको विस्तार एक अंगुलको हें । आठों छेदनको विस्तार आधे अंगुलको आठो छेदको अंतर दोय प्रमान हें । ओर नादरंध मुखरंध इन दोऊनको अंतर एकवीरमें एक अंगुलको हें । इहां एक एक अंगुल बधाये तें उमापति । आदिक वंस होत हें ॥ १ ॥

उमापतिको प्रमाण सवातरह ॥ १३। ॥ अंगुलको हें । बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ २ ॥

ओर त्रिपुरुषको प्रमाण । सवाचोदह ॥ १४। ॥ अंगुलको हें बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ३ ॥

चतुर्मुखको प्रमाण पोंनो जव अधिक साडे पनदरह ॥ १५॥ ॥ अंगुलको हें ॥ ओर आठों छेदनको अंतर सवादोय जव हें बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ४ ॥

पंचवक्त्रको प्रमाण पोंनो जव अधिक सवासतरे ॥ १७। ॥ अंगुलको हें । ओर आठों छेदको अंतर एक जवको सोलह अंस अधिक पोनोतीन जव प्रमाण हें । बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ५ ॥

षण्मुखको प्रमाण एक जवको आठमों अंस घाटि डेढजव अधिक उगनीस अंगुलको हें । आठो छेदको अंतर पोनो जव अधिक आधे अंगुलको हें । बाकीकी रीवि पहलिकीसि जांनिये ॥ ६ ॥

मुनिको प्रमाण एक जवके पांच बत्तीसवे अंस अधिक पोनो जव अधिक इकविस ॥ २१ ॥ अंगुलको हें । आठो छेदनको अंतर । एक जवके ग्यारह बतीसवे अंस अधिक पोण अंगुलको हें । बाकीकी रीति एकवीरकीसि जांनिये ॥ ७ ॥

वसुको प्रमाण आठवें एक अंस घाटि एक जव अधिक पोणा चोइस ॥ २३॥। ॥ आंगुलको हें । ओर आठो छेदको विस्तार सवा दोय जवको हें । आठो

छेदनको अंतर आठवें अंस अधिक एक जव अधिक पोना अंगुलको हें। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ ८ ॥

नाथेंद्रको प्रमाण सवा जव अधिक छबीस ॥ २६ ॥ आंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर। आठवो अंगुलको अंस अधिक एक अंगुल हें। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ ९ ॥

महानंदको प्रमाण। एक जवको आठवो अंस अधिक साडेबाइस ॥ २२॥ ॥ आंगुल आठो छेदको अंतर एक जवके तीन आठवे अंस अधिक सवा अंगुल हें। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १० ॥

रुद्रको प्रमाण एक जव अधिक अंगुल इकतीस ॥ ३१ ॥ को हें। आठो छेदनको अंतर साडे तीन यव प्रमान हें। आठो छेदको अंस डेड डेड आंगुलको हें। बाकीकी रीति एक वीर कीसि जांनिये ॥ ११ ॥

आदित्यको प्रमाण एक जवके बतीसवे अंस अधिक एक जव अधिक चोतीस ॥ ३४ ॥ अंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर। एक जवके चोंतीसवे अंस अधिक पोने दोय दोय अंगुलको हें। बाकीकी रीति एक वीर-कीसि जांनिये ॥ १२ ॥

विश्वमूर्तिको प्रमाण पोंना जव अधिक सततीस ॥ ३७ ॥ आंगुलको हें। आठो छेदनको अंतर एक जवके तीन आठवे अंस अधिक दोय दोय अंगुलको हें। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १३ ॥

नवमको प्रमाण एक जवके पांच अठ्ठमांस अधिक चवालीस ॥ ४४ ॥ अंगुलको हें। और आदि अंत्य भागमें। अठाईस अठाईस अंगुल छोडिये। आठो छेदनको अंतर एक जवके तीन बतीसवे अंस अधिक पोणीतीन २॥। आंगुलको हें। बाकीकी रीति एक वीरकीसि जांनिये ॥ १४ ॥ ऐसें यह चोदह वंस रचिये। ता पहले पहले वंस तें। अगलो अगलो वंस। एक मात्रा अधिक धुनिको होत हें। यातें सारंग देवनें यह रीति कही हें। इहां सब वंसमें जेसें चढी आंगुरीको बीच पेर वो पांवे। इतनी पोली बीचकीसि लीजिये। सो बंसी वंसवा जांनिये। और चटी आंगुरीके अग्र मावे। इतनी पोलिको मार्गी वंस जांनिये। बाकीकी रीति दोऊ वंसनकी समान हें। तहां एकवीर ॥ १ ॥

उमापति ॥ २ ॥ त्रिपुरुष ॥ ३ ॥ ये तीन वंसतो तारस्थाननके हैं । और चतुर्मुख आदि । ग्यारह ॥ ११ ॥ वंस तीन । मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ स्थानमें वरतीये हैं ॥ चतुर्मुख आदि ग्यारह वंसनमें । धातु ॥ १ ॥ वृत्ति ॥ २ ॥ सुष्कवाद्य ॥ ३ ॥ आदिक वीणाके कारिज सब कीजिये । इहां सरिर ॥ १ ॥ वीणा ॥ २ ॥ वंस ॥ ३ ॥ ये तीनोमें स्वर उपजत हैं । इन तीनमें वंसको स्वर मधुरतासुं ॥ १ ॥ सचिकणतासों ॥ २ ॥ श्रोताको अनुरंजन षणो करे हैं । यातें वंस मुख्य हैं । वंस ॥ १ ॥ वीणा ॥ २ ॥ शरीर ॥ ३ ॥ इनें तीनोनके मिलापसों जो धुनि सांची होय तो । बडो प्रवासमें । परिश्रम ॥ १ ॥ ओर वियोगीनको वियोगदुख ॥ २ ॥ ओर शोक वारेनको शोक ॥ ३ ॥ वा धुनिके सुनेतें दूरि होत हैं । यातें ऐसी ठोर कोमल लयसों धुनि कीजिये । ओर शृंगारालयमें द्रुत लयसों बिलासजुत वंसकी धुनि कीजिये । ओर क्रोधमें । अभिमानमें द्रुतलयसों कंपजुत । ओर लहरदार वंसीको नाद कीजिये । ओर बाकी रसनमें । अपनी रुचिसों बजाइये ॥

अथ वंसी मनुष्यके पोनको नाम फूत्कार हे ॥ ताको बारह गुण हें ताको नाम लिख्यते ॥ जेसें धुनि रुखि वा फूटि नही होय । सो भिग्धता नाम फूत्कारको गुण हे । १ । ओर जो ध्वनि गोल एकसी भरेवा होय सो घना फूत्कारको गुण हें । २ । ओर जो ध्वनि चितको वस करे सो रक्तिगुण फूत्कार हे । ३ । जो ध्वनि गीतके वा प्रबंध आदिकें । ताल । १ । सुर । २ । अछिर । ३ । पाठाछर । ४ । जाति । ५ । लय । ६ । आदि प्रगट दरसावे सो व्यक्तिगुण फूत्कारको हे । ४ । ओर जो धुनि सब बाजेनमें मुख्यतासों वरतें । बहु मंद नही होय । सो प्रचुरता गुण फूत्कारको हे । ५ । ओर जो धुनि सुनिवेकों मन ललचावे सो लालीत्य गुण फूत्कारको हे । ६ । ओर जो धुनि । निर्बल । १ । सबल । २ । रोगी । ३ । अ-रोगी । ४ । स्त्री ५ । पुरुष । ६ । बाल । ७ । वृद्ध । ८ । तरुण । ९ । आदिक सबकों सुहावे सो कोमलता गुण फूत्कारको हें । ७ । जो धुनि नाद । ओर अनुरणन कहीये । गंकारजुत होयके बाजेकों संग करे सो नादानुरणफूत्कारको गुण हें । ८ । ओर जो धुनि । मंद । १ ।

मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानमें । अनुरंजनसहित बरतिये । सो त्रिस्थानत्व गुण फूत्कारको है । ९ । जो धुनि जेसी जहां रितिसोचाहिये । गमकादियुक्त तेसीहि सुनिपरे । कारिगर बजायवे वारे करे तब जान्योंपरे सो श्रावकत्व गुण फूत्कारको हे । १० । ओर जो धुनिसुनिवेवारेकों । सुनिवेकी रूचि उपजावे । सोमाधुर्यगुण फूत्कारको हें । ११ । ओर जो धुनि काहूजगे घटि वधि । नहि होय भारि सूक्ष्म नहि होय सो सावधानतागुण फूत्कारको हे । १२ । **इति फूत्कारको बारह गुणको लछन नाम संपूर्णम् ॥**

अथ फूत्कारके तीन विकारको नामलछन लिख्यते ॥ तहां जो फूत्कार थोरे समताहि रहे । ओर बार बार टूटे । सो स्तोकनाम फूत्कार हें । १ । ओर जो फूत्कार लघुवेरको होये ॥ ओर जो धुनिकों स्फुट नही करे सो फूत्कारकस जांनिये । २ । जहां फूत्कार कबहु छोटो कबहु बडो होय । एकसो नही होय । सो खलित फूत्कार जांनिये । यह तीन फूत्कार बजायवेमें नही लीजिये ॥ **इति फूत्कारके विकारको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ फूत्कारके पांच दोष लिख्यते ॥ जो कफ विकारते स्वरहीन वा फूटचो फूत्कार होय सो कपिल दोष जांनिये । १ । ओर जहां एकठोर फूत्कार आवे क्रमसों नही आवे सो तुंबकी जांनिये । २ । ओर फूत्कार कहुं तीखो कहुं मंदो होयके काक स्वर उपजावे । सो काकी जांनिये । ३ । ओर जो फूत्कार दांतभिचिकें आवे । सो मंदष्ट जांनिये । ४ । जो फूत्कार घटि बधि होयकें स्वरको तोडे सो फूत्कार अव्यवस्थित जांनिये । ५ । ओर जे जे दोष कंठके कहे हें ॥ पहले अध्यायनमें ते फूत्कारनमें हूं जांनिये ॥ **इति पांचो फूत्कारके दोष संपूर्णम् ॥**

अथ बंसी बजायवेवारेके गुण लिख्यते ॥ जाकी अंगुरी सिधी चले ॥ ओर तीनों स्थाननकों जानें रागके मूरन टूरनमे कुशल होय ॥ ओर रागकों मधुरतासों प्रगट करे । द्रुत । १ । मध्य । २ । बिलंवित । ३ । वेगमें चतुर होय । ओर गीत प्रबंधादिककों निकें बरतें । ओर बाजेनके संग होय उनकों निर्वाह करे बाजे बजायवेवारेकी कसरीको ढांके मार्गी देशी रागमें प्रविन होय । ओर बाजे मंद्रस्थानमें । अरुबाजे तारस्थानमें होय । तब आप मंद्रस्थानमें ।

ऐसें या तारस्थानभेदसों बाजेको निर्वाह करे । ओर गीतकों नीचिउचीं जगों उलटेपलटिकें जो गायवेबजायवेमें वरतिवेमें समर्थ होय सो ये गुण जामे होय सो पुरुष वंसी बजायवेमें लीजिये । १ । ओर जो गुरुसें वंसी बजावनी नही सिख्यो होय । अथवा थोरोहि सिखकें अपनें मनसों विनासास्त्र घनो विस्तार करे । ओर कहे गुण जामें नही होय । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थाननमें जेसो जो स्थान रचीये । तेसो नही वरत सके । ओर मुरखतासों माथो हलावे । ये जामें दोष नही होय सो वंसीके लायक पुरुष जांनिये ॥ **इति वंसी बजायवेवारेके गुण संपूर्णम् ॥**

अथ वंसी बजायवेवारेके लछन लिख्यते ॥ जहां एक वंसी बजायवे बारो मुरख होय । ओर च्यारि वंसी वारेके नीकटसाई होय ऐसें पांच वंसी बजावनेवारेको समुदाय वंसकवृंद कहावत हें ॥ **इति वंसीके वृंद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ वंसीमें राग उपजायवेको प्रकार ॥

मध्यमादि रागको प्रकार कहेहें ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाई करि निषाद कंप होय पंचममें बिलंबसों बहरिकें स्थाईमें विश्राम कीजिये सो मध्यमादि रागको प्रथम स्वस्थान जांनिये ।१। जहां निषादकों कंप नकरि फेर विनाकंपको निषाद होय। ओर मध्यस्थानके षड्जको उच्चार करि । फेर निषादको उच्चार करि पंचमस्वरकों वरतिकें । मध्यममें विश्राम कीजिये । सो मध्यमादिकको दूसरो स्वस्थान जांनिये । २ । जहां निषादकी गमक करी मध्यमको उच्चार करी पंचमको उच्चार कीजिये । फेर निषाद वरतिकें। मध्यमस्थानके षड्जमें विलंब करि । फेर मध्यम-स्थानके षड्जवरातिकें । पंचमकों उच्चार करि मध्यममें विश्राम कीजिये । सो तीसरो स्वस्थान जांनिये।३। जहां पहलि सप्तकको। मध्यमस्वर। पंचमस्वर । निषाद स्वर आरोहसों उच्चार करि । मध्यमस्थानके षड्जको उच्चार करि मध्यमस्थानके मध्यमको विलंब होय । फेर मध्यमस्थानके पंचमकों । १ । मध्यमकों । २ । गांधारकों ।३। अवरोहसों उच्चार करिकें । रिषभकों छोडिकें षड्जामें आवें पिछे अव-रोह निषाद पंचमको उच्चार करि मध्यममें विश्राम करे । इहां आरोह अवरोहमें । धेवत । १ । रिषभ । २ । ये दोनू नही लीजिये। सो मध्यमादिको चोथा स्वस्थान

जांनिये तहां वंसनिमें मुदित मध्यम स्वग्रह जांनिये । ४ । **इति मध्यमादि राग उपजायवेको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ मालवश्री रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां षड्ज स्वर ग्रह होय । और षड्जको उच्चार गमकसों करि फेर सूधो। षड्जको उच्चार करि । रिषभ । १ । मध्यममें गमक कीजिये । फेर षड्जको कंप करि षड्जकों झुलावे। और पंचम मध्यम । गांधार । इनको दोय बार अवरोह करि । फेर मध्यमकों झुलाय कंप करि । षड्जको लघु उच्चार कीजिये । फेर रिषभ मध्यमकों दोय वेर कंप करि तीन वेर षड्ज गांधारकों वरताव करे । षड्जमें न्यास होय । सो मालवश्रीको पहलो स्वस्थान जांनिये । १ । जहां पहलो स्वस्थान वरतिकें । निषादमें विलंब करि निषादसों अवरोह कीजिये । पहले स्थानके पांच स्वरकों ओर षड्जमें विश्राम कीजिये । सो दूसरो स्वस्थान जांनिये । २ । जहां दूसरो स्वस्थान वरतिकें धैवत ताई छह स्वरको कंप कीजिये।फेर निषादको गमक करि। षड्ज ताई अवरोहण कीजिये । सो तीसरो स्वस्थान जांनिये । ३ । जहां मध्यमको गमक करिकें मध्यम स्थानके षड्ज वरतिकें । अवरोहसों निषादको गमक करि फेर निषादमें विलंब करि । फेर सूधे निषादकों उच्चार करि तीसरे स्वस्थानके क्रमसों षड्ज ताई । अवरोह कीजिये । सो चोथो स्वस्थान जांनिये । ४ । मालवश्रीमें षड्ज । १ । अथवा रिषभ । २ । ये स्वर मुद्रित ग्रह स्वर होत हे ॥ **इति मालवश्रीको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ तोडी रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वर स्थाइ होय। अरु पंचमको कंप करि । निषादमें विलंब करि । निषादकों वा धैवतकों सीताविसों गमक करि । फेर धैवतकों सूधो उच्चार करि मध्यममें न्यास कीजिये सो तोडी रागको पहलो स्वस्थान जांनिये । १ । जहां पहले स्वस्थानको स्वरनकों आरोह करि । पंचम तें मध्यमस्थानके षड्जताई आरोह क्रमसों मध्यममें स्वरमें आवे । सो दूसरो स्वस्थान जांनिये । २ । जहां मध्यमतें मध्यमस्थानके रिषभ ताई । आरोह करि या रिषभसों मध्यम ताई अवरोह कीजिये। सो तीसरो स्वस्थान जांनिये । ३ । जहां मध्यमतें मध्यमस्थानके मध्यम ताई । आरोह करि या मध्यमतें । पहले मध्यम ताई । अवरोह कीजिये । सो चोथो स्वस्थान

जांनिये । ४ । इहां मुद्रित मध्यमस्वर । तोडीरागकों ग्रहस्वर वंसीमें जांनिये ॥ **इति तोडी रागको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ बंगाल रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्वरकों उच्चार करि गांधार वरतिये । फेर मध्यम पंचमको । ५ । कंप कीजिये । फेर धैवत निषादको लघु उच्चार कीजिये । धैवतको गमक करि । धैवतको उच्चार करि मध्यममें न्यास कीजिये । सो बंगालको प्रथम स्वस्थान जांनिये । १ । जहां मध्यमतें लेकें । मध्यमस्थानके षड्ज ताईं आरोह करि । पहले स्वस्थानकी सिनाइ अवरोह करि विश्राम कीजिये । सो दूसरो स्वस्थान जांनिये । २ । जहां मध्यमतें लेकें मध्यमस्थानके गांधार ताईं आरोह करि पहले स्थानकी सिनाई अवरोह कीजिये । स्थाईमे विश्राम होय । सो तीसरो स्वस्थान जांनिये । ३ । जहां मध्यमतें मध्यमस्थानके मध्यम ताईं आरोह करि पहले स्थानकी । सिनाई अवरोह करि स्थाइमें विश्राम कीजिये । सो चोथो स्वस्थान जांनिये । ४ । इहां वंसीमें या रागको ग्रह स्वर । सातों छेद मूंदियेतें । जा वंसीनमें जो स्वर होत हें ॥ तातें दूसरो स्वर लीजिये । सो बंगाल रागको लछन जांनिये ॥ **इति बंगाल रागको प्रकार–लछन संपूर्णम् ॥**

अथ भैरव रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां धैवत स्थाइ स्वर होय । अरु पंचम । १ । धैवत । २ । को उच्चार करि मध्यमस्थानके षड्जको उच्चार कीजिये फेर पंचमको उच्चार करि । मध्यमस्थानके षड्जके कंपसों विलंब कीजिये फेर दोय तीन वेर निषादको गमक करि धैवतमें विश्राम कीजिये । सो भैरवको प्रथम स्थान जांनिये । १ । जहां धैवततें लेकें मध्यमस्थानके गांधार ताईं । आरोह करि । प्रथम स्वस्थाईं स्थान ताईं । अवरोह कीजिये । सो दूसरो स्वस्थान जांनिये । २ । जहां धैवतसों लेकें मध्यमस्थानके मध्यम ताईं । वा पंचम ताईं । आरोह करि । दूसरो स्वस्थानकी सिनांई । अवरोह करि विश्राम कीजिये सो तीसरो स्वस्थान जांनिये । ३ । जहां धैवतसों लेकें मध्यमस्थानके धैवत ताईं आरोह करि । तीसरे स्वस्थान कीसीनाई । अवरोह रचि विश्राम कीजिये । सो चोथो स्वस्थान

जांनिये । ४ । इहां सातों छेद मूंदें तें जब पंचम स्वर होय । तातें दूसरो धैवत ग्रह स्वर वंसीमें जांनिये ॥ **इति भैरव रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ गुर्जरी रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां रिषभ स्वर स्थाइ होय। षड्जको ओर आधे रिषभको कंप करि । रिषभ । १ । गांधार । २ । या दोऊनको उच्चार करि । मध्यमको उच्चार कीजिये । या मध्यमतें अवरोह क्रमसों रिषभमें आयकें षड्जको कंप करि । आधो रिषभ कंपस्य । रिषभमें विश्राम कीजिये । सो प्रथम स्वस्थान जांनिये । १ । आगेके तीन स्वस्थान बुद्धिसों समझिये । इहां सातों छेद मूंदते । जो षड्ज स्वर होय तातें तीसरो स्वर जांनिये ॥ **इति गुर्जरी रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ वसंत रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां षड्ज स्वर ग्रह होय। और रिषभ गांधार । एक वेर गमक दिखाय।फेर मध्यमको उच्चार करि मध्यमतें रिषभ तांई । अवरोह करिकें षड्जको न्यास कीजिये । सो वसंतको प्रथम स्वर स्वस्थान तांई जांनिये । और वंसीमें तीसरो स्वर वसंतको स्थाइहें सो जांनिये ॥ इन प्रकार वसंतको लच्छन जांनिये ॥ **इति वसंत रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ धनासरि रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज स्थाई होय । फेर आधो षड्ज लघु वरतिकें पीछे एक वेर आधे षड्जको गमक करि । सुध षड्जको उच्चार करि । गांधार मध्यम वरति । गांधारको गमक कीजिये । और मध्यमको द्रुतवेगसों उच्चारण कीजिये । पंचमको विलंब कीजिये । फेर मध्यम गांधारको जामें न्यास कीजिये । सो धनासरिको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें सातो छेद मूंदियेतें । जो स्वर होय तासों दूसरो स्वर याको ग्रह जांनिये ॥ **इति धनासरि रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

अथ देशी रागको प्रकार लिख्यते ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज स्थाइ होय । रिषभको द्रुतवेगसें उच्चार करि । पीछे षड्ज रिषभको लघु उच्चार कीजिये । फेर गांधारको विलंब करि दोय वेरि पंचमकों हलायकें । मध्यमतें रिषभ तांई । अवरोह करि षड्जमें न्यास कीजिये । सो देसी रागको स्वस्थान जांनिये ॥ इहां वंसीके दोय छेद खोले तें । जो स्वर होय सो ग्रह जांनिये ॥ **इति देशी रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

या पंचममें विलंब करि । अवरोह क्रमसों
करि । गांधारको दीर्घ उच्चार करे । फेर रिषभको
दीर्घ करि । अवरोह क्रमसों निषाद धैवतको उच्चार
तब पटमंजरीको स्वस्थान होय ॥ याको ग्रह स्वर
पटमंजरीको प्रकार संपूर्णम् ॥

आडि कामोदी ॥ जहां स्थाई धैवत करि । या धैवतमें
रिषभ । २ । गांधार । ३ । मध्यम । ४
करि । मध्यमको कंपसों विलंब करि ।
गांधारको उच्चार करि । अवरोह क्रमसे
आवे फेर धैवतको पहलो । आधो उच्च
फेर धैवतको उच्चार कीजिये । फेर नि
स्थानके षड्जको उच्चार कीजिये । फेर
आडि कामोदीको प्रथम स्वस्थान जांनि
जांनिये ॥ **इति आडि कामोदिकी प्रक**

सुद्ध वराटी ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज स्थाई करि
रिषभकों तीन वेर च्यार वेर बजायकें फेर
फेर मध्यमस्थानके । षड्जकों कंप करि
सो सुद्ध वराटिको प्रथम स्वस्थान जांनिये
स्वर ग्रह होत हैं ॥ **इति सुद्ध वराटीको**

सुद्ध नट्टा ॥ जहां मध्यम स्थानको षड्ज स्थाइ करि । मध्य
षड्ज । दोय दोय वेर गमकसों लीजिये । दोय
रिषभकों उच्चार करि कंपसों विलंब कीजिये ॥
वेर वा [illegible]र वेर गमकसों लेकें । षड्जको
कीजिये । फेर आधो षड्ज अर निषाद
षड्जमें न्यास कीजिये । सो सुद्ध नट्टा
वंसीमें याको रिषभ स्वर ग्रह होयहें ॥ इ
संपूर्णम ॥ ॥ **इति भाषाङ्गानि ।**

मध्यमको द्रुतवेगसों उच्चार
बोलिकें ॥ फेर षड्जकों
करि पंचममें न्यास कीजिये ।
रिषभ वंसीमें जांनिये ॥ इति

मध्यमस्थानके । षड्ज ।१।
। यह च्यारि स्वर आरोह
रिषभको उच्चार करि । फेर
या गांधारतें । धैवतमें ।
र करि । पंचमको वरतिकें ।
षादको कंप करि । मध्यम-
धैवतमें न्यास कीजिये । सो
ये । वंसीमें रिषभ स्वर ग्रह
कार संपूर्णम् ॥
रि । दोय वेर वरतिये ।
निषादकों उच्चार करि ॥
षड्जमें न्यास कीजिये ।
। वंसीमें याको रिषभ
प्रकार संपूर्णम् ॥
॥ संपूर्ण षड्ज । आधो
वेर वा तीन वेर
फेर गांधारकों दोय
लघु वेरसों उच्चार
। दीर्घ उच्चार करि ।
प्रथम स्वस्थान जांनिये ।
इति सुद्ध नट्टाको प्रकार
॥

रामकरि ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज ग्रह स्वर होय । या षड्जकों दोय बेर उच्चार कीजिये । फेर आधो षड्ज करि रिषभकों उच्चार करिये । फेर गांधारकों विलंब करि । रिषभकों द्रुतवेगसों उच्चार करि । फेर आधे षड्जमें ठहरे । फेर संपूर्णको षड्जकों कंप करि । फेर रिषभसों द्रुतवेगसों उच्चार करि । फेर गांधारको लघु उच्चार करि । षड्जमें न्यास कीजिये । तब रामकरिको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें दूसरो स्वर ग्रह जांनिये ॥ इति **रामकरिको प्रकार संपूर्णम्** ॥

गौडकरि ॥ जहां षड्ज स्वर ग्रह करि । गांधार रिषभ आधो षड्ज द्रुतवेगसों वरति फेर निषादकों उच्चार करि । आधे षड्जमें विराम कीजिये । फेर निषादको उच्चार करि गांधारकों लघु करि । फेर रिषभकों गांधार दोउ लघु कीजिये । फेर रिषभको द्रुतवेगसों उच्चार करि षड्जमें न्यास कीजिये । तब गौडकरिको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें रिषभ स्वर याको ग्रह हैं ॥ इति **गौडकरिको प्रकार संपूर्णम्** ॥

देवकरि ॥ जहां धैवत स्थाई करि पंचमकों ग्रह करि उच्चार करिये । फेर निषाद मध्यमस्थानके षड्जकों उच्चार करि । फेर निषादकों गमक करि । धैवतको कंप कीजिये । फेर निषादतें लेकें मध्यम ताई । अवरोह क्रमसों मध्यम ताई च्यारि स्वरकों उच्चार करि पंचममें विश्राम कीजिये । तब देवकरीको स्वस्थान जांनिये । वंसीमें याको गांधार ग्रह स्वर हैं ॥ इति **देवकरिको प्रकार संपूर्णम्** ॥

॥ इति क्रियाङ्गानि ॥

भैरवी ॥ जहां धैवन स्वर ग्रह करि मध्यमस्थानके षड्जसों । धैवत तांई अवरोह करि । विलंब कीजिये । फेर धैवत । १ । निषाद । २ । या दोन्योंको उच्चार करि । धैवतको उच्चार कीजिये । फेर पंचमकें गमकसों उच्चार करि । धैवत न्यास कीजिये । तब भैरवी रागको स्वस्थान जांनिये । याको वंसीमें ग्रह स्वर गांधार हैं ॥ **इति भैरवीको प्रकार संपूर्णम** ॥

छायानट ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज स्थाइ करि । नीचले धैवतको उच्चार करि । निषादको कंप करी । षड्जमें विलंब कीजिये । फेर निषादको लघु उच्चार करि । दोय तीन वेरी षड्जमें गमक कीजिये । फेर आधे निषादको उच्चार करि फेर मध्यमस्थानको कंप करि पंचमको बजायकें । या पंचममें विलंब करि फेर मध्यमस्थानके निषादको द्रुत उच्चार करि । फेर मध्यमस्थानके पंचमको दीर्घ करि । और मध्यम स्वरको लघु कंप करि षड्जमें न्यास कीजिये । सो छायानटको प्रथम स्थान जानिये । वंसीमें याको गांधार ग्रह है । छायानटको षड्ज ग्रह स्वरके स्थान गांधार कीजिये ॥ **इति छायानटको प्रकार संपूर्णम् ॥**

सालगनट ॥ निषाद आदिके स्थानकमें रिषभादिक लीजिये । तब छायानटको सालगनट कहे हें । इहां छायानटमें षड्जकी गिनतीसों जोस्वर लीजिये । सो सालगनटमें गांधार स्वरकी गिणतीसों लीजिये । ऐसें छायानटमें षड्जसों जो जो स्वर जा जा गीणतिको रच्यों होय । तेसेंही सालगनटमें गांधार स्वरसों । ता ता गिणतीको स्वर वाही क्रमसों रचि ॥ सालगनटको रिषभ स्वस्थान कीजिये ॥ **इति सालगनटको प्रकार संपूर्णम् ॥**

चिन्धमरामकरि ॥ जहां मध्यम स्वर ग्रह करिकें । द्रुतवेगसों उच्चार कीजिये । फेर षड्जमें विलंब करि । या षड्जतें मध्यमतांई । क्रमसों अवरोह मध्यममें विश्राम कीजिये ॥ तब चिन्धमरामकरि रामको स्वस्थान पंचम जानिये । वंसीमें याको ग्रह स्वर रिषभहें ॥ **इति चिन्धमरामकरिको प्रकार संपूर्णम् ॥**

नाटरामकरि ॥ जहां रिषभ स्वर ग्रह होय । अरु दोयवेर तीनवेर मध्यमकी गमक करि फेर विलंबसों । मध्यमको दीर्घ करि । फेर रिषभ गांधार आधो रिषभ द्रुतवेगसों उच्चार करि । विलंब कीजिये । फेर रिषभ गांधारको उच्चार करि । रिषभको उच्चार कीजिये । फेर धैवतकी । एकवेर गमक करि । निषादको बजावे । रिषभमें न्यास कीजिये ।

सो नाटरामकरिको प्रथम षड्ज स्वस्थान जांनिये ॥ **इति नाटराम-करिको प्रकार संपूर्णम् ॥**

मल्हार ॥ जहां धैवत स्वर ग्रह करि निषादकों एकवेर गमक करि ॥ फेर निषादकों मध्यमस्थानके षड्जको दोय वेर उच्चार कीजिये ॥ फेर धैवतकों उच्चार करि पंचमकों वरति फेर निषादकों उच्चार करि। धैवतमें उच्चार कीजिये सो मल्हारको स्वस्थान जांनिये। वंसीमें याको रिषभ ग्रह स्वर हें ॥ **इति मल्हार रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

कर्णाट गौड ॥ जहां मध्यमस्थानके षड्जको ग्रह करि । निचलोनिषाद द्रुत-वेगसों उच्चार करि । षड्जको झुलायके रिषभको उच्चार करि । गांधारमें गमक कीजिये । फेर षड्जको निषादको उच्चार करि। षड्जमें न्यास कीजिये । सो प्रथम स्वस्थान कर्णाट गौडको जांनिये । इन कर्णाटक गौडको वंसीमें ग्रह गांधार कहे हें ॥ इति **कर्णाट गौडको प्रकार संपूर्णम् ॥**

देसवाल गौड ॥ जहां मध्यमस्थानके षड्जको ग्रह करि । मध्यमस्थानके मध्यम गांधारकों अवरोहसों उच्चार करि। षड्जको उच्चार कीजिये। फेर षड्जको पिछलो आधो स्वर वरति । पहलो आधो षड्ज फेर वरतिये। पिछे षड्जमें न्यास कीजिये । सो देसवाल गौडको प्रथम स्वस्थान जांनिये । वंसीमें याको गांधार ग्रह कहे हें ॥ **इति देसवाल गौडको प्रकार संपूर्णम् ॥**

द्राविड गौड ॥ जहां पहलि समकके निषादकों ग्रह करि । या निषादमें मध्यमस्थानके गांधारतांई आरोह कीजिये । फेर कछूक विलंब करि या गांधारतें निषादतांई अवरोह करि निषादमें विश्राम कीजिये। सो द्राविड गौडको प्रथम स्थान जांनिये। ओर लौकीकमें याको सालग गौड कहे हें ॥ वंसीमें याको ग्रह स्वर रिषभ हें ॥ इति **द्राविड गौडको प्रकार संपूर्णम् ॥**

॥ इति उपाङ्गानि ॥

कैशिक ॥ जहां पंचम स्वर ग्रह रिषभ धैवतकों उच्चारण कीजिये । फेर निषादकों वरनि मध्यकों वरनिये । पिछे निषादको वरतिये ॥ धैवतकों विलंबसों उच्चारण करि । कंपजुत पंचममें न्यास कीजिये ॥ सो कैशिकको स्वस्थान प्रथम होय । वंसीमें याको गांधार ग्रह स्वर हैं ॥ **इति कैशिक रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

ललित ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज ग्रह करि । द्रुतवेगसों उच्चारण करिके । रिषभको उच्चारण होय ॥ फेर रिषभ गांधारको उच्चारण करिकें । निचलेनिषाद धैवतकों द्रुतवेगसों उच्चारण करिकें रिषभकों दोय वेर तीन वेर गमक करि । षड्जमें न्यास कीजिये सो ललित रागको प्रथम स्वस्थाम जांनिये ॥ सो इणरोस्थान वंसीनमें याको गांधार ग्रह स्वर हैं ॥ **इति ललित रागको प्रकार संपूर्णम् ॥**

श्रीराग ॥ जहां मध्यमस्थानको षड्ज ग्रह करि । निचलेनिषादको स्थाई रूपसों उच्चार करि । मध्यमस्थानके रिषभ मध्यमकों उच्चारण कीजिये । फेर रिषभकों निषादकों चालिके । रिषभमें विलंब करि निषादमें न्यास कीजिये । अथवा षड्जमें न्यास कीजिये । सो श्रीरागको प्रथमको स्वस्थान जांनिये । सो इनरोस्थान वंसीनमें याको गांधार ग्रह है ॥ **इति श्रीरागको प्रकार संपूर्णम ॥**

जा रागको ॥ जो जो ग्रह स्वर वंसीमें होय । सो ग्रह लछिनमें समझिये । जैसे वंसीमें जिन रागनके जे रिषभादिक ग्रह स्वर कहे हैं । तेहि रिषभादिक लछनहूमें जांनिये ॥ और जो रागके वरतिवेमें । ग्रहादि जो स्वर । पांच । ५ । वा छह । ६ । वा सात । ७ । वा स्वर कहे हैं । सो तेही स्वर वंसीमें लीजिये । इहां आलापकी रीतिसों स्वस्थान कहे हैं । ये स्वस्थान कहूं च्यारि स्वर सो हैं । कहू घाटि वधी स्वरसोंहैं । सो तिनरो दोष नही कहते हैं ॥ ज्या रागके वरतिवेमें तारस्थानके जो स्वर स्थाई राम उंचो उठ । सो स्वर और मंद्रस्थानकमें जा स्वरताई राग उतरे । इन दोउ स्वरनके विचले जितने स्वर होय । ते ग्रह स्वर । ओर स्वर । ये दोऊ स्वर ज्यो स्थाई स्वरसों बने सो स्थाई स्वर होत ह सो वांहां राग संपूरन जांनिये ॥ ओर राग षाडव औडव राग ।

एसों तीन प्रकारकी होत हैं। यातें स्वस्थाननमें जो जो स्वर घटि होय तो तो रागाध्यायके हिसावसों। जो रागकी उतपत्ति होय। ता रागनको स्वर सच करिकें लीजिये। जो स्वर ग्रहां स्थाई बनसके। सो स्वर स्थाई कीजिये। इहां बजायवेको मारग दिखायवेमें लियेतें। राग कहे हैं॥ और बाकीनकी राग हैं ते॥ याही अनुक्रम रीतिसों समझ लीजिये॥ **इति बंसीको प्रकरण संपूर्णम्॥**

अथ मुरलीको भेद लिख्यते॥ अथ प्रथम पावामुरलीको भेद है ताको लछन लिख्यते॥ जो नार्थंद्र वंसीकीसीनांई नव। ९। अंगुलीनको वंस होय। और स्वरके पृष्ट। अरा अथवा बांसके पांनसों लपेटिकें॥ लौकिक रीतिसों बजावे कोई मनुष्य सो ताको लछन बुध्दिवान् पुरुष होयसो वंस पावा जांनिये॥ **इति पावामुरलीको भेद है ताको लछन संपूर्णम्॥**

अथ पाविका मुरलीको भेद है ताको लछन लिख्यते॥ जहां बारह। १२। आंगुलको दीरघ होय॥ अरु अंगुठा प्रमाण मोटो होय और चटी अंगुलीनकी उपरली पेरमी माव। ऐसो तरहको पोलो बांस लीजिये॥ तामें बजायवेको एक छेद कीजिये॥ और स्वरनके वास्ते पांच। ५। छेद कीजिये सो ताको लछन है सो बुध्दिवान् पुरुष पाविका कहत हैं। सो याके बजायवें॥ प्रथमतो। यम। १। दूसरो। सर्प। २। तीसरो। यक्ष। ३। चोथो पिसाच। ४। यह च्यारों वंस होय तैसें अनेक रीतिसों बजाईये सो वह वंस पाविकाको भेद है। ताको लछन जांनिये॥ **इति पाविका मुरलीको लछन संपूर्णम्॥**

अथ मारगी मुरलीको लछन लिख्यते॥ जहां दोय हातसों कछूइक वधतो बांस होय। तामें बजायवेको एक मुखरंध्र होय। और स्वरनके लिये छेद च्यारि कीजिये। सो वहि मारगी मुरली बुध्दिवान् पुरुष हो सो जांनिये। यांपे नाद सुंदर होत है॥ **इति मारगी मुरलीको लछन संपूर्णम्॥**

अथ मधुकरी मुरलीको लछन लिख्यते॥ जहां काठकी अथवा सीसीनकी एक पूंगी लंबी अठाईस आंगुलकी कीजिये। वामें तुंबीके बाजाके

आकार बजाइवेको छेद कीजिये । या बजायवेके छेदमों । च्यारि अंगुल जगा छोडो दीजिये ॥ पीछे सात स्वरनके सात छेद कीजिये पीछे जहां मुखरंध्र । सात । ७ । स्वरनके छेद । इनके बीचकी जगोमें निचली तरफकी मधुर मधुर धुनिके लिये । एक छेद कीजिये । ता छेदनमें । एक जो प्रमान मांहि च्यारि अंगुलकी लंबी तांबेकी नलि लगावे ता नलीके मुख उपर हातिदांतकी वा सिपकी गोल चकी लगावे वा छेदमें झाडकी अथवा नरसालके पानकी चंबली कल आकार बनाय । दूधमें भिजाय । उन छेदमें लगावे । फेर वंसी कीनाई बजावे । ताको पंडितजन मधुकरी कहत हैं ॥ सो वह मुरलीको भेद जानिये ॥ इति **मधुकरी मुरलीको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ काहला मुरली है ताको जो भेद ताको लछन लिख्यते ॥ तांबेकी अथवा रूपेकी अथवा सोनेकी तीन हातकी लंबी भोंगली कीजिये । सो वाहीमें चढाव उतारसो पोलि कीजिये । धतूरेके फूलको आकार वाको मुख कीजिये । ओर अन्य भागमें सुंदरताके अरथ । एक कटोरीसो लगाइये । तीन कटोरिनके बीचमें । पवनके निकालनेके वासते छेदन कीजिये सो राखिये । वाके मुखमें मुख लगायो पवन भरिये । तब हुहू सब्द होत है ॥ हातीके सब्द सरिसो विवाह आदि सीगरे मंगलीक कारिजमें ॥ इणीनें बजाइये याको लोकीकमें भूगडो कहत हैं ॥ इति **काहला मुरलीको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ तुण्डकिनी मुरलीको भेद है ताको लछन लिख्यते ॥ जहां दोय हातकी लंबी तांबेकी या सोने–रूपेकी काहलिके आकार भोंगली करि बजावे । सो पंडितजन है सो तुण्डकिनी कहे हैं । याको लौकिकमें तित्तरी कहत हैं । सो तित्तरीहसो । प्रथम जन्मोत्सवमें विवाहादिकनमें दोय दोय बजाइये ॥ ओर कोऊ आचारिज याके दोय जुदेजुदे भेद कहत हैं । सो वह बजावनी वर जोडीके बजाइये । सो यह भेद तुण्डकिनीका समझिये । लौकीकमें तुण्डकिनीको तित्तरीही कहत हैं ॥ इति **तुण्डकिनी मुरलीको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ चुक्काको लछन लिख्यते ॥ तुण्डकिनीकीसिनाई च्यारि हातकी लंबी भोंगली कीजिये । सो चुक्काको बुद्धिवान् पुरुष लछन कहे हैं ॥ **इति चुक्काको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ शृङ्गको लछन लिख्यते ॥ जहां भैंसाको सिंग लेकें । उपरसों सचिकण करिकें आगानें ओर पाछानें । सुंदर सवारिये । ओर वांको मुख गोल कीजिये । ओर वांके निचानें । वृषभकों सिंग लेकें वही सिंगको आठ अंगुलको टूक लंबो लीजिये । सो वहिनें धतुराका फूलकें आकार बनाय । धुनिके लिये लगावे । सो वांको अग्र भाग होय । २ । अंगुलको अथवा । ३ । अंगुलको कांटिकें बजायवेको छेद बनाय करिकें । तूतू सब्द मुखसों पुरुष बजावे । यह सिंग गोवर्धन लीलांके समय । गवाल बाल गहरी उंची धुनिसों बजावे । ताको नाम बुद्धिवान वीवेकी पुरुष शृंगी कहत हे । सो यह शृंगीनके लछन समझिये ॥ **इति शृङ्गको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ संखको लछन लिख्यते ॥ जहां संख ग्यारह अंगुलको लंबो होय । ओर सुद्ध जाकी नाभि भितरसों संवारि होय । वहां तांबेको अथवा रूपेको वा सोनाको । यह तीन धातूको भोंगलीके आकार सीखर लगाइये जीमें संखको मुल आवे सो सिखर लगाइये । तल सीखरके मुख ऊपर आधे आंगुलके प्रमान छेद कीजिये ॥ सीखरके भितर । एक उडद मावे । ऐसो छेद कीजिये ॥ सो संख जांनिये ॥ सो या संखको दोनू हातमें लेकें । हुंभुं थो दिग दिग । इन पाठाछरसों बजाइये ॥ सो संख मंगलीक कारिजमें । श्रीनारायणकी पूजनमें वा आरतिमें तो यह दोन्यु काममें तो मुख्य संखकी धुनि कीजिये ॥ या संखके बजायेते । भूत । १ । प्रेत । २ । पिशाच्च । ३ । ब्रह्मराक्षस । ४ । राक्षस । ५ । सिकोतिरी । ६ । षट् प्रकारका छल छिद्र मिटजाय हें ॥ जैसें भगवानकी पूजनमें संख होय ॥ ता संखके संखोदकतें । अनेक उपद्रव मिटे तैसें संखकी धुनितें ॥ सर्व विघन मिटजात हें ॥ **इति संखको लछन संपूर्णम्** ॥

सुनारि ॥ जहां रक्तचंदनके काठको एक हात लंबो पोलो बांसके आकार एक भोंगली कीजिये । ताको मुख धतुराके फूल समान कीजिये । वांको एक विलस्तिको ऊपरलो भाग छोटि ॥ एक एक अंगुठाके अंतरसुं छोडी । जाडी बोरको बीज मावे । या प्रमाण गोल आठ छेद कीजिये ॥ वांके मुखमें च्यारि च्यारि अंगुलको लंबो देवनाल कीजिये ॥ मिहि नरसलकी च्यारि अंगुल

लंबी भोंगली कीजिये ॥ ता भोंगलीके मुख ऊपरि हातिदांतकी । वा काटकी गोल चकी लगावे ॥ फेर वा भोंगलीके मुखमें । एक नरसलको कलस लगावे । वह कलस मुखमें लेकें पवन भरिये । ओर बांये हातकी तीन अंगुलीसों । प्रथम तो निषाद ॥ १ ॥ द्वितीय धैवत ॥ २ ॥ तृतीय पंचम ॥ ३ ॥ यह तीन उपरले क्रमसों । तीन स्वर मुंदिये । दाहिने हातनकी तीन अंगुलीसों । प्रथम तो मध्यम ॥ १ ॥ द्वितीय गांधार ॥ २ ॥ तृतीय रिषभ ॥ ३ ॥ यह तीन स्वर मुंदिये तें । इहां उपरलो छेद एक नादरंध्र हें । सो धुनिकें लिये खुल्यो राखिये ॥ ओर नीचलो एक छेद षड्जको उच्चारको खुल्यो राखिये । बीचके छह छेद मुंदिये दोऊ हातनकी चटी अंगुरी खोलि राखिये ॥ तहां दाहिणे हातकी तीसरी अंगुरी उठायेसों । रिषभ गांधार स्वर प्रगट होय । ओर दाहिने हातकी बीचली अंगुली उठाये तें । गांधार ओर दाहिनें हातकी पहली अंगुली तर्जनि उठायेतें । सो वीणामें मध्यम प्रगट होय हें ॥ ऐसें बांये हातकी तीसरी अंगुरी उठाये तें ॥ वहिसों पंचम स्वर प्रगट होय हें ॥ ओर बांये हातकी बीचली अंगुरी उठायेतें ॥ सो वहि अंगुली सो धैवत प्रगट होय हें ॥ ओर बांये हातकी पहली अंगुरी तर्जनी उठायेतें ॥ सोहि अंगुरीसों निषाद स्वर प्रगटता पणाकों प्राप्ति होत भये हें ॥ ऐसें क्रमसों दोऊ हातनकी । अंगुरीतें रिषभादिक छह । ६ । स्वर होत हें ॥ इहां स्वर बुलायवेमें जा छेदमें जो स्वर गहरो बोले तहां वा स्वर बोले तो दूसरी। उंची अंगुलीहसो नहीं उठावामें आवे। जहां ऊंची दूसरी अंगुरी उठायेतें स्वर हलको होजात हें । तहां अंगुरीकों ढीलीसी राखिये ॥ या रीतिसों कोई पुरुष सुनारीकों बजावे ॥ एसें जो बाजो सो सुनारि बाजो जानिये ॥ इति

सुनारिको लछन संपूर्णम् ॥

नागभर ॥ एक लंबि जाकी नालि होय ॥ एसो एक तुंबा लीजिये ॥ वा तुंबाकी पेंदिमें छेद करिकें । दोय नरसलकी मुरली बनाय ॥ तुंबाकें

छेदमें मोमसों जमाय दीजिये ॥ पिछे वा तुंबाके मुखमें ॥ अपनु मुख लगाय बजावे । सो वहि बाजाको बुद्धिवान् पुरुष नागसर कहत हें ॥ इन नागसरकों लौकीकमें पुंगी कहत हें । लौकीकमें पुंगी नाम प्रसिद्ध हें । या पुंगीनसो सर्प देवता बहोत प्रसन्न होय हें । इन पुंगीनकी आवाज सुणा करिकें सर्प देवता वहि नृत्य करवा लगजाय । सो सर्प वो पुंगी सो राजी होय हे । ओर बाजेनसों नहीं होय हें । सो या कारण सर्पको वसकरणो होय तो पुंगी बजाइये । सो वस होवे ॥ या रीतिसों नागसरको लछन जांनिये ॥

इति नागसरको लछन संपूर्णम् ॥

मुखवीणा ॥ जहां नरसल एक विलस्त प्रमाण लेकें । भुर्जपत्रसु लपेटिये । सो इसका नाम लौकीकमें बुद्धिवान् पुरुष मुखवीणा कहत हें । इहां मुखकी पवनसों सब्द होत हें सो जांनिये ॥

चंग ॥ जहां लोहको त्रिशूलके आकार करि बिचके माहि पतलो कीजिये । च्यारि अंगुलकी लोहकी सलाई आडि कीजिये । लंबी सलाई पांच अंगुलकी सुधि कीजिये तहां मुखमें लेवेकों अग्रभाग कछू पतलो टेडोसो कीजिये । ओर मुखतें बाहिर रहे । सो कछूइक मोटो । सूधो कीजिये । याके अग्रमें स्वरहसो घटि बधि करिवेकों मोम लगावे । पीछें याको अग्र दोऊ दांतनके चोकामें दाबिकें जीभिसों पाठाछर करें । मुखके बाहिर । जो सलाईको भाग हें ॥ ताको अंगुलीसों पाठाछर अनुसार ताडन करे तब बजत हें । सो लौकीकमें मुहचंग जांनिये ॥ सास्त्रमें याको चंग कहत हें ॥ **इति चंगको लछन संपूर्णम् ॥**

पत्रिका । जहां जबकी गहरी नली । अढाई । २॥ । अंगुलकी लंबी, एक । १ । अंगुलकी चोडी पाति लीजिये । अथवा केवलके पांनकी पांति बनाय । दांतमेंमें राखि जिभि लगाय । पाठाछर सों बजावे । सो पखेरूकी सीनाई सबद होत हें । याको लौकीकमें पाति बुद्धिवान् पुरुष कहत हे सो जांनिये ॥ **इति पत्रिकाको लछन संपूर्णम् ॥**

स्वरसागर ॥ जहां एक । १ । हातको लंबो । आधे हातको चोडो च्यारि । ४ । आंगुलको मोटो । काठको पाटा वनाय । पोलो कीजिये । वांके दाहिनें ओर डयोड हातको लंबो ॥ दोय पाटानामके वंसी लगावनी उन दोउ मुरलीनके बीच दोय आंगुलको आंतरा राखिके । वंसी लगाइये । फेर उहां मरसलको हुक । एक खेरकी भोंगलीके । मुख उपर मोमसों जमाय । वह खेरकी भोंगली दोऊ मुरलीके उपर लगाईये । उन पाटा दोऊ वंसीमें स्वरके वरतिवेकों चोईस । २४ । छेद कीजिये । उन छेदनसों । सुध्द । १ । विकृत । २ । स्वर वरतिये । तहां दाहिंर्णे हातसों उन छेदनको मुंदिये । ओर बांये हातसों दाबिके सरीरकी मरोडसों । पवनसों पूरण कीजिये । सो स्वरसागर जांनिये । याको लोकीकमें नरसल कहतहें ॥ **इति स्वरसागरको लछन संपूर्णम् ॥**

वक्री रणसिंग ॥ जहां तीन हातकी लंबी भोंगली तांबेकी वा पीतलकी कीजिये । बीचमें तीन आंटा कीजिये। यामें षड्ज पंचम । इन दोऊ स्वरको वरतावे होत हें । यांमे तारस्थानके स्वर सदा होत हें । यांको लौकीकमें रणसींग कहत हें ॥ **इति वक्री रणसिंगको लछन संपूर्णम् ॥**

यहां सुषिरवाद्यको लछन ॥ सास्त्रकी मर्यादासों कहेहें । लौकीक रीतिमें ॥ जेसें प्रसिद्ध तेंसें चतुराइसों कीजिये ॥ **इति सुषिरवाद्यको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ च्यारो बाजोंके दस गुण हें तिनको नाम लिख्यते ॥

रक्ति । १ । विरक्त । २ । मधुर । ३ । अक्षर सम । ४ । सुद्ध । ५ । कल । ६ । घन । ७ । स्फुटप्रहार । ८ । सुभर । ९ । विघुष्ट । १० । यह दस नाम जांनिये ॥

१ रक्ति ॥ जहां जांकी धुनि कानकों प्यारि लगे सो रक्ति हे । १ ।

२ विरक्त ॥ जो बाजो ओर बाजेके संग बजे । अरु अपनि रस दिखावे । सो विरक्त हें । २ ।

३ मधुर ॥ जाकी धुनि गंभीर सो मधुर हें । ३ ।

४ अक्षर सम ॥ आठ प्रकारको है । तहां गीतके गुरु लघु अक्षरके अनुसार । जो बाजो मुखसों बजाइये । सो अक्षर सम जांनिये । ४ ।

१ जो गीतको आरंभ समाप्त इन दोऊनको । निरवाह करे । सो अंग-सम जांनिये । १ ।

२ जो तालको लीये गीतको निरवाह करे । सो तालसम जांनिये । २ ।

३ जो यतिके समान बाजे सो यतिसम जांनिये । ३ ।

४ जो बाजो द्रुत । १ । मध्य । २ । विलंबित । ३ । यह तीनों तालके लय दिखाय बजावे सो लयसम जांनिये । ४ ।

५ जहां गीतको न्यास स्वर होय तहां वाजेहूमे विश्राम करे । सो बाजे न्यास स्वर जांनिये । ५ ।

६ जो गीतको अपन्यास स्वरके कहिये । पिडा बंधिको न्यास स्वर ताको दिखाय सो बाजो अपन्यास समझिये । ६ ।

७ जो बाजो गीतके आरंभमें कहे । सो समपाणि । १ । अव पाणि । २ । उपरि पाणि । ३ । ए तीन हस्तक वाद्य प्रबंध बाजो सहित बजावे । सो समपाणि बाजो जांनिये । ७ ।

८ ऐसें आठ प्रकारको सम जांनिये । ८ ।

५ सुद्ध ॥ जो बाजो सास्त्रकी रीति । वा लौकीक रीतिसों बने । सो सुध जांनिये । ५ ।

६ कल ॥ जो बाजो गीतके अनुसारसों बजे अकारादि अछिर विनाही ऊन अक्षरनकी नकलसों । अनुरंजन करे सो कल जांनिये । ६ ।

७ घन ॥ जो धुनिकी गंभीरतासों दूरि दूरि सुन्योंपरे सो घन जांनिये । ७ ।

८ स्फुटप्रहार ॥ जाको ताडन प्रगट जानिपरे । सो स्फुटप्रहार जांनिये । ८ ।

९ सुभर ॥ जाकी गुंजारसों कंठकी । धुनि रुचि होय ॥ जो मनोहर लगे । सो सुभर जांनिये । ९ ।

१० विघुष्ट ॥ जो बजायवेमें वा सुनिवेमें । उदासीनताको दूरी करे । मनरंजन करे । सो विघुष्ट जांनिये ॥ १० ॥ **इति वाद्यके दस गुणके नाम-लछन संपूर्णम** ॥

अथ बजायवे वारेके लछन लिख्यते ॥ जहां हातसों वा डंकासों बाजेको ताडन करि । बजावे । याके यति । १ । ताल । २ । लय । ३ ।

जानें वाके हातमें दस । १० । गुण होय । जैसो जहां वाजेको काम होय । तहां तैसोहि बजावे । वाजेकी धुनि स्वरकी या विना स्वरकी पहिचानें । गायवेवारेके गीतकी कसरिको प्रगट करे नही ॥ ओर आरंभकी संपूरण क्रिया जानें । गीत नृत्यको भेद जानें सिगरे वाजेके भेदमें प्रवीण होय ॥ संगीतसास्त्रके जानिवे-वारो होय । सो पुरुष मुख्य बजायवेवारो जानिये ॥ इति बजायवेवारेका लछन संपूर्णम् ॥

अथ हातनके दस गुण लिख्यते ॥ जहां हात वाजे बजायवेके लायक सुंदर कोमल होय । १ । हात दृढ होय । २ । हात स्वेद रहित होय । ३ । सचिकन होय । ४ । नखजिसका गाढे होय । ५ । हातमें आलस नही होय ।६। हातकी अंगुली अनेक प्रकारकी रीतिसों चलती होय । ७ । हातनमें पसेव नहीं आवे । ८ । घणी बेरतांई वाजित्र बजावे तोहु हारे नही । ९ । जहां जैसो वाजित्र बजायवेवारो ताडन चहिये तैसोहि करे । १० । ऐसें दस गुणजुत बजायवे वारेको हात चाहिये । ओर अपनी बुद्धिसों जैसो जहां चाहिये सो कीजिये । इन च्यारों वाजेनके भेद अपार हैं परंतु भरत हनुमान आदि आचारिजनें इतनेंही वाजे मुख्यकरि वर्णन करेहें । ओर जो कोऊ पुरुष बुद्धिवान होय । सो इन रीति सों ॥ ओरहू वाजेनका प्रकार जानें ॥ यह च्यारों वाजनके समूहके देवतासुनिवे सुनायवेवारेके आनंद करो ॥ इति संगीतसारे वाद्याध्याय संपूर्णम् ॥

॥ द्वितीय वाद्याध्याय समाप्त ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE
Hon. Secretary Gayan Samaj, Poona.

PART I.I

NARATANADHYAYA.

(Art of Dancing Expression and Dramatic acting.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1910.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्त्रबुद्धी

सेक्रेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ३ रा.

नर्तनाध्याय.

पुना ' आर्यभूषण ' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

१९१०.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

तृतीय नर्तनाध्याय–सूचिपत्र.

तृतीय नर्तनाध्याय.

नाट्यको, नटको, नृत्यको, रंगभूमीको लछन.

अथ संगीतसारे नृत्याध्याय लिख्यते ॥ तहां गीत । १ । वाजित्र । २ । को फलरूप परम आनंदको उपाय जो नृत्य । ओर नृत्यके अंग वरनन करिवेकों । प्रथम अपनें इष्टदेव । संगीतसास्त्रके करता । श्रीपरम शिवजी हें ॥ तिनकों नमस्कार करिकें यह जगत जिनके । आंगक कहिये ॥ सरीरकी चेष्टासों प्रगट भयोहें । ओर वेद पुराण स्मृति महाभारत । उपपुराणादिक । तंत्र आदिक सकल संस्कृत प्राकृत भाषा सुरुप सब्दसमूह जिनको वाचक कहिये । सो वचन बोलिवोहें । ओर सूर्यनारायण । चंद्रमा देवता । सर्वत्र तारा आदिक जोतिचक्र जिनको आचार्य कहिये आभूषणहें । ओर सात्विक कहिये आप शिवजीमहाराज सतोगुणरूपहें । एसें जो शिवजी तिनको । साष्टांग दंडवत करतहें । वे शिवजी हमारि बुद्धि निर्मल करो । श्रीभरत मतंग हनुमान कोहल आदि सकल मुनीश्वर संगीत रत्नमाला पक्षधर मिश्र संगीत पारिजातक अशोकमल्ल राज-ऋषि सारंगदेव, ब्रह्मऋषि अनुष्टुप् चक्रवर्ती कल्लिनाथ आदि संगीत आचारिजके मतसों नृत्याध्याय कहतहें ॥ सो त्रिविध तापकों हर सर्व सुख करे । एसो जो नृत्य, ताके भेद लक्षण समस्त सामग्रि हस्तक आदि सरीरचेष्टा भाव आदि मनकी चेष्टा कटाक्ष आदि ग्यानइंद्रियनकी चेष्टा । ओर जयजय इत्यादि वाणिकी चेष्टा आदि सब क्रमसों लछन लिखतहे । तहां नाट्यवेद श्रीशिवजी पायकें । भरतमुनीनें श्रीशिवजीके आगेरख्यो । तब श्रीशिवजी प्रसन्न होय । अपनें तंडु नामा गणसों रचवायकें । तांडव नृत्य भरतकों दियो । ओर पारवतीजीकों रचायकें लास्यनामा नृत्य दियो । साधा-रण नृत्य ब्रह्माजीसों भरतजीनें पायोहें । वाहीसमें तांडव नृत्य मनुष्यलोकमें आयो । वहि समें बाणासुरकी बेटी उषादेवीनें श्रीपार्वतीजीसों लास्य सिखिकें ।

द्वारिकामें जब श्रीकृष्ण भगवानकी महाराणीनको सिखायो । ऊंन महाराणीनसों सब देसनकी स्त्रीनमें प्रगट भयो । गानवेद च्यारों वेदनको सार हे धर्म अर्थ काम मोक्ष । यह च्यारों पदारथ देतहे । उछाह सुख बढावत हे ॥

सो यह नाट्य तीन प्रकारकोहे ॥ नाट्य । १ । नृत्य । २ । नर्तन ।३। यह तीन जांनिये ॥ अथ इनको रचिवेको समय लिख्यते ॥ यज्ञ । १ । यज्ञतिलक । २ । जात्रा । ३ । देवयात्रा । ४ । विवाह । ५ । प्यारेको संगम । ६ । नगरप्रवेश । ७ । गृहप्रवेश । ८ । पुत्रजन्म । ९ । आदि मंगलीक कारिजमें । १० ।

नाट्यको लछन ॥ जामें रस मुख्य होय । अभिनय कहियेमें मन सरीरकी चेष्टासुं रस उपजावे सो नाट्य जांनिये ॥ या नाट्यको वर्णन कहेहें ॥

अभिनयको लछन ॥ जो विभाव आदिक भावनको प्रगट करि नृत्य देखिवेवारेकों सुख उपजावे । ऐसी जो नटकी चेष्टा सों अभिनय जांनिये ॥ यह अभिनय च्यार प्रकारको हें । जहां सरीरके हात पग । आदि अंगकी चेष्टा कीजिये । सो आंगीक वचनसों जो प्रगट कीजिये । सो कवितावाचिक । हार-मुकुटकुंडल आदि आभूषणकंडोरोधारि । सो आहार्य । ओर अश्रुपात रोमांच आदिकसों मनके सुखदुःखको जताइवो सो सात्विक ये च्यारि जांनिये ॥ या अभिनयकी कर्तव्यता दोय प्रकारकी हे । लोक धर्म । १ । नाट्य धर्म । २ । तहां लोक धर्मीके दोय भेद हें ॥ जो मनकी बातकों प्रगट करे सो चित्तवृत्य-र्पिका । १ । जो चेष्टासों कमल आदि वस्तुकों बनावे सो बाह्य वस्तु अनुक-रणी । २ । अब नाट्य धर्मीके दोय भेद हें ॥ जहां सकुमारतासों काहूकी नकल कीजिये । सो कैशिकी वृत्तिभाव । १ । जहां हात पावकी चेष्टासों प्रगट करिवो लोकमें प्रसिद्धहें । जैसे हातके चलायवेमें कारिजनकी समस्या करिवो सो लोकायत्त स्वभाव । २ । इति **नाट्यको लछन संपूर्णम्** ॥

नृत्यको लछन ॥ जहां नृत्यमें शरीरकी चेष्टासों भाव बनावे सो नृत्य जांनिये ॥ इति नृत्य लछन जांनिये ॥ अब नृत्यको लछन कहेहें । जहां नृत्यमें भाव नही बनाइये । केवल हात पांव गतिके अनुसार चलाइये । सो नर्त जांनिये ॥

तांडवके लछन ॥ जहां नाटकमें रावण हिरण्यकश्यप आदिकी नक-लमें । उनको उद्धतपणों जताइवेकों उद्धत चेष्टा कीजिये । सो तांडव नृत्य जांनिये ॥

लास्यको लछन ॥ जो नृत्य सकुमार अंगसो कामदेव उपजावे । सो लास्य जांनिये । सो यांके तीन भेद हें ॥

१ विषम ॥ जहां टेडो बांको वरतिये । चेटिकें सास्त्र पढिकें नटकों भ्रमण होय । यांही रीतिसों टेडे बांके भाव बताईये । सो विषम । १ ।

२ विकट ॥ जहां बेडोल रूप होय । बेडोल चेष्टा होय । सो विकट । २ ।

३ लघु ॥ जहां चेष्टा चितवाचितवी होय । सो लघु । ३ । ये तीन जांनिये ॥ इति लास्य लछन जांनिये । तहां च्यारि अभिनयमें वाचक । १ । आहार्य । २ । सात्विक । ३ । ये तीन काव्य नाटकमें हे आंगीक अभिनय । १ । नृत्यमें हे ताके भेद कहे हें । जहां नाम प्रकारसों । हातको उठायवो । सो शाखा । १ । जहां पहले भये रामकृष्ण आदि अवतारनके जतायवेकी चेष्टा । सो अंकुर । २ । जो आगे होंनेहारे कलंकी आदि अवतारनकी धर्मस्थापन आदि चेष्टा । सों सुचि । ३ । यह तीन भेद हें ॥ **इति लास्यको लछन संपूर्णम् ॥**

अंग–प्रत्यांग भेद ॥ मस्तक । १ । हात । २ । वक्ष । ३ । पासुं । ४ । कटी । ५ । पग । ६ । यह षडांग मनुष्यके जांनिये । कोऊ मुनिश्वर कांधेकों अंग सातवों कहे हें स्कंध । १ । ये अंग जांनिये । ग्रीवा । १ । भुजा । २ । पीठ । ३ । उदर । ४ । जांघ । ५ । पिंडि । ६ । यह छह प्रत्यंग जांनिये । कोऊ पगु या गोंडा प्रत्यंग कहे हें । ये प्रत्यंग जांनिये । २ । दृष्टी । १ । भोंह । २ । पलक । ३ । नेत्र । ४ । कपोल । ५ । नासिका । ६ । ललाट । ७ । अधर । ८ । दांत । ९ । जीभ । १० । चिबुक । ११ । मुख । १२ । यह समस्त उपांग जांनिये । एडी । १ । ढकुणा । २ । आंगुरी । ३ । हतेली । ४ । पग । ५ । पगथली । ६ । इत्यादि पगके उपांग जांनिये । मुखराग कहिये मुखको तेज, सो, यह जांनिये स्थानक । १ । चार्य । २ । करण । ३ । मंडल । ४ । अंगहार । ५ । यह नृत्यके पांच अंग हें ॥

॥ अथांगप्रत्यांगके भेद ॥

मस्तक	ग्रीवा	दृष्टि	ललाट	एडी	स्थानक	वेश्या	१
हात	भुजा	भौंह	अधर	ढकुणा	चार्य	नट	२
वक्ष	पीठ	पलक	दांत	अंगुरी	करण	भगत	३
पांमु	उदर	नेत्र	जिभ	हतेली	मंडल	नटवा	४
कटि	जांघ	कपोल	चिबुक	पगथली	अंगहार	चारण	५
पग	पिंडि	नासिक	मुख	हातके उपांग	अंगके उपांग	वैतालिक	६

नृत्य करिवे वारेको छह भेद ॥ वेश्या । १ । नट । २ । भगत । ३ । नटवा । ४ । चारण । ५ । वैतालिक । ६ । कहिये । भाट आदि कोलाहट ये जांनिये ॥

वेश्याको लछन ॥ तरुण । १ । महारूपवंती । २ । सुकुमार कहीये । नाजुक । ३ । सोडस वरसकी । ४ । सुंदर कुचवारि । ५ । चित जाको रसमय । ६ । धीट होय । ७ । संगीत सास्त्रमें प्रवीन होय । ८ । सो स्त्री प्रवीन होय सो नृत्यमें लीजिये । सो अनेक देस भाषा संस्कृत प्राकृत संगीत सास्त्रमें प्रवीन होय । हावभाव कटाक्षमें प्रवीन होय वा चतुर होय सो वेश्या जांनिये ॥ १ ॥

नट ॥ नवरसनको प्रगट दिखावे । ऐसो पुरुष नट कहावे ॥ २ ॥

नटवा भगत ॥ जो पुरुष नाचो गावे । सो भगत नटवा जांनिये ॥ ३।४ ॥

चारण ॥ जो पुरुष कणगती वा घुंघराइनकों निकें बजावे गीत कह जाणे ॥ हास्यवचन कहे भलो जाको कंठ होय । सो चारण जांनिये ॥ ५ ॥

वैतालिक ॥ जो पुरुष नृत्यमें चरमकों धरिवो हास्य सुभावको बजायवो पाटाछरको वरनिवो तालकी गति इनमें चतुर होय । ओर नृत्यकी रचनामें बोध करे । सो वैतालिक है ॥ ६ ॥ जाको आंग घणो नमें सीसा उतारे पट्टा उठाले । खड्गकी धार वा थाली उपर नृत्य करे मुखमों मोती पोवे । ऐसो ओर अनेक क्रम रचे । सो कोलाहट जांनिये ॥

नृत्य मंदिर ॥ जहां महेलकी भित सुपेद निरमल रतनकी वा पाषाणकी होय । मण्यासों जडीत होय । जामें सुंदर झरोका होय । अनेक रंगके चदर वा बिछायत आछि होय ॥ फूलकी रचना होय । रत्नको खंभा होय । जहा पन्नानको काम होय । जहां अनेक रंगके काम होय । नानाप्रकारकी सुगंध होय । छहो ऋतुमें सुखकारि होय बडो विसाल होय । ऐसा मंदिरमें नृत्य कीजिये ॥ **इति नृत्य मंदिर लछन संपूर्णम्** ॥

सभा लछन ॥ जहां सभाकी बेठक ऐसी होय । जामें पंडित वैद्य वेदपाठि । कविश्वर जोतसी धर्मशास्त्री लौकीक बातकों प्रवीन तैसे जे पुरुष । ते श्रीमहाराजके दाहिने तरफ बेठे ओर श्रीमहाराजके बांई तरफ । सुरबीर तेग त्याग प्रवीन । सास्त्रमें निपुण । ऐसी क्षत्रिय तहां बैठावे ओर श्रीमहाराजके पुरोहित आदि पूजनीक जन अपनें अपनें स्थानक बेठे । खवास आदि ओर हू शेर कवी ठाडे रहें । आगेको नृत्य कारिके समूह सन्मुख होयके नृत्यविद्या रचे । ऐसी सभा होय ताको बीचमें ऊंचे आसनमें श्रीमहाराज विराजे सो पंडित सभा जांनिये ॥

सभापति लछन ॥ महादानि । १ । गुणज्ञ । २ । धीर । ३ । पात्राअपात्रकों विवेकी । ४ । शृंगाररसमें मगन । ५ । गुणग्राही । ६ । सर्व कलामें प्रवीन कौतुकी कोमल प्रिय वचन बोले सत्यवादि । संगीत सास्त्रमें गंभीर होय सब लोकनके मनकों राजि करे । ऐसें सकल गुण संयुक्त श्रीमहाराज सदा चिरंजीव रहो ॥

नृत्यके रंगभूमीकी प्रथम पूजाविधि ॥ तहां शुभ दिनमें श्रेष्ठ लग्नमें श्रीगणेश । १ । सरस्वती । २ । भवानी । ३ । ब्रह्मा । ४ । विष्णु । ५ । महेश्वर । ६ । रंगभूमीके देवता । ७ । इंद्राणी । ८ । हनुमान । ९ । भैरव । १० । आदि ताल । ११ । वीणा । १२ । मृदंग । १३ । बाजे नाट्यके नायकसों । आचारिज कन्या । इनकों चंदनादि चर्चन तांबूल फूल माला वसन कुंडल हारादिक आभूषणसों पूजिये । ओर नृत्यके स्थानक दोय स्तंभ बराबरके गाढीके उनके ऊपर एक आडो सुंदर काठ राखिये मूठिमें आवे ऐसो दंडके आकार कीजिये । या दंडिकाको हातसों पकरिके जो कोऊ नट आचारज ताो नृत्यमें ठाडो रहे ताउ । १ । लय । २ । गीत । ३ । आदिक वस्तुको रचे । सो रंगभूमि जांनिये ॥

पात्र ॥ या रंगभूमिमें जो नृत्य गुणी करे । सो पात्र कहिये ॥ याके तीन भेद हैं ॥ मुग्धा ॥ १ ॥ मध्या ॥ २ ॥ प्रौढा ॥ ३ ॥ इनको लछन कहेहैं। जहां अधर स्तन ये पुष्ट होय । वामें चेष्टाकी वासना होय । सो प्रथम यौवन जांनिये ॥ १ ॥ जहां जंघा ॥ १ ॥ कटि ॥ २ ॥ ये पुष्ट होय । कुच कठिन होय । सो दूसरो यौवन जांनिये ॥ २ ॥ जहां यौवन अवस्थस्यातें उनमत्त होय । घरमें धन संपत्ति होय । कामदेवकी वासना होय । रति निपुण होय । सो तीसरो यौवन जांनिये ॥ ३ ॥ ये तीन यौवन कहेहें । सो सोलह बरसकी अवस्था होय सो मुग्ध पात्र ॥ १ ॥ चोवीस बरसकी अवस्था होय सो मध्यम पात्र ॥२॥ बतीस बरसकी अवस्था होय सो प्रौढ पात्र ॥ ३ ॥ ऐसें तीन अवस्थाके क्रमसों तीन यौवन जांनिये ॥ इहां वेश्या या नट बालक लीजिये। वृद्ध नही लीजिये। इहां नृत्य करिवे वारेके । सुंदरता आदि सर्व गुण प्रसिद्ध हैं ते पात्र लीजिये ॥

पात्रके गुणदोष ॥ अबे नृत्यको लछन कहे है जो पात्र कोमल ताल ॥ १ ॥ लय ॥ २ ॥ जुत ॥ ३ ॥ वाद्य ॥ ४ ॥ गानसों कोमल अंगकी चेष्टासों नृत्य करे सो नृत्य उत्तम जांनिये ॥ ओर पात्रमें कुरूपता आदिक भेद प्रसिद्ध है । कुरूपता ॥ १ ॥ मूर्च्छना ॥ २ ॥ कर्कस वचन ॥ ३ ॥ जो सरीरकी चेष्टा सुंदर कही हे । ते नहीं होय । ऐसें अनेक दोष हें ते दोष जा पात्रमें होय तें नही लीजिये ॥

अथ पात्र गुण लिख्यते ॥ सरीर मनोहर होय । रूप श्रेष्ठ होय । कान नेत्र विशाल होय । अधरकी अरुनता । दांतनकी बराबर समता । कंठ संखके आकार होय । भुजा वेलके आकार होय । नितंब जाके पुष्ट होय उंचे होय । कांति मधुरता धीरज उदारता धाटता । गौरवर्ण श्यामवर्ण । ऐसें ओर विद्या संगीतमें प्रवीणता आदि अनंत गुण हें । यह जामें गुण नही होय सो दोष जांनिये ॥ **इति पात्रके गुणदोष संपूर्णम्** ॥

पात्रके शृंगार ॥ जाके श्याम सचिक्कन लंबे केसके समूहके अग्रभागमें गांठि दीजिये सो गांठि पीछें लटकति रहे ॥ अथवा गांठके अग्रभागमें फूलनको गुछा रहे अथवा मोतिनकी लरि सों गुहीं फूलजुत वेणी पीठपें होय ॥

ओर अलक दोनू कपोलनपें छुटे होय लिलाटपें केसर कस्तूरी आदि सुगंधकों तिलक होय । नेत्रनमें अंजन काजलके होय । काननमें कुंडल होय । अथवा ताल पत्रक सरिखी टाडी होय दांतनकी पांतिमें लाल वा श्याम मिसि लगाइ होय। वा पानविडी चवायवो होय कपोलनमें कस्तुरिको चित्र । कंठनमें मोतिनकी माला। हातनमें जडाउके सुवर्णके कंकन । अंगुलीमें माणिक निल हीराकी जडित सुवर्णकी मुद्रिका शरीरमें ॥ अगंजाको अंगराग । पायनमें चोरासी घुंवरु आदि बाजेनके गहणा । कटिमें क्षुद्रघंटिका होय । ओर नानाप्रकारके अनेक वरनके यथायोग्य । जो देसको पहरावे होय सो तेसें वस्त्र पहरिये । श्यामवर्ण गोरवर्णको । जेसो चाहिजे तैसो आभूषण वस्त्र पहरिये ॥ **इति पात्र शृंगारके लछन संपूर्णम् ॥**

आचारिजको लछन ॥ स्वरूपवान् होय ॥ १ ॥ नृत्य भेदके तत्वको जानें ॥ २ ॥ तालनके ग्रह मोक्षमें चतुर ॥ ३ ॥ गमक ॥ ४ ॥ रागको घटाना या वधाना जानें ॥५॥ च्यारि प्रकारके बाजे बजायवो जानें ॥ ६ ॥ तालनकी लय ॥ ७ ॥ यति ॥ ८ ॥ पाठाछर ॥ ९ ॥ वाद्यप्रबंध ॥ १० ॥ वीणा आदिक रचना जानें ॥ ११ ॥ पात्र जो नृत्य करिवे वारे ताके हृदयकी बात जानें ॥ १२ ॥ पात्रको भाव बतायवेमें चतुर ॥ १३ ॥ नृत्यके दोष गुणको समझे ॥ १४ ॥ छंद प्रबंधके गायवेमें निपुण ॥ १५ ॥ सभाके जन तिनके मनको जानें ॥ १६ ॥ सभापतिको रिझाय जानें ॥ १७ ॥ ओर संगीतशास्त्र वा ओर सर्व शास्त्रमें प्रवीन होय ॥ १८ ॥ पवित्र होय विद्या क्षमाशील होय ॥ १९ ॥ सदा प्रसन्न मूर्ति होय ॥ २० ॥ पहले आचारजन जो नृत्यगानको संप्रदाय चलया आवे । ताही संप्रदाय सों नृत्य गान रचे ॥ २१ ॥ ऐसो होय सो आचारज उपाध्याय जानिये ॥ **इति आचारिजके लछन संपूर्णम् ॥**

संप्रदायको लछन ॥ जहां गायन वाद्य मृदंग आदि बजायवेतें गुरुमुखसों सीखेसों प्रवीन भये । ऐसें स्त्रीपुरुष बजायवेवारे बत्तीस होय ॥ दोय पुरुष ताल वारे झांजवारे दोय करतालवारे छह वंसी बजायवेवारे चतुर पुरुष । उनमें दोनू वंसी वारेको सहाय करे । सो वे चारि वंसी मधुर धुनिसों बजावें । दोय मुख्य गाय बेवारे होय । आठ गाइवे वारे ऊनको

स्वर साधे । दोय स्त्री गायवेवारी मुख्य होय उन स्त्रीके सहाय करिवेकी । आठ स्त्री गाइवे वारी होय । इन संप्रदायि लोकनके मन माफिक नृत्य करिवेवारो एक पुरुष और एक स्त्री होय । ए सीगरे समाजके नर नारी स्वरूप होय चित्रविचित्र वस्त्र आभूषण व चंदन माला आदि शृंगार कीये होय सिगरे हर्ष करिकें संयुक्त होय एक मन होय स्वरमें मिलिकें गीत ॥ १ ॥ नृत्य ॥ २ ॥ वाद्य ॥ ३ ॥ करे या समूहको उत्तरमें संप्रदाय कहे हें । याहीकों कुटिल नाम कहे हें । या समूहतें । आधो समूह मध्यम संप्रदाय हें मध्यम समूहतें । जो घाटि समूह । सो कनिष्ठ संप्रदाय जांनिये । या रीति संप्रदायकी हें ॥ इति संप्रदायको लछन संपूर्णम् ॥

शुद्ध पद्धतिको लछन ॥ जो सभामें नृत्य करिवेकी रीति । सो सुद्ध पद्धति हे सो कहे हें । जहां संगीत जांनिवेवारे पुरुषके आचारिज रंगभूमिमें प्रथम आइके ठाडो होय । ओर गायवे बजायवेवारे समाजि । अपनें अपनें स्थानमें सावधान होय स्थित होयके । वीणा आदिक च्यारों बाजेनको एक स्वरमें मिलायके । एक गतिमें मिलावे । संग कंठसों आकारको स्वर मिलावे सो याको नाम गजर प्रबंध हें । फेर रंगभूमिमें एक ओर परदा लगाय, ताके भितरि, नाचवेवारे अंगुलीमें फूल लेकें ठाडो रहे । फेर समाजि पुरुष इष्ट देव । श्रीगणेशजी ॥ १ ॥ दुर्गा ॥ २ ॥ सूर्य ॥ ३ ॥ शिव ॥ ४ ॥ विष्णु ॥ ५ ॥ आदि देवतानकी स्तुति प्रबंध गावे ॥ तब परदाके दूरी नृत्य करिवेवारो रंगभूमिमें आवे । तब समाजी लोग प्रवेशके प्रबंधकों गावे । जब नृत्य करिवेवारो पुरुष विघ्न दूरि करिवेकों देवतानके प्रसन्न करिवेकों । रंगभूमीके बीच पुष्पांजलि डारे । तब ब्रह्माजी प्रसन्न होतहें । ताउपरांत नृत्यके गायवेबजायवेके समाजसों यथायोग्य नृत्य करे ताउपरांत प्रबंध छंदसों नृत्य कीजिये । फेर एलादिक प्रबंधमों रस भाव बताइके । साधारण रीतिसों नाटय ॥ १ ॥ नृत्य ॥ २ ॥ नर्तन ॥ ३ ॥ यह त्रिविध नर्त रचिके विश्राम कीजिये ये नर्त रचिवेकी पद्यकी रीति जांनिये ॥ कोऊ मत ऐसें कहतहे सो प्रथम आरंभमें । समहस्तकके पाठाछरसों बाजा बजाइये । समपाठनसों बाजेबजे । तब रंगभूमिमें प्रवेस कीजिये । ओर कोऊ मतसें गीत न्यारो गाइये । बाजो न्यारो बजाइये । ऐसें मत हें ॥

अथ नृत्य करिवेवारे स्त्री वा पुरुषकों गोंडली कहे हैं । यह कर्णाट देशमें प्रसिद्ध है ताको लछन लिख्यते ॥ जहां नृत्यमें सब वाद्य प्रबंध। जिनमें सुंदर कविता ऐसें प्रबंध छंद मुखसों । गानकरत हाथसों कोऊ बाजो बजावत जो स्त्री वा पुरुष । तालसों नृत्य करे सो नृत्य करिवेवारो । गोंडली जांनिये । सो गोंडली नृत्य कारोको नृत्य विधिहें ताकों लछन कहतहे ॥ जहां करनाट देसके पहराव पहरे गाइवे बजायवेवारे होय ॥ फेर प्रथम कीसीनाई एकतालि तालमें बाजो बजावे नृत्य करिवेवारी प्रथम कोसीनाई रंगभूमिमें पुष्पांजलि डारे । नाचिवेवारो अपने दाहिणेबांये ॥ अंगको दिखाय दिखाय चमत्कारसों नृत्य करे एकतालितालं वा निसारताल इनसों वाद्य प्रबंध । और छंद प्रबंधकी लय नानाप्रकारकी वरतिये। तहां प्रबंधनमें । उद्ग्राह ॥ १ ॥ मेलापक ॥ २ ॥ ध्रुव ॥ ३ ॥ आभोग ॥ ४ ॥ सास्त्ररीति समझिकें वरतिये और ध्रुव मंठ प्रतिमंट आदि सात सालग सूड प्रबंध द्रुतलयसों उनमें कहे तालसों वरतिये। और जहां तांडव नृत्य रचिये। सो विलंबितलय लीजिये । और प्रबंधाध्यायमें एकतालीतालसों रूपक कहेहे ॥ तिनको वरतिकें । अनेक प्रकारके आलाप करिकें । अनेक भेद वाद्यादिकनके रचिकें विश्राम कीजिये । सो गोंडली विधि जांनिये ॥ इति **शुद्धपद्धतिको लछन संपूर्णम् ॥**

पेरुणीको लछन ॥ पेरुणी कहीये बहुरूप वा आदि नृत्य करिवेवारे । जाके सरीरमें भस्म आदिक। खेलडंगलग्यो होय। और माथेमें चोटी बधी होय । बाकी माथेमें सवारकीइहोय चरननमे घणे घुंघरा होय। और पांचो अंगनको चेष्टामें चतुर होय। ताल लय नृत्य कला गाइवे बजायवेमें चतुर होय । सर्व सभाको अनुरंजन करे ॥ ऐसो जो नृत्य करिवेवारो पुरुष सो पेरुणी जांनिये ॥ और नानाप्रकारके सांग बनाइवेमें नकल करिवमें चतुर होय । सो नृत्य करिवेवारो पेरुणी जांनिये ॥ इति **पेरुणीको लछन संपूर्णम् ॥**

आचारिज आदिनको गुणनिर्णय ॥ जाको गाइवो बजाइवो नाचिवो सुद्ध संप्रदायसों आवे । सो आचारीजको गुण हे ॥ १ ॥

नटको गुण ॥ जो सरीरके मनके भाव उलटपलट बतावे उंचोनीचो नृत्य गान करे । और नकल स्वांगके भेद जाने सो नटको गुण हे ॥ २ ॥

नृत्य करिवेवारेको गुण ॥ जो मार्गी तालनमें मार्गी राग गाइके नृत्य करिजानें । सो नृत्य करिववारेको गुण है ॥ ३ ॥

वैतालिक भाटकवीश्वरको गुण ॥ जो सीगरे देसनकी भाषा समझे सबकी रीति बतावे चतुर होय । सो वैतालिक भाटकवीश्वरको गुण है ॥ ४ ॥

चारणको गुण ॥ जो आछे घुंगरा बजाय जाने । विकट नृत्यमें चतुर होय । सर्व रागमें प्रवीन होय हास्यवचनतें सबको प्रसन्न करे । सो चारणको गुण है ॥ ५ ॥

सभापतीको गुण ॥ जे काहुकी निंदा साची, वा झूटि, वा विरोधमें वा हासीमें, कबहु नहीं करे । सर्व धर्मकर्ममें लोकरीतिमें चतुराइमें प्रविन होय। जिनके ह्रदयमें दया होय । उदार होय। परउपकारी होय। सत्यवादि होय। रसिक होय। ऐसें सभामें बैठिववार पुरुषनमें गुण चाहिये ॥ जो दाता होय सब सास्त्रकी लौकीककी बात समझे । दयावान् होय सेवकनकी अपराधको समझे गुणगंभीर होय । धीर होय । सो सभापतीको गुण है ॥ ६ ॥

सभाको गुण ॥ राजगुरु पुरोहित कवीश्वर वैद्य । जोतसी । सकुनी धर्मसास्त्री । सास्त्री । मंत्रसास्त्री । पंडित ब्राह्मण । मंत्री आदायत । और प्रधान सभासत । सेवक । खवास । सरवत्र उमराव अनेक सुभट । तरवार बहाद्दर। मंत्री अनेक प्रतिष्ठित धनपात्र । सैन्याके प्रधान। लोक आदिक सभामें विराजमान । सो सभाको गुण है ॥ ७ ॥ **इति आचारिज आदि सिगरेनके गुण संपूर्णम्** ॥

अभिनय ॥ आंगीक ॥ १ ॥ वाचिक ॥ २ ॥ आचार्य ॥ ३ ॥ सात्विक ॥ ४ ॥ यह च्यारि प्रकारके अभिनय कहिये । भावको बताइवो है । तहां सरीरके अंगसों भावको बताइये । सो वो आंगीक अभिनय है ॥

सरीरके अंगमें । प्रथम अंग मस्तक वासो भाव बताइवो ताको भेद-लछन लिख्यते ॥ धुत ॥ १ ॥ विधुत ॥ २ ॥ आधुत ॥ ३ ॥ अवधूत ॥ ४ ॥ कंपित ॥ ५ ॥ आकंपित ॥ ६ ॥ उद्वाहित ॥ ७ ॥ परिवाहित ॥ ८ ॥ अंचीत ॥ ९ ॥ निहंचित ॥ १० ॥ परावृत्त ॥ ११ ॥ उक्षिप्त ॥ १२ ॥ अधोमुख ॥ १३ ॥ लोलित ॥ १४ ॥ ये चतुर्दश जानिये ॥

१ धूत ॥ जो बांई ओर दाहिनी ओर टेडो मस्तक कीजिये । सो धूत सिर मस्तककी चेष्टा ॥ १ ॥ खेदमें या रंजमें हे ॥ १ ॥

२ विधूत ॥ जहां उतावलसों माथो तिरछो झुलावे । सो विधूत सीर सीत पीडामें हे ॥ २ ॥

३ आधूत ॥ एक वेर माथो उपरको वा दोऊ ओरको चलाइये । सो आधूत नाट नृत्यमें हे ॥ ३ ॥

४ अवधूत ॥ एक वेरि उंचो मुख करि सूधो करे सो । अवधूत सिर आचारिजमें हे ॥ ४ ॥

५ कंपित ॥ सीत व्याधि मूर्च्छा मोह जहां उपर नीचंकु वेरवेर माथो हलाय कंपावे । सो कंपितमिव संदेह वातमें हे ॥ ५ ॥

६ आकंपित ॥ हरवें हरवें उपर तें तिरछे मस्तक बतावे । सो आकंपित कहिवेमें पूछवेमें हें ॥ ६ ॥

७ उद्वाहित ॥ एकदम सिर उपर उठाके इस कार्यमें समर्थ है । ऐसे अभिमानका प्रयोग जिसमें किया जाय उसको उद्वाहित कहे हे ॥ ७ ॥

८ परिवाहित ॥ दाहिनें बांये कांधे पे सीर नमाय चले सो परिवाहित सीर स्रीनकी लीलामें होय हे ॥ ८ ॥

९ अंचित ॥ जहां एक ओरके कंठको ऊंचोको । एक ओरको सिर झुकतो रहे । सो अंचित ॥ ९ ॥

१० निहंचित ॥ लाज चिंतासों कम हे दोऊ कांधे ऊंचे करि सिर नींचो करिये सो निहंचित सीर स्रीके विल्लासमें हे ॥ १० ॥

११ परावृत्त ॥ पीछेको मस्तक करि देखिवो सो परावृत्त सिर जो पीछे पुरुष होय ताके देखिवेमें वा पूछवेमें होय वा लेनें मांगीवेमें होय ॥ ११ ॥

१२ उत्क्षिप्त ॥ एक वेर मस्तक ऊंचो करि ऊपरको देखिये । सो उत्क्षिप्त सीर रूप देखिवेमें हे । सूरज तारा चंद्र आकासमें हें ॥ १२ ॥

१३ अधोमुख ॥ ऊंचो सिर करि जो रहे । सो अधोमुख सिर हे ॥ १३ ॥

१४ लोलित ॥ च्यारों दिसामें मस्तकको झूलावे । सो लोलित सीर व्याधि मूरछा भूत लगे जब होय हें ॥ १४ ॥ इति चोदह प्रकारके सीरभेद संपूर्णम् ॥

अथ च्यारि सीरके प्रकार लिख्यते ॥ माथेकों तीरछो ऊंचो करे नीचो करे सो तिर्यग उतोन्नत ॥ १ ॥ कांधपर सीर राखिये सो स्कंधानन ॥ २ ॥ जहां दोनू कंध माथेमों लगाय माथो बतावे सो आरात्रिक ॥ ३ ॥ सहज स्वभावसोंहि मस्तक राखे सो सम ॥ ४ ॥ **इति च्यारि सीरके प्रकार संपूर्णम् ॥**

॥ अथ दशाककी चेष्टाको लछन लिख्यते ॥

१ यढनाम हस्त ॥ जहां हात फैलाय अंगुरी लंबी करि मिलायके । सत्रंके मुख उपर ताडन करिवेको हस्तक राखिये । सो यढनाम हस्त जांनिये ॥ १ ॥

२ पताक नाम हस्त ॥ जहां हतेली च्यारों अंगुली फैलाय अंगुठाके पासकी पहली अंगुलीकी जोडमें अंगुठा कोंडके लगाये । सो पताक नाम हस्त ॥ २ ॥

३ त्रिपताक हस्त ॥ याही पताकमें तीसरी अंगुली कोंडिये । सो त्रिपताक हस्त ॥ ३ ॥

४ अर्धचंद्र हस्त ॥ जहां पताकमें अंगुठा कोंडसके नही बांई ओर को लंबो अंगुठा राखिये । सो अर्धचंद्र हस्त ॥ ४ ॥

५ कर्तरी मुख हस्त ॥ जहां पताकमें तीसरी अंगुरी संकोर पहली अंगुरी बीचली अंगुरीकी पीठपर चढाइये । सो कर्तरीमुख हस्त ॥ ५ ॥

६ आराल हस्त ॥ जहां हातके फैलाय अंगुरी च्यारि सुधि राखिये । तहां अंगुठा पासकी अंगुरी धनुषके आकार टेढि करि वांकी जोडमें अंगुठाकोंड तल लगाइये । याकी तीन आंगुरी अग्रमें कछूइक टेढि होय । सो आराल हस्त ॥ ६ ॥

७ मुष्टी ॥ जहां च्यारों अंगुलीकों कोंडके उनको अग्र हतेलीमें मिलाय हातकी मुठि बांधे । बीचली अंगुरीके उपरि अंगुठाकों जबर राखिये । सो मुष्टी ॥ ७ ॥

८ शिखर ॥ जहां मुठीमें अंगुठा उपरको लंबो कीजिये । सो शिखर ॥८॥

९ कपित्थ ॥ जहां मुठीमें अंगुठा पासकी अंगुरीकों अग्र । अंगुठाके अग्रसों लगाई सेल कीजिये । सो कपित्थ ॥ ९ ॥

१० खटका मुख ॥ जहां कपित्थमें तीसरी आंगुरी चटी आंगुरी जुदी जुदी उपरकों सुधि करि कछूइक टेडि कीजिये । सो खटका मुख ॥ १० ॥

११ शुकतुण्ड ॥ जहां अराळ हस्तमें पहली बीचली अंगुली दोनू अंगुरी घनी टेडी कीजिये । सो शुकतुण्ड ॥ ११ ॥

१२ पद्मकोश ॥ जहां कमलके फूलके आकार अंगुठा अंगुरी कीजिये। सो पद्मकोश ॥ १२ ॥

१३ अलपल्लव ॥ जहां पांचों अंगुरीकी राय बांइ ओरके अंगुरीनसें दाहिणी ओरके पासमें लाइ हथेलिमें ओरकों नमाय टेडी कीजिये । सो अल-पल्लव ॥ १३ ॥

१४ सुचि मुख ॥ जहां खटका मुख हस्तमें । तर्जनी अंगुठासों टेडी करि नहीं लगाइये । सुधि लंबी तर्जनी कीजिये । सो सुचि मुख ॥ १४ ॥

१५ सर्पशिर ॥ जहां पांचो अंगुरी मिळाय सूधि करि । सर्पके फणीके आकार टेडी कर नमाइये । सो सर्पशिर ॥ १५ ॥

१६ चतुर ॥ जहां बिचली अंगुरीके बीचमें पेर वाके अंगुठाको अग्र लगाइ चटी अंगुरी उपरकों सूधी कीजिये । सो चतुर ॥ १६ ॥

१७ मृगशीर्ष ॥ जहां सुध हातकी अंगुरी मिलाय। अग्रमें टेडी कीजिये। चटी अंगुरी अंगुठा लंबे सुधे कीजिये । सो मृगशीर्ष ॥ १७ ॥

१८ हंसवक्त्र ॥ जहां अंगुठा ओर अंगुठा पासकी दोय अंगुरी यह तीनों मिलाइये बाकी दोय अंगुरी जुदी उपरकों कीजिये। सो हंसवक्त्र ॥ १८ ॥

१९ हंस पक्ष ॥ जहां अंगुठा संकोच पहलि तीन अंगुली जोडमें नमाय सुधी कीजिये । ओर चटी अंगुरी उपरकों सुधि कीजिये। सो हंस पक्ष॥ १९ ॥

२० भ्रमर ॥ जहां अंगुठा बीचली अंगुलीकों अग्र मिळायकें । बाकी अंगुरी जुदी कीजिये । सो भ्रमर ॥ २० ॥

२१ मुकुल ॥ जहां पांचो अंगुरी लंबी कर उनके अग्र कलिकी सिनाई मिलावे । सो मुकुल ॥ २१ ॥

२२ ऊर्णनाभ ॥ जहां पांचो अंगुली नमाय ऊनके अग्र मिळाइये । सो ऊर्णनाभ ॥ २२ ॥

२३ संदंश ॥ जहां अंगुठा अंगुठा पासकी । अंगुरी इनके अग्रभाग मिलाय । लंबी कीजिये। ताकी अंगुरी न्यारी न्यारी लंबी रहे । सो संदंश ॥ २३॥

२४ ताम्रचुड ॥ जहां अंगुरी अंगुठा अरु बीचली अंगुरीके अग्र मिलाय पहली अंगुरी उपर टेडिटाही कीजिये । बाकी दोय अंगुरी नीचे राखिये। सो ताम्रचुड ॥ २४ ॥

२५ कांगुल ॥ जहां घटीके पासकी अंगुरी टेडी कीजिये । बाकी घटी अंगुरी उपर कीजिये । और अंगुठा अंगुठा पासकी दोय अंगुरी न्यारि न्यारि लंबी उंची कीजिये । सो कांगुल ॥ २५ ॥

२६ गोकर्ण ॥ जहां अंगुठा पासकी अंगुरीकी पीठ ऊपर अंगुठा अग्र लगाइये । च्यारों अंगुरी लगाइकें कानके आकार उंची मिलाय कीजिये । सो गोकर्ण ॥ २६ ॥ इति छविसको हस्तक नाम–लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ दोऊ हातनके मिले तेरह हस्तक होत हैं तिनको नाम लछन लिख्यते ॥

१ अंजलि ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुरी कर बराबर मिलावे । सो अंजलि है ॥ यह नमस्कारमें होत हैं ॥ १ ॥

२ कपोत ॥ जहां दोनू हात अंजलीकी सिनाई पास पास राखिये । आपसमें हातकी अंतरो अंगुल एक वा दोय अंगुलको होय । सो कपोत बडे पुरुषके बतलायवेमें होत हैं। या कपोतको नाम कोऊक आचारिज कूर्म कहत हैं ॥२॥

३ कर्कट ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुरी आपसमें बाहर भीतर मिलाय कडकाइये । सो कर्कट आलस मोडीमें या संख बजायवेमें होत हैं ॥ ३ ॥

४ स्वस्तिक ॥ जहां पहुचामें पहुचा राखि दोऊ हात तिरछे छातिपे राखि । सो स्वस्तिक परस्त्रीनके व्यवहारमें बतलायवेमें होत हैं ॥ ४ ॥

५ दोल ॥ जहां कांधे ढीले करके दोऊ हातनकी अंगुरी न्यारी न्यारी लंबी कर उपरकों । अथवा नीचेंकों लटकाय दोऊ हात झुलाइये। सो दोल ॥ यह राजा वा सिद्ध मुनीश्वर वा मल्लके सहज चलवेमें होत हैं । स्त्रीके आलिंगनमें स्त्रीके हास्य होसमें भी होत है ॥ ५ ॥

६ पुष्पपुट ॥ जहां दोऊ हातकी अंगुरी नमाय एक ओर हात मिलावे। ऐसें अंगुरीकी तरह कीजिये। सो पुष्पपुट यह सूर्यनारायणके अर्घ्यदानमें वा पुष्पांजलिमें । वा पितृ कारजमें तर्पणमें । विनयमें वा राजानसों बोलिवेमें होत हैं ॥ ६ ॥

७ उत्संग ॥ जहां पुहचामें पुहुचा लगाई । दोनू हातनसों दोनू भुजा एक करिये। दाहिनें हातसों बांई भुजा बांयेसों दाहिनी भुजा। सो उत्संग ॥ यह स्रीक प्रयोगमें। वा क्रोधमें होत हैं ॥ ७ ॥

८ खटका वर्धमान ॥ जहां दोनू हातनमें खटका मुखहस्तकर दोनू हातोमें हैं। सान्हे कीजिये। अथवा पहुचिपे पहुंचि राखि स्वस्तिककी रीतिसों कीजिये। सो खटका वर्धमान यह प्रमाण सत्य बोलिवेमें होय ॥ ८ ॥

९ गजदंत ॥ जहां दोनू हात सुधे कर कांधके पास लगाइये। दोनू हातकी अंगुरीपर सरपके फणकी सिनाई। आगेंको टेडी कीजिये। सो गजदंत यह विवाहमें कन्या वरकों ल्याइये। वा खंभकों पकडवेमें पीछेके कांधके। वा झुलेवेमें सहारो राखे। ओर वृक्ष उखारिवेमें होय ॥ ९ ॥

१० अवहित्थ ॥ जहां दोनू हातनके शुकतुंड हस्त करि उनकों आधें करि छातिकें सनमुख राखि नीचेंकों चलाइये। सो अवहित्थ यह दुबरी देहकी नस अथवा भूके पुरुषके दिखायवेमें वा भयंकरनके दिखायवेमें होय हैं ॥ १० ॥

११ निषध ॥ जहां बांये हातमें मुकुल हस्त करि वा मुकुल हस्तकों दाहिनें हातकों कपित्थ करि पकरिये। सो निषध यह गंभीरता गर्व सूर वीरता धीरजमें होय ॥ ११ ॥

१२ मकर ॥ जहां दोऊ हात तले उपर राखे अंगुठा कनिष्ठा अंगुरी उपरकों उंचि राखिये। सो मकर यह सिंध वा वगेरा देखिवेमें ओर। नदीके तीर मगर मच्छ बतायवेमें होय ॥ १२ ॥

१३ वर्धमान ॥ जहां दोऊ हातनमें हात होय। हंसपक्षकरि आधें स्वस्तिक कीनाई छाति सनमुख चलाइये। सो वर्धमान ॥ यह कीवारि उधारिवेमें। मांग केस वारवेमें। अन्नके वीणवेमें होयहै सो जानिये ॥ १३ ॥ **इति तेरह संयुतहस्तक संपूर्णम्** ॥

अथ राग कुतुहलको गीतापरिषद् नृत्य निर्णयके मतसों च्यारि हस्त लिख्यते ॥ जहां मुकटवा पाघ बतायवेको माथेपे पताक हस्तक धारिये । सो किरीट ॥ १ ॥ जहां ताम्रचूडक हस्तक दोऊ हातनमें हात सांखलके आकार मिलाइये । सो शृंखलाकार ॥ २ ॥ जहां दोऊ हातनमें अर्धचंद्र करि तिरछी हतलि दोन्यु हातकी मिलावे । सो दर्दुर ॥ ३ ॥ जहां एक हातकी मुठीपर दूसरे हातकी मुठि राखिये । सो योगमुष्टिक जानिये ॥ ४ ॥ **इति च्यारि हस्तक संपूर्णम् ॥**

अथ नृत्य हस्तक लिख्यते ॥ जहां अभिनय कहतें भाव बतायवो ताके सहारे देवेवारे च्यारि करन कहतहे ॥ जहां चटी अंगुरीसों वो लेके सिगरे अंगुरी फीराय या क्रमसों होय । सो व्यावृत हस्तक ॥१॥ जहां व्यावृत हस्तक निचेको करिये चटि । आंगुरीसों बाहिरि । सो परिवृत हस्तक ॥ २ ॥ जहां अंगुठातें लेके पांचो अंगुरीनकी भ्रांति होय । सो उद्वेष्टित हस्तक ॥ ३ ॥ जहां उद्वेष्टित हस्तकको आधो कीजिये । सो अपवेष्टित हस्तक ॥ ४ ॥ **इति कर-हस्तक लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ नृत्यके हस्तकको लछन ॥

१ चतुरस्र ॥ जहां छातिसों आठ आंगुलके अंतर दोऊ हात करि उनमें खटका मुख हस्तक कीजिये । सो चतुरस्र ॥ १ ॥

२ उद्धृत ॥ जहां दोऊ हात छातिके सनमुख राखि उनमें हस्तपक्षक कीजिये । तामें एक हात निचेको चलाइये । एक छातिपे ल्याइये । सो उद्धृत ॥२॥

३ तलमुख ॥ जहां दोऊ हातनमें हंसपक्ष हस्तक रचि । आम्हांसाम्हां राखे । फेर ऊनको इतें उत चलाइये । सो तलमुख ॥ ३ ॥

४ स्वस्तिक ॥ जहां दोऊ हातके पहुचापे पहुचा राखि हातनमें हंसपक्ष हस्तक करि दोऊ कांधेपे राखिये । सो स्वस्तिक ॥ ४ ॥

५ विप्रकीर्ण ॥ जहां दोऊ हातनसों हंसपकरित कालस्वस्तिक करि छोडिये । सो विप्रकीर्ण ॥ ५ ॥

६ अराल ॥ जहां छातिपे आगे एक हातपे आराल कीजिये दोऊ हात दाहिनी बांइ तरफ तिरछे लगाइ छातिपे लेआवे । सो अराल ॥ ६ ॥

७ आविद्धवक्र ॥ जहां कुंणीके कांधेके विलाससों फरकायकें हतेली आधी करि छातिपास राखिये । सो आविद्धवक्र ॥ ७ ॥

८ सुचिमुख ॥ जहां दोऊ हातमें सर्पसिर हस्तक करि चढि आंगुरी पसारिये फेर दोऊ बांही तिरछि फेलाइये । सो सुचिमुख ॥ ८ ॥

९ रेचित ॥ जहां दोऊ हातमें हंसपक्षहस्तक करि वेगसे भ्रमाय बांये दाहिनें तिरछे पसारिये । सो रेचित ॥ ९ ॥

१० अर्धरेचित ॥ जहां दाहिनें हातमें हंसपक्ष करि फिराय पसारिये । बांये हातमें चतुरस्रहस्तक करि छाति सनमुख राखिये । सो अर्धरेचित ॥ १० ॥

११ नितंब ॥ जहां दोऊ हातनमें पताकहस्तक करि । दोन्यों कांधेपे राखि भ्रमावन कटिपें ल्यावे । सो नितंब ॥ ११ ॥

१२ पल्लव ॥ जहां दोऊ हातनमें आधे त्रिपताकहस्तक रचि । माथेकी बराबर ऊंचे करि दोन्यो पहुचा मिलावे । सो पल्लव ॥ १२ ॥

१३ केश बंध ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक करि कांधेपें राखिये भ्रमावत कटिताई ल्याईकें । फेर कटिसों भ्रमावत माथेतांई उंचे कीजिये । सो केश बंध ॥ १३ ॥

१४ उत्तान वंचित करण ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक करि ललाटतें कांधे तांइ फीरावत तिरछे करि कांधेपे राखिये । सो उत्तान वंचित करण ॥ १४ ॥

१५ लता हस्त ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक रचि । पांसुकी बराबर राखि भ्रमायकें । तिरछे पसारिकें राखिये । सो लता हस्त ॥ १५ ॥

१६ करि हस्त ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक करि । एक हात पांसुपास राखि भ्रमायकें तिरछो पसारिये । ओर एक हात भ्रमाय कानोंपे राखिये खटकामुख कीजिये । वा त्रिपताक हस्तक राखिये । सो करि हस्त ॥ १६ ॥

१७ पक्ष वंचित ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक रचि अंगुठा पासकी आंगुरीकों अग्र कटिसों लगाइये । सो पक्ष वंचित ॥ १७ ॥

१८ पक्षप्रद्योत ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक अथवा पताक हस्तक रचिकें । भ्रमाय कटिकें पास हस्तसों साह्मे राखिये । सो पक्षप्रद्योत ॥ १८ ॥

१९ दंडपक्ष ॥ जहां दोऊ हातमें हंसपक्ष हस्तक रचि छातिकेपास राखिके । फिराय भुजा पसारिये । सो दंडपक्ष ॥ १९ ॥

२० गरुडपक्ष ॥ जहां दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्तक रचिकें कटिके उपर अधो राखिये । दोऊ कुंहणी कछूइक टेडी कीजिये । सो गरुडपक्ष ॥ २० ॥

२१ ऊर्ध्वमंडलिन ॥ जहां दोऊ हातनमें पताक । वा त्रिपताक हंसपक्ष हस्तक रचि । ललाट सनमुख राखिये । फेर भ्रमाय पांसु पीछे राखिये । सो ऊर्ध्वमण्डलिन ॥ २१ ॥

२२ पार्श्वमंडालिन ॥ जहां दोऊ हातनमें पताक वा त्रिपताक हस्त रचि । भ्रमाय कांधेपे राखिये भ्रमायकें पासुपें राखिये । सो पार्श्वमंडलिन ॥ २२ ॥

२३ उरोमण्डलिन ॥ जहां दोनू हात भ्रमायकें स्तनकेपास सूधे राखिये । सो उरोमण्डलिन ॥ २३ ॥

२४ पार्श्वार्धमण्डल ॥ जहां दोनू हातनमें अलपल्लवाये हतलीकी सिनाई भ्रमाय छातीकें दाहिनी बांई ओर उदरकें पास राखिये । सो पार्श्वार्धमण्डल ॥ २४ ॥

२५ मुष्टिक स्वस्तिक ॥ जहां दोनू हातनमें खटका मुख हस्तक रचि पहुचासों पहुचा मिलाय स्वस्तिककी रीतीसों । छाति बराबर राखिये । सो मुष्टिक स्वस्तिक ॥ २५ ॥

२६ नलिनी पद्मकोश ॥ जहां दोनू हातनमें पद्मकोश हस्तक करि उलटेसुलटे फिरावत दोनू मिलाय । गोडापास राखिये । सो नलिनी पद्मकोश ॥ २६ ॥

२७ अलपद्म ॥ जहां दोनू हातनमें पद्मकोश हस्तक रचि उपरको दोनु हात पसारि कछू भ्रमाइये । मनोहर लगे ऐसें । सो अलपद्म ॥ २७ ॥

२८ उल्बण ॥ जहां दोनू हातनमें पद्महस्तक रचि कंधेपे राखि अंगुरी हात भ्रमायतक राखिये । सो उल्बण ॥ २८ ॥

२९ वलित ॥ जहां दोनू हातनमें स्वस्तिक हस्तक रचि दोन्यु पहुचा मिलाय माथेपे भ्रमाइये । सो वलित ॥ २९ ॥

३० ललित ॥ जहां दोनू हातनमें । अलपल्लव हस्तक रचि पीछे मिलाय सिरपें राखिये । सो ललित ॥ ३० ॥

॥ विशेष हस्तक ॥

॥ अथ नृत्यके हस्तनमें विशेष हस्तकको नाम लिख्यते ॥

निकुंच हस्तक ॥ जहां दोनू हातनमें पताकहस्तक रचि या पताकमें अंगुठा बीचली आंगुलीके मूलमें लगाइये । तरजनीमें नही लगावे । सो निकुंच हस्तक यह वेद पढिवेमें सारके ढीलपणेमें होय । सो युतहस्त ॥ १ ॥

द्विशिखर हस्तक ॥ जहां दोनू हातनमें शिखरहस्तक रचि दोनू हात मिलाइये । सो द्विशिखर हस्तक सोवेमें स्त्री अंगुरी चटकावे । कडका मोडे तहां होय । याहीको संयुतहस्त कहत हें ॥ २ ॥

वरदाभय हस्तक ॥ जहां न्यारे दाहिने हातमें वरदानकी मुद्रा रचि ओर बांये हातमें अभयदानकी मुद्रा रचि ओर बांये हातमें संयुगत । दोनू हातन बीचेतें टेडेकर कटिपें न्यारे न्यारे राखिये । सो वरदाभय हस्तक ॥ ३ ॥ इति **विशेष हस्तकको नाम–लछन संपूर्णम्** ॥

अथ हृदयके पांच भेद हे तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥ जहां चतुरस्र नाम स्थानकमें ऊंचो हृदय कीजिये । सुंदरता जुतसो सम हृदय । यह सुभावके जतायवेमें होय । सो चतुरस्र ॥ १ ॥ जहां हृदय सिथिलता लिये भितको दाबिये सो आभुग्न हृदयमें गर्वहर्षमें । सोक रोगमें होय ॥ २ ॥ जहां पीठको निमाय हृदय ऊंचो उठाइये । सो निर्भुग्न हृदय । मानमें । सत्यमें । आचरजमें । बोलिवेमें गर्वसे हर्षमें । अंग मोडीवेमें चिंतामें होय ॥ ३ ॥ जहां हृदयमें कंप कीजिये । सो प्रकंपितहृदय । श्वास कास । तिचकी रोयमें खेदमें होय ॥ ४ ॥ जहां कंप विना हृदय ऊंचो कीजिये । सो उद्वाहित हृदय । ऊवासीमें ऊंचो देखवेमें स्वास-लेवेमें होय ॥ ५ ॥ **इति हृदयके पांच भेद संपूर्णम्** ॥

अथ पांच भेद पासूके नाम–लछन लिख्यते ॥ जहां पासू अपने स्वभावसों रहे सुंदरता जुगतसों सो विवर्त ॥ १ ॥ सम पार्श्व सुखसों बेठवेमें सुचिततामें होय ॥ जहां पीठको वासो भ्रमाय पासुरी भ्रमावे । सो अपसृत ॥ २ ॥ जहां पासूको टेडी भ्रमाइये । सो प्रसारित ॥ ३ ॥ जहां पासुरि उपर नीचे फेलाइये ।

सो नव ये हर्ष मंगलमें होय ॥ ४ ॥ जहां कंधा कटि सकोरिकें पासू भ्रमाइये । सो ऊन्नत जतभयमें नीचे होवेमें होय ॥ ५ ॥ **इति पांच भेद पासूके नाम-लछन संपूर्णम् ॥**

अथ कटिके भेद पांच है तिनके नाम-लछन लिख्यते ॥ जहां सुरि मिलाय कमरमें कंप कीजिये सो कंपिता । कूबरो वा मनोमारग चले तब होय ॥ १ ॥ जहां पासूनको धीरो भ्रमायकें धीरे धीरे कटि उंची कीजिये । सो उद्वाहित । स्त्रीकी लीलागति चलवेमें होय वा पृष्टतर नारीके चलिवेमें होय ॥ २ ॥ जहां तिरछो मुख करि देखिवेमें कटिकों फिरावे सो छिन्ना । जार काढिवेमें संभ्रममें होय ॥ ३ ॥ जहां पीछे फिर देखिवेमें कटि घणी फिराइये सो विवृता । यह पीछे फीर ते होय ॥ ४ ॥ जहां च्यारों तरफ कटि फिराये । सो रेचिता । जहां गोड मंडलीसों फीरवो होय तहां होय ॥ ५ ॥ **कटि-भेद पांचके नाम-लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ चरणके भेद ॥

१ **सम चरन** ॥ जहां सहज सुभावसो चरन भूमि उपर राखिये। सो सम चरन । १ ।

२ **अंचित चरन** ॥ जहां पृथ्वीमें सम चरन राखि। एडी उंची कीजिये। सो अंचित चरन । २ ।

३ **कुंचित चरन** ॥ जहां चरनकी अंगुरीसों सो साकोरि बीचमें चरन टेढो करि पृथ्वीपें राखिये । सो कुंचित चरन । ३ ।

४ **सुचि चरन** ॥ जहां बांयो चरन सहज सोभावसों पृथ्वीसों राखि दाहिणे पायकों अंगुठा खेचोंकरि । दाहिना पाय पृथ्वीपें राखिये। सो सुचि चरन । ४ ।

५ **अग्रतल संचरन** ॥ जहां एडी खेंचाकरि अंगुठापें । लाय । अंगुरी सकोरि चरन राखिये । सो अग्रतल संचरन। ५ ।

६ **उद्‌घाट्टित** ॥ जहां अंगुरी एडी करिके धरतीपे टेकिये । एक दोय वार । सो उद्‌घट्टित । ६ ।

७ त्राटित चरन ॥ जहां पृथ्वीमें एडि टेकी । अंगुरी अंगुठा धरतीमें । एक होय वेर जोरसों पटकीये । क्रोध गर्वमें होय । सो त्राटित चरन । ७ ।

८ घटितोत्संघ ॥ जहां एडी टेकी अग्रभागसों ताडन कीजिये । अग्रभाग टेकि एडी टेकी अंगुरीसों ताडिये । यह दोऊ क्रम एक वेर होय । सो घटितोत्संघ । ८ ।

९ घट्टित ॥ जहां एडीसों भूमि दावि चरनको अग्रभाग हलाय भूमिमें धरे । सो घट्टित । ९ ।

१० मर्दित चरन ॥ जहां तिरछो चरन करि भूमिमें राखिये । सो मर्दित चरन । १० ।

११ अग्रग चरन ॥ जहां सितावी सितावी आगें चलिये । यह ठोकरमें होय । सो अग्रग चरन । ११ ।

१२ पार्ष्णिग चरन ॥ जहां एडीसों पीछो पांव ऊठावे । सो पार्ष्णिग चरन । १२ ।

१३ पार्श्वग चरन ॥ जहां बांई ओर दाहिनी ओर बगलाऊ चलिये । सो पार्श्वग चरन । १३ । **इति तेरह चरनके लछन संपूर्णम् ॥**

अथ कांधेके पांच भेदको लछन लिख्यते ॥ जहां मूठांको प्रकार होय । जहां कांधेको जोर दे ऊंचो करि । सो मुष्ठिस्कंध । १ । जहां भालके बचायवेमें दोऊ कंधा ऊंचा कीजिये । सो कुंतस्कंध । २ । सो यह भेद एक । ३ । जहां सुधो ऊंचो करि कानकी । ओर कीजिये । सो कर्ण लग्न स्कंध । ३ । जहां हर्षमें गर्वमें कांधे ऊंचे कीजिये सो छित्र स्कंध । ४ । जहां दुखमें कंधे संकोचिके सो स्रस्त स्कंध । ५ । जहां मदसों कांधा हलावे । सो लोलित स्कंध । ६ । **इति कांधेके पांच भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ ग्रीवाके नव भेदके नाम लिख्यते ॥

१ सम ग्रीवा ॥ जहां ग्रीवा सहज सुभाव ग्रीवा जप ध्यानमें राखे । सो सम ग्रीवा । १ ।

२ निवृत्त ग्रीवा ॥ जहां ग्रीवा गुरुदेव प्रियनके सन्मुख होवे । सो निवृत्त ग्रीवा । २ ।

३ वलिता ग्रीवा ॥ जहां ग्रीवा दाहिने बांई ओरको ग्रामा फेरिये। सो वलिता ग्रीवा । ३ ।

४ रेचिता ग्रीवा ॥ जहां ग्रीवा कंप करि भ्रमावे। सो रेचिता ग्रीवा। ४ ।

५ कुंचित ग्रीवा ॥ जहां ग्रीवा सकोरिये भावसों । अथवा भयसों । सो कुंचित ग्रीवा । ५ ।

६ त्यस्रा ॥ जहां ग्रीवा खेदसों । अथवा कांधेपें भार धरतें । अथवा पासूंके देखिवेमें तिरछि झुके । सो त्यस्रा । ६ ।

७ अंचिता ॥ जहां ग्रीवा केस सुवारिवेमें दूरिकी वस्तु देखिवेमें हला-यके पीछेको झुलावे । सो अंचिता । ७ ।

८ नता ॥ जहां ग्रीवा आभूषण पहरवेमें । अथवा कंठावलम्बनमें दीनतामें । आगेको झुलाइये । सो नता । ८ ।

९ उन्नता ॥ जहां ग्रीवा आभूषण मोति आदि वस्तुके देखिवेमें ऊंची कीजिये । सो उन्नता । ९ । **इति ग्रीवाके नव भेद संपूर्णम्** ॥

॥ अथ भुजाके सोलह भेद नाम लिख्यंत ॥

१ ऊर्ध्वबाहु ॥ जहां चंद्र आदि उंची वस्तु दिखायवेमें उंची भुजा होय । सो ऊर्ध्वबाहु । १ ।

२ अधोमुख ॥ जहां नीचो माथो करि भुजा नीचो भूमिमें लगाइये । सरीर दोनू भुजापें दीजिये । सो अधोमुख । २ ।

३ तिर्यग ॥ जहां तिरछे बाहु पसारिये । सो तिर्यग । ३ ।

४ अपविद्ध ॥ जहां मंडल गतिसें छातिके सामुंहे दोनू भुजा कीजिये । सो अपविद्ध । ४ ।

५ प्रसारित ॥ जहां दूरके वस्तु लेवेमें भुजा पसारिये। सो पसारित । ५।

६ अंचित ॥ जहां भुजा छातिको माथेपें ल्याय फेर छातिपें ल्यावे । सो अंचित । ६ ।

७ मंडल गति ॥ जहां भुजा नाकके । आसपास सर्वत्र भ्रमाइये । सो मंडल गति । ७ ।

८ **स्वस्तिक** बाहु ॥ जहां पासासों जुदे दोनू भुज सकोरि राखिये। सो स्वस्तिक बाहु। ८।

९ **उद्वेष्टित** ॥ जहां दोनू भुजानके पहुचा लपेटिये। सो उद्वेष्टित। ९।

१० **पृष्ठानुसारि** ॥ जहां दोनू भुजा पिठिवें कीजिये। सो पृष्ठानुसारि। १०।

११ **आविद्ध** ॥ जहां दोऊ भुजा छातिमें सकोरिये। सो आविद्ध। ११।

१२ **कुंचित** ॥ जहां कुहणी सकोरि खड्ग तरवार पकडवेमें। भोजनमें जलपानमें भुजा उठाईये। सो कुंचित। १२।

१३ **नम्रबाहु** ॥ जहां मुकुट घाट आदि धारिवेमें। केस सवारिवेमें कछूइक टेडी भुजा नमाइये। सो नम्रबाहु। १३।

१४ **सरल** ॥ जहां पासूये उंचि नीचि भुजा सुधी चलाइये। अभिमानमें। वा भूमिकी वस्तु दिखायवेमें। सो सरल। १४।

१५ **आंदोलित** ॥ जहां मार्ग चालिवेमें भुजा फैलाइये। सो आंदोलित।१५।

१६ **उत्सारित** ॥ जहां कोऊ लोगनकी भीड दूरि करिवेकों भुजाकी चेष्टा कीजिये। सो उत्सारित। १६।

ऐसो भुजानके अनेक भेद हैं तिनमें यह सोले मुख्य जांनिये ॥ **इति भुजाके सोलह भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ उदरके च्यारि भेद हैं ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां उवासी हांसि। निस्वास रोदनमें उदरकी चेष्टा। सो क्षाम। १। जहां भूखसों परिश्रमसों आतुरतासो उदर भीतरकों पेठें। सो खल्ल। २। जहां दूरसों वा घणों भोजन कीयो होय तासों। वा रोगसों ऊपरकों उदर फुले। सो पूर्ण। ३। जहां स्वास रोगसों उदर उंचो नीचो होय। सो रिक्त पूर्ण। ४। इति उदरके च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

ऐसेंही उदरके च्यारि भेद हैं। सोहि नामभेद पेटके जांनिये ॥ **इति पेटके भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ जांघके पांच भेद हैं। तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां आयवेमें जायवेमें जांघ कंपाय उंची नीचि कीजिये। सो कंपित नूऊ।१।

जहां चलिवेमें स्त्रीनकी जंघा आपसमें लगत चले। सो वलित। २। जहां भयसों दुखसों वांयके रोगसों जांघ वधेसों। सो स्तब्ध। ३। जहां ताडने नृत्यमें अथवा जोड काढिवेमें। चरणकी अंगुरीटक एडी ऊंची करि जंघासों मिलावे। सो उद्वर्तित। ४। जहां युद्धादिक श्रमसें जांघउपर एडी ल्याइये। सो निवर्तित। ५। इति जांघके पांच भेद नाम–लछन संपूर्णम्॥

॥ अथ पिंडिके दस भेद हे ताके नाम–लछन लिख्यते॥

१ क्षिप्ता॥ जहां तांडव नृत्यमें। अथवा जोर काढिवेमें पिंडि वाहिरि ओर चलावे। सो क्षिप्ता। १।

२ नता॥ जहां गोडा नीचो करि पिंडि नमाइये। सो नता। २।

३ उद्वाहिता॥ जहां वेग चलिवेसों ठाढी पिंडी होय। सो उद्वाहिता। ३।

४ आवर्तित॥ जहां दाहिनी चरन बांइ ओर वायों चरन दाहिनी ओर राखिये। पिंडि उपर पिंडि राखिये। सो आवर्तित। ४।

५ परिवर्तना॥ जहां पीछेको उलटी चलवेतें। पिंडि पिछेको झुके। सो परिवर्तता। ५।

६ बहिर्गता॥ जहां दोऊ पींडि बांइ दाहिनी ओर बगलाऊ फेलाय नृत्य कीजिये। सो बहिर्गता। ६।

७ कंपिता॥ जहां घूंवरा बजायेवेको पींडी कंपाइये। सो कंपिता। ७।

८ तिरश्चीना॥ जहां बेठकमें तीरछी पींडी धरतीसों लागाइये। सो तिरश्चीना। ८।

९ परावृत्ता॥ जहां धरतीमें गोडाटेक पींडि पिछेको कीजिये। सो देवकारज ओर पितृकारजमें होय। सो परावृत्ता। ९।

१० निसृत्ता॥ जहां नृत्यमें आगेको पिंडि पसारिये। सो निसृत्ता। १०। इति पिंडीके दस भेद संपूर्णम्॥

अथ पहुचाके पांच भेद हे ताके नाम–लछन लिख्यते॥ जहां दान देवेमें वा काहूकी सहाय करिवेमें। पहुचाकी चेष्टा कीजिये। सो निकुंच। १। जहां पहुचा सकोर नीचो कीजिये। आगे वधिवेमें। सो अकुंचित। २।

जहां काहूके बुलायवेमें । पहुचाकी चेष्टा कीजिये । सो चल । ३ । जहां खड्ग छूरि फीरायवेमें । पहुचा चलाइये । सो भ्रमित । ४ । जहां पुस्तकके पत्र लेवमें । वा दांन लेवमें । सुधे पहुचा कीजिये । सो सम । ५ । इति पहुचाके पांच भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ गोडाके सात भेद हे ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ संहत जानु ॥ जहां गोडामें गोडा मिलायकें लाज रखके बेठक कीजिये । सो संहत जानु । १ ।

२ कुंचित जानु ॥ जहां बेठवेमें जांघ पिंडि मिले । सो कुंचित जानु । २ ।

३ अर्ध कुंचित जानु ॥ जहां कटिको नमाय बेठकमें उंचो गोडा कीजिये । सो अर्ध कुंचीत जानु । ३ ।

४ नता जानु ॥ जहां नमस्कारमें देवताके प्रणाममें गोडा धरतीपे लगावे । सो नता जानु । ४ ।

५ उन्नत जानु ॥ जहां परवत आदि ऊंचे स्थान चढिवेमें वा बेठकमें छातिकी बराबर गोडा रहे । सो उन्नत जानु । ५ ।

६ विवृत जानु ॥ जहां हातिके चढिवेमें दोन्यु गोडा न्यारे न्यारे बाइतरफ होय । सो विवृत जानु । ६ ।

७ सम जानु ॥ जहां सहज सुभावसों बेठिवेमें ठाडे होनेमें गोडा रहें । सो सम जानु । ७ । **इति गोडाके सात भेद–लछन संपूर्णम्** ॥

अथ दृष्टिनको लछन लिख्यते ॥ जहां दृष्टि भेद अनेक हें ॥ इनको श्रीब्रह्माजीनें आदलेय मुनिश्वरादिकन पार नही पायो । सो मनुष्यतो कहांतें पार पावे तहु ते श्रीसिवजीके प्रसादसों भरत मतंग आदि आचारिजके मतसों शृंगारादि रस दृष्टि ठरति आदि स्थाईभाव दृष्टि, संचारि भाव दृष्टि, ऐसें सब दृष्टि छतिसहें तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ चित्त ॥ जहां शृंगारादि आठों रसनकी दृष्टिको लछन कहत हें । तिनके तीन भेद हें । जहां प्रसन्नता सहित । सो चित्त । १ ।

२ स्यामा ॥ जहां कुटीलतासों मलिन होय । सो स्यामा । २ ।

३ स्वेत स्याम ॥ जहां अभिमान अहंकारसों उन्नत होय । सो स्वेत स्याम । ३ ।

१ कान्ता दृष्टि ॥ जहां कटाक्षको लछन कहे हैं । जा नेत्रमें पुतरी भ्रमाइये । मनोरथके अनुसारसों जाके कटाक्ष हैं । जहां हर्ष प्रसन्नतासों भोंह नचाय कटाक्षसों कामदेव वधायवेको फूली दृष्ट होय । सो कान्ता दृष्टि । १ ।

२ हास्या दृष्टि ॥ जहां कछूइक पलक सकोरि । नेत्रकी पुतरी नचाय दृष्टि कीजिये । सो हास्या दृष्टि । २ ।

३ करुणा दृष्टि ॥ जहां उपरले पलक डापि अश्रुपातजुत दृष्टि । नासिकाके अग्रपे लगाइये । सो करुणा दृष्टि । ३ ।

४ रौद्रि दृष्टि ॥ जहां भोंह टेढी चढाय आंखे काढि । इकटक लाल पुतरिसों देखें । सो रौद्रि दृष्टि । ४ ।

५ वीर दृष्टि ॥ जहां देदीप्यमान झलझलाटसों प्रकासितसों ले गंभिरता लीये निचले पूतरिसों देखि । सो वीर दृष्टि । ५ ।

६ भयानक दृष्टि ॥ जहां चंचलपुतरि निकलिसी आंव दोनु पलक खुले होय । चकततासों चोंकेसे ठहर रहे । ढांकिवेमें भोंय न्यारे पेर । सो भयानक दृष्टि । ६ ।

७ बीभत्स दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक चंचलताइसों झुकी आवे ओर पूतरी चंचल होय ओर नेत्रनके कोपानमें उद्वेग दिखायके संकुचित होय। सो बीभत्स दृष्टि । ७ ।

८ अद्भुत दृष्टि ॥ जहां प्रसन्नता लीये स्वेत वरन । निरमल पूतरि बाहिर भीतर चलत होय । कछूइक पलकनक आंख संकुचित होय। कोयनमें अछि रज झलकावे चंचल विसाल जो दृष्टि। सो चोरनके भयमें कंपमें होय । सो अद्भुत दृष्टि । ८ । इति दृष्टिनको लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्थाई भावकी आठ दृष्टीको लछन लिख्यते ॥

१ स्निग्धा दृष्टि ॥ जहां सचिकनता लिये धरिको प्रकास सुंदर भोंहकी चेष्टा अभिलाष भरवो कटाक्ष लिये जो दृष्टि । सो स्निग्धा दृष्टि ॥ १ ॥

२ हृष्टा दृष्टि ॥ जहां कपोल पुष्ट करि पूतरि हर्षसों भीतरी होय । पलकन मिटे होय मंद मुसिकानके आकार दृष्टि । सो हृष्टा दृष्टि ॥ २ ॥

३ दीन दृष्टि ॥ जहां पलक आधो मुंदे होय । पूतरी कछुइक ऊपरि होय । सो दीन दृष्टि ॥ ३ ॥

४ क्रुद्धा दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक फटसें दिसें पूतरि चंचल होय । रुखादिंये टेडी होय । सो क्रुद्धा दृष्टि ॥ ४ ॥

५ दृप्ता दृष्टि ॥ जहां पराक्रमको प्रकासक रीति खुली दृष्टि होय । जहां थिर पूतरि होय । सो दृप्ता दृष्टि ॥ ५ ॥

६ भयान्विता दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक खोलीकें चंचलपूतरीसों चकीत होय । सो भयान्विता दृष्टि ॥ ६ ॥

७ जुगुप्सता दृष्टि ॥ जहां पलक मिले होय । प्रगट नही देखे । सो जुगुप्सता दृष्टि ॥ ७ ॥

८ विस्मिता दृष्टि ॥ जहां प्रकाससों पूतरि बाहिर आवे समान रहे । सो विस्मित दृष्टि ॥ ८ ॥ **इति स्थाई भावकी दृष्टीको लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ व्यभिचारि दृष्टि वीस है तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ शून्य दृष्टि ॥ जहां पलक खोलि इकटक पूतरिसों देखे । सूनीसी जांनि परे चिंतामें होय । सो शून्य दृष्टि ॥ १ ॥

२ मलिना दृष्टि ॥ जहां पूतरि आछितर पलक डापि देखिये । सो मलिना दृष्टि ॥ २ ॥

३ श्रांत दृष्टि ॥ जहां आलस भरि पूतरीसों पलक डापि देखिये । सो श्रांत दृष्टि ॥ ३ ॥

४ लज्जिता दृष्टि ॥ जहां निचि पूतरिसों पलक नमाय आधी आंख मुंदे नीचेको देखिये । एसी लाजभरि । सो लज्जिता दृष्टि ॥ ४ ॥

५ शंकिता दृष्टि ॥ जहां पूतरि तिरछि करि नेत्र चतुराय देखिये । सो शंकिता दृष्टि ॥ ५ ॥

६ मुकुला दृष्टि ॥ जेसी पूतरि कर कोइ पलक मिलाय देखिये । सो मुकुला दृष्टि ॥ ६ ॥

७ अर्धमुकुला दृष्टि ॥ जहां कछुइक पलक मिलायवेमें प्रसन्न पूतरीसों देखिये । सो अर्धमुकुला दृष्टि ॥ ७ ॥

८ ग्लान दृष्टि ॥ जहां भोंह पलक नीचे करि । सिथिल पुतरिसों देखिये । सो ग्लान दृष्टि ॥ ८ ॥

९ जिम्ह दृष्टि ॥ जहां कछुइक पलक संकोच टेढपणोसों । तिरछि पुतरि चढाइ देखिये । सो जिम्ह दृष्टि ॥ ९ ॥

१० कुंचिता दृष्टि ॥ जहां पलक पुतरि संकोच करि देखिये । सो कुंचिता दृष्टि ॥ १० ॥

११ वितर्किता दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक भ्रमाय नीचेको प्रकाम करि । प्रसन्न पुतरिसों देखिये । सो वितर्किता दृष्टि ॥ ११ ॥

१२ अभितप्ता दृष्टि ॥ जहां उत्पनिके दुखसों नेत्रको गोला सिथल करि । आलसको पुतरीसों देखिये । सो अभितप्ता दृष्टि ॥ १२ ॥

१३ विषण्णा दृष्टि ॥ जहां कोय मिलाय पलक खोले फेलाय पुतरी सों देखिये । सो विषण्णा दृष्टि ॥ १३ ॥

१४ ललिता दृष्टि ॥ जहां मंदमुसिकान करि ॥ भ्रुकुटि नचाय । मधुराइ सों लोये संकोच देखिये । सो ललिता दृष्टि ॥ १४ ॥

१५ आकेकरा दृष्टि ॥ जहां प्रसन्नतासों पलक संकोच इकटक । पुतरी भ्रमाय देखिये । सो आकेकरा दृष्टि ॥ १५ ॥

१६ विकोशा दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक खोल चंचल पुतरी सों देखिये । सो विकोशा दृष्टि ॥ १६ ॥

१७ विभ्रांता दृष्टि ॥ जहां नेत्रको मध्यभाग फेलाय । निश्चय पुतरिसों देखिये । सो विभ्रांता दृष्टि ॥ १७ ॥

१८ विप्लुता दृष्टि ॥ जहां उपरलो पलक उठाय । सिताविं पुतरी भ्रमाय देखिये । मृत्युचिंता पीडादिकमें होय । सो विप्लुता दृष्टि ॥ १८ ॥

१९ त्रस्ता दृष्टि ॥ जहां दोनू पलक खोल पुतरि कंपयुत फेलाय देखिये । सो त्रस्ता दृष्टि ॥ १९ ॥

२० मदिरा दृष्टि ॥ जहां मद्यपान कीये सो छकी दृष्टि होय । सो मदिरा दृष्टि हे । ताके तीन भेद हें ॥ जहां कोये फेलाय घुमाति पुतरिसों । सो उत्तम मदिरा दृष्टि । १ । जहां पलक कछुइक सकोरिकें पुतरि भ्रमाय देखिये । सो

मध्यमा मदिरा दृष्टि । २ । जहां पूतरि नीचि करि पलक मिलाय देखिये । सो अधमा मदिरा दृष्टि । ३ । ये तीन मदिरा दृष्टि जांनिये ॥ २० ॥ ये सब छतीस दृष्टि रिति दिखायवेमेंको कहिये । ऐसें या रितिसों अनेक दृष्टिके भेद हैं ॥ **इति छतीस दृष्टिके नाम संपूर्णम् ॥**

॥ अथ पक्षधर मिश्रके मतसों आठ प्रकार देखिवोके ताके नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां सितावितसों संभ्रमसों देखिये । सो अलोकित दरसन ॥ १ ॥ जहां समान पूतरिसों मधुर देखिये । सो सम दरसन ॥ २ ॥ जहां चल-बिचल पूतरिसों देखिये । सो अस्त दरसन ॥ ३ ॥ जहां दाहिने बामेंकों झुकके देखिये । सो प्रतोकीत दरसन ॥ ४ ॥ जहां नखप्रकारसों नेत्र करिकें देखिये । सो बलोकीत दरसन ॥ ५ ॥ जहां उपरकों नेत्र करि ऊंची वस्तु देखिये । सो उल्लोकीत दरसन ॥ ६ ॥ जहां काहूके रूपकी नकल कर देखिये । सो अनुवृतक दरसन ॥ ७ ॥ जहां नीचेकों देखिये । सो अवलोकीत दरसन ॥ ८ ॥ **इति देखिवोके आठ भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ भोंहके सात भेद हे ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **भ्रुकुटी सहजा** ॥ जहां भोंह अपनें सहज स्वभावसों रहे । सो भृकुटी सहजा ॥ १ ॥

२ **पतिता** ॥ जहां भोंह नीची कीजिये । सो पतिता ॥ २ ॥

३ **उत्क्षिप्ता** ॥ जहां भोंह उंचि उठाइये । सो उत्क्षिप्ता ॥ ३ ॥

४ **रेचिता** ॥ जहां एक भोंहके पात उठाइये । सो रेचिता ॥ ४ ॥

५ **निकुंचिता** ॥ जहां भोंह कोमलतासों संकोचिये। सो निकुंचिता ॥ ५ ॥

६ **भ्रुकुटि** ॥ जहां संपूरन भोंह उंचि क्रोधमें चढाइये । सो भ्रुकुटि ॥६॥

७ **चतुरा** ॥ जहां भोंह कछूइक कंप करि मंदतासों दिखाइये । सो चतुरा ॥ ७ ॥ **इति भोंहके सात भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ नेत्रके पलकनके नव भेद लिख्यते ॥

१ **प्रसृत** ॥ जहां हर्षमें अचरजमें पलक फेलावे । सो प्रसृत ॥ १ ॥

२ कुंचित ॥ जहां कुरुपवानकु देखिये । पलक सकोरिये । सो कुंचित ॥ २ ॥

३ उन्मेषित ॥ जहां क्रोधसों दोऊ पलक न्यारे न्यारे राखिये । सो उन्मेषित ॥ ३ ॥

४ निमेषत ॥ जहां क्रोधमें दोऊ पलक भ्रमाइये । सो निमेषित ॥ ४ ॥

५ विवर्तित ॥ जहां क्रमसों दोऊ पलक करकाइये । सो विवर्तित ॥ ५ ॥

६ स्फुरित ॥ जहां डरसासों दोऊ पलकनसों । ऊंचि निची चेष्टा कीजिये । सो स्फुरित ॥ ६ ॥

७ पिहित ॥ जहां नेत्रकी पिडासों पलक मिलाय संकोचिये । सो पिहित ॥ ७ ॥

८ विचालित ॥ जहां उपरके पलकसों निचले पलकको ताडन कीजिये । सो विचालित ॥ ८ ॥

९ सम ॥ जहां दोनु पलक सहज सुभावसों रहे । सो सम ॥ ९ ॥

इति दोऊ नेत्रके पलकनके नव भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ पूतरिके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ भ्रमण ॥ जहां पलकनके भितरि गोल आकार भ्रमाइये । सो विरर्रोद्ररसमें । सो भ्रमण ॥ १ ॥

२ वलन ॥ जहां पुतरिको तिरछो गमन होय । रौद्रवीररसमें । सो वलन ॥ २ ॥

३ पात ॥ जहां पूतरि निचेकों राखिये । करुणारसमें । सो पात ॥ ३ ॥

४ चलन ॥ जहां पूतरिको कंप होय भयानक रसमें । सो चलन ॥ ४ ॥

५ प्रवेश ॥ जहां दोऊ पलकमें पतरि पेठ बीभत्सरसमें । सो प्रवेश ॥ ५ ॥

६ विवर्त ॥ जहां पुतरिसों कटाक्ष कीजिये । हास्य रसमें । सो विवर्त ॥ ६ ॥

७ समुद्धर्त ॥ जहां पुतरि ऊंची उठाइये । वीररस रौद्ररसमें । सो समुद्धर्त ॥ ७ ॥

८ निष्काम ॥ जहां पुतरि बाहरकी ओर आवे शृंगाररसमें । सो निष्काम ॥ ८ ॥

९ **प्राकृत** ॥ जहां पूतरि सहज स्वभावसों रहें अद्भुत रसमें । सो प्राकृत ॥ ९ ॥ ऐसें पूतरिके भेद जांनिये ॥ **इति पूतरिके भेद–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ कपोलनके भेदनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **कुंचित** ॥ जहां लाजसों कपोल संकोचिये । सो कुंचित ॥ १ ॥

२ **रोमांचित** ॥ जहां सितज्वरसों वा भयसों कपोलमें रोमांच होय । सो रोमांचित ॥ २ ॥

३ **कंपित** ॥ जहां कपोल क्रोधसों बोलिवेमें कंपावे । सो कंपित ॥ ३ ॥

४ **फुल्ल** ॥ जहां कपोल रागमें वा हर्षमें ऊंचे होय । सो फुल्ल ॥ ४ ॥

५ **सम** ॥ जहां मुखसों कपोल सहज स्वभावमें रहें । सो सम ॥ ५ ॥

६ **क्षाम** ॥ जहां कष्टसो कपोल बेठदिये । सो क्षाम ॥ ६ ॥

७ **पूरण** ॥ जहां गर्वसों वा उच्छाहसों पुष्ट कपोल होय । सो पूरण ॥ ७ ॥ ऐसे कपोलके सास्त्रकी रीतिसों भेद जांनिये ॥ **इति कपोलनके भेद–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ नासिकाके भेदनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **स्वाभावकी नासिका** ॥ जहां नासिका सहज स्वभावसों रहें । सो स्वाभावकी नासिका । १ ।

२ **नता** ॥ जहां नासिका गहरो स्वास करि मंदतासों नमाइये । सो नता । २ ।

३ **मंदा** ॥ जहां नासिका मंद स्वाससों उच्छाहमें वा चिंतामें सिथिल कीजिये । सो मंदा । ३ ।

४ **विकृष्टा** ॥ जहां रागमें नासिका फुलाय पुष्ट कीजिये । सो विकृष्टा ।४।

५ **विकूणिता** ॥ जहां इरषा हासीसों नासिकाकी चेष्टा कीजिये । सो विकूणिता । ५ ।

६ **आकृष्टा** ॥ जहां फूल अतर आदिके सुगंधके सुंगिवेमें नासिकाकी चेष्टा होय । सो आकृष्टा । ६ । **इति नासिकाके भेद–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ मुखनासिकाके स्वासभेदनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **स्वस्थ** ॥ जहां सहज स्वभावसों स्वास कास । सो स्वस्थ । १ ।

२ चल ॥ जहां सोक चिंता परिश्रम उत्कंठामें गहरो तातो स्वास आवे । सो चल । २ ।

३ विमुक्त ॥ जहां स्वास प्राणायाम आदिमें घणीवर रोकी छोडिये । सो विमुक्त । ३ ।

४ प्रवृद्ध ॥ जहां स्वास कास क्षइरोगके कारणसें । सब्द करको स्वास आवे । सो प्रवृद्ध । ४ ।

५ उल्लासित ॥ जहां नासिकासों सुगंधल्लेवेमें मंदस्वास लीजिये । सो उल्लासित । ५ ।

६ निरस्त ॥ जहां दुःख खेद रोगमें ॥ एक वेर सब्दजुत स्वास कीजिये । सो निरस्त ॥ याको लौकीकमें निस्वास कहे हें । ६ ।

७ स्खलित ॥ जहां रोगमें प्राणवाधामें । अतिदुःखसों स्वासि आवे । सो स्खलित । ७ ।

८ पूमृत ॥ जो निद्रामें सोवतें मुखमों वडे सब्दजुत स्वास होय । सो पूमृत ॥ याको लौकीकमें ठोरिबो कहत हें । ८ ।

९ विस्मित ॥ जहां चितामें । अचरजमें । सहजही स्वास आवे । सो विस्मित । ९ ।

ऐसें सुरतनमें हिंदोलाक हिलवेमें । पर्वतके चढिवेमें । सस्त्र चलायवेमें । फुल अतर सुंगिवेमें । स्त्रीके नख क्षत लगविवेमें । पश्चात्तापमें । निस्वास आदि जानि लीजिये ॥ इति स्वासके नव भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ अधर भेदके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ विवर्तित ॥ जहां अधर बाहरको निकासिये । सो विवर्तित । १ ।

२ विकासी ॥ जहां अपने प्रिय प्यारेके मिलापमें वा हर्षमें उत्तम पुरुषनके हास्यमें कछुइक मंद मुसिकानजुतसो अधरकी चेष्टा । सो विकासी । २ ।

३ संदष्टक ॥ जहां क्रोधसों वा कर्मविकारसों अधर दांतनसों दाबिये । सो संदष्टक ३ ।

४ आयत ॥ जहां मंद मुसिकानिमें उपरको होटसों निचलो अधर लगाइये । वा थोडा दाबि दाहिने फेलाइये । सो आयत । ४ ।

५ **विमृष्ट** ॥ जहां फरकवेसों वा सिथलतासों अधरके अंतरभाग चलाइये। सो विसृष्ट । ५ ।

६ **कंपित** ॥ जहां सीतज्वर भय क्रोधजमें । अधर निचे ऊपर कंप करिके चलाइये । सो कंपित । ६ ।

७ **उद्धृत** ॥ जहां काहूके अपमानमें वा हासीमें निचले अधरसों उपरलो होट उठाई नासीकासों लगाइये । सो उद्धृत । ७ ।

८ **विनिगूहित** ॥ जहां क्रोध आदिक सोक दुःखमें दोऊ होट मुखभीतर लीजिये । सो विनिगूहित । ८ ।

९ **समुद्र** ॥ जहां मुखकी प्रीत देवमें । अथवा चुंबन करिवेमें दोऊ ओंठ कलिके आकार मिलावे । सो समुद्र । ९ ।

१० **रचित** ॥ जहां क्रोधमें वा स्त्रीनके रोदनमें । तिरछे ओंठ सकोर चेष्टा कीजिये । सो रचित । १० । इत्यादि ऐसें परस्पर चुंबनादि भेद जांनिये ॥ सास्त्रकी रीतिनसो जांनिये ॥ इति **दसविध अधरके भेद संपूर्णम्** ॥

॥ अथ दांतनके आठ भेद है तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **कुट्टन** ॥ जहां सीतभयरोग वृद्ध अवस्थामें दांतसों श्रंत लगे तब सब्द होय । सो कुट्टन । १ ।

२ **खंडन** ॥ जहां जप पढिवेमें बोलिवोमें भोजन करिवेमें दांतसों दांत मिलाई न्यारो कीजिये । सो खंडन । २ ।

३ **छिन्न** ॥ जहां रोग सीतभय तांबूल भक्षणमें दोऊ दांतकी पांति घाटी मिलावे । सो छिन्न । ३ ।

४ **चुक्कित** ॥ जहां उवासीमें दोउ दांतनकी पांति न्यारि न्यारि होय। सो चुक्कित । ४ ।

५ **ग्रहण** ॥ जहां दांतनमें तृण लेके जीभिसों चाटे । सो ग्रहण । ५ ।

६ **सम** ॥ जहां दोऊ दांतनकी पांति सहज स्वभावसों राखिये । सो सम । ६ ।

७ **दष्ट** ॥ जहां क्रोधसों दांतकी पंक्तिमें अधर दाबिये । सो दष्ट । ७ ।

८ निष्कर्षण ॥ जहां बांदरके चिडायवेमें दांतनकी चेष्टा कीजिये । सो निष्कर्षण । ८ । इति दांतके आठ भेद–लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ जिभके छह भेद लिख्यते ॥

१ ऋज्वी ॥ जहां मुख खोलिके जिभ फैलाइये । सो ऋज्वी । १ ।

२ सृक्कानुग ॥ जहां कोप वा भोजनमें स्वादमें होतके प्रांत जिभसों चाटिये । सो सृक्कानुग । २ ।

३ वक्रा ॥ जहां मुख खोलि जीभ लंबी फैलाय । अग्रभागमें टेढि कीजिये । श्रीनृसिंगअवतारकी लीलामें । सो वक्रा । ३ ।

४ उन्नता ॥ जहां उवासी आदिमें मुख खोलि उपरको जिभ ऊंचि कीजिये । नाकके अग्रभागमें । सो उन्नता । ४ ।

५ लोल । जहां बालक्रीडामें वा चतुराइ करण माहिनेई सो मुख खोलि भितर जिभि फीरावे । सो लोल । ५ ।

६ लेहिनी ॥ जहां दांत होट जिभिसों चाटिये । सो लेहिनी । ६ । इति जिभके छह भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ चिबुकके आठ भेद है तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ व्यादीर्ण ॥ जहां उवासी आलससों चिबुक लंबो कीजिये । सो व्यादीर्ण । १ ।

२ श्वसित ॥ जहां अद्भुत रसमें आधे आंगुल ठोडी निचेको लीजिये । सो श्वसित । २ ।

३ वक्र ॥ जहां ग्रह भुत प्रेत पिशाचके अवस्थामें ठोडी टेडी कीजिये । सो वक्र । ३ ।

४ संहत ॥ जहां मुख मुंदि निश्चल ठोडी कीजिये । सो संहत । ४ ।

५ चलसंहत ॥ जहां स्त्रीनके मुखचुंबनमें ठोडीकी चेष्टा होय । सो चलसंहत । ५ ।

६ स्फुरित ॥ जहां सित भ्रमणमें ठोडी चंचल होय । सो स्फुरित । ६ ।

७ चलित ॥ जहां वानिके थथनमें वा क्रोधमें अथवा क्षोभमें । जो ठोडीकी चलाय मानगति होय । सो चलित । ७ ।

८ **लोल** ॥ जहां पानबीडा आदिके वस्त चवणमें । ठोडीकी चेष्टा होय। सो लोल । ८ । **इति चिबुकके आठ भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ मुखके छह भेद हे ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **व्याभुग्न** ॥ जहां मुखके छेद्रबांको चिंतामें विस्तार होय । सो व्याभुग्न । १ ।

२ **भुग्न** ॥ जहां लाजसों निचो मुख होय । सो भुग्न । २ ।

३ **उद्वाहि** ॥ जहां गर्ववालाके अनादरमें मुखचेष्टा होय । सो उद्वाहि । ३ ।

४ **विधूत** ॥ जहां काहूको नहीं करिवेमें । तिरछो मुख झुलाइये । सो विधूत । ४ ।

५ **विवृत** ॥ जहां हांसि आदिमें होट न्यारे करि मुख खोलिये । सो विवृत । ५ ।

६ **विनिवृत** ॥ जहां रोसमें इरषामें । काहूसें मुख करिये । सो विनिवृत । ६ ।

ऐसे मुखके भेद अनेक चेष्टानसों अनेक प्रकारके होयहें ॥ **इति मुखके छह भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ एडीके सात भेद हे तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **उत्क्षिप्ता** ॥ जहां एडि उठायके दिखावे । सो उत्क्षिप्ता । १ ।

२ **पतितोत्क्षिप्ता** ॥ जहां नृत्यमें चरनकी चलाकी करि है। सो पतितो-त्क्षिप्ता । २ ।

३ **पतिता** ॥ जहां एडी निचि करि पटकीये । सो पतिता । ३ ।

४ **अंतर्गता** ॥ जहां एडी सकोरिये। सो अंतर्गता । ४ ।

५ **बहिर्गता** ॥ जहां एडी बाहिर मिलावे । सो बहिर्गता । ५ ।

६ **मिथोयुक्ता** ॥ जहां दोनु एडी मिले । सो मिथोयुक्ता। ६ ।

७ **वियुक्ता** ॥ जहां दोनु एडी न्यारि न्यारि होय । सो वियुक्ता। ७ ।

८ **अंगुलिसंगता** ॥ जहां एक पगकी एडी दूसरे पगकी एडी अंगुरीसों लगाइये । सो अंगुलिसंगता । ८ । **इति एडीके आठ भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ स्थानकनमें टकोणांके पांच भेद होत हैं ताके नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां एक पगको टकोणा । दूसरे पगके अंगुठासों लगावे । सो अंगुष्ठ संश्लिष्ट । १ । जहां टकोणा पगनके भीतर आवे । सो अंतरयात । २ । जहां पगसों टकोणा बाहिर रहे । सो बहिर्गत । ३ । जहां दोऊ पांवके टकोणा मिलावे । सो मिथोयुक्ता । ४ । जहां दोऊ पावनके टकोणा मिलावे । सो वियुक्त । ५ । इति टकोणाको भेद–लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ हातकी अंगुरीके सात भेद हे ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ संहता ॥ जहां आंगुली आपसमें मिले । सो संहता ॥ १ ॥

२ वियुता ॥ जहां आंगुली न्यारि न्यारि होय । सो वियुता ॥ २ ॥

३ वक्रा ॥ जहां आंगुली वांकी होय । सो वक्रा ॥ ३ ॥

४ वलिता ॥ जहां आंगुली भ्रमावे । सो वलिता ॥ ४ ॥

५ पतिता ॥ जहां आंगुली सिथल कीजिये । सो पतिता ॥ ५ ॥

६ कुंचन्मुला ॥ जहां आंगुलीकी जड टेडी कीजिये । सो कुंच-न्मुला ॥ ६ ॥

७ प्रसृता ॥ जहां आंगुली सुधि लंबी कीजिये । सो प्रसृता ॥ ७ ॥

इति हातकी अंगुरीके भेद–लछन संपूर्णम् ॥

अथ चरनकी अंगुरीके पांच भेद हैं ताको नाम–लछन लिख्यते ॥ जहां विप्रोंत किलकी चिंतहामें पांवकी अंगुरी नीची चलावे । सो अधक्षिप्ता ॥ १ ॥ जहां नवोढा स्त्रीके चरनकी अंगुरी ऊपरकों रहे । सो उत-क्षिप्ता ॥ २ ॥ जहां त्रास भयसों अंगुरी संकोचिये । सो कुंचिता ॥ ३ ॥ जहां सुधि लंबी अंगुरी कीजिये । सो प्रसारिता ॥ ४ ॥ जहां अंगुठा सहीत पांचो अंगुरी मिलावे । सो संलग्न ॥ ५ ॥ ऐसें याहि रीतीसों एडी पांच भेद अंगु-ठाको जानिये ॥ इति चरन अंगुरीके भेद–लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पगथलीके छह भेद हे ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां पगथलीको अग्रभाग नीचो धरतीपे पटके । सो पतिताग्र ॥ १ ॥

जहां पगथलीको अग्रभाग उठावे । सो उधृताग्र ॥ २ ॥

जहां पगथली भूमिमें टेकीये । सो भूमिलग्न ॥ ३ ॥

जहां पगथली बीचसों चोकी कीजिये । सो कुंचिन्मध्या ॥ ४ ॥

जहां पगथली तिरछी करि । बगलाउ धरिये । सो तिरश्चीन ॥ ५ ॥

जहां सर्व पगथलीको उंची उठावे । सो उधृत ॥ ६ ॥ **इति पगथलीके छह भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ मुखराग कहिये मुखकी चेष्टा ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां मनकी शृंगार आदिक रसकी वासना मुखकी चेष्टा करि जताइये। सो मुखराग जांनिये । ताको चार भेद हैं ॥

जहां सहज सुभावसों मुखकी चेष्टा होय । सो स्वाभाविक मुखराग । १ ।

जहां शृंगार हास्य अद्भुत रस जतायवेकों प्रसन्न मुखकी चेष्टा होय । सो प्रसन्न । २ ।

जहां रौद्र अद्भुत रस जतायवेकों मुखमें दीखें । सो रक्त । ३ ।

जहां बीभत्स भयानक रस जतायवेकों मुखमें श्यामता दिखे । सो श्याम । ४ । **इति मुखरागके च्यारी भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ हातनके प्रकार पनदरह हैं तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ उत्तान ॥ जहां हातकी हतेली ऊपरकों होय । सो उत्तान ॥ १ ॥

२ अधस्तल ॥ जहां हतेली नीची होय । सो अधस्तल ॥ २ ॥

३ पार्श्वस्तल ॥ जहां हतेली जीमीवरा ऊदाहिनी होय । सो पार्श्वस्तल ॥ ३ ॥

४ अग्रस्तल ॥ जहां हतेली सहायकों । ओट आगेको कीजिये । सो अग्रस्तल ॥ ४ ॥

५ स्वसंमुख तल ॥ जहां हतेली मुख सन्मुखकी जिये । सो स्वसंमुख तल ॥ ५ ॥

६ ऊर्ध्वमुख ॥ जहां हातको अग्रउपरको ऊंचो होय । सो ऊर्ध्वमुख ॥ ६ ॥

७ अधोमुख ॥ जहां हातको अग्रभाग नीचो होय । सो अधोमुख ॥७॥

८ पराङ्मुख ॥ जहां हातको अग्रआगें कीजिये । सो पराङ्मुख ॥८॥

९ पार्श्वमुख ॥ जहां हातको अग्र चलाऊ होय । सो पार्श्वमुख ॥ ९ ॥

१० संमुख ॥ जहां हातको मुखके सन्मुख होय आवे । सो संमुख ॥ १० ॥

११ ऊर्ध्वग ॥ जहां सिगरो हात ऊपरको चलाइये। सो ऊर्ध्वग ॥ ११॥

१२ अधोगत ॥ जहां सिगरो हात नीचेको चलाइये । सो अधोगत ॥ १२ ॥

१३ पार्श्वगत ॥ जहां सिगरो हात बगलाउ तिरछो चलावे । सो पार्श्वगत ॥ १३ ॥

१४ अग्रगोचर ॥ जहां सिगरो हात आगेको जोरसों चलावे । सो अग्रगोचर ॥ १४ ॥

१५ मुखगत ॥ जहां सिगरो हात सनमुख कीजिये । सो मुखगत ॥ १५ ॥ इति हातनके पनदरह प्रकारके लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ हस्तकके बीस कर्म हैं । ताके नाम—लछन लिख्यते ॥

१ धूनन ॥ जहां हातको कंप होय । सो धूनन ॥ १ ॥

२ श्लेष ॥ जहां हात दूसरे हातसों मिलावे । सो श्लेष ॥ २ ॥

३ विश्लेष ॥ जहां दोनू हात मिलाय न्यारे कीजिये। सो विश्लेष ॥३॥

४ क्षेप ॥ जहां हात चलाइये । सो क्षेप ॥ ४ ॥

५ रक्षण ॥ जहां हातसों रक्षा कीजिये । सो रक्षण ॥ ५ ॥

६ मोक्षण ॥ जहां हातसों छोडिवेकी मुद्रा कीजिये । सो मोक्षण ॥६॥

७ परिग्रह ॥ जहां लेवेकी चेष्टा होय । सो परिग्रह ॥ ७ ॥

८ निग्रह ॥ जहां काहूको दंडके देवेकी चेष्टा कीजिये। सो निग्रह ॥८॥

९ उत्कृष्ट ॥ जहां चढाइकी चेष्टा होय । सो उत्कृष्ट ॥ ९ ॥

१० आकृष्ट ॥ जहां हात पेंचिये । सो आकृष्ट ॥ १० ॥

११ विकृष्ट ॥ जहां हातसों डाटि भागवेकी क्रिया होय । सो विकृष्ट ॥ ११ ॥

१२ ताडन ॥ जहां हातसें ताडन कीजिये । सो ताडन ॥ १२ ॥

१३ तोलन ॥ जहां हातसों वस्तु अजमावेकी चेष्टा होय । सो तोलन ॥ १३ ॥

१४ छेदन ॥ जहां काढिवेकी क्रिया होय । सो छेदन ॥ १४ ॥

१५ भेदन ॥ जहां न्यारो करवेको प्रयोग होय । सो भेदन ॥ १५ ॥

१६ स्फोटन ॥ जहां फेरिवेकी रीति दिखावे । सो स्फोटन ॥ १६ ॥

१७ मोटन ॥ जहां अंग मोडिवेकी चेष्टा होय । सो मोटन ॥ १७ ॥

१८ विसर्जन ॥ जहां काहूको बिदा करिवेकी मुद्रा होय । सो विसर्जन ॥ १८ ॥

१९ आव्हान ॥ जहां बुलायवेकी चेष्टा कीजिये । सो आव्हान ॥ १९ ॥

२० तर्जन ॥ जो काहूको डरकायवेकी चेष्टा कीजिये । सो तर्जन ॥ २० ॥

इति हातनके वीस कर्म—लछन संपूर्णम् ॥

अथ हात चलायवेके चौदह स्थानको नाम—लछन सम्यक प्रकार करिके लिख्यते ॥ दाहिनि बाह एक ॥ १ ॥ आगें दो ॥ २ ॥ पीछो तीन ॥ ३ ॥ ऊपरको च्यार ॥ ४ ॥ निचो पांच ॥ ५ ॥ माथा छह ॥ ६ ॥ ललाट सात ॥ ७ ॥ कर्ण आठ ॥ ८ ॥ स्कंध नऊ ॥ ९ ॥ छाति दस ॥ १० ॥ नाभि ग्यारा ॥ ११ ॥ कमर बारा ॥ १२ ॥ जांघ तेरह ॥ १३ ॥ ऊरु चौदह ॥ १४ ॥ ए चौदह स्थानक हात चलायवेके जांनिये ॥ **इति हात स्थानकके चौदह भेद संपूर्णम् ॥**

अथ च्यारि करनके नाम—लछन लिख्यते ॥ जहां प्रथम करनको लछन कहे हें ॥ जहां अभिनय कहिये भाव बताइवो । ताके लिये हातमें क्रिया रूप चेष्टा होय । सो करन जांनिये ॥ याके च्यार भेद हें ॥ आवेष्टित ॥ १ ॥ उद्वेष्टित ॥ २ ॥ व्यावर्तित ॥ ३ ॥ परिवर्तित ॥ ४ ॥ ये च्यार जांनिये ॥

जहां पासूकी बराबर तिरछो हात राखि अंगुठाके पासकी तर्जनी आदि च्यारों अंगुरी मुठी हस्तककी नाइ एक एक अंगुरी क्रमसों हंतरिके समूह नमाय हंतरिसों लगाइये ॥ ऊन च्यारों अंगुरीससों हंतरीसों ऐसें मीलावत छाति ताई हात चलाइये । सो करन आवेष्टित हें ॥ १ ॥

जहां छाति सास यामें जो आवेष्टित करनमें हातमें वा हातकी तर्जनी ॥ आदिक च्यारों अंगुरी अनुक्रमसों एक एक अंगुरी बाहिर निकासित हातकों छातिके पास बराबर ल्याइये । सो करन उद्वेष्टित हें ॥ २ ॥

जहां करन आवेष्टितकिनाई पासुकी बराबर छाति सनमुख तिरछो हात राखि चटी अंगुरी आदिक च्यारों अंगुरी क्रमसों एक एक पहले की सिनाई हतेरिसों मिलावत छातिपें सो ल्यावे। सो करनव्यावर्तित ॥ ३ ॥

जहां छातिपें जो व्यावर्तित करनको हात है वा हातकी चटी अंगुरी आदि च्यार अंगुरी अनुक्रमसों एक एक अंगुरी हतेरिसों वा दूर दाटित उद्वेष्टित करनकी सिनाई छातिपें ते हात पासुकी बराबर ल्यावे सो करनपरिवर्तित जांनिये ॥ इति च्यारों करनके नाम—लछन संपूर्णम् ॥

अथ नृत्य करनको लछन लिख्यंते ॥ जहां नृत्यमें विलाससों रस वधाइवेकों हात चरण आदि अंगनकी क्रिया कीजिये। सो नृत्य करन जांनिये ॥ सो ये करन भरतमुनीश्वरके मतसों एकसोआठ ॥ १०८ ॥ है तिनको नाम लिख्यंते ॥

॥ अथ नृत्य करनके १०८ भेद लिख्यते ॥

१	तलपुष्पपुट	१२	अंचित	२३	विक्षिप्ताक्षिप्त
२	लीन	१३	अपविद्ध	२४	निकुंचित
३	वर्तित	१४	समनख	२५	घूर्णित
४	वलितोरु	१५	उन्मत्त	२६	उर्ध्वजानु
५	मंडलस्वस्तिक	१६	स्वस्तिकरेचित	२७	अर्धरेचित
६	वक्षस्वस्तिक	१७	निकुट्टक	२८	मत्तल्ली
७	आक्षिप्तरेचित	१८	अर्धनिकुट्टक	२९	अर्धमत्तल्ली
८	अर्धस्वस्तिक	१९	कटीछिन्न	३०	रेचकनिकुट्टक
९	दिकस्वास्तिक	२०	कटीसम	३१	ललिता
१०	पृष्ठस्वस्तिक	२१	भुजंगत्रासित	३२	वलित
११	स्वस्तिक	२२	आलात	३३	दंडपक्ष

॥ अथ नृत्य करनके १०८ भेद लिख्यते ॥

३४	पादापविद्धक	५३	ललाटतिलक	७२	पार्श्वजानु
३५	नूपुर	५४	पार्श्वनिकुट्टक	७३	गृध्रावलिनक
३६	भ्रमर	५५	चक्रमंडल	७४	सुचि
३७	छिन्न	५६	उरोमंडल	७५	अर्धसुचि
३८	भुजंगत्रस्तरेचित	५७	आवर्त	७६	सुचिविद्ध
३९	भुजंगांचित	५८	कुंचित	७७	हारिणप्लुत
४०	दंडरेचित	५९	दोलापाद	७८	परिवृत्त
४१	चतुर	६०	विवृत्त	७९	दंडपाद
४२	कटिभ्रांत	६१	विनिवृत्त	८०	मयूरललित
४३	व्यंसित	६२	पार्श्वक्रांत	८१	प्रेंखोलित
४४	क्रांत	६३	निशुंभित	८२	सनत
४५	वैशाखरेचित	६४	विद्युद्भ्रांत	८३	सर्पित
४६	वृश्चिक	६५	अतिक्रांत	८४	करिहस्त
४७	वृश्चिककुट्टित	६६	विक्षिप्त	८५	प्रसर्पित
४८	वृश्चिकरेचित	६७	विवर्तित	८६	अपक्रांत
४९	लतावृश्चिक	६८	गजक्रीडित	८७	नितंब
५०	आक्षिप्त	६९	गंडसूचि	८८	स्खलित
५१	अर्गल	७०	गरुडप्लुत	८९	सिंहाविक्रीडित
५२	तलविलासीत	७१	तलसंस्फोटित	९०	सिंहाकर्षित

॥ अथ नृत्य करनके १०८ भेद लिख्यते ॥

९१	अवहित्थ	९७	उद्धृत	१०३	उद्घट्टित
९२	निवेश	९८	विष्णुक्रांत	१०४	शकटास्य
९३	एलकाक्रीडित	९९	लोलित	१०५	उरुद्धृत्त
९४	जनित	१००	मदस्खलित	१०६	वृषभक्रीडित
९५	आपसृत	१०१	संभ्रांत	१०७	नागापसर्पित
९६	तलसंघट्टित	१०२	विष्कंभ	१०८	गंगावतरण

१ तलपुष्पपुट ॥ जहां नृत्य करिवेकें समयमें दोऊ चरन बराबर राखि दोनू हातनको लता करहस्तक रचि ॥ चतुरस्र अंगुल स्थानकसों ठाडो होय पिछे नृत्य करिवेको द्विरश्ग नाम चारिसों ॥ दाहिनों पाव दाहिनी ओर निकासि । ओर व्यावृत करणसों दाहिनों हात छातिपें ते दाहिनी ओर ल्याइये ॥ ऐसें हि बांयो चरन बांई । ओर निकासि परिवर्त करनसों बांयो हात छातिसें उठाई बांई ओर ल्याई फेर दोनू हात छाति ऊपर ल्याइकें अंजलि रचिये ॥ ओर दोनू चरनके अग्रभागसों चलिये । सो तलपुष्पपुट है ॥ जहां ओर कोऊ करन पिछे तलपुष्पपुट करनों होय ॥ तब वा करनके मिलते हस्तककी क्रिया लीजिये ॥ जो हस्तककी क्रिया नहीं मिलेसो नही लीजिये ॥ यह रीति सिगरे करनमें जांनिये ॥ १ ॥

२ लीन ॥ जहां दोऊ हातनको मंडल हस्तक रचि। फेर छातिपं अंगुली रचि ग्रीवा सुधि करि दोऊ कांधे सकोरिये । सो लीन ॥ २ ॥

३ वर्तित ॥ जहां दोऊ हात निचे लटकाय दाहिनों चरन आगें धरि दोऊ हात फिरावे । सो वर्तित ॥ ३ ॥

४ वलितोरु ॥ जहां छातिके बराबर हात राखि व्यावृत करन दाहिनेमें परिवर्तित करन बांयेमें रचि आक्षिप्त चरणमें हातें फिराय शुकतुंड हस्तक निचे कर राखिये । सो वलितोरु ॥ ४ ॥

५ मंडलस्वस्तिक ॥ जहां दोऊ हात सुधे करि गोल आकार फिराय घूर स्वस्तिक हस्तक रचिये। सो मंडलस्वस्तिक ॥ ५ ॥

६ वक्षस्वस्तिक ॥ जहां चतुरस्रकसों दोऊ हात छातिपें राखिकें। फर रचित हस्तक सों दाहिनी बांई ओर चलाय। फेर व्यावृत करण सों दोऊ हात छातिपें निचे दोऊ चरनमें स्वस्तिक रचि ठाडो होय। सो वक्षस्वस्तिक ॥ ६ ॥

७ आक्षिप्तरेचित॥ जहां बांयो हात छातिसों बांई ओर चलावे दाहिनों हात दाहिनी ओर चलावे टेडो कीजिये। सो आक्षिप्तरेचित ॥ ७ ॥

८ अर्धस्वस्तिक ॥ जहां दाहिणे हातमें करिहस्तक बांये हातमे शुकतुंड हस्तक रचि कटिके मरोडे। सो अर्धस्वस्तिक ॥ ८ ॥

९ दिकस्वास्तिक ॥ जहां आगे पिछे दोऊ पांसूनपें सितावि हात पावनको एकसंग स्वस्तिक रचिये। सो दिकस्वास्तिक ॥ ९ ॥

१० पृष्ठस्वस्तिक ॥ जहां व्यावृत करणसों दोऊ हात फिराय पिठपें स्वस्तिक रचिये। ताके समहि चरनको स्वस्तिक रचिये। सो पृष्ठस्वस्तिक ॥१०॥

११ स्वस्तिक ॥ जहां बांयो हात दाहिनों चरण निचे होय स्वस्तिकके आकार कीजिये। सो स्वस्तिक ॥ ११ ॥

१२ अंचित ॥ जहां दोऊ हातमें करहस्तक छातिपें रचि दाहिनों हात व्यावृत करनसों बांयो हात परिवर्तकरनसों नासिकाके निकट आंव। सो अंचित ॥ १२ ॥

१३ अपविद्ध ॥ जहां जंघा पिठकी ओर दाहिने हातसों शुकतुंडक हस्तक नीचो पाडिये ओर बांये हातसों खटकामुख हस्तक कीजिये। सो अपविद्ध ॥ १३ ॥

१४ समनख ॥ जहां सूधो सरीर करि दोऊ हात लटकाय दोऊ चरनके परस्पर नखकों मिलाय ठाडो रहे। सो समनख ॥ १४ ॥

१५ उन्मत्त ॥ जहां विद्धाचारिसों अंचित नाम चरन करि क्रमसों दोऊ हात बगलाऊ चलाइये। सो उन्मत्त ॥ १५ ॥

१६ स्वस्तिकरेचित ॥ जहां दोऊ हात व्यावृतकरन करिके आपसमें पहुचांपे राखि स्वस्तिक कीजिये फेर क्रमसों चलाइये। सो स्वस्तिकोरेचित ॥ १६ ॥

१७ निकुट्टक ॥ जहां दोऊ हातमें अचिंत हस्तक रचि। कांधेपें चरन सकोरिये। सो निकुट्टक ॥ १७ ॥

१८ अर्धनिकुट्टक ॥ जहां एक हातकों अचिंत हस्तक एक रचि। एक चरन सकोरिये। सो अर्धनिकुट्टक ॥ १८ ॥

१९ कटीछिन्न ॥ जहां पासूभ्रमाय मंडल स्थानक करि कटि मरोटी ॥ एक हातकों माथेपें पल्लव हस्तक कीजिये ॥ ऐसेही दूसरे हातसों कीजिये ॥ एसे दोय तीन वार करे। सो कटीछिन्न ॥ १९ ॥

२० कटीसम ॥ जहां दोऊ चरन सकोरि दोऊ हात छातिपें नाभिपें राखिये दाहिणीयासों मुख नमाइये। सो कटीसम ॥ २० ॥

२१ भुजंगत्रासित ॥ जहां हातमें खटकामुख रचि ऊंचो करि सकोरिये ॥ दाहिणो हात ऊंचो निचो सुधो कीजिये। सो भुजंगत्रासित ॥ २१ ॥

२२ आलात ॥ जहां आलातचारि करि नितंबपें दाहिणे हातको चतुरस्र हस्तक रचिकें ॥ ओर बांये चरनको गोडा उचो करि। बांये हातको चतुरस्र-हात बांये नितंपें राखिये। सो आलात ॥ २२ ॥

२३ विक्षिप्ताक्षिप्त ॥ जहां हात पांव उछाल धरिये। सो विक्षिप्ताक्षिप्त ॥ २३ ॥

२४ निकुंचित ॥ जहां वृश्चिक चरन रचिके बांयो हात पासूमें सकोर नासिकाके अग्रमें दाहिनें हातको पताक हस्तक नासिकापे सकोरिये। सो निकुंचित ॥ २४ ॥

२५ घूर्णित ॥ जहां दाहिनों हात मस्तक घुमाय दोऊ चरणमें घुमायकें नमाइये। सो घूर्णित ॥ २५ ॥

२६ उर्ध्वजानु ॥ जहां दाहिणें पांव संकोचि ॥ बांयो पाव आगें राखि व्यावृत करनसों दोऊ हात चलावे। सो उर्ध्वजानु ॥ २६ ॥

२७ अर्धरेचित ॥ जहां मंडलस्थान रचि छातिपें खटकामुख हस्तक राखि दुसरे हातसों सूचिमुख हस्तक रचि चरन चलाय पांसु नमाइये। सो अर्धरेचित ॥ २७ ॥

२८ मत्तल्ली ॥ जहां उद्वेष्टित करनसों दोऊ हात चलाय दोऊ चरन घुमाइये ॥ फेर सरिकवेको अपविद्ध हस्तक रचि फेर ऐसेंही कीजिये । सो मत्तल्ली॥२८॥

२९ अर्धमत्तल्ली ॥ जहां पांव खडसों चलाय बांयो हात उछाल दाहिनो हात कटिपें राखे । सो अर्धमत्तल्ली ॥ २९ ॥

३० रेचकनिकुट्टक ॥ जहां दाहिणो हात चलाय दाहिणें पांव चलाइये ॥ जहां बांयो हात चलाय बांयो पाव सरकाइये । सो रेचकनिकुट्टक ॥३०॥

३१ ललिता ॥ जहां दोऊ हात फीराय बांये हातमें खटकामुख रचिये । ओर अंग सुंदर होय । सो ललिता ॥ ३१ ॥

३२ वलित ॥ जहां पीठको बांयो मुख मरोरि । हातमें सुचिमुख हस्तक रचिये । सो वलित ॥ ३२ ॥

३३ दंडपक्ष ॥ जहां ऊर्ध्वं जानुस्थानक करि हातनमें लताकरिहस्तक कीजिये । सो दंडपक्ष ॥ ३३ ॥

३४ पादापविद्धक ॥ जहां दोऊ हात खटकामुख रचि नाभिपें उलटे राखिये चरनमें सुचिपद रचि । दुसरे चरन ऐसें कीजिये । सो पादापविध्दक ॥३४॥

३५ नूपुर ॥ जहां करि ग्रिवानमाय पताक हस्तक रचिके पिठको फिराय चरन मरोडीये । सो नूपुर ॥ ३५ ॥

३६ भ्रमर ॥ जहां बांयो हात चलाय भ्रमावे । कटि मरोड चरनको स्वस्तिक रचि । सो भ्रमर ॥ ३६ ॥

३७ छिन्न ॥ जहां दोऊ हातमें त्रिपताक रचि व्यावर्तन परिवर्तन ये दोऊ करन कीजिये वैशाखस्थानक करि कटि मरोडीये । सो छिन्न ॥ ३७ ॥

३८ भुजंगत्रस्तरेचित ॥ जहां भुजंग त्रस्त करण करि दोऊ हात वाम । पांसूपें राखि चलाय भ्रमाय ऊंचे कीजिये । सो भुजंगत्रस्तरेचित ॥ ३८ ॥

३९ भुजंगांचित ॥ जहां बांये हातसों लता कर हस्तक रचि दाहिनें हातमें अंचित हस्तक रचि नितंबपें राखे पीछे भुजंग त्रस्त करन करे । सो भुजंगांचित ॥ ३९ ॥

४० दंडरेचित ॥ जहां दंडपाद नामकी चारि रचि। दोऊ हातनमें दंडपक्ष हस्तक रचिये। सो दंडरेचित ॥ ४० ॥

४१ चतुर ॥ जहां दोनु हाथ छातीपे राखिये हातसों अलपल्लव दाहिणें हाथसों चतुर हस्तक रचि एक चरण आगें चलाइये। सो चतुर ॥ ४१ ॥

४२ कटिभ्रांत ॥ जहां बांयां चरण चलाइये वाके पास दाहिणे चरण सूचि कटि भ्रमावे। फेर दोनु हाथमें भ्रमर हस्तक रचिकें व्यावर्त परिवर्तक करन करिये ॥ पछे वैष्णव स्थानक सों स्थित होय। सो कटिभ्रांत ॥ ४२ ॥

४३ व्यंसित ॥ जहां आलीढ स्थान रचि छातिपें दोनु हात उपर नीचे उलटे सुधे भ्रमावे। सो व्यंसित ॥ ४३ ॥

४४ क्रांत ॥ जहां अतिक्रांत चारीसों चरन आगें चलाइ पांवको वेसो सकोरिये। फेर व्यावृत करनसों चलाइ खटकामुख रचिये एसेंहि रचाये हात चरननकी चेष्टा करे। सो क्रांत ॥ ४४ ॥

४५ वैशाखरेचित ॥ जहां हात चरन कटि ग्रिवा भ्रमावे वैशाख स्थानक रचिये। सो वैशाखरेचित ॥ ४५ ॥

४६ वृश्चिक ॥ जहां दोनु हातनमें करि हस्तक रचि पिछेकों चलाइये वीछुके डंककी पितिसों ओर चरन वृश्चिक रचि पीठ आगेको नमाइये। सो वृश्चिक ॥ ४६ ॥

४७ वृश्चिककुट्टित ॥ जहां वृश्चिक चरनरचि दोनु भुजा माथेपे उंचि करि ॥ अलपद्म हस्तक रचिये। सो वृश्चिककुट्टित ॥ ४७ ॥

४८ वृश्चिकरेचित ॥ जहां दोनु चरन वृश्चिक रचि दोनु हातनको स्वस्तिक रचि फेर बांये दाहिने हात चलावे। सो वृश्चिकरेचित ॥ ४८ ॥

४९ लतावृश्चिक ॥ जहां वृश्चिकरेचित चरन रचि बांयो हाथको ॥ लता कर हस्तक होय। सो लतावृश्चिक ॥ ४९ ॥

५० आक्षिप्त ॥ जहां आक्षिप्त नाम चारि होय जहां हात छातिपे ल्याय खटकामुख वा चतुर्हस्तक रचिये। सो आक्षिप्त ॥ ५० ॥

५१ अर्गल ॥ जहां पिठकी ओरतें अर्ध ताल ताई चरन चलावे। ऐसें आगेंकी चलाई ताल ताई हात चलावे। सो अर्गल ॥ ५१ ॥

५२ तलविलासीत ॥ जहां आंगुरी अग्रतल उपरको दिखाय करि बगलाउ पाय चलावे । सो तलविलासीत ॥ ५२ ॥

५३ ललाटतिलक ॥ जहां वृश्चिक चरन रचि पायके अंगुठासों लीलाटको छूवें । सो ललाटतिलक ॥ ५३ ॥

५४ पार्श्वनिकुट्टक ॥ जहां नेऊ हातनमें स्वस्तिक रचि ॥ फेर सूधे हात करि ॥ एक हात पासूपे राखि । दूसरो हात लटकावे पांवसकोरे । सो पार्श्व-निकुट्टक ॥ ५४ ॥

५५ चक्रमंडल ॥ जहां आर्दित चारिसों दोल हस्तक रचि चक्रकीसिनाई गोल भ्रमे सिगरे अंगसों नृत्य करे । सो चक्रमंडल ॥ ५५ ॥

५६ उरोमंडल ॥ जहां स्थितवर्त चारिकों बांधिके छातिके ओर पास मंडल हस्तक हातनमें रचे । सो उरोमंडल ॥ ५६ ॥

५७ आवर्त ॥ जहां चाष गति चारि रचि उद्वेष्टित । आवेष्टित । करनसों दोला हस्तकर राचिये । सो आवर्त ॥ ५७ ॥

५८ कुंचित ॥ जहां दाहिनों हात सूधो बांई पासूपे राखि फेरि ऊंचो करि अलपद्म हस्तक रचि बांयो पाय सकोरि अग्रभागसों चले। सो कुंचित ॥५८॥

५९ दोलापाद ॥ जहां ऊर्ध्वजानु चारि दोलापादचारि चरनमें रचि हातनमें दोलाहस्तक रचिये । सो दोलापाद ॥ ५९ ॥

६० विवृत्त ॥ जहां हात पावन छालि पिठकों वासो भ्रमावे बांयो दाहिनो हात व्यावृत परिवर्तत करनसों चलाइये । सो विवृत्त ॥ ६० ॥

६१ विनिवृत्त ॥ जहां सूचि चारि रचि पिठिकों वासों भ्रमाय दोऊ हात बगलाउ चलाइये । सो विनिवृत्त ॥ ६१ ॥

६२ पार्श्वक्रांत ॥ जहां पार्श्वक्रांत चारि रचि दोऊ हात पांवक अनु-सार चलाइये । सो पार्श्वक्रांत ॥ ६२ ॥

६३ निशुंभित ॥ जहां दोऊ चरन सकोरि हृदय ऊंचो करि । हातमें खटकामुख हस्तक रचि बीचकी अंगुरीसों ललाट छुवे । सो निशुंभित ॥ ६३ ॥

६४ विद्युद्भ्रांत ॥ जहां चरन पिछेकोंकर भ्रमावे । मंडलाकार मस्तक भ्रमावे । सो विद्युद्भ्रांत ॥ ६४ ॥

६५ **अतिक्रांत** ॥ जहां अतिक्रांत चारि चरन आगे सरकाइये ॥ जहां हस्तकनकों चलाइवो होय । सो अतिक्रांत ॥ ६५ ॥

६६ **विक्षिप्त** ॥ जहां पांसू पिट आगे हात पाव । एक मार्गमें एक संग चलाइये । सो विक्षिप्त ॥ ६६ ॥

६७ **विवर्तित** ॥ जहां एक हात एक चरन धरतिपें पटकि वांसो पिठको भ्रमावे ॥ दूसरे हातसों बाहिर चलावे । सो विवर्तित ॥ ६७ ॥

६८ **गजक्रीडित** ॥ जहां दोला पादचारि रचि अर करिहस्तक रचि क्रिया कीजिये । सो गजक्रीडित ॥ ६८ ॥

६९ **गंडसूचि** ॥ जहां सुचि चरन रचि पासुरी नमाये ॥ छातिमें दाहिणों हात खटकामुख रचि बांये हातसों कपोलमें अलपल्लव रचिये दोऊ हातमें लता रचित हस्तक रचि वृश्चिक पाद चारसों छाति ऊंची कीजिये । सो गंडसूचि ॥६९॥

७० **गरुडप्लुत** ॥ जहां वेलीके सदृश हातोंका फैलाना और पांव बिछूके समान हृदयका भाग उठा हुआ ऐसा जिसमें भाव हो उसको गरुडप्लुत कहते है ॥ ७० ॥

७१ **तलसंस्फोटित** ॥ जहां दंड पादचारी वा अतिक्रांत चारी सों चारको अग्र सितावीसों उठाय । धरतिमें पटकिये । वा हिसमें दोऊ हातनसों ताल दीजिये । सो तलसंस्फोटित ॥ ७१ ॥

७२ **पार्श्वजानु** ॥ जहां एक चरन सम राखि वाके ऊपर दूसरो चरन धरि । अर्धचंद्र हस्तक वामें हातसों कटिपें राखि । दाहिने हातसों मुष्टिहस्तक छातिपें राखि । सो पार्श्वजानु ॥ ७२ ॥

७३ **गृध्रावलिनक** ॥ जहां पिठपें पाव पसारि अंगुठा सों भूमिछुइ दोऊ बाहु पसारिये । सो गृध्रावलिनक ॥ ७३ ॥

७४ **सुचि** ॥ जहां एक चरन सकोरि उठाइ भूमिमें अधर राखि एक हातको खटकामुख छातिपें करे । दूसरे हातमें अल्पद्म हस्तक माथेपें होय । सो सुचि ॥ ७४ ॥

७५ **अर्धसुचि** ॥ जहां एक चरन सकोचि भूमिमें अधर राखि । एक हातको खटकामुख वा अल्पद्म छाति वा माथेपें राखे । सो अर्धसुचि ॥ ७५ ॥

७६ **सुचिविद्ध** ॥ जहां पक्षवंचित हस्तक कटिपें राखे खटकामुख हस्तक छातिपें रचि । एक चरनकों सूचिपाद दुसरे चरनकी एडीपें राखे । सो सुचिविद्ध ॥ ७६ ॥

७७ **हारिणप्लुत** ॥ जहां हरिणप्लुत धारिण करि दोऊ हातनमें खटकामुख दोलाहस्तक रचिये । सो हारिणप्लुत ॥ ७७ ॥

७८ **परिवृत्त** ॥ जहां बद्धभाम चारिसों सूचिपाद रचि भ्रमावे दोऊ हातनें उरुमंडल हस्तक रचे । सो परिवृत्त ॥ ७८ ॥

७९ **दंडपाद** ॥ जहां नुपुरपाद वा दंडपाद चारिसों रहिके दंडकी सीनाई हात राखे । सो दंडपाद ॥ ७९ ॥

८० **मयूरललित** ॥ जहां दोऊ हात चलाय जांघ फलाय वृश्चिकपाद सकोरिकें पिठकों वासों भ्रमावे । सो मयूरललित ॥ ८० ॥

८१ **प्रेखोलित** ॥ जहां एक चरनसों दोला पादचारि रचि । दुसरो चरन उछाल पीठको वासो भ्रमावे । सो प्रेखोलित ॥ ८१ ॥

८२ **सनत** ॥ जहां मृगप्लुतचारि रचि । दोऊ चरनकों स्वस्तिक रचि दोऊ हातनसों दोल रचिये । सो सनत ॥ ८२ ॥

८३ **सर्पित** ॥ जहां एक चरन सकोर आगेकों चलावे दूसरे चरनको अग्र वांको करे । उंहां पांसुमें हातनको चलावे । सो सर्पित ॥ ८३ ॥

८४ **करिहस्त** ॥ जहां बांये हातमें खटकामुख छातिपें रचि दाहिनें हातमें त्रिपताक हस्तक रचि । अंचित चरन अगे सरकावे । सो करिहस्त ॥ ८४ ॥

८५ **प्रसर्पित** ॥ जहां एक हात चलाय चरनसों मिलाय । पृथ्वीको विसत धीरे धीरे चले दूसरे हातमें लता हस्तक रचे । सो प्रसर्पित ॥ ८५ ॥

८६ **अपक्रांत** ॥ जहां बद्ध । १ । अपक्रांत । २ । ये दोऊ चारि रचि एक हातमें खटकामुख दूसरे हात व्यावृत चरनसों चलाय छातिपें ल्यावे जंघा भ्रमावे । सो अपक्रांत ॥ ८६ ॥

८७ **नितंब** ॥ जहां दोऊ हातनको पताक हस्तक रचि माथेपे राखि परवृत करनसों कांधेपें ल्याई । फेर ऊन हाथकेमुख मिलाय छाति सनमुख करि नितंबपे राखे । सो नितंब ॥ ८७ ॥

८८ **स्खलित** ॥ जहां दोला पादचारि रचि दोऊ हात हंसपक्षक हस्तसों घुमावे । सो स्खलित ॥ ८८ ॥

८९ **सिंहविक्रीडित** ॥ जहां आल्सात चारी । सो चपेटकी सीनाई चलाय हातको सहारो दीजिये । सो सिंहविक्रीडित ॥ ८९ ॥

९० **सिंहाकर्षित** ॥ जहां पिटिपे चरन धरि दोऊ हातमें निकुंचित हस्तक रचे । एसें वेरवेर करे । सो सिंहाकर्षित ॥ ९० ॥

९१ **अवहित्थ** ॥ जहां जनिताचारि रचि दोऊ हातको खटकामुख छातिपें राखि । धीरे धीरे नीचेको सरकारतपता हस्तक कीजिये । सो अवहित्थ ॥ ९१ ॥

९२ **निवेश** ॥ जहां दोऊ हात छातिपें राखि छाति टेडी करे । मंडलस्थानकसों स्थित होय । सो निवेश ॥ ९२ ॥

९३ **एलकाक्रीडित** ॥ जहां एलाक्रिडाचारि दोऊ हातमें दोला खटकामुख रचि देहको मोड नमावे । सो एलाकाक्रीडित ॥ ९३ ॥

९४ **जनित** ॥ जहां जनिताचारि रचि एक हातसों मुष्टि छातिपें । दुसरे हातसों लताकरि हस्तक होय । सो जनित ॥ ९४ ॥

९५ **आपसृत** ॥ जहां एक चरनमें आक्षिप्तचारि रचि हातको साहारो लगाय दाहिणे पासू नमाय टेडी कीजिये । सो आपसृत ॥ ९५ ॥

९६ **तलसंघट्टित** ॥ जहां दोला पादचारि रचि दोऊ हातकी हतेली जोर फेरवायो हात कटिपें ल्यावे बांईओर चलावे । सो तलसंघट्टित ॥ ९६ ॥

९७ **उद्धृत** ॥ जहां उद्धतचारि रचि दोऊ हात चरनपें ल्याय सितावी सकोरिये । सो उद्धृत ॥ ९७ ॥

९८ **विष्णुक्रांत** ॥ जहां चरन आगे धरिवेको उठाय सकोचिये । दोऊ हात रेचक हस्तकसों चलाइये । सो विष्णुक्रांत ॥ ९८ ॥

९९ **लोलित** ॥ जहां एक हातमें रचित हस्तक दुसरे हातमें अलपल्लव रचि छातिपें राखे । दोऊ पांसु ओर माथो हलावे वैष्णवस्थानक होय । सो लोलित ॥ ९९ ॥

१०० मदस्खलित ॥ जहां दोऊ चरनमें स्वस्तिक रचि आगें सरकाइये सिर घुमाय दोऊ हातसों दोला हस्तकसों दुलावे । सो मदस्खलित ॥ १०० ॥

१०१ संभ्रांत ॥ जहां अविद्धचारि रचि दोऊ हातनमें । अलपद्मस्तक रचि व्यावृत परिवृत करनसों जंघांपे राखे । सो संभ्रांत ॥ १०१ ॥

१०२ विष्कंभ ॥ जहां बायें ओर सरकि दाहिनें ओर हातसों सुचिमुख रचि बांये चरनको साहारे दे वा यो हात छातिपें राखि फेर दाहिनों चरनसु चिखर हस्तक रचि । दाहिनें हातको अलपल्लव रचि छातिपें राखे बांयो अंग पहलीकी सीनाई रहे । एसें वेरवेर चेष्टा करे । सो विष्कंभ ॥ १०२ ॥

१०३ उद्घट्टित ॥ जहां सकटास्यनाम चारि रचि । एक हात पावके सहारे दीजिये । दूसरे हातमें खटकामुख रचि छातिपें राखे । सो उद्घाट्टित ॥ १०३ ॥

१०४ शकटास्य ॥ जहां उद्घट्टित पाद रचि पांसु नमाय दोऊ हात ताल देवेकों चलाइये । सो शकटास्य ॥ १०४ ॥

१०५ उरुद्धृत्त ॥ जहां उरुद्धृत्त चारि रचि दोऊ जांघपें दोऊ हातनके अराल हस्तक रचि खटकामुख हस्तक रचिये । सो उरुद्धृत्त ॥ १०५ ॥

१०६ वृषभक्रीडित ॥ जहां आलात चारि रचि दोऊ हात रेचत हस्तक रचि व्यावृत करनसों चलाई फेर सकोचि कांधेपें राखि पीछे अलपद्म हस्तक रचिये । सो वृषभक्रीडित ॥ १०६ ॥

१०७ नागापसर्पित ॥ जहां दोऊ हातनमें रेचित हस्तक रचि माथो हलावे । दोऊ चरननमें स्वस्तिक रचि चलिवेकों सरकावे । सो नागापसर्पित ॥१०७॥

१०८ गंगावतरण ॥ जहां एक चरन वेरवेर उछालि । आंगको निचेको चलाइये । दोऊ हातनमें त्रिपताक हस्त रचि ऊंचे नीचे चलाइये माथो निचो कीजिये । सो गंगावतरण ॥ १०८ ॥ करनहें तीनमें वर्णा जगा बांयो हात छातिपें दोय दाहिनें हातसों चारि करन आवेष्टित आदिक रचिये यह रीति जांनिये ॥

गति कहिये ॥ वाहि स्थान है जिनके अनुक्रमसों प्रयोगसें अथवा उलटे प्रयोगसें आनंद होत हे तिनमें करण रचे ते । करण अनंत हें ॥ इन करणको पार नही आवे तोभि अंगहारनमें इतने करण होत हें ॥ यातें करणके भेद

एकसोआठ है तिनको अनुक्रमसों स्वरूप कहे हैं। इति एकसोआठ ॥ १०८॥ **करन नाम–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ उतप्लुत करनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **अंचित** ॥ जहां समपादस्थान राचि सुधो उछले। सो अंचित करन ।१।

२ **एकचरणांचित** ॥ जहां एक पांवसों ठहर उछले । सो एकचरणांचित । २ ।

३ **भैरवांचित** ॥ जहां एक पाव जंघापें धरि उछाले। सो भैरवांचित । ३ ।

४ **दंडप्रणामांचित** ॥ जो अंचित करनसों उछल ल्याठिकि सिनाई उछल धरिपें खडे । सो दंडप्रणामांचित । ४ ।

५ **कर्तरि अंचित** ॥ जो चरन स्वस्तिककरि रचि उछले । सो कर्तरि अंचित । ५ ।

६ **अलग** ॥ जो ग्रीवा नीचि कर उछले धरतिपें उछल गिरती बाद कुकुट आसन रचे । सो अलग । ६ ।

७ **कूर्मालग** ॥ जो ग्रीवा निचि करि उछले धरतिपें पडती बाद कूर्मासम बांधे । सो कूर्मालग । ७ ।

८ **ऊर्ध्वालग** ॥ जो निचि नाडी करि उछलि धरतिपें पडति बाद समपाद स्थानकसों उंचो होय । सो ऊर्ध्वालग । ८ ।

९ **अंतरालग** ॥ जो अलगकी सिनाई उछले पडती बाद धरती उपर छाति लगाय माथेसो कटि मिलावे । सो अंतरालग । ९ ।

१० **लोहडी लुंठीत** ॥ जो समपाद स्थानक रचि वासों भ्रमाय उछलि तिरछो पडे । सो लोहडी लुंठीत । १० ।

११ **कर्तरी लोहडी** ॥ जो स्वस्तिक चरन रचि वासों फिराय उछलि तिरछो पडे । सो कर्तरी लोहडी । ११ ।

१२ **एक पाद लोहडी** ॥ जो एक पादसों ठहरि लोहडी रचिये । सो एक पाद लोहडी । १२ ।

१३ **दर्पसरन** ॥ जो वैष्णव स्थान रचि उछल पांमुके बल गिरे । सो दर्पसरन । १३ ।

१४ जलशयन ॥ जो वैष्णव स्थानसों उछल जलशायि आसन कीजिये। सो जलशयन । १४ ।

१५ नागबंध ॥ जो वैष्णव स्थानसों उछल नागबंध आसन रचे । सो नागबंध । १५ ।

१६ कपालचूर्ण ॥ जो समपाद स्थानसों रचि धरति ऊपरि कपाल टेक उलटिकें ठाडो होय । सो कपालचूर्ण । १६ ।

१७ नतपृष्ठ ॥ जो कपालचूर्णकी रीतिसों उलटि छाति उंचि कीजिये । सो नतपृष्ठ । १७ ।

१८ मत्स्यकरन ॥ जो उछल बीचमें बांई पासू सों मछलि तरह पटकी धरतिपें गिरे । सो मत्स्यकरन । १८ ।

१९ करस्पर्शन ॥ जो अलग करन रचि हात उलट राखे । सो करस्पर्शन । १९ ।

२० एणप्लुत ॥ जो उछल आकासमें सुचिचारि रचि धरतिपर उचलूं आसन करे । सो एणप्लुत । २० ।

२१ तिर्यकरण ॥ जो तिरछो चरनसों ठहरे । उछलि तिरछे हि चरनसो ठाडो होय । सो तिर्यकरण । २१ ।

२२ तिर्यगांचित ॥ जो समपाद स्थानक रचि तिरछो उलटिकें तिरछे चरनसों ठाडो होय । सो तिर्यगांचित । २२ ।

२३ सूच्यन्त ॥ जो एक चरन बाइस चेरके अंतिमें चरन सूचि वा हस्त-सूचि रचिये । सो सूच्यन्त । २३ ।

२४ तिर्यकस्वस्तिक ॥ जो तिरछो स्वस्तिक चरन रचि उछलिवेमें तिर्यकस्वस्तिक रचि भूमिमें परे । सो तिर्यकस्वस्तिक । २४ ।

२५ बाह्य भ्रमरि ॥ जो दाहिनें चरनसों ठहरे बायों पांव धरि ॥ चरनसों दाहिनी टांगमें लपेटे । सो बाह्य भ्रमरि । २५ ।

२६ अंतर्भ्रमरि ॥ जो बांये पावमें दाहिणों पांव लपेटे । सो अंत-भ्रमरि । २६ ।

२७ छत्रभ्रमरि ॥ जो त्रिविक्रमाकार धारिस्थान रचि । बांयो पावसों फिरे । सो छत्रभ्रमरि । २७ ।

२८ तिरिप भ्रमरि ॥ जो स्वस्तिक पाद रचि तिरछो भ्रमें । सो तिरिप भ्रमरि । २८ ।

२९ अलग भ्रमरि ॥ जो वैष्णव स्थानक रचि । बांये चरनसों ठहरि तिरछो भ्रमें । सो अलग भ्रमरि । २९ ।

३० चक्र भ्रमरि ॥ जो अर्धसुचि चक्राकार भ्रमें । सो चक्र भ्रमरि । ३० ।

३१ उचित भ्रमरि ॥ जो समपाद स्थानक रचि । तिरछो देह भ्रमावे । सो उचित भ्रमरि । ३१ ।

३२ शिरो भ्रमरि ॥ जो शिरको धरतिपे टिकावे उंचे करि माथेके जोरसों तीन वेर भ्रमें । सो शिरो भ्रमरि । ३२ ।

३३ दिग्भ्रमरि ॥ जो माथेके बल ठहरि माथेसों । एक एक वेर करि हात हलाय च्यारों दिसानमें हात जोडे । सो दिग्भ्रमरि । ३३ ।

३४ समपादांचित ॥ जो सम पादक स्थानक रचि ठहरि उछलिके कंधेके बल ठहरि पांव हलाय । कांधेके बलसों फिरे । सो समपादांचित । ३४ ।

३५ भ्रांत पादांचित ॥ जहां दाहिणो पाद फिराय बांइ जंघाये कटि उछलि । कंधेके बल धरतिपे ठहरि पांव हलाइके भ्रमण करे । सो भ्रांत पादांचित । ३५ ।

३६ स्कंधभ्रांत ॥ जहां उकडू बेठि उछलि कंधेपे धरति टेक फेर दोऊ हात धरतिपे लगाय । पाय उपरको सुध करि च्यारों ओर हातके जोरसों फिरे । सो स्कंधभ्रांत । ३६ ।

यह प्रसिद्ध करन छतिस कहे हें । ऐसें औरहू करन अनेक हे सो बुद्धि सो जाण लीजिये ॥ इति उतप्लुत करनके छतिस भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ अंचित लोहडी भेद लिख्यंते ॥

१ लंका दाहान्चित ॥ जो अंचित करन करि देहको मरोड ऊकडू आसन करिसो धरतिपे ठहरे । सो लंका दाहाचित । १ ।

२ कर्तरी कांचित ॥ जो अंचित करन करि स्वस्तिक पाद सों ठाडो होय । सो कर्तरी कांचित । २ ।

३ यवधांचित ॥ जो गजदंत हस्तक रचि अंचित करन । रचे सो यवधांचित । ३ ।

४ क्षेत्रांचित ॥ जहां उकडू बैठि । अंचित करन करि । फेर उकडू बैठे । सो क्षेत्रांचित । ४ ।

५ स्कंधाचित ॥ जहां अंचित करन करि उछलि कंधे टिकाई । पांव तिरछे हलावे । सो स्कंधाचित । ५ ।

६ विचित्र लोहडी ॥ जो लोहडी करनमें वक्रकी सिनाई गोल आकार सरीरकों भ्रमावे । सो विचित्र लोहडी । ६ ।

७ बाहुबंधा लोहडी ॥ जो या विचित्र लोहडी दोनू हातमें एकदंतहस्तक रचे । सो बाहुबंधा लोहडी । ७ ।

८ समकर्तरी लोहडी ॥ जो लोहडी करनके आदिमें । समपाद स्थानक अंतिमें स्वस्तिकपाद स्थानक होय । सो समकर्तरी लोहडी । ८ ।

९ चतुर्मुख लोहडी ॥ जो लोहडी करन रचे च्यारों ओरकों करे । सो चतुर्मुख लोहडी । ९ । **इति अंचित लोहडी भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ स्थानकनको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां अंगनको टेडो सूधो रोखिवो निहचल होय । सो स्थानक जानिये । अब याके भेद कहे हैं ॥

१ वैष्णवस्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि दूसरो पाव अढाई । विलस्तके अंतरसों पिंडि नमाय तिरछो राखे । सुंदरताढिये होय । सो वैष्णवस्थानक । याके श्रीविष्णु भगवान देवता हैं । १ ।

२ समपादस्थानक ॥ जहां एक विलस्तके । अंतरसों दोऊ चरन सूधे राखिये । सोभासों हात कांधेपें धरिये हात बराबर राखे । सो समपादस्थानक ॥ याको देवता श्रीब्रह्मा हैं । २ ।

३ वैखार ॥ जहां साडेतीन विलस्तके अंतरसों दोऊ चरन तिरछे रहे । ओर हातहू इतनेंही अंतरसों राखिये । सो वैखार । ३ ।

४ मंडलस्थानक ॥ जहां एक विलस्तके अंतर दोनू पाय तिरछो राखिये । गोडाके बराबर कठिनतासों । सो मंडलस्थानक । ४ ।

५ अलिढस्थानक ॥ जहां बांयो चरन सम दाहिनों चरन पांच बिलस्तके अंतर आगें पसारिये अथवा तिरछो पसारिये । सो अलिढस्थानक ॥ याको देवता रुद्र हें । ५ ।

६ प्रत्यालीढ ॥ जहां दाहिनों चरन राखि बांयो पग पांच बिलस्तके अंतर आगें पसारिये । वा तिरछो पसारे । सो प्रत्यालीढ । ६ । ए छहो स्थानक पुरुषके नृत्यमें कीजिये ॥ **इति पुरुषके छह स्थानक संपूर्णम् ॥**

॥ अथ स्त्रीनके स्थानकको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ आयत स्थानक ॥ जहां बांयो चरन एक बिलस्तके अंतर तिरछो राखे दाहिनों चरन सम राखे । प्रसन्न मुख छाति उंची दाहिणे हात कटिपें राखे बांये हातमें लताहस्तक रचिये । सो आयात स्थानक कहिये । १ ।

२ अवहित्थस्थानक ॥ जहां बांयो चरन सम राखि दाहिनों पांव बिलस्तके अंतर तिरछो राखो । बाकी रीति आयात स्थानक किसी कीजिये । सो अवहित्थस्थानक । २ ।

३ अश्वक्रांत ॥ जहां एक चरन सम राखे । दूसरो चरन पांवके एडी बराबर राखे । अथवा एक बिलस्तके अंतर सूचि पाद रचि । सो अश्वक्रांत। ३ ।

४ स्थानगतागत ॥ जहां एक पांव चलिवेको । उठाइ आगें धरे नही वैसेंहि राखे । सो स्थानगतागत । ४ ।

५ वलित स्थानक ॥ जहां सरीर टेडो करे । दोनु चरन धरि । एक पांवकी चटि अंगुरीसों धरनीकों छुवे । दूसर चरनके अंगुठासों धरति छुवे । सो वलित स्थानक । ५ ।

६ मोटित स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि दूसर पांवको अग्रभागको राखे । दोऊ हातनमें कूर्महस्तक रचि ऊंचे करे । सो मोटित स्थानक । ६ ।

७ विनिवर्तित ॥ जहां मोटित स्थानक रचि पीठकी ओर अंगसों मोडी नमावे । सो विनिवर्तित । ७ ।

८ प्रोनक स्थानक ॥ जहां सरीर सूधो करि दोऊ चरनकी अंगुरीके जोरसों उंचो होय । सो प्रोनक स्थानक । ८ । यह स्थानक उंचे फल फूल ताडीवेमें उंचि वस्तु लेवेमें जांनिये ॥ **इति स्त्रीनके आठ स्थानकको नाम–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ देसी स्थानकको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ स्वस्तिक स्थानक ॥ जहां टकोणापें स्वस्तिक पाद रचि । दोऊ पांवकी चटी अंगुरी मिलाइये । सो स्वस्तिक स्थानक । १ ।

२ वर्द्धमान स्थानक ॥ जहां दोऊ चरन तिरछे करि । एडीसों एडी मिलावे । सो वर्द्धमान स्थानक । २ ।

३ नंद्यावर्त स्थानक ॥ जहां वर्द्धमान रचि दोऊ एडीके बिषमें छह अंगुलको अंतर होय । सो नंद्यावर्त स्थानक । ३ ।

४ एकपाद स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि वांके गोडापें दूसरे पांव उलटो राखे । सो एकपाद स्थानक । ४ ।

५ चतुरस्र स्थानक । जहां नंद्यावर्त स्थानक रचि दोऊ एडीनको डेड विलस्तिको अंतर होय । सो चतुरस्र स्थानक । ५ ।

६ समसूचि स्थानक ॥ जहां एडी चरन गोडे । धरतिपें तिरछे पसारिय । सो समसूचि स्थानक । ६ ।

७ विषमसूचि स्थानक ॥ जहां दोऊ चरन सूचि खटकामुख रचि । एक संग एक चरन । एक आगें एक पिछे पसारिये । सो विषमसूचि स्थानक । ७ ।

८ खंडसूचि ॥ जहां समसूचिमें एक चरन सकोरिये । सो खंडसूचि ।८।

९ ब्रह्म स्थानक ॥ एक चरन सम राखि दूसरे चरन सकोरि गोडा पास ल्यावे । सो ब्रह्म स्थानक । ९ ।

१० वैष्णव स्थानक ॥ जहां एक पाद सम राखिये दूसरो चरन सकोरिये पांव पसारिये । सो वैष्णव स्थानक । १० ।

११ गरुड स्थानक ॥ जहां बांयो चरन सकोरि दाहिनें पांवको गोडा धरतीसों लगावें । सो गरुड स्थानक । ११ ।

१२ शैव स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि । दूसरे चरन सकोरि गोडापें राखे । सो शैव स्थानक । १२ ।

१३ कूर्मासन स्थानक ॥ जहां दाहिनें पांवको गोडा टकोणा धरतीसों लगाय बांयो चरन सम राखिये । सो कूर्मासन स्थानक । १३ ।

१४ नागबंधन ॥ जहां बेठिवेके बांई जांघपें दाहिनी पिंडी धरे । सो नागबंधन । १४ ।

१५ वृषभासन स्थानक ॥ जहां दोऊ गोडा धरतीसों लगाय पांव नितंबसों लागे । सो वृषभासन स्थानक । १५ ।

१६ संहत स्थानक ॥ जहां सरीर समान राखि दोऊ चरनके अंगुठासों अंगुठा कूणा मिलाइये । सो संहत स्थानक । १६ ।

१७ समपाद स्थानक ॥ जहां सूधो उभो होय दोऊ चरननके बीच एक बिलसत अंतर होय । सो समपाद स्थानक । १७ ।

१८ पृष्ठोत्तान तल स्थानक ॥ जहां एक पांव पिछे अंगुरीनके जोरसों सूधो धरि आगें दूसरो पांव सम राखि । सो पृष्ठोत्तान तल स्थानक । १८ ।

१९ पार्ष्णिविद्ध स्थानक ॥ जहां एक चरन आगें राखि वांके अंगुठासों दूसरे चरनकी एडी मिलाय धरे । सो पार्ष्णिविद्ध स्थानक । १९ ।

२० पार्ष्णिपार्श्वगत स्थानक ॥ जहां एक चरन सम राखि वांके तलवांके बराबर दूसरे चरनकी एडी राखे । सो पार्ष्णिपार्श्वगत स्थानक । २० ।

२१ एक पार्श्वगत स्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि । जाके आगें दूसरे पांव कछूक बाहिरो राखे । सो एक पार्श्वगत स्थानक । २१ ।

२२ एक जानुगत स्थानक ॥ जहां एक पांव सम राखि दूसरे पांव च्यारि अंगुलके अंतरमें राखिये । वांको गोडा सकोरिये । सो एक जानुगत स्थानक । २२ ।

२३ परावृत्त स्थानक ॥ जहां दोऊ पांव तिरछे धरि । एक पांवके अंगुठासों । दूसरे चरनकी चटी अंगुरी मिलावे । सो परावृत्त स्थानक । २३ ।

इति देसी तइस स्थानके नाम—लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ बेठिवेके नव स्थानक लिख्यते ॥

१ स्वस्थ आसन ॥ जहां छाति ऊंचि करि जंघापें दोऊ हात राखि अकुंचित पाद करि फलाय बेठिये । सो स्वस्थ आसन । १ ।

२ मदालस बेठिक ॥ जहां एक चरन संकोचि । दूसरे चरन कछूक पसारिये पासूकी तरफ । सो मदालस बेठिक । २ ।

३ क्रांत बेठिक ॥ जहां दोऊ हात चिबुकपें लगाय कांधेपें माथो राखिये। नेत्र कछूइक ढापे। सो क्रांत बेठिक। ३।

४ विष्कंभत ॥ जहां दोऊ बाहु पसारि जांघ निचें धरि दोऊ चरन अकुंचित करि नेत्र मूंदि बेठे। सो विष्कंभत ॥ यह ध्यानकी बेठक है। ४।

५ उत्कट बेठिक ॥ जहां दोऊ पांव बरोबर धरतिपें लगाय कटिके जोरसों बेठे। सो उत्कट ॥ ये बेठकके ध्यान संध्यावंदन जपादिकमें वा भोजनमें होय। ५।

६ श्रस्तालस बेठिक ॥ जहां दोऊ हात धरतिपें डारि। सरीर नेत्र आलसमें होय। सो श्रस्तालस बेठिक। ६।

७ जानुगत बेठिक ॥ जहां दोऊ गोडा धरतीपें लगाय बेठिये। सो जानुगत बेठिक ॥ यह होम देवार्चना दीनयाचनामे होय। ७।

८ मुक्तजानु बेठिक ॥ जहां एक गोडा उंचो राखिये। एक गोडा धरतीसें नमाइये। सो मुक्तजानु बेठिक। ८।

९ विमुक्त ॥ जहां सोक चिंतामें धरतिपे हात पांव फेलाइ परे। सो विमुक्त। ९। **इति नव बैठक संपूर्णम् ॥**

॥ अथ सोयवेके छह स्थानकको लछन लिख्यते ॥

१ आकुंचित शयन ॥ जहां सीतकी ऋतुमें सरीर संकोचके पेटसों गोडा लगाय सोवे। सो आकुंचित शयन। १।

२ सम शयन ॥ जहां ऊपरकों मुख राखि तिरछे हात फेलाय। सो सम शयन। २।

३ प्रसारित शयन ॥ जहां एक हातसों तकिया लगाय सुखसे पांव पसारि सोवे। सो प्रसारित शयन। ३।

४ विवर्तत शयन ॥ जहां सस्त्रके लागिवेसों। अथवा रोगपीडासों उंचो सोवे। सो विवर्तत शयन। ४।

५ उद्वाहित शयन ॥ जहां कोहणी धरतीपें टेकि कंधपें माथो राखि टच्योडो सोवे। सो उद्वाहित शयन। ५।

६ नत शयन ॥ जहां कछूइक पिंडि पसारि हात फेलाइ सिथल सोवे।

सो नत शयन ॥ खेद भूल आलसमें होवे । ६। इति शयन स्थानको छह भेद-लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ चरनकी गतिको नाम चारि ताको नाम-लछन लिख्यते ॥

जहां एक संग चरन । १ । पिंडि । २ । जंघा । ३ । कटि । ४ । इनको हलाइवो चलाइवो आदि ज्यो कर्म नृत्यमें होय । ताको चारिको कारन व्यायाम हैं । सो च्यारि प्रकारको हैं ॥

जहां एक चरनसों नृत्यकी रचना साधे । सो च्यारि व्यायाम एक ।१। दोय चरनसों नृत्यकी रचना साधे । सो कटन । २ । ऐसें तीन करन कीजिये । सो खंड व्यायाम । ३ । त्र्यस्त्र तालमें तीन खंड सों चतुरस्र तालमें च्यारि खंड । सो मंडल व्यायाम जांनिये । ४ ।

अथ च्यारोंके नाम-लछन लिख्यते ॥ या चारिके दोय भेद हैं ॥ भूमिचारि । आकासचारि । तहां भूमिचारिके सोलह भेद कहेहें ॥

१ समपादचारि ॥ जहां समपाद स्थानकसों दोऊ चरन । वा चरनके नख बरोबर राखे । सो समपादचारि । १ ।

२ स्थितावर्ताचारि ॥ जहां एक चरन धरि दूसरे वांके आगें ल्याय बांई ओर धरिये । फेर थिर चरन उठाय । दूसरे चरनकी बरोबर राखिये । सो स्थितावर्ताचारि । २ ।

३ शकटास्यचारि ॥ जहां चरनके अग्रभागसों चलत देह मरोडीये । हात पसार मिलावे । सो शकटास्यचारि । ३ ।

४ विच्यवाचारि ॥ जहां बरोबरि पांव धरि उछलि चरनके अग्रसों टाडो होय । सो विच्यवाचारि । ४ ।

५ अध्यर्धिकाचारि ॥ जहां दोऊ पांव सवा हातके अंतरसों बांये दाहिनें चलावे । सो अध्यर्धिकाचारि । ५ ।

६ चाषगतिचारि ॥ जहां एक बिलस्ति आगेंको जाय तनकाल पाछो आवे कछुक कुदिकें दाहिनों बांयों पग वेगवेगसें आगें पिछे चलावे । सो चाषगतिचारि । ६ ।

७ एलकाक्रीडिताचारि ॥ जहां चापचारि कछुइक कूदि करि

चरन आगले तलवामें चलावे। पिछे एक पांव दूरि धरे। फेर वह पाव उठाय कूद करि राखे। सो एलकाक्रीडिताचारि। ७।

८ **समोसरितमत्तल्लीचारि** ॥ जहां एक चरनके पीछे दूसरे चरन आगले तलवाके जोर राखिये जांघ दोऊ मिले जब आगें पिछे चलिये। सो समोसरितमत्तल्लीचारि। ८।

९ **मत्तल्लीचारि** ॥ जहां जांघ दोऊ मिले चरन तिरछे जाय घुमत चले गिरत परत। सो मत्तल्लीचारि। ९।

१० **उड्डिताचारि** ॥ जहां एक पांव सम राखिये दूसरे पांवको आगलो तलवा बांहि पांवके आगें पिछे चलिये। सो उड्डिताचारि। १०।

११ **स्यन्दिताचारि** ॥ जहां बांयो पांव सम ठाडो राखिये। दाहिणों पांव पांच तल अंतर तिरछो पसारिये। सो स्यन्दिताचारि। ११।

१२ **अपस्यंदिताचारि** ॥ जहां दोऊ पग पसारिके दाहिणों पग ठाडो कीजिये। बांयो पसारिये॥ अथवा बांयो ठाडो कीजिये॥ दाहिणों पसारिये। सो अपस्यंदिताचारि। १२।

१३ **बद्धाचारि** ॥ जहां दोऊ जंघा मिलि करि फेर फिरावे पांवके आगले तलवाको जोरसें फिरावे। सो बद्धाचारि। १३।

१४ **जनिताचारि** ॥ जहां बांयो हात मुष्टिक हस्तक करि छाति उपर राखिये। दाहिणें हात जेसे सोभा होय तेसें राखिये॥ पांवके आगले चरन चलिये। सो जनिताचारि। १४।

१५ **उरुद्वृत्ताचारि** ॥ जहां दोऊ चरनकों आगें पिछे राखिकें। एक पांवके अग्रसों दूसरे चरनकी एडीसों चले। सो उरुद्वृत्ताचारि। १५।

१६ **उत्संदिताचारि** ॥ जहां चटि अंगुरीके भागसों अंगुठाके भागसों चरण हलावें। सो उत्संदिताचारि। १६। इति **भूमिचारिके नाम षोडश लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ आकासचारिके षोडस नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **अतिक्रांताचारि** ॥ जहां एक चरण सम राखिकें। दूसरे पग कछूक उठाय पसारिये॥ प्यारि कूदि ठाडो होय। सो अतिक्रांताचारी। १।

२ **अपक्रांताचारि** ॥ जहां पहले बद्धाचारि कीजिये पीछे एक पाद उठाइये । कछुक बांको करि । दाहिनें ओर धरतिपे राखिये । सो अपक्रांताचारि । २ ।

३ **पार्श्वक्रांताचारि** ॥ जहां दाहिनों बांयो पग चूतडपर्यंत उठाय बांको धरि धरतिपे राखिये । सो पार्श्वक्रांताचारि । ३ ।

४ **मृगप्लुताचारि** ॥ जहां चरण बांको करि कछुइक कूदि धरतिपें राखिये । दूसरो चरण ऐसेंहि राखिये । सो हरिणप्लुताचारि वा मृगप्लुताचारि ।४।

५ **ऊर्ध्वजानुचारि** ॥ जहां बांको चरण छाति बरोबर गोडा राखिये । दूसरो चरण थिर ठाडो राखिये । सो ऊर्ध्वजानुचारि । ५ ।

६ **अलाताचारि** ॥ जहां एक चरण पसारि दूसरे पगको तलवा ऊपर करि आगें राखे । सो अलाताचारि । ६ ।

७ **सूचिचारि** ॥ जहां चरण बांको करि ऊंचो करि पसारिये । सो सूचिचारि । ७ ।

८ **नूपुरपादिकाचारि** ॥ जहां चरण बांको करि । एडी पिछेको लगाय । आगले तलवाके अग्रभाग धरतिपें राखिये । सो नूपुरपादिकाचारि । ८ ।

९ **दोलापादचारि** ॥ जहां चरण बांको करि । ऊछलायमें झुलाइये । दुसरे चरणमें । एही क्रीडा कीजिये । सो दोलापादचारि । ९ ।

१० **दंडपादचारि** ॥ जहां एक चरण सम राखिये । दूसरे चरण आगले तलवाके जोर राखिये । वेगसें पसारिये सनमुख होय । सो दंडपादचारि । १० ।

११ **विद्यद्भ्रांताचारि** ॥ जहां एक पाय धरतिपें राखे दूसरे चरण पसार । आगें माथेपर राखिके । भ्रमाय धरतिपें राखे । सो विद्यद्भ्रांताचारि । ११ ।

१२ **भ्रमरिचारि** ॥ जहां चरण पहले आगें राखिये ॥ पिछे पगके तलवांके जोर फिरे । सो भ्रमरिचारि । १२ ।

१३ **भुजंगत्रासिताचारि** ॥ जहां एक पगकी एडीपर दूसरे पगको आगिले तलवा राखिये जांघपर हात फिराइये । सो भुजंगत्रासिताचारि । १३ ।

१४ **आक्षिप्ताचारि** ॥ जहां दाहिनो चरण बांयो चरणके पास लाइये ॥ हात लताहस्तक कीजिये । सो आक्षिप्ताचारि । १४ ।

१५ आविद्धाचारि ॥ जहां चरण बांयो सम राखिकें ॥ दाहिनो पग बांये पगके उपर तिरछो करि पसारि । वहां फिराइ धरतिपे डारिये । सो आविद्धाचारि । १५ ।

१६ उद्धृताचारि ॥ जहां आविद्ध चरण कीजिये दूसरे चरणके घूंटे पर राखिये कछूक कुदि कर भवरि करि चरण तहांको तहां राखिये ॥ इसि भांति दूसरि ओरहू करिये । सो उद्धृताचारि । १६ । **इति भूमि–आकास-चारिके नाम–लछन संपूर्णम् ॥**

सोलह भूमिकी सोलह आकासकी मिलिके बतीस चारि जांनिये ॥ यह बतीस मारगी चारि हें ऐसें हि देसी भूमिचारि पांतिस तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ रथचक्राचारि ॥ जहां चतुरस्र स्थानक रचि दोऊ चरणमें लाइकें॥ आगें वा पिछे पसारिये । सो रथचक्राचारि । १ ।

२ परावृत्ततलाचारि ॥ जहां दोऊ चरणके तलवा ऊंचे करि बाहिरकों पग पसारे । सो परावृत्ततलाचारि । २ ।

३ नूपुरविद्धाचारि ॥ जहां दोऊ पावनको स्वस्तिक रचि पांवको अग्र-भाग वा एडी न्यारि कीजिये । सो नूपुरविद्धाचारि । ३ ।

४ तिर्यङ्मुखाचारि ॥ जहां वर्धमान स्थानक रचि दोऊ पांव तिरछे वेगसें सरकावे । सो तिर्यङ्मुखाचारि । ४ ।

५ मरालाचारि ॥ जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि दोऊ पांवकी एडीवा अग्रभाग चलाइ आगें पसारिये । सो मरालाचारि । ५ ।

६ करिहस्ताचारि ॥ जहां हंसस्थानक रचि दोऊ तिरछे पावनसों धर-तीपे धिसे । सो करिहस्ताचारि । ६ ।

७ कुलीरिकाचारि ॥ जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि तिरछे चरन चलावे । सो कुलीरिकाचारि । ७ ।

८ विश्लिष्टाचारि ॥ जहां पार्श्वविद्ध स्थानक रचि दोऊ पांव जुदे जुदे चलावे । सो विश्लिष्टाचारि । ८ ।

९. कातराचारि ॥ जहां नंद्यावर्तक स्थानक रचि । दोऊ पांव पीछेको चलावे । सो कातराचारि । ९ ।

१० पार्ष्णिरेचिताचारि ॥ जहां पार्श्वगत स्थानक रचि एडी न्यारि कीजिये । सो पार्ष्णिरेचिताचारि । १० ।

११ ऊरुताडिताचारि ॥ जहां एक पांवसों ठाडो होयके दूसरो पांव ऊंचो करि । फेर धरतीके पावसों कुदि धरतीको पांव उछालि । या पांवसों दूसरे पांवकी जांघ छुवे । फेर धरतिपे टेकिये । सो ऊरुताडिताचारि । ११ ।

१२ उरुवेणिचारि ॥ जहां दोऊ पावनके स्वस्तिक रचि । फेर तिरछे. चरन करि धरतीपे घिसे दोऊ जंघा मिलावे । सो उरुवेणिचारि । १२ ।

१३ तलोद्धृताचारि ॥ जहां अंगुरीके जोरसों सितावि दोऊ पांव चलावे । सो तलोद्धृताचारि । १३ ।

१४ हरिणत्रासिकाचारि ॥ जहां दोऊ चरन तिरछे मिलाई उछालिये । फेर वेसेंहि धरतिपें ठाडो रहें । सो हरिणत्रासिकाचारि । १४ ।

१५ अर्धमंडलिकाचारि ॥ जहां दोऊ पांव मिलाई । धरतीके एक चरन । बाहीर सरकाइ । धरतिपें घिसि पहले हातनमें ल्यावे । ऐसेंहि दुसरो चरन कीजिये । सो अर्धमंडलिकाचारि । १५ ।

१६ तिर्यक्कुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव धरि एक पांव संकोचि तिरछो चलावे । एसेंहि दूसरो पांव करे । एसें दोय तीन वार कीजिये । सो तिर्यक्कुंचिताचारि । १६ ।

१७ मदालसाचारि ॥ जहां मतवारेकी सिनाई । एसें तेडे चरन धरे । सो मदालसाचारि । १७ ।

१८ तिर्यक्संचारिताचारि ॥ जहां एक पांव संकोचि उछाल चलावे । दूसरे पांव तलवाके जोरसों तिरछो चलावे । सो तिर्यक्संचारिताचारि । १८ ।

१९ कुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव संकोचि । एक एक पांव उछारि उछारि आगें धरिये । सो कुंचिताचारि । १९ ।

२० स्तंभक्रीडनिकाचारि ॥ जहां एक पांव तिरछो पसारि यांकी पांसुकें । दूसरे चरनको तलुवा लगावे । सो स्तंभक्रीडनिकाचारी । २० ।

२१ लंघितजंघिकाचारि ॥ जहां खंड सूचि स्थानक रचि । एक पांव सिताव खेंचि । दूसरे पांवसों वा चरनसों उलंघे । सो लंघितजंघिकाचारि । २१ ।

२२ स्फुरिताचारि ॥ जहां दोऊ चरनमें एक चरनके तलवासों धरति छुटे । दूसरे चरन आगेंको वेग चलावे । सो स्फुरिताचारि । २२ ।

२३ अपकुंचिताचारि ॥ जहां दोऊ पांव सकोरि पिछेको चलावे । सो अपकुंचिताचारि । २३ ।

२४ संघट्टिताचारि ॥ जहां विषमसूचि स्थानक रचि उछलीके दोऊ पांव मिलाय । धरतीपें धरे । सो संघट्टिताचारि । २४ ।

२५ खुत्ताचारि ॥ जहां चरनके अग्रसों । धरतिको ताडन करि चले । सो खुत्ताचारि । २५ ।

२६ स्वस्तिकाचारि ॥ जहां दोऊ चरन मरोडी बांये दाहिने मिलाय । स्वस्तिकके आकार रचे । सो स्वस्तिकाचारि । २६ ।

२७ तलदर्शिनि ॥ जहां पांवकी अंगुरी स्थानपर रखके थोडो तिरछि करिके अलग करे ओर पीछेके भूमीको स्पर्श करे । सो तलदर्शिनि । २७ ।

२८ पुराटिकाचारि ॥ जहां दोऊ पग धरि उछलिपगसों पगको ताडन कीजिये । फेर ठाडो होय । सो पुराटिकाचारि । २८ ।

२९ अर्धपुराटिकाचारि ॥ जहां एक पांव उछारि उछारि उपरि राखि वा पगसों दूसरे पांवको उछालि ताडन कीजिये । सो अर्धपुराटिकाचारि ।२९।

३० सारिकाचारि ॥ जहां एक पगसों ठाडो होय । दूसरे पग आगेंको चलावे । सो सारिकाचारि । ३० ।

३१ स्फुरिकाचारि ॥ जहां दोऊ पग अनुक्रमसों आगे पिछे चलावे । सो स्फुरिकाचारि । ३१ ।

३२ निकुट्टिकाचारि ॥ जहां चरनका अग्रभाग बांको करि चाले । सो निकुट्टिकाचारि । ३२ ।

३३ लताक्षेपाचारि ॥ जहां एक चरन पिछे चलाय । फेर आगेंको चलाय । धरतिपें ताडन करे । सो लताक्षेपाचारि । ३३ ।

३४ उड्डुस्खलितिकाचारि ॥ जहां एक पांव तिरछो करि । उपरको चलाइये । सो उड्डुस्खलितिकाचारि । ३४ ।

३५ समस्खलितिकाचारि ॥ जहां दोऊ पांव तिरछे आगे पिछे धरतिपे उछलवे । एक संग धरतिपें चलाइये । सो समस्खलितिकाचारि । ३५। इति पेंतिस देसी भूमिचारिके नाम संपूर्णम् ॥

॥ अथ देसिआकासचारिउगणीस ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ विद्युद्भ्रांताचारि ॥ जहां एक पांव धरतिपे राखि । दूसरे पग आगेको पसारि माथेपे फिराय । भूमिपर राखिये । सो विद्युद्भ्रांताचारि । १ ।

२ पुरःक्षेपाचारि ॥ जहां एक पग बांको करि उंचो उछाल वेग पसार भूमिपर धरिये । सो पुरःक्षेपाचारि । २ ।

३ विक्षेपाचारि ॥ जहां बारबार चरनकों आगें पसरि सकोरिये । सो विक्षेपाचारि । ३ ।

४ हरिणाप्लुताचारि ॥ जहां दोऊ पग पसारि छूटि पग मिलाइ धरतिपें ठाडो होय । सो हरिणाप्लुताचारि । ४ ।

५ अपक्षेपाचारि ॥ जहां एक पांव उठाइ । जंघापें धरि नितंबताई चढावे । सो अपक्षेपाचारि । ५ ।

६ डमरिचारि ॥ जहां पांव टेडो करि बांई दाहिनि ओर फिराय अपनें स्थानकपें राखिये । सो डमरिचारि । ६ ।

७ दंडपादाचारि ॥ जहां स्वस्तिक चरन रचि । फेर खोलि बांयों दाहिनों उंचो निचो पग फिराय स्थानपे राखे । सो दंडपादाचारि । ७ ।

८ अंध्रिताडिताचारि ॥ जहां दोनु पांव पसारि उछलि आकासकी वोर पांवके तलवा करि धरतीपें ठाडो होय । सो अंध्रिताडिताचारि । ८ ।

९ जंघालंघनिकाचारि ॥ जहां एक पांव सकोरि उछलि दूसरे पांवको वा पगको उठावे । सो जंघालंघनिकाचारि । ९ ।

१० अलाताचारि ॥ जहां दोऊ पांव पिछेको स्वस्तिक रचि कूदि एडीके जोरसों ठाडो होय । सो अलाता चारि । १० ।

११ जंघावर्ताचारि ॥ जहां एक पांवकों भीतरकी ओर भ्रमाय। दूसरे गोडापें तलवा धर फेर वाहि ओर भ्रमावे। सो जंघावर्ताचारि। ११।

१२ वेष्टनचारि ॥ जहां एक पावसों दूसरे पांव लपेटिये। सो वेष्टन-चारि। १२।

१३ उद्वेष्टनचारि ॥ जहां एक पांव दूसरे पांवमें लपेटि पिछेको पसारिये। सो उद्वेष्टनचारि। १३।

१४ उत्क्षेपा चारि ॥ जहां एक पांव सकोरि दूसरे पांवके उपर धरिये। सो उत्क्षेपाचारि। १४।

१५ पृष्ठोतक्षेपाचारि ॥ जहां एक पांव सकोरि पीछेके चलाय दूसरे पावमें राखे। सो पृष्ठोतक्षेपाचारि। १५।

१६ सूचिचारि ॥ जहां एक पांव दूसरे पांवके उपर राखि। पीछेके ओर पसारिये। सो सुचिचारि। १६।

१७ विद्धाचारि ॥ जहां दोऊ पांवकों स्वस्तिक रचि। खोलि एक पांव झुलाइय। सो विद्धाचारि। १७।

१८ प्रावृताचारि ॥ जहां सुंदरतासों सरीरको मरोर। सो प्रावृता-चारि। १८।

१९ उल्लोलचारि ॥ जहां दोऊ चरनमें उलाल रचि। च्यारो तरफ भ्रमावे। सो उल्लोलचारि। १९। **इति उगणिस आकासचारिके नाम-लछन संपूर्णम् ॥**

॥ ऐसें छियासी। ८६। मार्गी देसी जांनिये ॥

अथ अंगहारको नाम-लछन लिख्यते ॥ जो ये अंगहार श्रीशिव-जीके अंगमे रहेहें। यातें इनको नाम अंगहार हें। नृत्य आदिकमें विलास-जुत अंगनको गोरिवो उंचो निचो करिवो। सो अंगहार हें। ये रंगभूमीमें महा सुभ फल देत हें। असुभकों दूरि करत हें। यातें अंगहार नृत्यमें अवस्य रचि। एक सभापतीको सभाके सिगरे लोगनकों वा नगरदेसकों आनंदके दाता हें। तहां अंगहार कहिवेकों करनके समूहनके नाम कहे हें। दोय करनको नाम मातृका। १। तीन करनको नाम कलापा। २। च्यारि करनको नाम खंड

। ३ । पांच करनको नाम संघात । ४ । और कोऊ आचारिज दोऊ करनको कलापा तीन करनको खंड च्यारि करनको संघात कहत हैं । यहां सब अंगहारके करनमें एक गुरु अछिरकी एक कला जांनिये ॥

॥ अथ चतुरस्र तालमें वरतिवेकों सोलह अंगहार हैं तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ स्थिर हस्त ॥ जहां दोऊ हात पसारि फेर उठाइ स्वस्तिक रचिये फेर समपाद स्थानकसों । फेर एक वामों हात उठाइ उंचो कीजिये । फेर प्रत्यालीढ स्थानक रचि । फेर निकुट्टक रचि । फेर ऊरुद्वर्तक रचि आक्षिप्तके कर करि नितंब हस्तक रचिये हस्तक कटि छिन्न रचिये । अंगहारके अंतिम स्थिर हस्तक रचिये । सो अंगहारको नाम स्थिर हस्त हे ॥ १ ॥

२ अंगहारपर्यस्त ॥ जहां तलपुष्पपुट अपविद्ध वर्तित निकुट्टक ऊरुधृत आक्षिप्त उरोमंडल नितहस्तक करि । हस्तक कटिछिन्न । ए दस करन होय । सो अंगहारपर्यस्त ॥ २ ॥

३ अंगसूचिविद्ध ॥ जहां पहले अलपल्लव नामक करन कीजे । पीछे सूचि आक्षिप्त आवर्त । निकुट्टक ऊरुद्धृत । आक्षिप्त उरोमंडल करि हस्त कटिछिन्न । ए करन क्रमसों रचिये । सो अंगसूचिविद्ध ॥ ३ ॥

४ अपराजित ॥ जहां पहले दंडक चरन रचि विक्षिप्त आक्षिप्त करिये पासु साथ ल्याइये । दोय वेर निकुट्टक करन करिये । पीछे आक्षिप्त उरोमंडल करिहस्तक छिन्न करिये । सो अंगहार अपराजित ॥ ४ ॥

५ वैशाखरेचित ॥ जहां सरीर भ्रमाय वैशाखरेचित रचि । अपविद्ध हस्तक रचि फेर नूपुर भुजंगत्रासित उन्मतलीन ऊरुद्धृत उरोमंडल करिहस्तक कटिछिन्न कीजिये । सो वैशाखरेचित ॥ ५ ॥

६ पार्श्वस्वस्तिक ॥ जहां दिगस्वस्तिक करि दोऊ पांसूके अर्धनिकुट्टक करन करि पीछे हातपे खेंची पिंडिपे ल्यावे । फेर ऊरुद्धृत आक्षिप्त नितंब करिहस्तक कटिछिन्न करन कीजिये । सो पार्श्वस्वस्तिक अंगहार ॥ ६ ॥

७ भ्रमर ॥ जहां पहले नूपुर करन करि आक्षिप्त करन कीजिये । ताहि

पीछे छिन्न सूचि नितंब करि उरोमंडल कटिछिन्न ये करन कीजिये । सो भ्रमर नाम अंगहार ॥ ७ ॥

८ **आक्षिप्तक** ॥ जहां नूपुर विक्षिप्त रचि । अलातक आक्षिप्त उरोमंडल नितंब करिहस्तक कटिछिन्न करन कीजिये । सो आक्षिप्तक अंगहार ॥ ८ ॥

९ **परिच्छिन्न** ॥ जहां पहली समपाद स्थानक करिये । ता पीछे परिछिन्न आविद्ध चरन कीजिये । भ्रमरी ताके पीछे अतिक्रांत करन वाम सूचि भुजंग त्रासित करि हस्तक कटि छिन्न ये करन कीजिये । सो परिच्छिन्न अंगहार ॥ ९ ॥

१० **अंगहार मदविलसित** ॥ जहां दोऊ हातनसों दोला हस्तक रचि भ्रमायके मिलाय स्वस्तिक कीजे । फेर वलित रेचित हस्तक रचि फेर संरेचित रचि निकुट्टक करन करि ॥ पिछे उरुद्वृत करि हस्त कटी छिन्न ये करन कीजिये । सो अंगहार मदविलसित ॥ १० ॥

११ **अंगहार आलीढ** ॥ जहां एक हातमें आलीढ हस्तक ॥ दूसरे हातमें व्यंसन हस्तक रचि । कंधेपें दोऊ हात राखे पीछे वा वेणवेमें नूपुर करन रचि दाहिने पांवसों आक्षिप्त कीजे ॥ पीछे उरोमंडल हस्तक कीजिये । सो अंगहार आलीढ ॥ १ ॥

१२ **अंगहार आच्छुरित** ॥ जहां नूपुर करन करि पीठको वांसो भ्रमाय फेर व्यंसति करन करि वांसो फिरावनों फेर अलात सूचि करि हस्तकी छिन्नपें करन कीजिये । सो अंगहार आच्छुरित ॥ १२ ॥

१३ **अंगहार पार्श्वच्छेद** ॥ जहां वृश्चिक कुट्टक रचिये ऊर्ध्वजानु रचि । पीछे नूपुर करन कीजिये ॥ फेर आक्षिप्त स्वस्तिक करि वांसो भ्रमावे ॥ पीछे उरो-मंडल नितंब करि ॥ हस्तक कटि छिन्न ये करन कीजिये । सो अंगहार पार्श्वच्छेद ॥ १३ ॥

१४ **अंगहार अपसर्पित** ॥ जहां अपक्रांत पाद रचि व्यंवसित हस्तक रचि ॥ पछे उद्वेष्टित करन कीजे । पीछे अर्धसूचि रचि ॥ पछे विक्षिप्त कटि छिन्न मुष्टिक हस्तक हस्त आक्षिप्त पीछे कटि छिन्नहस्त ये करन कीजिये । सो अंगहार अपसर्पित ॥ १४ ॥

१५ अंगहार मत्ताक्रीड ॥ जहां वांसो भ्रमावे पीछे नूपुर करन कीजिये पीछे भुजंगत्रासित वैशाखरेचित आक्षिप्त कीजे। फेर मृगप्लुत करि ॥ फेर एक एक फेरि खाय उरोमंडल निंब करि ॥ हस्त कटि छिन्न ये करन कीजिये। सो अंगहार मत्ताक्रीड ॥ १५ ॥

१६ अंगहार विद्युद्भ्रांत ॥ जहां पहले बांये हात पांवमें अर्धसूचि दाहिनें हात पांवमें विद्युद्भ्रांत ॥ फेर दाहिनें हात पांवमें अर्धसूचि बांमें हात पांवमें विद्युद्भ्रांत ॥ फेर बांये हात पांवसों छिन्न अपक्रांत दोऊ रचि फेर तल-वृश्चिक रचि कटि छिन्न रचिये। सो अंगहार विद्युद्भ्रांत ॥ १६ ॥

इति चतुरस्र तालनके प्रमानसों सोलह अंगहार संपूर्णम् ॥

॥ अथ त्र्यस्र तालके प्रमानमें सोलह अंगहारको नाम-लछन लिख्यते ॥

१ विष्कंभापसृत ॥ जहां कुट्टन अर्धनिकुट्टत दोऊ पांसूपे रचि ॥ पीछे भुजंगत्रासित करि हात रेचित करि। फीराय पताक दिखावे ॥ फेर उरोमंडल लता करि कटि छिन्न ये। करन कीजिये। सो विष्कंभापसृत ॥ १ ॥

२ मत्तस्खलित ।। जहां मत्तली नाम करन करि दाहिनों हात फीराय भितर ले आइये ता पीछे कांधे उपर कांधे अलपल्लव कीजे। पीछे निहंचित अपविद्ध स्खलित करि हस्त कटि छिन्न ये करन कीजिये। सो अंगहार मत्त-स्खलित ॥ २ ॥

३ गतिमंडल ॥ जहां मंडल स्थानक रचि स्वस्तिक हस्तक कीजे ॥ फेर नूपुर पाद रचि उन्मत उदय घटित कीजिये। पीछे मतली आक्षिप्त उरोमंडल कटि छिन्न करन कीजिये। सो अंगहार गतिमंडल ॥ ३ ॥

४ अपविद्ध ॥ जहां अपविद्ध करन रचि सूचिविद्ध करन कीजिये ॥ फेर दोऊ हात उद्वेष्टित करन करि वासो भ्रमावे फेर उरोमंडल हस्तक रचि कटि छिन्न करन कीजिये। सो अंगहार अपविद्ध ॥ ४ ॥

५ विष्कंभ ॥ जहां निकुट्टक करन निकुंचित पाद रचि अंचित पाद रचिये फेर ऊरुद्वृत्त अर्ध निकुट्टक भुजंग त्रासित रचि दोऊ हातमें उद्वेष्टित करन कीजिये। सो अंगहार विष्कंभ ॥ ५ ॥

६ उद्धट्टित ॥ जहां दोऊ हातको उद्वेष्टित करनसों फिराय बाहर कीजिये फेर अपविद्ध करनसों छातिपें ल्यावे दोऊ चरनमें निकुट्टक करन कीजिये पीछे उरोमंडल हस्तक रचि बांइ पासूं हात राखि नितंब करि छिन्नये करन कीजिये। सो अंगहार उद्धट्टित ॥ ६ ॥

७ आक्षिप्तरेचित ॥ जहां हात पांवनमें रचिक स्वस्तिक रचि रेचकसों भ्रमावें हात पगनको उछलि निचि पीठ रेचकी भ्रमावे पीछे उदवृत आक्षिप्त उरो-मंडल ये करन कीजिये। सो आक्षिप्तरेचित ॥ ७ ॥

८ रेचित ॥ जहां हात पग भ्रमाय पसारिये। ओर पांसू नवाय भ्रमावे ॥ फेर यहि रीति करे पीछे सरीर भ्रमाय रेचित करन उरोमंडल कटि छिन्न करन कीजिये। सो अंगहार रेचित ॥ ८ ॥

९ अर्धनिकुट्टक ॥ जहां दोऊ चरनमें नूपुर करन रचि हात पग वेग पसारिये ॥ एक वार फेर वासो भ्रमाय करि हस्त कटि छिन्न एक हस्तक कीजे। सो अर्धनिकुट्टक ॥ ९ ॥

१० वृश्चिकापसृत॥ जहांमें वृश्चिक करन रचि लता हस्तक रचिये फेर दोऊ हात उद्वेष्टित करनसों फिराय नितंबपें राखि नितंब करन कीजि। फेर करि हस्त कटि छिन्न ये करन कीजिये। सो अंगहार वृश्चिकापसृत ॥ १० ॥

११ अलात ॥ जहां दोऊ हातमें दोय वेर स्वस्तिक रचि हात पसा-रिये। फेर लिन करन ऊर्ध्व जानु निकुंचित अर्ध सूचि विक्षिप्त उद्धृत आक्षिप्त पीछे करि हस्तक कटि छिन्नपें करन कीजिये। सो अंगहार अलात ॥ ११ ॥

१२ परावृत्त ॥ जहां दाहिनें अंगसों शकटास्य करन रचि फेर अलात भ्रमर करन करि कपोलपें हातकों निकुट्टत करन कीजिये । पीछे करिहस्तक कटिछिन्न रचि सरीरकों ऊंचो निचो करिये। सो अंगहार परावृत्त ॥ १२ ॥

१३ परिवर्तक रेचित ॥ जहां पहले माथे उपर दोऊ हातको स्वस्तिक रचि फेर उपरकों चलाइकें भ्रमावत दाहिनें हात सरीर बांये जांघ बराबर ल्यावे कर भ्रमावत उठाय बराबर ल्यावे लताहस्तक रचे फेर वृश्चिक करन रेचित करिहस्तक भुजंगत्रासित आक्षिप्त स्वस्तिक रचिये। दूसरी वेर ऐसें क्रिया

कीजिये । पीछे करिहस्तक कटिछिन्न कीजिये । सो अंगहार परिवर्तक रेचित ॥ १३ ॥

१४ उद्धृत्तक ॥ जहां नूपुर करन रचि फेर भुजंगांचित गृध्रावलिटक विक्षिप्त उद्धृतके । ए करन दोऊ अंगसों रचिये । फेर एक अंगसों ऊरुधृत नितंबक तलवृश्चिक कटिछिन्न ए करन कीजिये । सो अंगहार उद्धृत्तक ॥१४॥

१५ संभ्रांत ॥ जहां एडे बावंरेकी सिनाई पग धरिके उन पगनमें दोनु हात लगायवो सुचीपाद रचि आगें सरकावे ता पीछे दाहिनें हात खट्का-मुख वा मुष्टिहस्तकसों छातिपें राखे बांयो हात लताहस्तकसों छातिपें राखे । पीछे आक्षिप्त करन कीजिये । फेर दोनु पांवनमें स्वस्तिक बांधि । पीछे नितंब-हस्तक उरोमंडल गंगावतरण कटिछिन्न ये करन कीजे । सो अंगहार संभ्रांत ॥ १५ ॥

१६ अंगहार स्वस्तिकरेचित ॥ जहां दोनु हात पगरेचित चलाय बांये दाहिनें हात पांवनसों एक एक वेर वृश्चिक करन रचि फेर बांये दाहिनें हात पगनसों निकुट्टत करन रचि फेर लताकरहस्तक कटिछिन्नक रचिये । सो अंगहार स्वस्तिकरेचित ॥ १६ ॥

यह त्र्यस्त्र तालनके वरतिवेमें सोलह अंगहार जांनिये ॥ ऐसें सोलह पहले चतुरस्र तालके । सोलह त्र्यस्त्र तालके ये बत्तीस अंगहार च्यारि प्रकारके बाजे सहित गीतकी आदिमें नाटक करनाके आरंभमें रचिये । तो महाफल पाइये-इनही अंगहारनमें पहले कहे जे करन ते रचि अंगहार विना दूजो करन रचे रचावे । सो महा फल पावे ॥ **इति बतिस अंगहारको लछन संपूर्णम्** ॥

अथ रेचिकको नाम–लछन लिख्यते ॥ सो वह रेचक च्यार हैं । पादरेचक । १ । हस्तरेचक । २ । कटिरेचक । ३ । ग्रीवारेचक । ४ । ए च्यांरि जांनिये ॥ यांका जुदाजुदा भेद कहहूं ॥ जहां एडी अंगुठाके अग्रकी उठाय बाहिर भीतर गति होय । सो पादरेचक । १ । जहां दोऊ हातमें हंसपक्षक हस्तक रचि च्यारों ओर क्रमसों एक एक हात बाहिर भितर भ्रमावे । सो हस्त-रेचक । २ । जहां कटिकों च्यारों ओर भ्रमावे सो । कटिरेचक । ३ । जहां हातके अंगुठा अंगुरीक फेलाय तिरछे भ्रमावे ग्रीवा विलाससों हलावे सो ग्रीवारेचक

। ४ । ए च्यारों रेचक अंगहारनमें बरतिये ॥ इति रेचक लछन–नाम **संपूर्णम्** ॥

अथ दस भूमिमंडलको लछन लिख्यते ॥ जहां चरणके रचनामें पहले मंडल रचिये । सो मंडल जांनिये । सो वांके दोय भेद हैं । एक तो भूमिमंडल दूसरो नभमंडल । तहां भूमिमंडल तो शस्त्रके चलाइवेमें जांनिये । पराक्रममें आकासमंडल जांनिये । वामें भूमिमंडलके दस भेद हैं । ताके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ भ्रमरमंडल ॥ जहां दाहिणें पांवमें जनित रचि । बांयो चरन चलावे । फेर दाहिनें पांवमें शकटास्य चारि रचि बांयो पांव चलावे । फेर दाहिणे पांव शकटास्य रचि बांयो पग तिरछे चलावे । फेर दाहिनों पांव भ्रमर करि बांयो पांव चलावे । सो भ्रमरमंडल ॥ १ ॥

२ आस्कान्दितमंडल ॥ जहां दाहिनो पांव भ्रमर करिकें बांयो पांवमें अड्डित दाहिनेमें शकटास्य रचि उद्धृत होय वामें अर्चित फेर दाहिनेमें भ्रमावे रेचित चलावे । फेर शकटास्य बांयेमें कीजिये । फेर बांये पांवसों धरतीको ताडन कीजिये । सो आस्कंदितमंडल ॥ २ ॥

३ आवर्तमंडल ॥ जहां उद्धृत रचि जनिता चारि होय । समोसरित मत्तली चारि । दाहिनें पांवमें कपर्सो कीजिये । फेर बांये पांवमें शकटास्य उद्-धृत । दोय वेर चाषगति कीजिये । फेर दाहिनेमें स्कंदित करिके चलाइवो बांयेमें शकटास्य । फेर दोय वेर भ्रमर दाहिनें पांवमें रचि । बांये पांवमें चाषगति चारि होय । सो आवर्तमंडल ॥ ३ ॥

४ शकटास्यमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें जनितस्थितावर्ता शकटास्य एलकाक्रीडित । फेर शकटास्य ये चारि रचिये । बांये पांवमें ये स्कंदित करिके चलाइवो । और शकटास्य कीजिये । जहां तांई मंडल पूरन होय तहां तांई । सो शकटास्यमंडल ॥ ४ ॥

५ अड्डितमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें उद्वट्टित चारि रचि अवर्तन करिके भ्रमाय चलावे ॥ बांये पांवमें शकटास्य रचि ॥ दाहिने पांवमें पृष्ठापसर्पिता

चारि होय ॥ बांयेमें भ्रमर दाहिनों पांव चलाइ धरतिमें ताडन कीजिये । सो अड्डितमंडल ॥ ५ ॥

६ **समोसरितमंडल** ॥ जहां समपादक स्थानक रचि दोऊ हात फला-इके कटिपें राखे ॥ फेर दाहिनों बांयो पांव क्रमसों फिराय ॥ आगे बांयो पग पसारे ॥ याहि रीतिसों च्यारों तरफ सभापें कीजिये ॥ फेर एक वेर गोलआकार भ्रमें । सो समोसरितमंडल ॥ ६ ॥

७ **अध्यर्धमंडल** ॥ जहां दाहिने पांवमें जनिता चारि करि चलावे ॥ ओर बांये पांवमें च्यार भेदकी अड्डित ॥ चारि करि दाहिने पांवमें शकटास्य करे ॥ ऐसे च्यारों तरफ करि गोलाकार भ्रमण करे । सो अध्यर्धमंडल ॥ ७ ॥

८ **एलकाक्रीडितमंडल** ॥ जहां दोऊ चरण धरतिपें लगाय सूचि विद्ध कीजिये ॥ फेर एलाक्रीडित सूचि बद्ध वेरवेर कीजिये ॥ फेर भ्रमर सूचि विद्ध रचि ॥ फेर आक्षिप्त रचि ॥ च्यारों तरफ भ्रमण करे ॥ सो एलकाक्रीडित-मंडल ॥ ८ ॥

९ **पिष्टकुट्टकमंडल** ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि बांयेमें अपक्रांत चारि होय ॥ ओर दोऊ पांवनमें अनेकवार भुजंगत्रासित रचि च्यारों तरफ गोलाकार भ्रमावे । सो पिष्टकुट्टकमंडल ॥ ९ ॥

१० **चाषगतिमंडल** ॥ जहां दोऊ पांवमें चाष गति चारि रचिये ॥ फेर च्यारों तरफ गोलाकार भ्रमण करवावणों ॥ सो चाषगतिमंडल संज्ञा जानिये ॥ १० ॥ **इति दस भूमिमंडलके नाम–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ आकासमंडल दस हे तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ **अतिक्रांतमंडल** ॥ जहां दाहिनें पांवमें ॥ जनिता शकटास्य चारि होय ॥ बांये पांवमें अलातचारि होय ॥ दाहिनें पार्श्वक्रांत बांयेमें सूचि भ्रमर-दाहिनेंमें उद्धुत ॥ बांयेमें अलातचारि ॥ फेर दोऊ पांवमें छिन्न करन रचि ॥ ओर बांयो अंग बाहरि तरफ भ्रमावे ॥ बांये पांवमें अतिक्रांत दाहिनेंमें दंडपक्षिक चारि होय ।यो अतिक्रांतमंडल ॥ १ ॥

२ **दंडपादमंडल** ॥ जहां दाहिने पांवमें जनिता दंडपाद ॥ सूचि चारि रचि बांये पांवमें भ्रमर दाहिनेंमें उद्धुत बांयेमें अलातचारिमें पार्श्वक्रांत भुजंग

त्रासित रचि ॥ बांयेमें अतिक्रांत फर दाहिनेमें दंडपाद सूचि कर बांयेमें भ्रमर कीजिये । सो दंडपादमंडल ॥ २ ॥

३ क्रांतमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि बांये पांवमें अपक्रांत ॥ फेर दाहिनेमें सूचि ॥ बांये पांवमें अपक्रांत एसें बारबार कीजिये । सो क्रांतमंडल ॥३॥

४ ललितसंचरमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें ऊर्ध्वजानु सूचि ॥ बांये पांवमें पार्श्वक्रांत ॥ दाहिणे सूचि ॥ बांयेमें अपक्रांत ॥ दाहिने पार्श्वक्रांत ॥ बांये चरनमें क्रांत ॥ फेर दोऊ पांवनमें छिन्न करन रचि बांये पांवसो बाहिरि भ्रमरी रचिये । सो ललितसंचरमंडल ॥ ४ ॥

५ सूचिविद्धमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि भ्रमर पार्श्वक्रांत रचे ॥ बांये पांवमें अपक्रांत दाहिनेमें सूचि ॥ बांयेमें अपक्रांत दाहिनेमें पार्श्वक्रांत होय । सो सूचिविद्धमंडल ॥ ५ ॥

६ वामविद्धमंडल ॥ जहां दाहिनें पांवमें सूचि अपक्रांत ॥ दाहिनेमें दंडपाद बांये हस्त वा भ्रमर ॥ दाहिनें पांवमें पार्श्वक्रांत रचि दाहिने हात उठावे ॥ दाहिने पांवमें दंडपाद उरुद्धृत ॥ बांये पांवमें सूचि भ्रमर अलात रचि ॥ दाहिने पांवमें पार्श्वक्रांत बांयेमें अतिक्रांत । सो वामविद्धमंडल ॥ ६ ॥

७ विचित्रमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें उरुद्धृत जनित विच्यव ॥ ओर समस्थितावर्त ॥ व्यावृत करनके भेदसों कीजिये ॥ बांये पांवमें स्यंदित ॥ दाहिनें पावमें पार्श्वक्रांत ॥ बांये पावमें भुजंगत्रासित ॥ दाहिने पांवमें अतिक्रांत बांयेमें अपक्रांत होय । सो विचित्रमंडल ॥ ७ ॥

८ विहृतमंडल ॥ जहां दाहिने पांवमें विच्यव भ्रमर करि ॥ बांये पांवमें स्यंदित रचे ॥ दाहिने पांवमें पार्श्वक्रांत ॥ बांये पांवमें स्यंदित ॥ दाहिनेमें उद्धृत ॥ बांयेमें अलात दाहिणेमें सूचि ॥ बांयेमें पार्श्वक्रांत ॥ दाहिनें पांवमें आक्षिप्त रचि भुजंगत्रासित होय ॥ बांये पांवमें अतिक्रांत होय ॥ सो विहृतमंडल ॥ ८ ॥

९ अलातमंडल ॥ जहां बांये पांवसों सूचि ॥ दाहिनें पांवसों भ्रमरी रचि भुजंगत्रासिताचारि रचे ॥ बांयेमें अलातचारि ॥ एसें इनचारिनको छह बेर अथवा सात बेर कीजिये ॥ फेर गोलमंडलाकार च्यारों तरफ भ्रमण करे ॥ दाहिने पांवमें अपक्रांत बांये पांवमें अतिक्रांता भ्रमरी रचे । सो अलातमंडल ॥९॥

१० ललितमंडल ॥ दाहिने पांवमें सूचि ॥ बांये पांवमें अपक्रांत ॥ दाहिनें पांवमें पार्श्वक्रांत ॥ अथवा भुजंगत्रासित ॥ बांये पांवमें अतिक्रांत वा उरुद्वृत ॥ फेर दाहिणें पांवनमें अलातक फेर बांये पांवनमें पार्श्वक्रांत सूचि ॥ फेर दाहिने पावनमें अपक्रांत ॥ बांये पांवनमें अतिक्रांत होय । सो ललितमंडल जांनिये ॥ १० ॥ **इति आकाममंडल दस ताके नाम—लछन संपूर्णम् ॥**

ऐसेंहि दोउ पांवनमें च्यारिनके उलट पलट वरतवेसों अनेक मंडल होत हे ॥ जहां जेसो मंडल रचिवो होय तेसो रचिये ॥ **इति मंडल प्रकरण संपूर्णम् ॥**

॥ अथ कोहल मुनिके मतसों वर्तनाके नाम—लछन लिख्यते ॥

१ पताकवर्तना ॥ जहां पताक हस्तक रचि पहुचा तांई हात दाहिनों बांयो भ्रमावे । सो पताकवर्तना । १ ।

२ आरालवर्तना ॥ जहां अवेष्टन करनसों तर्जनि आदि अंगुरी मुंदि छातिपें हात लगावे फेर चटी अंगुरी आदि अंगुरी मुंदिके उद्वेष्टित करनसों छातिपें ल्याय अराल हस्तक रचे । सो आरालवर्तना । २ ।

३ शुकतुंडवर्तना ॥ जहां शुकतुंड हस्तक रचि छातिपें ल्याय उभो कीजिये । सो शुकतुंडवर्तना । ३ ।

४ अलपल्लववर्तना ॥ जहां उद्वेष्टित करनसों चटि अंगुरी आदि च्यारो अंगुरी मुंदिये । व्यावर्त करनसों तर्जनि आदि अंगुरी खोलिकें अलपल्लव रचे । सो अलपल्लववर्तना । ४ ।

५ खटकामुखवर्तना ॥ जहां खटकामुख हस्तक रचे । नाभि उपर दोऊ हात राखे पहुचा तांई बांइ दाहिनि ओर भ्रमावे । सो खटकामुखवर्तना । ५ ।

६ मकरवर्तना ॥ जहां करहस्तक रचि । सन्मुख होके दाहिनें फिरावे । सो मकरवर्तना । ६ ।

७ ऊर्ध्ववर्तना ॥ जहां नृत्यके हस्तक करि । उपरले कानिको चलावे । सो ऊर्ध्ववर्तना । ७ ।

८ आविद्धवर्तना ॥ जहां आविद्ध हस्तक रचि । दोऊ भुजा फिरावे । फेर आविद्ध हस्तक रचे । सो आविद्धवर्तना । ८ ।

९ **नितंबवर्तना** ॥ जहां नितंबपे ढिली अंगुरी करि । दोऊ हात बांये दाहिनें भ्रमावे । फेर कंधापें चलाय नितंबमें ल्यावे । सो नितंबवर्तना । ९ ।

१० **रेचितवर्तना** ॥ जहां स्वस्तिक रचिये । फेर हात जुदे जुदे करि हंसपक्ष हस्तक रचि । सितावि भ्रमावे सो रेचित । सो रेचितवर्तना । १० ।

११ **केशबंधवर्तना** ॥ जहां माथेपें केशबंध हस्तक रचि चतुराइसों माथो नीचो ल्यावे । सो केशबंधवर्तना । ११ ।

१२ **फालवर्तना** ॥ जहां ऊर्ध्व मंडल हस्तक रचि भ्रमावे । सो फाल-वर्तना । १२ ।

१३ **कक्षवर्तना** ॥ जहां पार्श्वमंडल हस्तक रचि दोनो हातको पांसुपे भ्रमावे । सो कक्षवर्तना । १३ ।

१४ **उरोवर्तना** ॥ जहां उरोमंडल हस्तक रचि छातिपें भ्रमावे । सो उरोवर्तना । १४ ।

१५ **खड्गवर्तना** ॥ जहां एक हातकी मुठि बांधि सकोरिये । दूसरे हातमें खटका मुख करि उंचो कीजिये । सो खड्गवर्तना । १५ ।

१६ **पद्मवर्तना** ॥ जहां दोऊ हातनमें नलिनि पद्मकों हस्तक रचि भ्रमावे । सो पद्मवर्तना । १६ ।

१७ **दंडवर्तना** ॥ जहां दंडपक्ष हस्तक रचि दोऊ हात भ्रमावे । सो दंडवर्तना । १७ ।

१८ **पल्लववर्तना** ॥ जहां दोऊ हातनमें पल्लव हस्तक रचि ॥ विलाससों भ्रमावे। सो पल्लववर्तना । १८ ।

१९ **अर्धमंडलवर्तना** ॥ जहां उर ओर हस्त पार्श्व मंडल हस्तक रचि भ्रमावे । सो अर्धमंडलवर्तना । १९ ।

२० **वलितवर्तना** ॥ जहां वलित हस्तक रचि सुंदरतासों भ्रमावे । सो वलितवर्तना । २० ।

२१ **घातवर्तना** ॥ जहां उद्वेष्टित करनसों छातिपें हात ल्याय कांधेसों उठाये ॥ फेर कंधेकी बराबर आविद्ध हस्तक रचि अंगुरीनकों मरोडीके । अलपद्म रचिये । सो घातवर्तना । २१ ।

२२ ललितवर्तना ॥ जहां ललित हस्तक रचि भ्रमावे । सो ललित-वर्तना । २२ ।

२३ गात्रवर्तना ॥ जहां अल्पपल्लव हस्त रचि सिगरे सरीरपे भ्रमावे । फेर अपविद्ध हस्तक ओधों रचे । सो गात्रवर्तना । २३ ।

२४ प्रतिवर्तना ॥ जहां अल्पपल्लव हस्तक रचि सरीर उलटि रीतसों भ्रमावे । सो प्रतिवर्तना । २४ ।

यह चोविस वर्तना हैं ॥ इहां सात वर्तना ओर कहत हैं ॥ शिरस्थवर्तना ॥ १ ॥ तिलकवर्तना ॥ २ ॥ नागबंधवर्तना ॥ ३ ॥ सिंहमुखवर्तना ॥ ४ ॥ वैष्णववर्तना ॥ ५ ॥ नलमुखीवर्तना ॥ ६ ॥ कलसवर्तना ॥ ७ ॥

यह सातनके नामनमें जे शिरस्थ आदि सात हस्तक हैं । तिनकों रचिकें भ्रमावे । तब ये सात वर्तना होत है ॥ इति **हनुमानजीके मतसों वर्तनाके नाम–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ चालकको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां नृत्यमें नृत्य करिववारो अथवा स्त्री अनेक रचनासों भुजानको चलावे मनोहरताइलिये । सो चालक जांनिये । यो चालक अनेक प्रकारको है तिनमें मुख्य इक्यावन ॥ ५१ ॥ कहत हैं ॥ तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

१ विश्लिष्टवर्तित ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक छातिपें रचि एक हात तिरछो चलावे ॥ दूसरो हात पांसूपें राखि । माथेकों नीचो करि वा उंचो करि हलावे । सो चालक विश्लिष्टवर्तित ॥ १ ॥

२ वेपथुव्यंजक ॥ जहां स्वस्तिक रचि एक हात तिरछो करि नाभिपे ल्यावे फेर दोऊ हात सुंदरतासों । सब अंगनमें चलावे सो चालक । वेपथुव्यंजक ॥ २ ॥

३ अपविद्ध ॥ जहां नाभि कंठको बांये दाहिने ओर गोल मंडला-कार भ्रमावे । सो चालक अपविद्ध ॥ ३ ॥

४ लहरिचक्रसुंदर ॥ जहां एक हस्तक तिरछो नाभिपे धरि फेर नाभी तरफ ल्याय । आंदोलन करणेसों बाहिर पसारिये । फेर माथेपें दोनों हातसों विलाससों भ्रमण करे । सो चालक लहरिचक्रसुंदर ॥ ४ ॥

५ वर्तनास्वस्तिका ॥ जहां एक हात पासूंपे राखि । दूसरे हातसों फिराय छूवे दूसरे हातसों स्वस्तिक रीतिसों मिलावे । सो ऐसे विलाससों वेर वेर करें । सो चालक वर्तनास्वस्तिका ॥ ५ ॥

६ संमुखीरथांग ॥ जहां बांये दाहिने हात करि तिरछे फेलाय भ्रमावे । फेर दोऊ कुहिणीया पासूंपे धरि पहलेकि सिनाइ सुंदर भ्रमावे । सो चालक संमुखीरथांग ॥ ६ ॥

७ पुरोदंड भ्रम ॥ जहां एक हातकी मूठि रचि बाहिर भितरि । दूसरे हातकी चलाईके भ्रमावे । सो चालक पुरोदंड भ्रम ॥ ७ ॥

८ त्रिभंगी वर्ण सरक ॥ जहां च्यारों ओर दोऊ हात मिलाय वा च्यारों ओर न्यारे हात विलाससों भ्रमावे । सो चालक त्रिभंगी वर्ण सरक ॥ ८ ॥

९ दोल ॥ जहां निचें उपर हातके अग्रभाग करि तिरछे लोटवेकी रीतिसों भ्रमावे । सो चालक दोल ॥ ९ ॥

१० नीराजित ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रचि । बाहिर काढिके पीछे तिरछेसो मंडल आकार भ्रमाय माथापें दाहिणें बांयो फिरावे । सो चालक नीराजित ॥ १० ॥

११ वामदक्ष विलासित ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रचि । बांई दाहिनें ओर लोटतो भ्रमावे । सो चालक वामदक्ष विलासित ॥ ११ ॥

१२ वर्तनाभरण ॥ जहांके हात कानपें धरि दूसरे हात उद्वेष्टित करनसों चलावे । सो चालक वर्तनाभरण ॥ १२ ॥

१३ स्वस्तिकाश्लेष चालयन ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रचि कांधेकी ओर भ्रमावे । सो चालक स्वस्तिकाश्लेष चालयन ॥ १३ ॥

१४ मिथोसंवीक्ष्य बाह्य ॥ जहां एक हात कांधेसें सिरपे सूधो जाय फेर अपनि पासूंपे ल्यायके भ्रमावे । ऐसें दूसरे हातकी किया करें । सो चालक मिथोसंवीक्ष्य बाह्य ॥ १४ ॥

१५ मौली रेचित ॥ जहां एक हात कमरपें धरे । दूसरो हात आगें फेलाय फेर माथे तांई दोऊ हात भ्रमावे फेर पहले ठिकानें लीजिये । सो चालक मौली रेचित ॥ १५ ॥

१६ **मणिबंधासिकर्ष** ॥ जहां दोऊ हात संग उठाय कांधेपें हलावे । दोऊ हातनकी कुहनी मिलावे । फेर एक हातकी लीलासों मुष्टि रचि बाहिर वा भितर भ्रमावे । दूसरा हात उंचो करे । सो चालक मणिबंधासिकर्ष ॥ १६ ॥

१७ **अंसवर्तनक** ॥ जहां पोंहोंचा मणिबंध कांधे फिराय । ऊंचे दोऊ हात करि माथो नमाय ऊपरकों हात भ्रमावे एक संग । अथवा क्रमसों । सो चालक अंसवर्तनक ॥ १७ ॥

१८ **आदिकूर्मावतार** ॥ जहां दोऊ हातनकों स्वस्तिक रचि । माथेके बांई दाहिनी ओर ऊपर नीचे मंडलाकार भ्रमावे । फेर दोऊ हातनकों वर्तना-स्वस्तिक रचि । दोऊ पांसूनपें मंडलाकार भ्रमावे । फेर दोऊ हात मंडलाकार छातिपें भ्रमावे । सो चालक आदिकूर्मावतार ॥ १८ ॥

१९ **कलविंकविनोद** ॥ जहां माथेके ऊपर दोऊ हात आकासमें भ्रमावे । फेर पासूपें ल्याय निचे ऊपर भ्रमावे । सो कलविंकविनोद ॥ १९ ॥

२० **मंडलाग्र** ॥ जहां एक हातकी मुठि छातिपें लगावे । दूसरे हात बाहिकी उपर बांयो दाहिनो भ्रमावे पांसू पास ल्यायकें । फेर चरननपें ल्यावे । सो मंडलाग्र ॥ २० ॥

२१ **चतुष्पत्राब्ज** ॥ जहां ऐसें दूसरे हातकी क्रिया कीजिये । सो चतुष्पत्राब्ज ॥ २१ ॥

२२ **बालव्यंजनचालन** ॥ जहां दोऊ हातनके पहुचा कंधेपें धरि हात चोरकी सिनाइ हलाई नीचेकों गोल मंडलाकार भ्रमाय ल्यावे । सो बालव्यंजन-चालन ॥ २२ ॥

२३ **विरुधबंधन** ॥ जहां एक हातमें त्रिकोण हस्तक रचि आगें बांयो दाहिनों भ्रमावे । फेर मंडलाकार भ्रमावे । सो विरुधबंधन ॥ २३ ॥

२४ **शृंगाटक बंधन** ॥ जहां त्रिकोण हस्तक रचि उपरतें भ्रमाय नीचो ल्यावे नीचेतें उंचो ल्यावे । सो शृंगाटक बंधन ॥ २४ ॥

२५ **कुंडलीचारक** ॥ जहां हात बांयो दाहिनों गतागतकी रीतिसों च्यारों तरफ भ्रमावे । सो कुंडलीचारक ॥ २५ ॥

२६ **धनुराकर्षण** ॥ जहां दोऊ हातको स्वस्तिक रचि । फेर सिता-

वीके एक हात पासूंके सनमुख राखि । दूसरो हात कानपें जाय खटका मुख रचे । सो धनुराकर्षण ॥ २६ ॥

२७ द्वारदाम विलास ॥ जहां दोऊ भुजा कंधेपें धरि पासूंपें ल्यावे । सो द्वारदाम विलास ॥ २७ ॥

२८ समप्रकोष्ठवलन ॥ जहां दोऊ हातके पहुंचा बरोबर भ्रमावे । सो समप्रकोष्टवलन ॥ २८ ॥

२९ मुरुजाडंबर ॥ जहां दोऊ हातनके पहुंचा मिलाय तिरछे फेलाय कगरपें ल्यावें बांये दाहिनें ल्याय मृदंग बजायवेकेसे आकार रचे । सो मुरुजाडंबर ॥२९॥

३० तिर्यग्गतस्वस्तिकाग्र ॥ जहां दोऊ हात पासूंपें फेलाय अंजलिकी सिनाइ मिलाय । फेर स्वस्तिक रचि छातिपें ल्यावे। सो तिर्यग्गतस्वस्तिकाग्र ॥३०॥

३१ देवोपहारक ॥ जहां दोऊ हातनमें अरालहस्तक रचि दोऊ पासूंपें ल्याय सूंध पसारिये । पासूं हलावे वा हात हलावे कुहनिसों मिलावे । सो देवोपहारक ॥ ३१ ॥

३२ अलातचक्र ॥ जहां एक हात चक्रहस्तक रचि । बाहिर भितर उलटो हलावे दूसरे हातमें थिटाहस्तकसों गोळ फिरावे । सो अलातचक्र ॥ ३२ ॥

३३ साधारण ॥ जहां दोऊ हात कटिपें धरि । तिरछे चलाय । फेर मंडलाकार भीतर फेलाय । अथवा एक हात भीतर एक हात बाहिर । ऐसें भ्रमावे । सो साधारण ॥ ३३ ॥

३४ उरभ्रसंबाध ॥ जहां दोऊ हातनको छातिपें स्वस्तिक रचि वेगि बाहिरकों चलावे । फेर सनमुख हात करि छातिपें ल्यावे । सो उरभ्रसंबाध ॥३४॥

३५ मणिबंधगतागत ॥ जहां एक हातके पहुचापें दूसरो हात धरि मंडलाकार वाहि भितर भ्रमावे । सो मणिबंधगतागत ॥ ३५ ॥

३६ तार्क्ष्यपक्षविलासक ॥ जहां दोऊ हातनको मरोडि स्वस्तिक रचि । सिताबिसें खोलि दोऊ पासूंपें भ्रमावे । सो तार्क्ष्यपक्षविलासक ॥ ३६ ॥

३७ धनुर्वल्लीविनामक ॥ जहां दोऊ हात ऊपरकों निचेकों कांधे सूधे अग्रसों राखि । मंडलाकार भ्रमाय एक हात माथेपें दूसरो हात कटिपें राखि । एक ओरकी पासूकों झुलावे । सो धनुर्वल्लीविनामक ॥ ३७ ॥

३८ तिर्यक्तांडवचालन ॥ जहां एक हात ऊंचो करि । दूसरो हात तिरछो नाभिपें राखि पांसूपें ल्यावे । सो तिर्यक्तांडवचालन ॥ ३८ ॥

३९ व्यस्तोत्प्लुतनिर्वतक ॥ दोऊ हात पासूपे चलाय । उनकी कुहनि उपर सनमुख अग्रभाग । धरतिपें चलावे । सो व्यस्तोत्प्लुतनिर्वतक ॥ ३९ ॥

४० मंडलाभरण ॥ जहां दोऊ हात छातिके आगे मंडलाकार भ्रमावे पीछे दोऊ पांसूपें ल्याय झुलावे । सो मंडलाभरण ॥ ४० ॥

४१ शरसंधान ॥ जहां एक हात उलटो विलाससों पांसूके पास भ्रमें । दूसरो हात खटका मुख हस्तकसों । माथेके पास जाय । जहां हातके पास सूधो आवे । सो शरसंधान ॥ ४१ ॥

४२ पर्यायगजदंत ॥ जहां एक हात तिरछो भ्रमाय दूसरो हात पसारे। ऐसे दूसरो हात तिरछो भ्रमाय पहलो हात पसारे । ऐसे दोऊ हातकी रचना होय । सो पर्यायगजदंत ॥ ४२ ॥

४३ स्वस्तिक त्रिकोण ॥ जहां दोऊ हातको स्वस्तिक छातिपें रचि फेर खाले । दोऊ हात सकोरि बांये कंधपे ल्यावे । सो स्वस्तिक त्रिकोण ॥ ४३ ॥

४४ रथनेमि ॥ जहां दोऊ हातनमें आदि मध्य अंत्यमें स्वस्तिक, रचि तिरछे फेलाय रथचक्रके आकार करि भ्रमावे । सो रथनेमि ॥ ४४ ॥

४५ लतावेष्टित ॥ जहां दोऊ हात बाहर भितरि लपेटि फेर खोलि पासूपें ल्याय भ्रमावे । सो लतावेष्टित ॥ ४५ ॥

४६ कर्णयुग्मप्रकीर्ण ॥ जहां दोऊ हातनके पास हात राखि भ्रमावत पासूपें ल्याय अपने सनमुख कीजिये । सो कर्णयुग्मप्रकीर्ण ॥ ४६ ॥

४७ अनंगागमोटित ॥ जहां दोऊ हात मंडलाकार रचि । कांधेकी बराबर भ्रमाय माथेपें ल्यावे देखिवेवारेको सुख उपजावे । सो अनंगागमोटित ॥ ४७ ॥

४८ अष्टबंधविहार ॥ जहां दोऊ हातनको स्वस्तिक रचि खोलि पासूपें भ्रमावें। फेर स्वस्तिक रचि माथेपें ल्याय । फेर खोलि जुदे जुदे हात भ्रमावे । सो चालक अष्टबंधविहार ॥ ४८ ॥

४९ अंसपर्यायनिर्गत ॥ जहां दोऊ हात छातिपें भ्रमाय मंडलाकार रचि कंधेकी बराबर लेजाय फेर छातिपें ल्याय उद्वेष्टित करनसों कांधेपर कटिकी तरफ ल्यावे । सो अंसपर्यायनिर्गत ॥ ४९ ॥

५० नवरत्नमुख ॥ जहां विश्लिष्ट आदिक नव अथवा दस चालक रचि । फेर दोऊ हात माथेतांइ ऊंचे उठावे पिछे छातिपें स्वस्तिक रचि पिछे उलटि धरतिके सनमुख कीजिये । फेर मंडलाकार गोल भ्रमाय तिरछे पसारे । फेर आविद्ध अपविद्ध हस्तक रचि झुलावे । सो नवरत्नमुख ॥ ५० ॥

५१ कररेचकरत्न ॥ जहां दोऊ हात पासूपें ल्याय कछूक चलाय फेर कमरपें ल्याय स्वस्तिक रचि माथेपें ल्याय वालव्यंजन चालककी क्रियासों । माथेके बांये दाहिने हलावे । फेर धरतिके सनमुख वर्तना स्वस्तिक रचे फेर मंडलाकार करि ऊपरकों चलाय स्वस्तिक बांधि नीचेकों ल्यावे । फेर एक हात नितंबपें राखि दूसरे हातसों रथचक्रकीनाई रचि भ्रमाय विलाससों दोऊ हात झुलावे । फेर सरल उतारी रचि । फेर सुधे फेलावे । फेर उद्वेष्टित प्रसारित नम्रत हस्तकसों कंधेपें पास भ्रमावे । फेर एक एक हात ऊंचो उठाय गोलमंडलाकार भ्रमावे । फेर एक एक हात सनमुख ल्याय माथेसों कटितांई ल्याय स्वस्तिक रचे । फेर द्रुतवेगसों बांयों दाहिनों भ्रमावे । फेर बाहिर भितर चक्रके आकार भ्रमाय । फेर दोऊ कुहणीको स्वस्तिक रचि । ओंधे हात भ्रमावे । अथवा द्रुतवेगसों सूधे हात करि आगें पीछे दोऊ पासूपें भ्रमावे । एक एक हात भ्रमाय स्वस्तिक रचे । फेर ऊपरकों निचेकों अग्रभाग करि तिरछे फेलावे। सो कररेचक-रत्न चालक जांनिये ॥ जहां कररेचकरत्न चालक रचिये । तहां देवता ॥ १ ॥ मुनिश्वर ॥ २ ॥ विद्याधर ॥ ३ ॥ आदि सिगरे आवे याको देखि प्रसन्न होयकें वरदान देतहे । ऐसेंहि अनेक चालक हैं ॥ **इति इक्यावन चालकको नाम–लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ लास्यमार्गीके बारह भेदहें तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥

१ उन्मादावस्थाप्रलाप ॥ जहां नृत्य करिवे वारि स्त्री कामदेवसों जाको अंग तप्त होय ॥ अति विहवल होयके विरह अवस्था जनायवेकों प्राकृत भाषासों गाथा पढे ॥ गाथामयण थुको बतावि दाहे । महसिदाये कुरंगली बणाये सहयल्लह

संगवंचिदाये । सरण युग्म दला अजीवण अस । १ । याको अरथ नायका सखिसों कहे हे । हे सखि कामदेव नृप कोप करि मुजको सतावें है । यातें में दुखी हूं मृगनेंनी हो पितम कहा गयोहो । सो अब मेरो जीय वो कमल फूले तहां तांइ हें ॥ इहां नाईकांको व्यंग अर्थ जो जेसें बने तेसें सूर्योदय पहले नाइककों ले आव । याको कामातुरतासों उन्माद आवस्थापलाप कहेहें ॥ १ ॥

२ आसीत ॥ ऐसें प्राकृतवानी विरहकी पढिके नृत्य देखिवेवारे पुरुषनको विरह बधावे ॥ सो स्थिन पाठ लास्यको अंग जानिये ॥ १ ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्रीखंडिता नाइकाकी नकल करि । चिंता सोकमें उकलाय वचनविलास नही करे । उदास होय हे ॥ ऐसें संस्कृत भाषाके आर्या पढें ॥ आर्या ॥ प्रसरति दिनमणि तेजसी ॥ विगलिततमसि प्रकाश्यते नभसि ॥ अपनीताम्बररागं ॥ पश्य वयस्ये समागतं रमणं ॥ १ ॥ ऐसें भावके अनेक श्लोक कबित दोहा पढे । सो आसीत ॥ २ ॥

३ सेधव ॥ जहां नृत्य करिवेबारि स्त्री मुर्खनकी नकल करि । सास्त्रकी भाषा विना पंजाबकी रीति करे । वा पंजाबकी भाषा बोले नृत्य करे । सो सेधव ॥ ३ ॥

४ पुष्पमंडिला ॥ जहां स्त्रीनको गाइवो बजाइवो ॥ नृत्य अति विचित्र मनोहर होय । तहां मन बचन कायकी चेष्टा नही कीजिये । सो पुष्पमंडिला ॥४॥

५ प्रच्छेदक ॥ जहां नृत्य करिवेवारी स्त्री वासकसज्जा नाइकाकी नकल करि । चंद्रमाको उदय देखि त्रास होय ताको अपराध करि आवें ॥ तासों कलह करिवेको भाव दिखावे । सो प्रच्छेदक ॥ ५ ॥

६ सेषपद ॥ इहां वीणा आदि तत बाजे मृदंग आदिक अनवद्ध सुषिर बाजे घन बाजे ॥ इन च्यारों बाजेनसों मिलि गायवेवारे गावें ऐसे नृत्य करे । सो सेषपद ॥ ६ ॥

७ विमूढ ॥ जहां नृत्य करवेवारी स्त्री नानाप्रकारको अरथजुत मिलि भाव जुत ॥ श्लेष अलंकारसों पूरव पक्ष समाधानसहित वचन करे ॥ आर्या ॥ प्रमलता अंकुरिता मम हृदये रमणजलधरो मुदितः ॥ संचितरचनादिहचने फलप्राप्ते नैव वचने रुदति नेतु ॥१॥ ये श्लोक पढिके रस उपजावे । सो विमूढ ॥ ७ ॥ याको अरथ यह

नायका सखिसों कहे हें जो प्रीतम रूपि मेरे हियेमें स्नेहलता उलहितासों बचनरूपी जलसों पोषन करे हें । संगमरूप फूल पाइवेको । यहां व्यंग यह नाइका सखिसों कहे हें । सो नायकको मेरेपास ले आव ॥ इति शुल्ल हास्य संपूर्णम् ॥

८ मूत्रमूढ ॥ जहां नृत्य करिबेबारि स्त्री रमणिक सुंदर अछरकी रचनासों बहुत भावसों अलंकार सहित छंद पढे ॥ दोहा ॥ भय आनंदसों प्रियमिलन बातें कहत बनाय ॥ अंग मरोडें अभिलाष जों तनकपुलक रस चाय ॥ १ ॥ ऐसें श्लोक कबित दोहा पढे ॥ इति मूत्रमूढ ॥ ८ ॥

९ वैभाविक ॥ जहां नृत्य करिवे वारि स्त्री उत्कंठिता नायकाकी नकल प्रेम-जुत पतिकों देखि कामदेवसों पीडित होय । अनेक भाव दिखावे ॥ दोहा ॥ नभ लाली चाली निसा चटकाली धुनि कीन ॥ रति पालि आलि आजन आये वनमालीन ॥ १ ॥ एसें मतलबको दोहा छंद कबित पढे ॥ इति वैभाविक ॥ ९ ॥

१० चित्रमद ॥ जहां नृत्य करिवेवारी स्त्री चित्र दरसनकी नकल करि । अपनें पतिकों चित्र देखि कामदेवसों पीडित होय मनमें खेद करे ॥ दोहा ॥ प्रीतमचित्र बतायतिय बात कहत करि फेर ॥ हियो उमगी असु वाढये बाल बिरानो बेर ॥ १ ॥ ऐसें मतलबके श्लोक छंद भाषा करे । सो चित्रमद ॥१०॥

उक्तप्रत्युक्त ॥ जहां नृत्य करिवेवारे स्त्री । रूठे पतिके मनायवेकी नकल करि । प्रसन्न करिवेकों जो बातके वचन कहे । नानाप्रकारके अरथनसों संयुक्त गीत कहें । सो उक्तप्रत्युक्त ॥

११ व्यंगयुक्त ॥ श्लोक ॥ प्राप्तो वसंतसमये ॥ ममपानभिग्य रोषंपरित्यज ॥ भजस्व मपि प्रसादं । उत्तंग पीवर पयोधर भूमिधारा । सां संधि भोपि नहि रक्षतु मीहसेमं ॥ १ ॥ याको अरथ । ऐसें मतलबके श्लोक दोहा कबित आदि पढिये । या श्लोकको अरथ मानवती स्त्रीकों नायक मनावे हें ॥ सो यह वसंत रितु आयो हें ॥ याकें प्रतग्यामानकी संधी नहीं । यातें क्रोध छोडि मोसो प्रीति करे ॥ तेरे पुष्ट कुचनकों सेवन कीयो चाहत हें सो चाकरि करत करत मेरि रक्षण क्यों नहीं करतेहें । ऐसें यह व्यंगयुक्त ऐसें श्लोक दोहा कबित पढे ॥ ११ ॥

१२ उत्तमोत्तम ॥ जहां नृत्य करिवेवारी स्त्री सुंदर रसके भरे वचन कहें । ऐसे अनेक हावभावसों मनोहर अनेक चेष्टाजुत नृत्य करे । सो उत्तमोत्तम ॥ श्लोक ॥ सहस्रमवलोकनं विहित भाति भालिंगनं । सरोषमणिभाषणं सजललोचनं एदनं ॥ १२ ॥ इति बारह मार्गी लास्यके अंग संपूर्णम् ॥

॥ अथ महाराज असोकमलके मतसों देसी लास्यांगके भेततीस अंग तिनको नाम—लछन लिख्यते ॥

१ लास्यांगचालि ॥ जहां भुजा कटि जांघ चरन ॥ इनको एक संग चलि होय सुंदर तालकी गतिमें लिल्यो होय । मधुर विलासजुत कोमल तीन प्रकारको है ॥ निपट सिताबि निपट मंद महि होय । सो लास्यांगचालि ॥ १ ॥

२ चालिवट ॥ जहां भुजा कटि जांघ पांवनको एक संग चलिवो सिताबिसों होय । देखिवेवारेंके मनकों राजिकरे । सो चालिवट ॥ २ ॥

३ तूक ॥ जहां करनफूल आदि आभूषणजुत कानको चलाइवो होय । सिताबि गतिसों अथवा मंद गतिसों भाव बतावे । सो तूक ॥ ३ ॥

४ मन ॥ जहां शृंगाररससों भरवेको उत्तम गुण कजलके । सो गुण सूक्ष्म होय । परंतु जानिवेमें बडो होय । द्रुत आदि कोई एक लय होय । सो मन ॥ ४ ॥

५ लीढ ॥ जहां कोमल । १ । मधुर । २ । विलासजुत । ३ । तिरछो । ४ । भुजा एक वेर चलावे मनकों वसिकरे । सुंदर श्रेष्ठ गीतकों गावे । आनंद उपजावे । सो लीढ ॥ ५ ॥

६ उरोकण ॥ जहां दोऊ कांधे कुच एक संग वा न्यारे न्यारे तालकी गतिसों चलावे आगें पिछे ऊपर निचे । च्यारों ओरको भाव दरसावे । मंद लयसों वोसी मलयसों नृत्य होय । सो उरोकण ॥ ६ ॥

७ ढिल्लाई ॥ जहां स्त्री नृत्यमें अंगनको कछू कछू सुंदरता दिखाय चलावे हावभावसों रिझावे लीलासों नृत्य करे विलास करे । सो ढिल्लाई ॥ ७ ॥

८ त्रिकली ॥ जहां चारिमें अथवा स्थानकमें तालकी लयसों सरीरकों कंप करे । वा कंपसों देखिवेवारेको आनंद बढावे । सो त्रिकली ॥ ८ ॥

९ कितु ॥ जहां नृत्यमें भुजा कुच कटिकों तालकी लयसों चलावे। सो कितु ॥ ९ ॥

१० देसीकार ॥ जहां सुंदर भली संप्रदायसों गोडी आदिक जेसो देस होय। ता देस रितिसों मिल्यो नृत्य कीजिये। सो देसीकार ॥ १० ॥

११ निजायत ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री सुंदरतासों हात चलाइकें दृष्टी करे। ता दृष्टीसों सभाके जनकों वसि करे दृष्टीसों भाव बतावे। सो निजायत ॥ ११ ॥

१२ उल्लाससंग ॥ जहां तालसो सितावि अनेक रसके भरे। अंगनिक उछालिवेसों। दोय गुनों तीन गुनों देहकों स्वरूप उपजावे देखिवेवारेके मनकों वसिकरे। सो उल्लाससंग ॥ १२ ॥

१३ थासक ॥ जहां सुंदरतासों कुचपे हात धरिकें भाव बतावे। सो थासक ॥ १३ ॥

१४ भाव ॥ जहां गीत नृत्यके अनुसार गावे। लयसों मिल्यो नृत्य होय। मधुर विलाससों नृत्य होय। सो भाव ॥ १४ ॥

१५ सुपहास्य ॥ जहां चारि आदि नृत्यके अंग रचि चरन आदि सरीरके अंगनकों चलाय रस उपजावे वाजित्र गीतकों संग छोडे नही। सो सुपहास्य ॥ १५ ॥

१६ संघतलय ॥ जहां नृत्यमें नृत्यकों संकोचके ओर लयकों लेकें नृत्य करे। अचिरज उपजावे। सो संघतलय ॥ १६ ॥

१७ ढाल ॥ जहां नृत्यमें जेसें मंद मंद हाल तलकके पत्रमें जलदि बुहले। या तरह अंगको मनोहरतासों लहरावे। सो ढाल ॥ १७ ॥

१८ छदा ॥ जहां सुंदर भोंह करि नेत्रके कोयेसों भाव रचि। चंचलता करि देखे। सो छदा ॥ १८ ॥

१९ अंगहार ॥ जहां नृत्यमें सरिर सुंदरतासों नमाय नाभितें उपर कोंदे नाभितें नीचेके चरन आदि अंग धनुषकी तरह टेडो करि। तालसो मिलि नृत्य करे सुंदर भाव बतावे। सो अंगहार ॥ १९ ॥

२० लंघित ॥ जहां नृत्यमें बाजेनकी गति तिनके खंड लांघि लांघि ठहरि ठहरि नृत्य करे। सो लंघित ॥ २० ॥

२१ विहस ॥ जहां नृत्यमें मंद मुसुकानि करि मनकों हरें। सो विहस ॥ २१ ॥

२२ नीकी ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री नृत्य गीत वाद्य ताल लय। इनसों मिलिकें सावधानिसों नृत्य करे। सो नीकी ॥ २२ ॥

२३ नमनिका ॥ जहां नृत्यमें विना खेद सहजसों स्थानक स्थानकमें अंगको नमावे। कठिन नृत्यके भेद साधे। सो नमनिका ॥ २३ ॥

२४ संका ॥ जहां धीटपनेंसों अंग चलाय दिखाय पांसू हलावे। देखिवेवारे लोगनके मनकों ठगीवेकों अंग विलाससों ढाके। सो संका ॥ २४ ॥

२५ वितड ॥ जहां स्वभावसों सुंदर जे चारि करनके स्थानक आदि नृत्यके अंग तिन तिनको कठिनताई वरते। सो वितड ॥ २५ ॥

२६ गीतवाद्यता ॥ जहां मनमें गीतके अक्षर बाजेकी लयकी अनुसार नृत्य करे। सो गीतवाद्यता ॥ २६ ॥

२७ निर्वन ॥ जहां वाद्यमें प्रबंधके अक्षरके अनुसार नृत्य होय। ओर हस्तक च्यारिनके करनसों मंडलाकार फिरे। सो मनोहरता रचे। सो निर्वन ॥ २७ ॥

२८ थरहर ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री चरनको कंपाय भुजाकों हलाय विलास दिखावे। सो थरहर ॥ २८ ॥

२९ स्थापना ॥ जहां नृत्य कर धरतीपें सुंदरतासों ठाडी होय। सुंदर मुखपें चमत्कार दिखावे। मनोहरतासों अंग राखे। सो स्थापना ॥ २९ ॥

३० सौष्टव ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री सुंदरतासों च्यार अंगनको चमकाय सरिर निचो करें। अथवा महाराजनकी जेसी रुचि होय। तेसें सरिर निचो कर नृत्य करे। सो सौष्टव ॥ ३० ॥

३१ स्नुवा ॥ जहां मंदपोनसों जेसें दीपककी जोति हाले ऐसें नृत्य करिवेवारि स्त्री अपनें अंगकों हलाय नृत्य करे। सो स्नुवा ॥ ३१ ॥

३२ मसृणत ॥ जहां नृत्य करिवेमें मुग्धा स्त्री रसभरि स्नेहजुत दृष्टिसों हस्तक रचे । सो मसृणत ॥ ३२ ॥

३३ उपार ॥ जहां नृत्यक रचे । अंग प्रथम कीयेतेंही अंग आगें रचे तालके प्रयोगसों सुंदर होय । सो उपार ॥ ३३ ॥

३४ अंगानंग ॥ जहां नृत्यके अंगहार करण आदिक मिलाय । तांडव नत्यको उन्मत्त प्रयोग कीजिये । सो अंमानंग ॥ ३४ ॥

३५ अभिनय ॥ जहां नृत्यमें भाव बतायवेको हात आदि अंगनसों हस्तक करन आदि रचि भाव बतावे । सो अभिनय ॥ ३५ ॥

३६ कोमलिका ॥ जहां नत्य करिवेवारी स्त्रीके अंगनकी क्रियासों चितकी कोमलताजुत अनुराग जामों परे । सो कोमलिका ॥ ३६ ॥

३७ मुखरी ॥ जहां नृत्य करिवेवारि स्त्री शृंगार आदि रसभरे कवन कही नृत्य करे । सो मुखरी ॥ ३७ ॥

ऐसें देसीलास्यके ओर अनेक भेद हे । सो सास्त्रके अनुसार बुद्धिबलसों समझिये ॥ इति **सेततीस अंगदेसीनको लास्यको लछन संपूर्णम्** ॥

॥ अथ नृत्यमें अंगके विकार बतायवेको विकृत चेष्टाको लछन लिख्यते ॥

जहां एक पांव संकोचे । एक पांवसों चले सो खोडे सुरसनकी नकल जांनिये ॥ १ ॥

जहां कटि बांकि करि चले । सो कुबडेकी नकल ॥ २ ॥

जहां पेटकों नटवाय चले । सो बडे पेट दूंदवारेकी नकल ॥ ३ ॥

जहां छातिकों फेलाय दिखावे । सो कुचहीनकी नकल ॥ ४ ॥

जहां कंठकी समस्या करे । सो कंठहीनकी नकल ॥ ५ ॥

जहां दांतको बतावे । सो बडे दांतवारेकी नकल ॥ ६ ॥

जहां होट लंबो करि । सो बडे होटवारेकी नकल ॥ ७ ॥

जहां गाल फुलावे । सो फुलेगाल वा बडो गालकी नकल ॥ ८ ॥

जहां नाक दबावे । सो बेंठ नाककी नकल ॥ ९ ॥

जहां एक नेत्र मूंदे सों कांणेकी । दोऊ नेत्र मूंदे सो अंधकी नकल ॥ १० ॥

जहां वचन नही बोले । सो गुंगेकी नकल ॥ ११ ॥

जहां कान दबावे । सो बहरेकी नकल ॥ १२ ॥

जहां माथेकों दबाय बतावे । सो विनामाथेके आदमीकी नकल ॥१३॥

जहां स्वेत । १ । पीत । २ । लाल । ३ । हारो । ४ । स्याम । ५ । आदि रंगनकी चेष्टा उन रंगनकी वस्तुसु बतावे । सो रंग रंगकी नकल ॥ १४ ॥

जहां फल फुल लाडू पेढा आदि सब वस्त बतावनि होय । तहां वांहिके आकार हातकी चेष्टा कीजिये । ऐसें सिगरे नकल जांनिये । जहां वस्त्र संकोचि दिखावे । सो रजस्वला स्त्रीकी नकल ॥ १५ ॥

ऐसें संयोगवियोगकी चेष्टा कीजिये । सो नकल ॥ १६ ॥

जहां छातिपें हात लगाय मांथेपें ल्यावे । सो पंडितकी नकल ॥ १७ ॥

जहां छातिपें हात धरि वाहिकी चेष्टा करे । सो मुरखकी नकल ॥१८॥

जहां एसें भले बुरे जो संसारके पदारथतें सिगरे ऐसें चेष्टानसों बतावे ॥ १९ ॥ इति विकृत चेष्टाको लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ देवता, दैत्य, राक्षस, समुद्र, नदि आदि सबनके स्वरूप जतायवेकों लछन लिख्यते ॥

जहां दोऊ हातके पताक हस्तक रचि सूधे करि छातिपें ल्यावे । सो तेतीस कोट देवनानकी प्रार्थनाकी चेष्टा जांनिये ॥ १ ॥

जहां बांये हातकों पताक रचि कानपें उलटो धरे। दाहिनें हातको पताक कटिपें सूधो करे आप मुख नमावे । सो वरदाभय नाम श्रीविष्णुभगवानकी प्रार्थना जांनिये ॥ २ ॥

जहां पताक हस्तक रचि कंपजुत उपरकों उठावे । सो पीतांबरकी चेष्टा ॥ एसें मुरली बजायवेकी चेष्टासों सुदर्शन चक्रकी चेष्टासों गोपीनके समूहकी चेष्टासों रासमंडलकी चेष्टासों श्रीकृष्णभगवान जांनिये श्रीकृष्णकी चेष्टासों छातिपें हात लगावे । तब श्रीलक्ष्मीकी चेष्टा जांनिये ॥ ३ ॥

जहां हल धारनकी चेष्टा । सो बलराम जांनिये ॥ ४ ॥

समुद्रमें सेतु बांधिवेकी वा राक्षस मारवेकी चेष्टा । सो श्रीरामअवतार जांनिये ॥ ५ ॥

जहां विना अंग धनुख खेचिवेकी चेष्टा । सो कामदेव ॥ ६ ॥

जहां पताक हस्तक छातीपे दिखावे सो दानदेवेकी चेष्टा । सो कल्पवृक्ष जांनिये ॥ ७ ॥

जहां दोऊ हातके अलपल्लव हस्तक रचि संमुख करे । सो कामधेनुकी चेष्टा ॥ ८ ॥

जहां पुष्पपुट हस्तक रचि ऊधो करे । सो चिंतामणिकी चेष्टा ॥ ९ ॥

जहां दोऊ हात पताक रचि मुख पास राखे। सो वैकुंठकी चेष्टा॥ १० ॥

जहां प्राणायामकी क्रियासों नाभिको छूवे । अथवा वेदपाठ अथवा ध्यान मुद्रा दिखावे । सो ब्रह्माजीकी चेष्टा ॥ ११ ॥

जहां तु तुंबास्थानक कछू बांको आकार होय । सो कछपि वीणासों कछपी वीणाकी नकल दिखावे । सो सरस्वतीकी चेष्टा ॥ १२ ॥

जहां चतुरस्र हस्तक रचि किन्नरी उठावे ॥ अथवा अर्धचंद्र हस्तक रचि माथेपें दिखावे । सो श्रीशिवजीकी चेष्टा ॥ १३ ॥

जहां दोऊ हात सुचि मुखहस्तक रचि ॥ दोऊ हात मिलावे । सो श्री-पार्वतीकी चेष्टा ॥ १४ ॥

जहां बांये हातको पताक हस्तक रचि दाहिनें हातपें राखे विलासजुत उपर दिखावे । सो श्रीगणेसजीकी चेष्टा ॥ १५ ॥

जहां दोऊ हातनमें पताक रचि । सिंगके आकार करि दिखावे । सो नंदिके-श्वरकी चेष्टा ॥ १६ ॥

जहां माथेके उपर एक हातकी मुठि रचि । च्यारि अंगुल उंचि राखे ताके दाहिनि ओर हात भारे उंचि । दूसरे हातकी मुठि रचे । सो हनुमानकी चेष्टा ॥ १७ ॥

जहां हाति चढिवेकी क्रिया रचे छत्रचामरको स्वरूप दिखावे । सो इंद्रकी चेष्टा ॥ १८ ॥

जहां पताक हस्तक रचि ऊपरकों चलावे । सो अग्निकी चेष्टा ॥ १९ ॥

जहां मुखपें वस्त्र आडो करके क्रूर दृष्टि दिखावे ॥ एक हातमें पताक हस्तक रचि हलावे । सो यमराजकी चेष्टा ॥ २० ॥

जहां मुख मकरी मगर मछ अथवा राक्षसको दिखावे । सो निरति दिग्पालकी चेष्टा ॥ २१ ॥

जहां पासि जल हातकी क्रियासों बतावे । सो वरुणकी चेष्टा ॥ २२ ॥

जहां पताक हस्तक रचि नीचो करि हलावे । सो वायुकी चेष्टा ॥ २३ ॥

जहां दोऊ हातकी अंगुटी पासकी अंगुरी मिलाय भयंकर मुद्रासों दिखावे। सो भीमसेनकी चेष्टा ॥ २४ ॥

जहां दोऊ हातनमें हंसपक्षहस्तक रचि फलाय दिखावे । सो धनवानकी वा कुबेरकी चेष्टा ॥ २५ ॥

जहां शिवको स्वरूप दिखावे । सो ईशानकी चेष्टा ॥ २६ ॥

जहां शिव स्वरूप दिखावे । सो आठ वसुकी चेष्टा ॥ २७ ॥

जहां मंडलके आकार हात आकासकी तरफ फिरावे । सो सूरजकी चेष्टा ॥ २८ ॥

जहां अर्धचंद्र करि दिखावे । सो चंद्रमाकी चेष्टा ॥ २९ ॥

जहां पताक हस्तक रचि नीचे तें ऊपरकों चलावे। सो मंगलकी चेष्टा॥३०॥

जहां ग्यान मुद्रा करिके सुधो हात छातिपें धरे। सो बुधकी चेष्टा ॥३१॥

जहां दोऊ हातकी अंजलि रचे । सो गुरुकी चेष्टा ॥ ३२ ॥

जहां सूचि मुख हस्तक रचि ऊपरकों दिखावें। सो शुक्रकी चेष्टा॥३३॥

जहां पताक हस्तक रचि तिरछो करि दिखावे। सो शनीश्वरकी चेष्टा ॥३४॥

जहां माथो दूरि करिवेकी क्रिया दिखावे । सो राहुकी चेष्टा ॥ ३५ ॥

जहां बिना माथेके सरीरकी चेष्टा दिखावे। सो केतुकी चेष्टा ॥ ३६ ॥

जहां मुखके ओर पास सब मकरिके जाले दिखावे । मकरी कीनाई मुखको एक संग एसें करे । सो सब राक्षसनकी चेष्टा ॥ ३७ ॥

जहां राक्षसकी चेष्टा रचि मकरिके सूधे लाजे रचि उंची छाति दिखावे अथवा दस मुखको भाव बतावे । सो रावणकी चेष्टा ॥ ३८ ॥

जहां राक्षसकी चेष्टा करि कोइक असुभ क्रिया । अथवा निद्राकी नकल दिखावे । सो कुंभकरनकी चेष्टा ॥ ३९ ॥

जहां राक्षसकी चेष्टा करि छत्र चामर दिखावे । सो बिभीषणकी चेष्टा ॥ ४० ॥

जहां सूचि मुख हस्तक रचि भ्रमावे । अथवा सुवरनके वीयनकी नकल करे अथवा पताक हस्तक ल्यावे । सो लंकाकी चेष्टा ॥ ४१ ॥

जहां पापकर्म व खोटो कर्म होय । सो दैत्यकी चेष्टा ॥ ४२ ॥

जहां छत्र चामरि आदि राजचिन्ह । अथवा नवीन अभिमान आदि गुण दिखावे । सो राजा दुर्योधन आदिकनकी चेष्टा जांनिये ॥ ४३ ॥

जहां हसीवो गाइवो रोइवो । माथो हात पग हलाइवो आदि लोक-रीतिसों । अचिरजकी क्रिया करि दिखावे । सो वेताल भूत प्रेत पीसाच डाकिनी साकिनी आदिककी चेष्टा ॥ ४४ ॥

जहां माथेपें जतावे भूतकों गोला दिखावे । अथवा ध्यानमुद्रा दिखावे । सो सिद्धनकी चेष्टा ॥ ४५ ॥

जहां होटको हलायवेकी पोथि वाचीवेकी क्रिया करे । सो पंडितकी चेष्टा ॥ ४६ ॥

जहां वीणा आदि बाजेनको दिखावे । सो कलावंत आदि सब गायवे-वारेकी चेष्टा ॥ ४७ ॥

जहां वीणादि बाजो दिखाय ऊपरकों हात करे । सो गंधर्व किन्नरकी चेष्टा ॥ ४८ ॥

जहां ऊपरकों हात कीजिये । सो स्वर्गकी चेष्टा ॥ ४९ ॥

जहां पताक हस्तक रचि धरतिपें लगावे । सो भूमिकी चेष्टा ॥ ५० ॥

जहां पताक हस्तक रचि उपर भ्रमावे । सो समुद्रकी चेष्टा ॥ ५१ ॥

जहां पद्मकोश हस्तक रचि । ओंधो करि माथेपें फिरावे । दूसरे हातको पताक रचि । बांयो दाहिनों फेरे । सो वृक्षकी चेष्टा ॥ ५२ ॥

जहां एक हातको हस्तक रचि ऊंचो करे दूसरो हात लता कीनाई लपेटे । सो लताकी चेष्टा ॥ ५३ ॥

जहां सुचि मुख हस्तक रचि भ्रमावे । सो क्षेत्रकी चेष्टा ॥ ५४ ॥

जहां सूचिमुख हस्तक रचि ओंधो दिखावे । सो पातालकी चेष्टा ॥ ५५ ॥

जहां दोऊ हातको पताक रचि ऊपरकों उठावे । सो पर्वतकी चेष्टा ॥५६॥

जहां पताक रचि पीछेकों चलावे । सो नदीकी चेष्टा ॥ ५७ ॥

ऐसें जो जो संसारमें प्रसिद्ध वस्त हैं तिनकी चेष्टानसों पहचानिये ॥ इति चेष्टाप्रकरणको नाम–लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ नृत्यके अभिनय कहिये पदारथको जताइवो ताको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां प्रीति दुख आदि मनकों भाव प्रगट कीजिये। सो भाव जांनिये॥ भाव तीन प्रकारको हे ॥ श्रेष्ठ । १ । मध्यम । २ । कनिष्ठ । ३ ।

जहां मुखपें सरीरपें चमक दिखावे भलि दृष्टसों देखे । सो कृपा प्रसन्नता आदिक श्रेष्ठ भाव जांनिये। १ ।

जहां आपको स्वरूप बिगारे नही । बहोत प्रसन्नतासों दिखावे नही । साधारण स्वभावकी दृष्ट करे । सो सहज सुभाव आदिक मध्य भाव जांनिये। २।

जहां नेत्र मिलावे नही मुखपें संकोचि दिखावे माथो फेरी ले । तहां अपराध आदिक कनिष्ठ भाव जांनिये । ३ ।

जहां कानमें तर्जनि अंगुरी धरे क्रूर दृष्टीसों टेडो देखे । पासूंकी वोर माथो नमावे । सो नही मानवेकी चेष्टा । ४ ।

जहां भौंह चलाय नेत्र कछूक संकोच देखे कपोलपें हात लगावे । सो पेलेको मतलब करवेकी चेष्टा । ५ ।

जहां दोऊ हातमें पताक हस्तक रचि । माथेपें राखि मुख फेरि सुधि दृष्टी देखे । सो सुंदर रूपकी चेष्टा । ६ ।

जहां नेत्र संकोचि नासिका फूलाय उपरकों स्वास ले । सो सुगंधलेवेकी चेष्टा । ७ । ऐसेंहि शब्द स्पर्श रूप रसकी चेष्टा जांनिये ॥

जहां अनेक प्रकारके फूल बतावे । सो वसंतऋतुकी चेष्टा । १ ।

जहां पिंजना पसेव घामलूको बाजिवो बतावे। सो ग्रीष्मऋतुकी चेष्टा। २।

जहां मेघ बिजली खद्योत कहनें निगनु बतावे । सो वर्षाकी चेष्टा । ३ ।

जहां हात सिर दृष्टी निर्मल फूले काम कमल बतावे। सो शरदकी चेष्टा।४।

जहां सित पाले जमेंकी चेष्टा । सो हेमंतऋतुकी चेष्टा । ५ ।

जहां पत झरपोंनकी चेष्टा । सो शिशिरऋतुकी चेष्टा । ६ । ऐसे चेष्टानसों ऋतु जांनिये ॥

जहां गहरो श्वास अंग कंप होय होटनसों दांतसों दाबे लाल लाल नेत्र काढे । सो क्रोधकी चेष्टा । १ ।

जहां ठोडी होट कांपे नेत्रमें आंसू आवे माथो हलावे भोंह चढावे अंगुली चटवावे काहूसें बोले नही ॥ आछो आभूषण वसन चंदन अत्तर अर्गजा फूल माळी दूर करे । सो यह स्त्रीनके ईषामें अथवा मानमें चेष्टा होय । २ ।

जहां गहरो स्वास निस्वास भरे निचे मुख करि धरतीपें देखे ॥ ओर काहूकी ओर देखे नही । सो महाकष्टकी चेष्टा । ३ ।

जहां माथेमें अपनें हातसों ताडन करे रोदन करे पछतावमें धरतीपें बार वार परे हात पांव पटके । सो स्त्रीके वियोगकी चेष्टा । ४ ।

जहां संभ्रम अडवडाटमें सस्त्रके चलिवेसों उद्वेग । सो पुरुषके भयकी चेष्टा । ५ ।

जहां धीरज उतावळ चंचल नेत्र सरीरके कंपसों आसपास देखिवे । सो त्राससों चिसली परिवेंसों कहूके सरिरसों लपटवेमेंसो स्त्रीनकी चेष्टा । ६ ।

ऐसें अभिनय दो प्रकारके हें ॥ पुरुषको । १ । स्त्रीको । २ ।

जहां धीरज मधुरता सुंदरतासहित पुरुषको अभिनय जांनिये । १ । कायरता मधुरता सुकुमारताजुत स्त्रीको अभिमय जांनिये । २ ।

जहां सरीरको कंप नेत्रको भ्रमावे आकासको देखिवो चरनको सिथल परिवो उलटे बचन कहिवो । सो स्त्रीनकी चेष्टा जांनिये ॥

ऐसें नाटकको जांनिवेवारो पुरुष यथायोग्य समझिकें अभिनयसों चेष्टा करे ऐसें हंस । १ । सारस । २ । मोर । ३ । सुक । ४ । आदि पक्षिनकी नगरग्राम वन जल थल आदि स्थानककी अश्व । १ । ऊंट । २ । शेर । ३ । सिंह । ४ । भेसा । ५ । आदि पसूकी देव यक्ष राक्षस पिशाच भूत मनुष्य आदिकी जे देवता प्रत्यक्ष नही होय । तिनकी चेष्टा नमस्कार आदिसें जांनिये। तिन देवतानकी प्रतिमा प्रगटतहें । तिनको पूजा धूप दीप आदिसों जांनिये ॥

जहां लाजसों अंगको संकोचि संकोचि सरिरको वस्त्रको ढांकिवो घूंघट

लेवो निचेकों दृष्ट ऐसें चेष्टा कीजिये । सो कुलांगना ॥ जहां कुलीन स्त्रीकी चेष्टा होय । १ ।

जहां अनेक आभूषण वस्त्र नानाप्रकारके होय लाज नही होय । अंग उघाडि दिखावे सब ठोर लाज छोड विचरे । सो वेश्याकी चेष्टा । २ ।

जहां खेदनिस्वासचिंत हियेमें संतापक्रोधसहित वचन आभुषण वसन दूरि करवो रोदन करिवो । इत्यादिक चेष्टा सो वियोगमें कलहांतरिता जांनिये । ऐसें प्रोषतिपतिका जांनिये ॥

जहां नानाप्रकारके शयनादि सुखसेज । जेसो जहां चाहिये तैसो स्वरूपभाव दिखावे । वासक सजा स्वाधिन पतिका आदि यथायोग्य नायकान-की चेष्टा कीजिये । ऐसेंहि यथायोग्य नायककी चेष्टा कीजिये ॥

अथ रासमंडल नृत्यको लछन लिख्यते ॥ जहां अनेक नृत्य करिवे-वारी स्त्री होय अनेक आभुषण अनेक वस्त्र पहेरे होय । रात्रि समें चंद्रमाको प्रकास सुंदर वन अनेक बाजे अनेक राग अनेक कंठ धुनि मिलाय गाइये । वाह जोड नृत्य कीजिये । देवता मनुष्य गंधर्व जाके देखिवेसों गति फूले सर्व राजी होय। वाहवाह करे । सो रासमंडल नृत्य हें ॥ यह वृंदावनमें श्रीकृष्ण भगवान गोपीनके संग रच्यो हें । ऐसो रागसामर्थ जाको होय सो करे । सो पूर्ण ब्रह्म श्रीभग-वानसों यह रास बन्यो ओर काहूसों बनें नही यह सब नृत्यमें मुख्य हें ॥

जहां ध्रुपद प्रबंध छंद दोहा कवित आदि भाषामें जो रस होय । सो नकल करि सब नृत्यनमें दिखावे । ऐसें श्रीद्वारावतिमें श्रीकृष्ण भगवानके प्रसन्न होयवेकों नटनकेंने श्रीकृष्ण भगवानकी जन्म चेष्टासों लेके बाललीला लक्ष्मीला रासमंडल आदि वृंदावन लीला । कंसवध आदि मथुराकी लीला । सोलह हजार । १६००० । पटराणी आदिकनके विवाह । दैत्यनको वध आदि राज-काज गृहस्ताश्रम । धर्म । १ । कर्म । २ । काम । ३ । यज्ञ । ४ । दान । ५। वृत । ६ । नियम । ७ । आदि द्वारावतीकी लीला । इंद्रकोजीत भगवान पारि-जात ल्याये सत्यभामाको प्रसन्न करि । इत्यादिक लीला भगवानकों प्रसन्न करिवेकों नटननें रचिसों श्रीभगवान अपनि लीला सर्वत्र देखि आदमीं मग्न होयकें । नटनको अनेक द्रव्य दिने ॥

ऐसें फेर नटनकों काहू ठोर जाचिवो नही। ओर यह वरदान दानदियो जो देवतान इष्टकी। श्रीराम कृष्ण नरसिंह वामन आदि अवतारकी सीताजी पारवतीजीकी। सिद्ध पुरुषनकी। महाराजानकी धरमात्मा ब्राह्मणनकी मुनीनकी जो कोऊ सुद्ध भावसों। ईश्वरभाव करिकें उनके सांग उनकी नकल करे करावे देखे दिखावे तिनको। धर्म। १। अरथ। २। काम। ३। मोक्ष। ४। च्यारों पदारथ पावेंगे। उनपें सर्व देवता प्रसन्न रहेंगे। यह वरदान दीयो। यातें देवतानको श्रेष्ठ भले ब्राह्मण आदि मनुष्यनकें। नाटच रचिये। यह भरतादी मुनिश्वर कहेंहें। यह श्रीशिवजीकी आज्ञाहें॥

॥ जहां नृत्य कीजिये ता महलको लछन लिख्यते॥

प्रथम सास्त्ररितिसों महल बनाय॥ वास्तुपूजा होमदान ब्राह्मणभोजन गोदान आदि करि। तहां दोऊक दिन तांई गाइनको वासो कीजिये। ता पीछें फेर ब्राह्मणभोजन होमदान वास्तुपूजन करि। नाटच कराइवेकों मंडल रचिये॥

जहां बेठिवेके स्थानक अनेक प्रकारको रचे। जहां चतुर पुरुषनकी सभा रचाय। अपनें प्रधान मंत्री मुसाहब पुरोहित पंडित आदि सकल सभा पुरुषनके संग सभापतिमहाराज आयकें सभामें विराजे डोडीके दरोगा आदि सुवरनकी छडि हातमें राखि रहें। सभाकी रछण करिवेकों सस्त्रधारि सुभट सभामंदिरके च्यारों ओरकों चोकी देवेकों राखिये। तब नृत्यकों आरंभ करावे॥

तहां दोय मृदंग च्यारि गर्द्धि वावरे। एक पुरुष लीला अवतारकथाको पूछवेवारो। ताको नाम परिहासक दोय पुरुष ताल धारि। एक पुरुष तंबुरा बजावे। ओर यथायोग्य यथारुचि सब बाजे बजायवेवारे राखिये। याको नाम नाटचमंडल जांनिये॥ फेर जो नाटचको करता होय। सो सभापात्रको सिगरे बाजे बजायवेवारेको तिनपर रंगभूमि करिये नृत्य करिवेको बिचमें चोक होय तामें आवे फेर इष्टदेवताकी स्तुति करे। फेर रंगभूमिकी दुष्ट दृष्टि आदि विघ्न दूरि करिवेको रक्षामंत्र जपे। ओर श्रीगणेशजीकी स्तुति प्रथम पढे। इष्टदेवतानके मंगलाचरनके श्लोकनकों राग तालजुत गान करे ता समें ओर गाइवेवारे पाठाक्षरनसों प्रबंध छंद गान कर पढे॥

नृत्यरूपी वृक्षके अनेक प्रकारके चरनभेदहे। सो नृत्यवृक्षके मूल जांनिये।

कटिके भेदहें । सो नृत्यवृक्षके मध्यभाग जांनिये । अनेक प्रकारके हस्तक हें । सो नृत्यवृक्षके शाखा जांनिये । ओर भोंह नेत्र ग्रीवा भुजा आदिक अंग हे । सो नृत्यवृक्षके पान हें । हावभाव कटाक्ष मंदिमुसकीन सुंदरता हें । सो नृत्यवृक्षके फूल हें पाछे याके देखिवेसें जो ब्रह्मानंद होतहे । सो नृत्यवृक्षके फल हें ॥

या फलके स्वाद लेवे वारे सभामें विवेकी पुरुष हे । उनको या फलको स्वाद होतहे । या स्वादतें विवेकी पुरुष संसारके दुखकों दूरि करत हें । यातें या नृत्यकों चतुर पुरुष विचारसास्त्रके अनुसारसें रचे । फेर वा रंगभूमिमें । एक तरफ मंडपके परदा लगायवाके भीतर रामकृष्णादि अवतारनकी रचना रचिके चतुर पुरुष रंगभूमि आप सभाकों चेष्टा दिखावे । उहां हस्तक कठन स्थानक भीतर अंगहार आदि नृत्यकी सब सामग्री वरते जो । अवतारनकी लीला वेद पुराननमें प्रसिद्ध हो ते लीला । ओर परिहासक या पूछिवेवारो पुरुष जेसें जेसें सभाके प्रसन्न करिवेकों कथा पूछे तेसें तेसें जो छंद कवितनसों पूछि बातनको उत्तर देके कथाके अनुसार नृत्य करिये ॥

तहां प्रथम नृत्यकी आदिमें श्रीगणेसजीके पाठाक्षर रूप प्रबंध कह्योहे । ताको उदाहरण लिख्यते ॥ झेंझेंझेंकीत कुनटरी कयो सिंदुर चर्चि शुंड भ्रमयन थरिकु थथरिकु कुंदरीकथो । हात्तों पादौ चित्रं चलयन् धिरिगीडा धिरिटिडदां धिरिगीडदां । विघ्नारंभे विघ्नहर नृकटि धोंकीण क्रिणगकुकुंदां । यस्तं देवा नमामि सिरसा हतहत कुकु तहतहतह कुकु विघ्नारंभे हरतु विघ्नं ततधल तधलांग धलधल धिमिथों किटिकिटकिटकिणथों । तताधिमि । नगथरि झिणकीट झेंझें तदिदां झिणकीट । तदितां तदितां डेथरिकिंडें डिडधों किनुगद गकिनु दगथों । तताधिमि नगथरि । क्रिणकीट झेंझें । तदिदां झिणकिट तदितां तदितां डेथरि किंडें गिडधों । किडदकि उदगथों ॥ **इति गणेशसब्द संपूर्णम् ॥**

ऐसी रीतिसों नृत्यके आरंभमें गणेसजीके प्रबंध पढिये ओर यथायोग्य सास्त्रके अनुसार कीजिये । जहां ताल पूरन होय । सो मांन जांनिये । सो मांन **मेंथों ऐसो** सब्द कहिये । छातिपें दोऊ हातनको सिखर हस्तक रचि । जहां यह

सब्द कहिये। या सिखर हस्तकमें तिन अंगुरी जुदि करि रुगपद सब्द कहिये। कुचपें उधे पताक हस्तक रचि। धिटकु यह सब्द कहे । ओर दोऊ हातनके पताक हस्तक रचि निचे करि टईगइ। यह सब्द कीजिये। दोनु हातके षट्का मुख रचि। एक हात बांई पांसूपें राखि दूसरो हात धनुष खेचिकेकी रीतिसों। कानके पास ल्यावे। तता। यह सब्द होय। एक हातकों पताक हस्तक अपनें सन्मुख फेलाय था सबद कहें। बांई दाहिमी तरफ हात चलाय । दांदां। सब्द कहें कांधेकी बरोबर कुहणी फेलाय पताक रचि। धलां सब्द कहें । तहां आधे पताक हस्तक रचि फेर ल्यायेकें। नट किटकिट कणां सब्द कहें। पताक हस्तक नि धोपरि गिडिसब्द कहें। जहां कठिनता पद द्दिगटिग सब्द कहें। दोऊ कटिसें पताक हस्तक करि। गेट। सब्द कहें। जहां मुख बराबर मुकर हस्तक। कुकु शब्द कहें। जहां पांवको अंगुठा ऊठाइ कुं शब्द कहें । माथे बराबर तिरछे उंचे दोय पताक रचि थेथे। सब्द कहें। उदरपें दोऊ सिखर हस्तक रचि ठाडो होय नृत्यकों विश्राम करे ॥

इहां जी जातिमें जो जो अक्षर कह्यो। सो ताही रीतिमें वे अक्षर कहिये बाकी रीति अक्षर अपनी इच्छासों शास्त्र अनुसार वरतिये ॥ जेसें थक्किङ्गि थोङ्गि तकतकत्तकधिक ताहं किट धिम। ए अक्षर अपनी इच्छासों यथायोग्य वरतिये। जो हस्तक आदिक अंगनकों आरंभ करे। सो हृदयंगम । १। स्वैर । २। अभिमुख। ३। कर्णस्थ खटकामुख। ४। कूर्मप्रसाद । ५। वक्षोज । ६। मान। ७। यह सात जांनिये ॥

॥ अथ सातको लछन लिख्यते ॥

जहां सभाके मन हरवेकी चेष्टा करे। सो हृदयंगम। १। जहां स्वाधानन्की चेष्टा करे सो स्वैर। २। जहां सनमुख होयवेकों बतावे। सो अभिमुख । ३। जहां खटकामुख हस्तक रचे। सो कर्णस्थ खटकामुख। ४। जहां कुहणी फेलावे। सो कुहणीको कूर्मप्रसाद। ५। जहां छातिपें कुचके आकार हात राखे। सो वक्षोज। ६। जहां तालको समाप्त होय। सो मान । ७। अथ इन सातोंनके अनुक्रमसों पाठाक्षर लिख्यते ॥ जग जगथे । या धिमि। किट नम। १। जग जगथे धिमिथों नग धिमि। २। किटनम किणकिणकिण नग-

ङ्यौ । ३ । तत थाथ। धिमि ।४। तत धिमि धूनाकिटिकिटि ।५। तकधांग थरि कुकु कुकुदां । ६ । दिगि दिगिदांदां दिगिदा दिगि । ७ । किट किरंग किण णनगनगथा । ८। नग धिमि किणकिण । मग तता ।९। धिधिमि धिमि किटदां किटदां । १० । ककुथरि नग देंदें कुण किट । ११ । दांकिड नग ताहां तत्थ- रिकुं । १२ । थारिकु थरि किकिदां किकिदां । १३ । धिमि तकदां । १४ । नकधिमि । १५ । धधि गिणथों । १६ । इति हृदयंगम । मग धिमि तक। जग किट । १ । नग धिमि तक डेंडें । २ । ङनकीटटतक डेंडें । ३ । तहां तक तक ताहं । ४ । किण तक । ५ । धिमिताहं । ६। तहां किण तक तक । ७ । धिमि नगगे धिमि किट । ८ । किट धिमि कटतक धलांग । ९ । धलांग धलांग । १० । दिगि धिगि तगरि मधिगि । ११ । तधलां धिमि तधलां । १२ । तकधल । १३ । धिमि तकधल नक कुकुधि किततकु । १४ । धलत धुकुकुत धलां । १५ । नक धिमि कुकुङणकीट । १६। तक धधि गिणथों। १७। इति स्वैरं ॥ थाधिमितग। १। तक धिमिकिट । २ । तग तधलां । ३ । कुकुधिधि । ४ । धिधिमकिट । ५ । तकुतादिदां । ६ । ककुकुंदकुं। ७ । थरिकुं दकुनग झेंझें । ८ । झेनगेर । ९ । तकुं तत कुकुधिमि कुदरिकु । १० । ककु कुंदरिकु । ११ । धल धलांग । १२ । तक धलांग । १३ । मगतगथां । १४ । इति अभिमुख । ३ । अमामत ग्रह । मद्दिमिकिट । तग तमथें । १ । तग तग धिमिकिट सगगधिमि किटगत । तमथें । २ । तत धिमिकिट तततमनग । ३ । ताधिमि किटतग तगतग तग ।४। कुंदरि कुकुकुत क तक धिमि ।५। तग तग धिमि । किट किट किट ।६। तक थ रि । कुकुतक तकदां । ७ । नकुथरि कुकुधिमि किट ।८। नगथरि किट। कुकुदां । ९ । तरि कु कु किट नग। १० । दांथरिदां दांथरि। ११। धिमि नकु- नक डिणकिट । १२ । किङ् गिङ् दाथरि दांदां । १३ । तकु कुकुतकु नमदा । १४ । तग नगदां धिमि । १५ । किट नग किण धधिगिणा थोंहे । १६ । इति करणस्य खटकामुख संपूर्णम् ॥

॥ तृतीय नर्तनाध्याय समाप्त ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE
Hon. Secretary Gayan Samaj, Poona.

PART IV.

PRAKIRNADHYAYA.

(Explaining miscellaneous and technical musical terms &c.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1910.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी

सेक्रेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ४ था.

प्रकीर्णाध्याय.

पूना ' आर्यभूषण ' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

१९१०.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय–सूचिपत्र.

चतुर्थ प्रकीर्णाध्याय.

सर्व ग्रंथ अनुसार शार्ङ्गदेव राजर्षिके मतसों प्रकीर्णाध्याय लिख्यते.

प्रकीर्ण ॥ जहां देसीराग ॥ १ ॥ मार्गीराग ॥ २ ॥ इन दोऊनको प्रकीर्ण लछन कहतहें । सो प्रकीर्ण कहिये ॥

मातु ॥ भाषा ॥ प्रबंध ॥ गान ॥ आदि इनके गुन दोषकों जानिकें रागरचना करिवो या संगीतशास्त्रमें । संस्कृत प्राकृत देश भाषा रूप जो वाणी ताको नाम मातु कहे हें ॥

धातु ॥ इन वाणीनमें गायवे जोग्य जो प्रबंधादि रचना ताको नाम धातु कहे हें ॥

मातुकार ॥ जो कोऊ पुरुष भाषा । आदि वानिमें प्रबंध रचि गावे । ताको नाम मातुकार जांनिये ॥ या मातुकको नाम वागेयकार कहे हें ॥

अथ वागेयकारको लछन लिख्यते ॥ जो पुरुष व्याकरण । आठ ॥ ८ ॥ अठारे ॥ १८ ॥ कोश अठारे ॥ १८ ॥ पुरान महाभारत पिंगल । आदि सर्व छंदकें ग्रंथ तीन छंदमें न्यारि न्यारि जाने ॥ ओर उपमा आदि अलंकार ॥ १२० ॥ अरथके ओर सब्दके । अलंकार यमकादिक । तिनमें प्रकीर्ण होय । सिंगार आदि नवरसनके ग्रंथ अरु भाव ध्वनि रसाभास भाषा विरोधाभास आदि धूनि अलंकार आदि नायके नायका भेदकों जानें ओर गौड आदि जा देसको राग होय ता देसकी भाषा चलगत व्यापारकों जानें । ओर संस्कृत ॥ १ ॥ प्राकृत ॥ २ ॥ अपभ्रंस ॥ ३ ॥ सूरसेनी ॥ ४ ॥ मागधी ॥ ५ ॥ पैसाची ॥ ६ ॥ आदि सर्व देशभाषामें निपुण होय । ओर शास्त्र संप्रदायमें जे कहि । चोसटी कला तिनको जानिवेवारो होय। ओर नृत्य ॥ १ ॥ गीत ॥२॥ वाद्य ॥ ३ ॥ ये पंडित जनसों भक्ति श्रद्धासों गुरु आश्रय करिकें पढ्यो होय

और सरीरके जो चक्रषट ॥ १ ॥ इडा ॥ २ ॥ पिंगला ॥ ३ ॥ सुषुम्ना ॥ ४ ॥ आदि नाडीको ग्यान होय । ओर लय । १ । ताल । २ । की कला जानत होय ओर अनेककी कहत वचन बोलिवेकी रीति । उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ । जेसो पुरुष होय ताको तेसो हि सन्माम करि बोलिवो । ओर अपनि बुद्धिसों नविन उक्ति जुक्ति विचार जो शास्त्रसों मिलति होय । जामें कंठ धुनि मधुर होय । ओर देसी रागनके गायवेकी रीति जानें प्रिय वचन सबसों बोले चाले ओर काहूसों राम द्वेष नही करे । जाके चित्तमें घणी दया होय । ओर जो आप प्रबंध करे । तामें ओर काहुकी युक्ति नही ले। ओर जो कदाचित पहिलेकी युक्ति बनायवेमें आवे तो वो काव्यको नही लीजिये। जो परायकी युक्ति ले तो वह काव्य उच्छिष्ट होत हें ॥ ओर परायेचितके । सुख । १ । दुःख । २ । ग्यान । ३ अग्यान । ४ । कों आपहि पहचानिये ओर पहले जो धुनि स्वर । भरत । १ । मतंग । २ । हनुमान । ३ । सारंमदेव । ४ । आदिनकों ग्रंथकी रीति समझिकें ॥ द्रुत । १ । मध्य । २ । विलंबित । ३ । गीतकी रीति जानें ओर मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकी गमकको अभ्यास होय रागनके अनेक प्रकारके आलाप जानें जाको सुंदर स्वरूप होय ऐसो गुण जा पुरुषमें होय ताको उत्तम वागेयकार जांनिये ॥

अथ मध्यम वागेयकारको लछन लिख्यते ॥ जो पुरुष प्रबंध । १ । छंद । २ । सुद्ध करे ओर उनमें भाषा सिथल धरे । अथवा प्रबंध । १ । छंद । २ । भाषा । ३ । इनके रचिवेमें प्रविण होय ॥ परंतु कहिवेमें सिथल होय ॥ आछि तरह नहि उच्चार करे । सो मध्यम वागेयकार जांनिये ॥

अथ अधम वागेयकारको लछन लिख्यते ॥ जो पुरुष प्रबंध छंदकी रचना सिथल करे ओर प्रबंध छंदकी भाषा सुंदर करे । सो वागेयकार अधम जांनिये ॥

ऐसे संगीतशास्त्रके सिगरे मतको पढिके विचार कहें । सो प्रमान जांनिये ॥

अथ गंधर्वराज लछन लिख्यते ॥ जो पुरुष मार्गीराग । १ । देसीराग

। २ । इनके गाइवेकी रीति ॥ समय भेद जाणें । सो गंधर्व कहिये ॥ **इति गंधर्वराज लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गंधर्वराजको भेद स्वरादि है ताको लछन लिख्यते ॥ जो पुरुष मार्गीराग जानत होय ॥ ओर देसीरागनकी नहि जाने । सो पुरुषस्वरादि जांनिये ॥ **इति स्वरादि लछन संपूर्णम् ॥**

अथ रागके गायवेमें श्रेष्ठपुरुषको लछन लिख्यते ॥ जाके कंठकी धुनि मनोहर होय । जो राग होय ता रागको गाइकें प्रगट दिखायदे ॥ ओर गीतके आरंभतें लेकें ॥ गीतके समाप्त तांई ॥ ताल । १ । लय । २ । इन दोउनको निर्वाह करे । ओर ग्रामराग । १ । उपराग । २ । भाषाराग । ३ । विभाषाराम । ४ । अंतरभाषा । ५ । रागांग । ६ । भाषांग । ७ । क्रियांग । ८ । उपांग । ९ । ये नवप्रकारके रागनकों जाने । ओर प्रबंधनके भेद तिनको गायजाने । ओर तरह तरहको एकाकार भेदाकार जो आलाप ताके तत्वकों जाने । ओर मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानके गमकनमें जाको अभ्यास होय । लय जाकी टुटे नही कंठ आधिन होय । अंशस्वर । १ । वादी । २ । विवादि । ३ । संवादि । ४ । विकृत । ५ । कोमल । ६ । तीव्र स्वरको ग्यान होय । ओर भेद करिवेमें समर्थ होय ओर सुद्ध । १ । छायालग । २ । संकीरन । रागनकी जुदिजुदि रीति दरसावे । संपूरन जो बोलिवेको रीति हे तिनकों जाने । स्थाई । १ । आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संचारी । ४ । स्वरनके स्वरूप जुदेजुदे दिखावे । ओर गायनके दोष हें । ते जामें नहि होय । ऐसें सर्व दोष रहित होय आपने गायवेके धर्ममें सावधान होय । इष्ट-देवको भजम करे जाकी लय सुने तें अनुरंजन होय । सब वाणि सुघड होय । जाको हिरदो साचो होय गायवेकी संप्रदाय जो शास्त्रमें कहि । ता संप्रदायसों गावे । सो गायवेवारो गायक उत्तम जांनिये । ये गुण कहे तासों कछूइक हीन गुण जा गायवेवारेमें होय । कोइ दोष गाइवेको नहि होय । सो गायवेवारो मध्यम जांनिये । ओर जामे गुण तो थोरे होय । ओर दोष बहुत होय । सो गायवेवारो अधम जांनिये ॥ **इति उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम । ३ । गायवेवारेके लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गायवेवारेके पांच भेद लिख्यते ॥ शिक्षाचार । १ । अनुकार । २ । रसिक । ३ । रंजक । ४ । भावक । ५ । यह पांच भेद जांनिये । तहां प्रथम शिक्षाचारको लछन कहेहें ॥ जो राग सिखायवेमें चतुर होय । सो शिक्षाचार जांनिये । १ । जो राग पहलेकी नकल दिखिकें गावे । आप समझे नही । सो अनुकार जांनिये । २ । ओर जो अपनें रसके लिये गावे । ओरके रिझवेकी इछा नहि राखे । सो रसिक जांनिये । ३ । ओर जो गाइवेवारो सुनिवेवारेनकों अनुरंजन करे । सो रंजक जांनिये । ४ । ओर जो गीतके गाइवेमें जनको चमत्कार दिखावे । अनुरंजन करे रस उपजावे । सो भावक जांनिये । ५ । **इति गायवेवारेके पांच भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गायवेवारेके तीन भेद लिख्यते ॥ एकल । १ । यमल । २ । वृंद । ३ । यह तीन भेद जांनिये ॥ जो अकेलोहि गावे । अरु रागमें रस उपजावे सुनिवेवारेको मन वसि करे । सो गायनवारो एकल जांनिये । १ । जो दूसरे गायवेवारेके सहारेसों गावे । दूसरेविना जाको गायो जाय नही । सो यमल जांनिये । २ । जो तीन च्यारि गायवेवारेकी साहारासों गावे । सो गायवेवारो वृंद जांनिये । ३ । यह गायवेवारेके तीन भेद हे ॥ सास्त्रकी रीतिसों सो बुद्धिवान् पुरुष वा पंडित राजासाहेब गायवेवारेकी परीक्षा लेवे । सो संसारके मांहि गान हि पदारथ हे ॥ **इति गायवेवारेके तीन भेद संपूर्णम् ॥**

अथ गायवेवारि स्त्री गायन कहावे ताको लछन लिख्यते ॥ जो कोऊ स्त्री राग गायवो जानें । सुंदर जाको रूप होय । यौवन जाकी अवस्था होय । जाके कंठकी धुनि मधुर होय । रसभावमें चतुर होय । चतुर मुखकी प्यारि होय । सो स्त्री गायवेवारी जांनिये ॥ जो पुरुष गायवेवारो हे ताके जितनें भेद हे । तितनें भेद गाइवेवारी स्त्रीके जांनिये ॥ **इति गायवेवारी स्त्रीको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ गायवेवारेके कंठकी धुनिके च्यारि भेद लिख्यते ॥ खाङगल ।१। नारहट्टक ।२। बोम्बक ।३। मिश्रक ।४। जो गाइवेवारेकी शरिरकी कफकी प्रकृति होय । ताके कंठकी धुनि मधुर होत हे । सो मंद । १ । मध्य । २ । स्थानमें निकें गाइये । सो खाङ्गल जांनिये । १ । याको आडिल कहेहें ॥

जा गाइवेवारकी सरिरमें पितकी प्रकृति होय । अरु कंठकी धुनि सूक्ष्म होय मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकमें निकें गावे । सो नारहट्टक जांनिये । २ । जा गायवेवारेकी सरिरमें वायूकी प्रकृति होय । अरु कंठकी धुनि रूखि होय खरखरि होय । घणी ऊंचि धुनि होय । मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थानकमें गावे । सो बोम्बक जांनिये । ३ । ओर जा गायवेवारेनमें खाङ्गल । १ । नारहट्टक । २ । बोम्बक । ३ । इन तीनोंनके गुण मिले । सो मिश्रक जांनिये । ४ । इति गायववारके कंठकी धुनिके च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

अथ गायवेवारेके बत्तीस । ३२ । दोष जांनिये ॥ संदष्ट । १ । उद्घृष्ट । २ । सूत्कारी । ३ । भीत । ४ । शंकीत । ५ । कंपित । ६ । करालि । ७ । कपिल । ८ । काक । ९ । वितालं । १० । करभ । ११ । उद्दड । १२ । झोंबक । १३ । तुंबकी । १४ । वक्री । १५ । फुलगल । १६ । प्रसारिणा । १७ । निर्मीलक । १८ । अपस्वर । १९ । विरस । २० । अव्यक्त । । २१ । मिश्रक । २२ । अनवधानक । २३ । स्थानभ्रष्ट । २४ । अनुनासिक । २५ । विमल । २६ । चालक । २७ । आंदोल । २८ । एक-दृष्टि । २९ । ऊर्ध्वगामी । ३० । पादप । ३१ । सावक । ३२ । ये बत्तीस गाय-वेवारेके दोष बुद्धिवान् समजिये ॥ इति गायवेवारेके बत्तीस दोष संपूर्णम् ॥

॥ अथ गायववारके बत्तीस दोषके भेद ताको लछन लिख्यते ॥

१ जो दांति जिभिकें गावे ॥ सो संदष्ट जांनिये ॥ १ ॥

२ जाको सब्द विरस होय ॥ सो उद्घृष्ट जांनिये ॥ २ ॥

३ जो गावतें सीसाडो करे ॥ सो सूत्कारी जांनिये ॥ ३ ॥

४ जो भयसों गावे ॥ सो भीत जांनिये ॥ ४ ॥

५ जो शंका करि जलदी गावे ॥ सो शंकीत जांनिये ॥ ५ ॥

६ जो सब्दको सरीरको कंपाय गावे ॥ सो कंपित जांनिये ॥ ६ ॥

७ जो ऊपरको मुख करिके गावे ॥ सो करालि जांनिये ॥ ७ ॥

८ जो स्वरनमें घटि वधि श्रुति करिके गावे ॥ सो कपिल जांनिये ॥८॥

९ जो काकस्वरसों गावे ॥ सो काक स्वरी जांनिये ॥ ९ ॥

१० जो गायवेवारोको लयको ग्यान नही होय ॥ सो विताल जांनिये ॥१०॥

११ जो कांधेपें माथो राखि गावे ॥ सो करभ जांनिये ॥ ११ ॥

१२ जो बकराके सिनाई भेंभायके गावे ॥ सो उद्वड जांनिये ॥ १२ ॥

१३ याको अधम जांनिये ॥ जो भालमें मुखमें गरमें ॥ सलोट पार्णाके मुख बांको करि गावे ॥ सो झोंबक जांनिये ॥ १३ ॥

१४ जो तुंबासों मुख करि गावे ॥ सो तुंबकी जांनिये ॥ १४ ॥

१५ जो बांकी गरदन करि गावे ॥ सो वक्री जांनिये ॥ १५ ॥

१६ जो गाल फुलाय गावे ॥ सो फुलगल जांनिये ॥ १६ ॥

१७ जो मुख पसारिकें गावे ॥ सो प्रसारिणा जांनिये ॥ १७ ॥

१८ जो आंखि मुंदि गावे ॥ सो निमीलक जांनिये ॥ १८ ॥

१९ जो स्वरको स्वरूप छोडिके विना समजि गावे ॥ सो अपस्वर जांनिये ॥ १९ ॥

२० जाके गायवेमें अनुरंजन नही होय ॥ सो विरस जांनिये ॥ २० ॥

२१ जाके गायवेमें गीतके अक्षर समजे जाय नही ॥ सो अव्यक्त जांनिये ॥ २१ ॥

२२ जाके गायवेमें ॥ ओर रागमें राग मिले शुद्ध राग जान्यों जाय नही ॥ सो मिश्रक जांनिये ॥ २२ ॥

२३ जो गायवेवारो स्थाई । १ । आरोही । २ । अवरोहि । ३ । संचारि । ४ । इनको ठीक नही राखे ॥ सो अनवधानक जांनिये ॥ २३ ॥

२४ जो गायवेमें मंद्र । १ । मध्य । २ । तार । ३ । इन तीनो स्थानकको नही वरति सके ॥ सो स्थानभ्रष्ट जांनिये ॥ २४ ॥

२५ जो नाकके स्वरसों गावे ॥ सो अनुनासिक जांनिये ॥ लौकीकमें याको अछा नही कहे हे ॥ २५ ॥

२६ जो गायवेमें चित ओर ठोर राखे ॥ सो विमल जांनिये ॥ २६ ॥

२७ जो हात चलाय हलाय गावे ॥ सो चालक जांनिये ॥ २७ ॥

२८ जो माथो हलाय हलाय गावे ॥ सो आंदोल जांनिये ॥ २८ ॥

२९ याको लौकीकमें निचक कहे हें ॥ एकदृष्टि रखा गावे ॥ सो एक-दृष्टि जांनिये ॥ २९ ॥

३० जो मुखतें उचाकि उचाकि गावे ॥ सो ऊर्ध्वगामी जांनिये ॥ ३० ॥

३१ जो ताल रागको विनाजानेहि गावे ॥ सो पादप जांनिये ॥ ३१ ॥

३२ जो गीतके अर्थकों नही जांनें विना अर्थ जाने गावे ॥ सो सावक जांनिये ॥ ३२ ॥ इति बत्तीस दोष संपूर्णम् ॥

अथ आठ दुष्ट ध्वनिके आठ नाम लिख्यते ॥ रुक्ष ॥ १ ॥ स्फुटित ॥ २ ॥ निसार ॥ ३ ॥ काकोली ॥ ४ ॥ केटि ॥ ५ ॥ केणी ॥ ६ ॥ कृश ॥ ७ ॥ भग्न ॥ ८ ॥ ये आठ जांनिये ॥ जा गाइवेमें चिकनों पणों नही होय । सो रुक्ष जांनिये॥१॥ जो खुल्यो ध्वनि नही होय। सो स्फुटित जांनिये॥२॥ जो खोलि धुनि होय । सो निसार जांनिये ॥ ३ ॥ जो कागकीसी धुनि होय । सो काकोली जांनिये ॥ ४ ॥ जो धुनि मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनो स्थानमें नही होय । जामें गुण नही होय । सो केटि जांनिये ॥ ५ ॥ जो धुनि बडे कष्टसों । मंद्र ॥ १ ॥ तार ॥ २ ॥ स्थानमें होय । सो केणी जांनिये ॥ ६ ॥ जो धुनि अति सूक्ष्म होय । सो कृश जांनिये ॥ ७ ॥ जो गद्धाकीसी ऊंठकीसी धुनि रसहीन होय । सो भग्न जांनिये ॥ ८ ॥ इति धुनिके आठ दुष्ट भेद संपूर्णम् ॥

अथ राग गायवेमें शरीर नाम पूर्वजन्म संस्कार विशेष शक्ति हें ताको लछन लिख्यते ॥

जाके कंठकी धुनिमें । विना सिख्या सहजाहिसों सुंदर राग वरतें । सिखे तो कहा कहिवो अत्यंत सुंदर होय यह जो धुनिकों गुण सो शारीर नाम शक्ति जांनिये । १ । अब शारीर शक्तिके गुण कहतहें जो गाइवेमें इछा माफिक । तार । १ । मंद्र । २ । यह दोय जांनिये। अनुरनन होय ॥ अनुरनन कहत हें । गंकार । १ । मधुरता । २ । अनुरंजन । ३ । गंभीरता । ४ । मृदुता । ५ । जाके सुनिवेकी इच्छा रहें । ये गुणजुत शारीर शक्ति हें ॥ ताको सुशारीर कहत हें । यह सुशारीर पूर्वजन्म विद्या अभ्यास करिये । या तपस्या करिकें या दीनहीन वावे ब्राह्मण सुपात्र । वा तीरथमें ।

वा संक्रांति । आदि पंच पर्वमें । भूमि सुवर्ण आदि द्रव्यके दान सन्मान करिकें देवेतें ॥ अथवा श्रीमहादेवजीकी पूर्ण भक्तिते । इतने काम करियेते । महाभाग्यवान् श्रीमंत होय । सो सुशारीर पावे । वाको भले कुलमें जन्म होय ॥ दाता भोक्ता सर्व गुणयुक्त आयुरदा होय । आरोग्य होय । सो सुशारीर वारो जांनिये ॥ **इति शारीर शक्ति–लछन संपूर्णम् ॥**

अथ शारीर शक्तिके पांच दोष लिख्यंते ॥ जब या शरीर शक्तिमें । गंकार नही होय । १ । सचिकनताहीन होय । २ । अनुरंजनहीन होय । ३ । खोखि धुनि होय । ४ । स्वर गोल बधे नही । ५ । कागकी सिनाई धुनि कठोर होय । ६ । काहूसो स्वर मिले नही । ७ । सूक्ष्म होय अथवा अति कर्कश होय । सो कुसारीर जांनिये ॥ **इति शारीर शक्तिके दोष संपूर्णम् ॥**

॥ अथ गमकको नाम–लछन लिख्यंते ॥

जो मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थान नमें । षड्जादिक स्वरनको कंप कीजिये । ओर जा कंपसों सुनिवेवारेके चित्तमें सुख उपजे । सो कंप गमक जांनिये । ता गमकके पनधरह ॥ १५ ॥ भेद हैं ॥ तिरिप ॥ १ ॥ स्फुरित ॥ २ ॥ कंपित ॥ ३ ॥ लीन ॥ ४ ॥ आंदोलित ॥ ५ ॥ वलि ॥ ६ ॥ त्रिभिन्न ॥ ७ ॥ कुरुला ॥ ८ ॥ आहत ॥ ९ ॥ उल्लासित ॥ १० ॥ प्लावित ॥ ११ ॥ गुंफित ॥ १२ ॥ मुद्रित ॥ १३ ॥ नामित ॥ १४ ॥ मिश्रित ॥ १५ ॥ इन पनधरहें भेदको लछन कहत हैं ॥

१ गमक तिरिप ॥ जो कंप छोटे डमरुके धुनिकें कंपकी सिनाई होय । ओर द्रुतवेगको चोथे वांटेसो लीजिये । सो गमक तिरिप जांनिये । १ ।

२ गमक स्फुरित ॥ या गमककों जब द्रुतवेगके तीसरे वांटेसों लीजिये । तब गमक स्फुरित जांनिये । २ ।

३ गमक कंपित ॥ याहि गमककों जब द्रुतवेगके आधे वांटेसो लीजिये । सो गमक कंपित जांनिये । ३ ।

४ गमक लीन ॥ या गमककों जब संपूर्ण द्रुतवेगसों लीजिये । सो गमक लीन जांनिये । ४ ।

५ गमक आंदोलित ॥ या गमककों लघु वेगसों जब लीजिये । सो गमक आंदोलित जांनिये । ५ ।

६ गमक वलि ॥ या गमकको जब तरह तरहकी वक्रताजुत लघु वेगसों लीजिये । सो गमक वलि जांनिये । ६ ।

७ गमक त्रिभिन्न ॥ यह गमक मध्य । १ । मंद्र । २ । तार । ३ । इन तीनों स्थानकनमें विश्राम नही । ओर गाढी धुनिसों होय । सो गमक त्रिभिन्न जांनिये । ७ ।

८ गमक कुरुला ॥ या गमककों तरह तरहकी वक्रताजुत लघुवेगसों लीजिये । परंतु गांठे डोरके सिनाई लीजिये । ओर उन गांठिनमें कंठकी धुनि कोमल कीजिये । सो गमक कुरुला जांनिये । ८ ।

९ गमक आहत ॥ जो स्वरकों कंप आरोहमें ॥ स्वरकें अंतको मिलिकें ॥ फेर अपने स्वरमें आवे । सो गमक आहत जांनिये । ९ ।

१० गमक उल्लासित ॥ जो कंप आरोहमें आगले सिगरे । स्वरनमें होयके अपमें स्वरमें आवे । सो ममक उल्लासित जांनिये । १० ।

११ गमक प्लावित ॥ जो कंपप्लुत वेग करिकें लीजिये । ओर आरोहमें सिगरे स्वरनमें होयके ॥ अपनें स्वरमें आवे। सो गमक प्लावित जांनिये। ११।

१२ गमक गुंफित ॥ जो कंप गाइवेमें । सुंदर हुंकारमें लीजिये । ओर गंभीर होय । सो गमक गुंफित जांनिये । १२ ।

१३ गमक मुद्रित ॥ जो कंप मुखमूंदिकें लीजिये । सुनिवेमें सुंदर होय। सो गमक मुद्रित जांनिये । १३ ।

१४ गमक नामित ॥ जो कंपमें स्वरकों नमायकें लीजिये । सो गमक नामित जांनिये । १४ ।

१५ गमक मिश्रित ॥ इन गमकनमें दोय गमक वा तीन गमक मिले होय। तब वह गमक मिश्रित जांनिये । १५ । ता मिश्र गमकके अनेक भेदहें । ते आगें स्थापनमें कहेंगे ॥

१ अथ प्रतिहत आदि गमकके भेद हैं । तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥ षड्ज आदि सात स्वरनके बजायवेमें वीणाके तारमें दोय

वार आंगुलिके ताडनतें । जो गहरो शब्द होय । सो प्रतिहत जांनिये ॥ परंतु वह दोय वार ताडन ऐसे कीजिये । पहली वांमे हातकी अंगुलीसों वीणाको तार दाबिकें ॥ दाहिणे हातकी आंगुरीसों एकवार वीणांको तार बजाइये । ताके संगही बांये हाथकी अंगुरीकों । तार ऐसों कछूक उछालिये । जैसें पहले स्वरकों कछूइक श्रवण होय । फेर वाही जगा बांये हातसों । तत्काल तार दाबिकें वाही दाहिणें हातसों तारकों दूसरो ताडन करनों । ऐसे दोय वेर ताडनतें । जोविणामें स्वरकों शब्द होय । सो प्रतिहत गमक जांनिये । १ ।

२ अब आहतको लछन कहतहें ॥ जो वीणांके बजायवेमें । एक स्वर बजाइये वांके आगेको स्वर वा तीसरो । अथवा पहलो स्वरको स्पर्श करे हाथकी चलाकीसों । फेरफेर तार दाबे नही । सो आहत जांनिये । २ ।

३ अब अनुहतको लछन कहेहें ॥ वीणांको एकवार बांये हातके नखसों वीणांको तार दाबिके दाहिनें हातसों ताडन कीजिये । फेर अंगुरीकों उछाले नही ॥ ओर बांये हातको नखकों कछूक ढीलो करिकें । पहले स्वरकों भाव दिखावे । बांये हातके नखको गाढो दाबिये । दांये हातसों ताडन कीजिये । तब हुंकार धुनि होय । सो अनुहत जांनिये । ३ ।

४ अब आहितिको लछन कहत हें ॥ अनुहतमें जेसें पहले बांये हातके नखसों तार दाबिकें तांतको ताडन करि । बांयो हात ढिलो करि घणी सितावियों फेर गाढो दाबिये । दाहिनें हातसों दूसरो ताडन मही कीजिये । तब हुंकार रूप जो पहलो सब्द । सो आहिति जांनिये । ४ ।

५ अब पीडाको लछन कहेहें ॥ जो विणामें पहले दोऊ स्वरके स्थानक बांये हातकी अंगुरीके अग्रसों मध्यमसों गाढो दाबिकें । दांहिनें हातसों ताडन करे । आगलो स्वर दिखावे । बांये हातकी अंगुरीसों आगले स्वरसों तत्काल उठाये । पहले स्वरपें राखिणी वब जो पहले स्वरको दरसन होय । सो पीडा जांनिये । ५ ।

६ अब आंदोलन लछन कहतहें ॥ जहां बांये हातसों तार थोडो दाबि । दाहिणें हातसों ताडन करि । बांये हातसो क्रमसों गाढो दाबिये । फेर क्रमसों

ढीलो करि पहले राख्यो जैसो राखिये। सो आंदोलन जांनिये। यांको झुलायवो कहतहें। ६।

७ अब आकर्षणको लछन कहेहें॥ बांये हातसों तार ढीलो दाबिकें ताडन कीजिये। फेर बांये हातसों गाढो दाबिये। सो धुनि आकर्षण जांनिये॥ याहिको नाम विकर्षण कहत हैं। ७।

८ अब गमक नामयमकको लछन कहतहें॥ बांये हातसों तार ढीलो करि दाबि। दाहिनें हातसों गाढो ताडन करि। बांये हातसों गाढो दाबिये। फेर जलदी क्रमसों ढीलो कीजिये। ऐसें दोय तीन च्यारि वार कीजिये। जांताइ तारमें गंकार रहें। सो धुनि गमक नामयमक जांनिये।८।

९ अब कंपको लछन कहतहें॥ बांये हातसों तार दाबि। दाहिनें हातसों ताडन करि। बांये हातकों तनक तनक ढीलो अरु गाढो करनों तार हालति हालति जो धुनि होय। सो कंप जांनिये। ९।

१० अब वर्षणको लछन कहे हें॥ जो तानें बांये हातसों दाहिनें हातसों ताडन करि जो धुनि होय ताको पहले स्वरसों वा आगिले स्वरसों थोडो थोडो लगावे। सो घर्षण जांनिये। कलावंत या घर्षणको मींढ कहतहें। १०।

११ अब मुद्राको लछन कहतहें॥ जो बांये हातसों आगले स्वरकों जाय दाबि। दाहिनें हातसों ताडन करि आगले स्वरसों सुनावे। फेर दूसर स्वरकों सुनावे। पहले स्वरकों स्थापन करनों। सो मुद्रा जांनिये। ११।

१२ अब स्पर्शको लछन कहेहें॥ जहां पहले स्वरके बजायवेमें। सितावीसों आगले स्वरकों स्पर्श करि। फेर पहले स्वरकों स्थापन कीजिये। सो स्पर्श जांनिये। १२।

१३ अब निमनता कहि स्वरको नीचो करिवो ताको लछन कहे हें॥ जो तारको बांये हातसों दाबिकें। दाहिनें हातसों ताडन करि अरु बांये हातसों। ऐसो गाढो दाबिये। जासों तंत्रीकी धुनि नीचिसी बोले। सो निमनता जांनिये। १३।

१४ अब प्लुतको लछन कहे हें॥ जहां बांये हातसों वीणाको तार

दाबिकें दाहिनें हातसों गाढो ताडन करि । अति सितावीकोंसो सातों स्वरकों दिखायदे । फेर वांहि स्वरपें बांयो हात राखे । सो प्लुत जांनिये । १४ ।

१५ अब द्रुतको लछन कहे हैं ॥ जो सिताविसों पहलो स्वर बजायकें वांसो मिलतोहि । अति सिताविसों दूसरो स्वर बजाइये ॥ जेसें सुनिवेवारो एक वारकें बजाये तें । दोऊ स्वर सुने । सो द्रुत जांनिये । १५ ।

१६ अब परताको लछन कहे हें ॥ जो षड्ज आदि स्वरकी सारिमें तार देखिकें आगले स्वरसों दिखायवो चमत्कारसों ऐसेहि रिषभ आदिक स्वरनकी सारिमें । गांधार आदि स्वरको दिखायवो । सो परता जांनिये । १६ ।

१७ अब उच्चताको लछन कहे हैं ॥ जो षड्ज आदिक स्वरनकी सारिमें तार घणों खेंचिकें । गांधार आदिक स्वरकों दिखायवो । ऐसे पहले स्वर तीसरे स्वरकों दिखायवो । सो उच्चता जांनिये । १७ ।

१८ अब निजताको लछन कहे हैं ॥ जो निजता दोय प्रकारकी हें । परता निजता ॥ १ ॥ उच्चता निजता ॥ २ ॥ तहां जो षड्ज आदि स्वरकी सारिमें तार खेंचिकें । आगले रिषभ आदिक स्वरकों दिखायकें हलवे हलवे तारकों ढीलो करि । फेर पहले षड्जादिक स्वरकों दिखायवो । सो परता निजता जांनिये ॥ ओर षड्जादिक स्वरकी सारिमें । घणों तार खेंचिकें तीसरे गांधारादि स्वरकों दिखायके । फेर धीरे धीरे तारकों ढीलो करिकें । षड्ज आदि पहले स्वर षड्ज आदिको दिखायवो । सो उच्चता निजता जांनिये । १८ ।

१९ और ये दोऊ निजता एक ताडनमें जांनिये ॥ जो बांये हातसों तार दाबिकें । दाहिनें हातसों ऐसो ताडन कीजिये । जेसो तार खेंचिकें रिषभादिक वा गांधारादिक स्वर दिखायकें । षड्जादिक स्वरनको दिखायवो बने ऐसो एक ताडनमें कही । ओर कोइक आचार्य या निजतामें । दोय ताडन कहत हैं । सो या रीतिसों जो षड्जादिकनकी सारिमें तार खेंचिकें । दाहिनें हातसों ताडन करि । रिषभ आदिक गांधार आदिक स्वर । दूसरे तीसरे दिखावनें । फेर दाहिनें हातसों दूसरो ताडन करि । षड्ज आदि स्वर दिखावे । या रीतिसों दोय ताडन करि । दूसरे स्वरतें पहले स्वरकों दिखावनों । सो परता निजता ओर तीसरे स्वरत पहले स्वरकों दिखावनों । सो उच्चता निजता । १९ ।

२० अब समको लछन कहे हें ॥ जो ठहरि ठहरिकें सातों स्वरकों बजायवो । सो सम जांनिये । २० । इति बजायवेमें आघात गमकके वीस भेद संपूर्णम् ॥

अथ मृदुस्थान कठिन स्थानको लछन लिख्यते ॥ जो मंद्रस्थान तें कछूक चढतो स्थान हें । सो मृदुस्थान जांनिये । १ । ऐसें तारस्थानतें कछूइक नीचो स्थान कठिन जांनिये ॥ इति मृदुस्थान कठिन स्थानको लछन संपूर्णम् ॥

अथ बीस तो स्वरकें आघात गमक प्रतिहत आदिक ॥ ओर दोय मृदु मंद्र ओर कठिन तारस्थान तिनके जनायवेकें तांई षड्जादिक सात स्वरनमें सहनानीको प्रकार लिख्यते ॥

१ अब प्रतिहतकी सहनानी जो षड्जादिक स्वर लिखिकें विसर्ग दीजिये। विसर्ग कहिये । आगें दोय बिंदु । सो प्रतिहतकी सहनानी हें ॥ जैसे–सः

२ ओर ऐसेंहि सहनानी एक विसर्ग होय । सो आहतकी जांनिये ॥ जसे–स.

३ जहां विसर्ग नहीं होय । सो अनुहतकी सहनाणी हे ॥ जेसे–स

४ जहां रेषासहित बिंदु नीचे होय। सो आहितकी सहनाणी हे ॥ जेसें–स़

५ जहां आगें दोय लीकहे । सो पीडाकी सहनाणी हें ॥ जेसे–स ॥

६ ओर जहां आगेंकों गुरुकी सहनानी कीजिये । ओर लघु कीजिये । सो अंदोलकी सहनानी हें ॥ जेसे–सऽ ।

७ जहां आगेंकों आधे गुरुकी सहनानि होय । सो आकर्षणकी सहनानी हें ॥ जेसें–स>

८ जहां ऊपरको गुरुकी सहनानी तिरछी होय । सो गमक नाम यमककी सहनानी हें ॥ जेसें–स

९ जहां आगें एक गुरु होय । सो कंपकी सहनानी है ॥ जैसे–सऽ

१० जहां आधो लघु आगें होय। सो घर्षणकी सहनानी हें ॥ जेसें–स>

११ जाके तिरछो आधो लघु होय। सो मुद्राकी सहनानी हें ॥ जेसें–स

१२ जहां निचेंकों आढि लकीर कहतें । तिरछो लघु होय। सो स्पर्शकी सहनानी ह ॥ जेसें–स

१३ जहां ऊपर आधो अनुस्वार होय। सो निम्नताकी सहनानी हें॥ जेसें–सँ

१४ जहां निचें अणु होवे। सो प्लुतकी सहनानी हें॥ जेसें–सु

१५ जहां आगेंकों अणु होय। सो द्रुत गमककी सहनानी हें॥ जेसें–स˘

१६ जाकें निचेकों शृंखला कहते। बेडीकी सहनानी होय। सो परताकी सहनानी हें॥ जेसें–स ⌒⌒⌒

१७ जहां निचेंके गुरुकी सहनानी होय। सो उचताकी सहनानी हें॥ जेसें–सु

१८ जहां निचेंकों आडी गुरुकी सहनानी होय। सो परतानिजताकी सहनानी हें॥ जेसें–सृ

१९ ओर बिंदुसहित आडे गुरुकी सहनानी होय। सो उचतानिजताकी सहनानी हें॥ जेसें–सं̑

२० जहां निचेंकों बिंदुसहित गुरु होय। सो समकी सहनानी हें। जेसें–सू.

२१ जहां आगें बिंदु होय। सो मृदुस्थानकी सहनानी हें॥ जेसें–स०

२२ जहां उपर बिंदु होय। सो मंद्रस्थानकी सहनानी हें॥ जेसें–सं

२३ जहां उपर बिंदु दोय होय। सो कठिनस्थानकी सहनानी हे॥ जेसें–सें

२४ जहां उपर उभी लीक होय। सो तारस्थानकी सहनानी हे॥ जेसें–सं

ऐसी तेरहें अनेक बजायवेके क्रियानसों। जो स्वरमें चिमतकार दीजिये। गुंकार होय। सो गमकहें॥ रागमें गमक किये तें अनुरंजन होतहें। यातें इनको गमक कहतहें॥ अथवा स्वरको न्यारो रूप होय। सो कैवल्यताको लछन कहेंहें॥ दाहिनें हातकी अंगुलीमें नाखून पहरीकें जो वीणाके तारको बजावे। ओर बांये हातसों कछूभी क्रिया नही करे। तब अतिनिश्चल कंपरहित। जो स्वरकी धुनि। सो स्वरको कैवल्य जांनिये॥ या नाखूनको सास्त्रमें अंगुल्म त्राण कहेंहें॥ अबें हुंकारको लछन कहेंहें॥ जो तारके दाबिवेकी क्रियासों स्वरमें हुंकारकी तरह दिसें। सो स्वर हुंकृत जांनिये॥

अथ एक स्फालन संभवन स्वरको लछन लिख्यते ॥ जो बांये हातसों वीणाके तार दाबिकें । दाहिनें हातसों एकवार ताडन करि वा गंकारमें बांये हातकी चलाखीसों बहुत स्वरनको बिचमें दिखावे । फेर वाहिस्थानं बांइ हातकी अंगुरी राखी पहले स्वरकों दिखायवे । सो स्वर एक स्फालन संभव जांनिये ॥

अथ सरिरमें जो हुंकृत स्वर ताको लछन कहे हें ॥ जा हृदयसों गेडी लगाय मुखमूंदिकें हुंकार कीजिये । तब जो सब्द होय । सो सारिर हुंकृत स्वर जांनिये ॥

अथ च्यावितस्वरको लछन लिख्यते ॥ जो ऊंचे स्थानमें उठिकें नीचेकों आवे । फेर निचें जायकें फेर उठे उपरतें नीचें जायवेमें बीचके दोय च्यार स्वरनको दरसावो होय । सो च्यावितस्वर जांनिये ॥ इहां अवरोह क्रमसों स्वरको दरसायवो होय हें ॥ यातें या स्वर च्यावित होतहें ॥ ऐसेंहि मुख उठायकें धुनि कीजिये ॥ फेर क्रमसों धुनि कहतहें ॥ मुख नीचेंको छाति तांइ लेजाय तब जो धुनिमें अवरोह क्रमसों स्वर होय ॥ ते सारि च्यावित स्वरहें ॥ इति ॥

अथ स्वरकर्ष लछन लिख्यते ॥ जब एक जंगो बांये हातसों दाबिकें। दाहिनें हातसों एकवार ताडन करि सिगरे स्वरनकों चमत्कारसों दरसावें सो स्वरकर्ष जांनिये ॥ इति ॥

अथ स्वरनेम्नको लछन कहेहें ॥ जो स्वरकी धुनि करि आंगुरीसों सुंदर तरह दबावणी ॥ जेसें दबतो स्वर काननको प्यारो लगे । सो स्वरनेम्न जांनिये ॥ इति ॥

अथ स्वरहतको लछन लिख्यते ॥ जो स्वरकी धुनि करि। आंगुरीसों आधिक धुनि रोकी देखिये । सो स्वरहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ हताहतको लछन लिख्यते ॥ जो बांये हातसों तार दाबि । दाहिनें हातसों एकवार ताडन करे । बांये हातकी चलाकीसों दोय स्वर दिखावे। सो हताहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ हतोत्तराहतको लछन लिख्यते ॥ जब पहले स्वरकी धुनि

करे । बांये हातकी चलाकीसों आगलो स्वर दिखाये । फेर पहिले स्वरसों दिखावे । सो हतोत्तराहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ तिरिपनाम गमकको काल प्रमाण कहेहें ॥ जो द्रुत अक्षरको समयहै । अठाइस लघु अछिरको उच्चार काल ताकी चोथाई कालसों द्रुत-वेग लीजिये । तब तिरिप गमक होय । मुनिवेके समय भेदसों अनेक प्रकारको तिरिप हैं । सो तिरिपके भेद तिरिप आदि गमकनमें पहले कहेहें ॥

अब द्विराहतको लछन कहेहें ॥ जो स्वरकों लंबो करिवेके लिये । एक ठोर वीणाके तारमें दोय वार ताडन कीजिये । तब गहरो स्वर होय । सो द्विराहत जांनिये ॥ इति ॥

अथ ढालुको लछन कहेहें ॥ जो वीणाके तारको ताडन करे । बांये हातकी अंगुरी दोय स्वरमें सितावी सितावी फेरिये। तब जो दोय स्वरको चढतो उतरतो स्वर होय । सो ढालु जांनिये ॥ सो ढालु आरोह क्रममें । ओर एक अवरोह क्रममें होत हैं । ऐसें ढालुके भेद दोय जांनिये ॥ इति ॥

अथ सुढालु लछन लिख्यते ॥ जहां वीणाके तारको ताडन करि । बांये हातकी अंगुरी तीन स्वरमें चढती उतरती सितावी सितावी फेरिये । तब जो तीन स्वरको चढतो उतरतो सब्द। सो सुढालु जांनिये ॥ यह सुढालुहू आरोह अवरोह क्रमसों दोय प्रकारको हैं ॥

अब अनाहतको लछन कहे हें ॥ जहां एक ठोर तारकों ताडन करी वा स्वरको दिखावें वांहिके गंकारमें बांये हातसों ओर ठोर सितावी दाबि ओर स्वरको जो दिखायवो । सो दूसरो अनाहत जांनिये ॥ याही अनाहतकों सांत्त स्वर कहे हें ॥ कोंऊ पंडित पहले स्वरकों तो सांत्त कहे हैं ॥ दूसरे स्वरकों अनाहत कहे हें ॥ इति ॥

अथ मुद्राको लछन लिख्यते ॥ जो स्वरकों ताडन करिकें । बांये हातकी अंगुरीसों क्रमतें रोकिये । सो गुंफीतको एकदेस मुद्रा जांनिये ॥ इति ॥

अथ स्वस्थानको लछन लिख्यते ॥ जो स्वर पहलि श्रुतिपें उठि पिछलि श्रुतिपें जायकें । फेर पहलि श्रुतिपें आवे। सो स्वस्थान जांनिये ॥ इति ॥

अथ ग्रहस्थानको लछन लिख्यते ॥ जो स्वर पिछलि श्रुतिपें उठिकें पहलि श्रुतिपें जायकें फेर पिछली श्रुतिपें आवे । सो ग्रहस्थान जांनिये ॥ इति घात गमक लछन सहनाणी स्वर बजायबेके भेद संपूर्णम् ॥

अथ मिश्र गमकके भेद हैं ॥ ते स्थाय जो रागखंड तिनमें होतहें वेर रागखंडके गमक हें तिनको वाग कहतहें । तहां वागको लछन कहवेको स्थाय । जो रागखंड तिनको लछन लिख्यते ॥ जहां रागखंड कहिये । न्यास स्वर ॥ १ ॥ विन्यास स्वर ॥ २ ॥ अपन्यास स्वर ॥ ३ ॥ संन्यास स्वर ॥ ४ ॥ इन च्यारों स्वरनमें कोईक स्वरपें विश्राम पावे ॥ अंसआदि स्वरकों समूहसों रागखंड हें । वाहको नाम स्थाय जांनिये । या स्थायमें जे गमक होय तिनकों वाग कहत हें ॥ जहां स्थायके भेद च्यार हें ॥ असंकीर्ण ॥१॥ गुणकृतभेद ॥२॥ षत्प्रसिद्धा ॥३॥ संकीर्ण ॥ ४ ॥

अंवें असंकीर्ण स्थापके भेद दस हें ॥ तिनको नाम कहे हें । सब्द स्थाप ॥१॥ ढाल स्थाप ॥ २ ॥ लवनी स्थाप ॥ ३ ॥ वहनी स्थाप ॥ ४ ॥ वाद्यशब्द स्थाप ॥ ५ ॥ जंत्र स्थाप ॥ ६ ॥ छाया स्थाप ॥ ७ ॥ स्वरलंघित स्थाप ॥ ८ ॥ प्रेरित स्थाप ॥९॥ तीक्षण स्थाप ॥१०॥ यह दस स्थाप ऐसें कीजिये ॥ इति ॥

अथ असंकीर्णके स्थापनके लछन लिख्यते ॥ तहां सब्द स्थापको लछन कहे हें ॥ जा स्वरकी धुनिमें पहलो रागखंड छोडिये । ओर दूसरो रागखंड लीजिये । ता स्वरकों जो समूह। सो सब्द स्थाप जांनिये ॥ १ ॥

अब ढाल स्थापको लछन कहे हें ॥ जा रागखंडमें गोल मोती तरह स्वरकी झुलत रहनें टेडी सुधि होय । मनकों आनंद करे । सो रागखंड ढाल स्थाप जांनिये ॥ २ ॥

अब लवनी स्थापको लछन कहे हें ॥ जो स्वरनमें नमायवेतें अतिकोमल ढाल होय । सो वहनी हें ॥ वह वहनीसों मिले स्वर। जा रागखंडमें होय । सो रागखंड लवनी स्थाप जांनिये ॥ ३ ॥

अब वहनी स्थापको लछन कहे हें ॥ जा रागखंडमें आरोहि वर्णमें ओर अवरोहि वर्णमें अथवा संचारि वर्णमें जो स्वरनको कंप । सो वहनी हें ॥ ऐसें कंपजुत आरोहि । अवरोहि संचारि वर्ण रागखंडमें होय । सो वहनी स्थाप

जांनिये ॥ सो वहनी दोय प्रकारकी हैं ॥ गीतके प्रबंधके आरोहि । संचारि वर्णमें कंप होय । सो गीत वहनी कहिये ओर आलापके आरोहि अवरोहि संचारि वरनमें कंप होय । सो आलाप वहनी जांनिये ॥ १ ॥

अब वहनी फेर दोय प्रकारकी हैं ॥ जो धीरा धीरा आरोहि आदि वर्णमें कंप लीजिये । सो स्थिरावहनी जांनिये ॥ २ ॥ ओर जो आरोहि अवरोहि आदि वर्णमें । घर्णा उतावलसों कंप लीजिये। सो वगावहनी जांनिये॥ सो वहनी फेर तीन । ३ । प्रकारकी हैं ॥

तहां जो मंद्रस्थानके स्वरमें कंप लीजिये । सो हृद्यावहनी जांनिये । १। जो मध्यस्थानके स्वरकों कंपमें कंठ कीजिये । सो कंठया जांनिये । २ । जो तारस्थानके स्वरनकों कपालस्थानमें कंप लीजिये । सो शिरस्या जांनिये । ३।

जो वहनी दोय प्रकारकीहैं । जा कंपमें स्वर निचेंकों कंठ तेसें जानेपडे । सो कंप खुत्तावहनि जांनिये। १ ।

ओर जा कंपमें स्वर उपरकों चडतेसें जांनेपडे। सो उत्फुल्लावहनी जांनिये ।२।

ओर जो वलिनाम गमक पहले पनदरह गमकनमें बहोत कसोहैं । सो वलिगमक हूं वहनीकी नाई बहोत प्रकारको जांनिये। ३ ।

जो जो राग खंडमें वहनी कंप होय । सो राग खंडवहनी जांनिये । ४।

अथ वाद्यशब्द स्थापको लछन लिख्यते ॥ जो रागमें मिले विणा आदि बाजेनके शब्द । कुणकुण धिमिधिमि । इत्यादिक सर्व शब्द रागमें लीन होय । सो राग खंडवाद्य शब्द स्थापना जांनिये । ५ ।

अबें जंत्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जे राग खंड आछी तरह घणो-वर वीणादिक जंत्रमें वरते जाय । कंठसों थोडे वरतेजाय ते यंत्र स्थाप जांनिये। ६ ।

अब छायास्थापको लछन कहेहैं ॥ तहां छायाको काकु कहते । धुनिकों उतारिवेतें चढावेतें जो विकार होय । सो काकु जांनिये ॥ सो काकु छह प्रकारकी हैं ॥ तहां सुद्धस्वरकी जे ॥ श्रुति कहि तिनकी विकृतस्वरमें घटीवे वधिवेतें जो ओर स्वरकी ओर स्वरमें एकसी धुनि जानि होय । सो स्वर काकु कहिये ॥ जेसें षड्जकी च्यार श्रुतिमें । पहली दोय श्रुति काकलिनिषाद लेतें । वह दोय श्रुतिको निषाद जब काकली होयकें ॥ षड्जकी पहली दोय

श्रुति लेतहें ॥ तव वह च्यार श्रुतिकों काकलिनिषाद ॥ षड्जसों जान्यों जायहें ॥ सो यह स्वर काकु जांनिये । १ । ऐसें ओर स्वरनमें देखियेहें ॥

जहां रागकी धुंनिमें अनेक रागकीहि छाया होय । सो राग काकु जांनिये । २ ।

जहां रागकी धुंनिमें आपनें रागकी छाया होय । कहूक ओर राग कीसी छाया होय । सो अन्य राग काकु जांनिये । ३ ।

जहां रागकी धुंनिमें रागके देसकी भाषा वा रागके देसके भेस । वा रागके देसकी नकलसों घणो सुख उपजे । सो देस काकु जांनिये । ४ ।

जहां रागकी धुंनिमें क्षेत्र कहिये । सरीरसों अनेक सरिरहें स्री । १ । पुरुषके । तिन अनेक सरीरमें कोमलता । १ । कठिनता । २ । बालक । ३ । तरुण । ४ । वृद्धा । ५ । इन भेदतें एकही रागके गायवेमें । रुचि । १ । अरुचि । २ । रंजन । ३ । रुखाई । ४ । जानी जातहें । सो क्षेत्र काकु जांनिये । ५ ।

जहां रागकी धुंनि कंठके गाइवेसों वीणामें अथवा मुरलीमें ओर अनेक तार वा फूकके । सब बाजेनमें गावनेसों चितकों घणो आनंद करे । सो जंत्र काकु जांनिये । ६ ।

ए छहु प्रकारके काकुस्थाप जांनिये ॥ ये छह प्रकारके काकु जिन राग खंडनमें होय तें । रागखंडछायास्थाप जांनिये । ७ ।

इन भेदनको जो संगीत ग्रंथकों पढिकें गीतवाद्यकों विना गुरु विचारे यह मारग पावते नही । सास्त्रके करता भरतादिक हनुमान मतंगादिक कहेहें ॥

जहां रागखंडके स्वरनमें बीचबीचके स्वर छोडिकें । स्वरनकों उच्चार होय । सो रागखंडस्वरलंघितस्थाप जांनिये । ८ ।

जहां रागखंडके स्वरनकों आडे तिरछे नीचेऊंचे करिकें उच्चार कीजिये । सो रागखंडप्रेरितस्थाप जांनिये । ९ ।

जा रागखंडमें तारस्थानके स्वरको संपूरन श्रुति लेकें तीक्षण उच्चार करिये । सो रागखंडतीक्षणस्थाप जांनिये । १० । इति **असंकीर्ण दशस्थापनके नाम–लछन संपूर्णम्** ॥

अथ स्थापनके गुणाऋत तेतीस म लिख्यते ॥ भजनस्थाप

। १ । स्थापनास्थाप । २ । गतिस्थाप । ३ । नादस्थाप । ४ । ध्वनिस्थाप । ५ । छविस्थाप । ६ । रक्तिस्थाप । ७ । धृतशब्दस्थाप । ८ । भृतस्थाप । ९ । राग-अंशस्थाप । १० । रागावधानस्थाप । ११ । अपस्थानस्थाप । १२ । निकुत-स्थाप । १३ । करुणास्थाप । १४ । विविधत्वस्थाप । १५ । गात्रस्थाप । १६ । उपशमस्थाप । १७ । काण्डारणास्थाप । १८ । निर्जवनान्वितस्थाप । १९ । गाढस्थाप । २० । ललितगाढस्थाप । २१ । ललितस्थाप । २२ । लुलितस्थाप । २३ । समस्थाप । २४ । कोमलस्थाप । २५ । प्रसृतस्थाप । २६ । स्निग्ध-स्थाप । २७ । चोक्षस्थाप । २८ । उचितस्थाप । २९ । सुदेशस्थाप । ३० । आपेक्षितस्थाप । ३१ । घोषस्थाप । ३२ । स्वरस्थाप । ३३ । इति तेतीस प्रसिद्धस्थापके नाम संपूर्णम् ॥

॥ अथ इन तेतीस स्थापके भेद लिख्यते ॥

१ जा रागखंडमें कंप आदि गमकनसों रागको गमकको अतिशय कहिये चमत्कारकी वृद्धि होय। सो भजन कहिये ॥ यह भजन जा रागखंडमें होय । सो भजनस्थाप जांनिये । १ ।

२ जहां शब्दके सबपदमें अंतकें स्वरकों ठहराय ठहरायकें करत जो उच्चार करिये । सो स्थापना कहिये ॥ स्थापना जुत जो राग खंड । सो स्थापनास्थाप जांनिये । २ ।

३ अथ गतिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी गति मत्तवारे हाथीकीसिनांई विलास लिये होय । सो गतिस्थाप जांनिये । ३ ।

४ अब नादस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको नाद मधुरतालिये होय कांनको प्यारो लगे । सो नादस्थाप जांनिये । ४ ।

५ अथ ध्वनिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडको घणें दीर्घ स्वरकों उच्चारसों वरताव कीजिये । सो ध्वनिस्थाप जांनिये । ५ ।

६ अथ छविस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरकी कोमल-तासों अनुरंजन घणों होय । सो छविस्थाप जांनिये । ६ ।

७ अथ रक्तिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनमें जमायवेतें अनुरंजन होय । सो रक्तिस्थाप जांनिये । ७ ।

८ अथ धृतशब्दस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरकों एक छिन वरतायवेतें राग बनें । सो धृतशब्दस्थाप जांनिये । ८ ।

९ अथ भृतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें गहरिधुंनिसों स्वरके भरिवेमें अनुरंजन होय । सो भृतस्थाप जांनिये । ९ ।

१० अथ रागांशस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें । ओर रागके अंश कहिये ॥ स्वरसमूहको खंड सोभाके लिये । वा अनुरंजनकेलिये वरतिये । सो अंश कहिये ॥ ता अंशके छह । ६ । भेदहें ॥ कार्यांश । १ । कारणांश ।२। सजातिअंश । ३ । सदृशांश । ४ । विसदृशांश । ५ । मध्यस्थांश । ६ ।

अथ छह अंशनको लछन लिख्यते ॥ तहां कार्यांशको लछन लिख्यते ॥ जो राग जा रागको उपजो होय । सो उपजो रागनसों कारिज जांनिये ॥ उपजायवेवारेकी राग कारण जांनिये ॥ तहां कारण राग अनुरंजनके अरथ कारज रागको अंश लीजिये । सो कार्यांश जांनिये । १ । जैसे भैरव कारण रागमें । कारिज राग भैरवीको अंश लेतहें । १ ।

अब कारणांशको लछन लिख्यते ॥ जहां कारिज रागमें कारण रागको अंशसेश रंजनकेतांई लीजिये । सो कारणांश जांनिये । २ । जेसें राम कृत कारज रागमें कारणराग कोलाहल रागको अंश लेतहै । २ ।

अथ सजातिअंशको लछन लिख्यते ॥ जे जे राग एक जातिसों उपजे ते ते राग आपसमें सजाति दावकहें । सो सजातिअंश जांनिये । ३ ।

दुसरे सजाति परांशको अंश लीजिये । सो सजातिअंश जांनिये ॥ जेसें गौडराग कर्णाटराग सजातीयहें । तेसें गौडमें कान्हडेको अंशहें । ४ ।

अथ सदृशांशको लछन लिख्यते ॥ जिन रागनको स्वरसमूह समान होय ते राग सदृश कहिये ।

जहां सदृश रागमें सदृशांशको अंश लीजिये । सो सदृशांश जांनिये ॥ जेसें सुद्ध नट्टा तहां राग सुद्ध वराटी राग यें दोऊ सदृश है ॥ यहां सुद्ध नट्टामें सुद्ध वराटिको अंश लेतहें ॥

अथ विसदृशांशको लछन लिख्यते ॥ जिन रागनके स्वरसमूह न्यारे न्यारे होय ते वे राग विसदृश जांनिये ॥ तहां विसदृश रागमें दुसरे वि-

सदृश रागको अंश लीजिये । सो विसदृशांश जांनिये ॥ जेसें वेलावली राग ॥१॥ गुर्जरीराग ॥ २ ॥ ये दोऊ वीसदृशहें ॥ इहां वेलावलीमें गुर्जरीको वा गुर्जरीमें वेलावलीको अंश लेतहैं । ५ ।

अथ मध्यस्थांशको लछन लिख्यते ॥ जिन रागनको स्वरसमूह कछूइक तो न्यारो होय । कछूइक समान होय । ते वे राग मध्यस्थ कहिये ॥ सो मध्य मध्य रागमें दुसरे मध्यस्थ रागको अंश लीजिये । सो मध्यस्थांश जांनिये ॥ जेसें नटाराग अरु देसाखराग ये दोऊ मध्यस्थहें ॥ इहां नटामें देसाखमें नटको अंश लेतहें । ६ । ऐसें छह लछन अंश समझिये ॥ ऐसेंहि छह होय। इन अंशनमें कोई अंशमें कोई अंशको अंश आवे । सो सम अंशांश कहिये ॥ जा रागखंडमें अंश आवे । सो रागअंशस्थाप जांनिये । १० ।

११ अथ रागावधानस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें निश्चय मन लगायतें रागको स्वरूप समझिये । सो रागावधानस्थाप जांनिये । ११ ।

१२ अथ अपस्थानस्थापको लछन लिख्यते ॥ जहां मंद्र ।१। मध्य ।२। तार । ३ । स्थानमें परिश्रम विनाहि । सहजसों रागकी मिलती धुनि होय । सो तो स्वस्थान धुनि कहिये ॥ ओर जा स्थानमें परिश्रमसों रागकी मिलती धुनि कीजिये । सो अपस्थान धुनिहें ॥ यह अपस्थान धुनि जा रागखंडमें होय । सो अपस्थानस्थाप जांनिये । १२ ।

१३ अथ निकुतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरको तोडजोडसों उच्चार कीजिये । घणी चतुराईसों राग वरत्यो जाय । सो निकुत-स्थाप जांनिये । १३ ।

१४ अथ करुणास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनमें उच्चारसों करुणा रसकी उतपत्ति होय । सो करुणास्थाप जांनिये । १४ ।

१५ अथ विविधत्वस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें अनेक प्रकारके स्वरनकी मरोडसें अनेक रचना प्रगट होय। सो विविधत्व जांनिये । १५ ।

१६ अथ गात्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें आपनें सरीरकी निपट ऊंचि धुनिसों कपालिस्वरनको उच्चार कीयतें राग बनें आछो होय । सो गात्रस्थाप जांनिये । १६ ।

१७ अथ उपशमस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको सूक्ष्म उच्चार कीयेतें राग बनें। सो उपशमस्थाप जांनिये। १७।

१८ अथ कांडारणास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मध्यम-स्थानके वा तारस्थानके स्वरनको सिताबि उच्चार कीयेतें राग बनें। सो कांडा-रणास्थाप जांनिये। १८।

१९ अथ निर्जवनान्वितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें सरल। १। कोमल। २। स्वर होय। उन स्वरनको क्रमतें सूक्षिम सूक्षिम उच्चार कीयेतें राग बनें। सो निर्जवनान्वितस्थाप जांनिये। १९।

२० अथ गाढस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको सिथल उच्चार कीजिये। फेर उनही स्वरनको अनुरंजनके लिये। तीक्षणतासों गाढो उच्चार कीजिये। सो गाढस्थाप जांनिये। २०।

२१ अथ ललितगाढस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें पहले स्वरनको सिथल उच्चार करि फेर उनही स्वरनको गाढो उच्चार कीजिये। अनुरंजनके लिये। सो ललितगाढस्थाप जांनिये। २१।

२२ अथ ललितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको सिथल उच्चार करि गाढो उच्चार कीजिये। परंतु बीचमें विलास नये नये उपजे। सो ललितस्थाप जांनिये। २२।

२३ अथ लुलितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी कोमलतासों झुलिन कीजिये। चमत्कारके लिये। सो लुलितस्थाप जांनिये। २३।

२४ अथ समस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको समान वेगसों उच्चार कीजिये द्रुतविलंबित वेगसों उच्चार नही कीजिये। सो समस्थाप जांनिये। २४।

२५ अथ कोमलस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें जहां जेसो वेग चाहिजे। तेसें वेगसों स्वरनको उच्चार करि। सो कोमलस्थाप जांनिये। २५।

२६ अथ प्रसृतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरको विस्तारसों उच्चार अनुरंजनके वास्ते कीजिये। सो प्रसृतस्थाप जांनिये। २६।

२७ अथ स्निग्धस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको जेसें रूख्योपनों दूरहो । ता रीतिसों संभारके स्वरनकों उच्चार कीजिये । सो स्निग्धस्थाप जांनिये । २७ ।

२८ अथ चोक्षस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनकों उज्ज्वल कहिये । खुलतो उच्चार कीजिये । सो चोक्षस्थाप जांनिये । २८ ।

२९ अथ उचितस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको रागसों मिलतो उच्चार होय। घटि वधि नहि होय। सो उचितस्थाप जांनिये। २९।

३० अथ सुदेशस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार चतुर पुरुषके मतकों अनुरंजन करे अजाण नही समझे । सो सुदेश-स्थाप जांनिये । ३० ।

३१ अथ आपेक्षितस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जहां राग वरतवेकों पहले स्थापमें जा स्थापके स्वर लीजिये । सो आपेक्षितस्थाप जांनिये । ३१ ।

३२ अथ घोषस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जो वहनी नाम कंपमें मधुर और साचिकन ढाल कह्यो हें । सो ढाल वहनीको स्थापन छोडिकें ओर ठोरें मंद्र धुनिसों होय तब याको घोष कहत हें । सो घोष जो रागखंडमें होय । सो घोषस्थाप जांनिये । ३२ ।

३३ अथ स्वरस्थापको लछन लिख्यंत ॥ जा रागखंडमें मंद्रस्थानके स्वरनकों उच्चार गंभीरमें मधुरता धुनिसों कीजिये। सो स्वरस्थाप जांनिये । ३३ । इति तेतीस संकीर्ण गुणाकृत भेद स्थापके लछन संपूर्णम् ॥

अथ स्थापनके भेद वीस प्रसिद्ध हें तिनको नाम—लछन लिख्यंत ॥ वहन्त स्थाप । १ । अक्षरा डंबर स्थाप । २ । उल्लासित स्थाप । ३ । तरंगित स्थाप । ४ । अलंबित स्थाप । ५ । अवस्खलित स्थाप । ६ । त्राटित स्थाप । ७ । सप्रविष्टक स्थाप । ८ । उत्प्रविष्ट स्थाप । ९ । निःसरण स्थाप । १० । भ्रामित स्थाप । ११ । दीर्घकंपित स्थाप । १२ । प्रतिग्रहोल्लासित स्थाप । १३ । अलंब विलंबक स्थाप । १४ । त्रोटित प्रतिष्ट स्थाप । १५ । प्रसृताकुंचित स्थाप । १६ । स्थिर स्थाप । १७ । रचित स्थाप । १८ । क्षिप्त स्थाप । १९ । सूक्ष्मांत स्थाप । २० । यह वीस नाम जांनिये ॥

अब इनके लछन लिख्यंते ॥ तत्र आदिमें वहन्त स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनके कंपमें उच्चार कीजिये । सो वहन्त स्थाप जांनिये ॥ १ ॥

अथ अक्षरा डंबर स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकें चमत्कारसों अक्षरनमें कविता । इको चमत्कार वर्णों होय । सो अक्षरा डंबर स्थाप जांनिये ॥ २ ॥

अथ उल्लासित स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें स्वरको वेग करिकें । उपरको चढतो उच्चार कीजिये । सो उल्लासित स्थाप जांनिये ॥३॥

अथ तरंगित स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें श्रीगंगाजीके तरंगकी सिनाई स्वरनको लछनको उच्चार होय । सो तरंगित स्थाप जांनिये ॥ ४ ॥

अथ अलंबित स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जैसे जलको आधो भरे कुंभको जल झलके । तैसे जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार घटके जलकी सिनाई झलकतो होय । सो अलंबित स्थाप जांनिये ॥ ५ ॥

अथ अवस्खलित स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें मंद्रस्थानमें वेगसों अवरोहके स्वरनको उच्चार होय । सो अवस्खलित स्थाप जांनिये ॥ ६ ॥

अथ त्राटित स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें स्वरको तोडके उच्चार कीजिये अनुरंजनके लिये । सो त्राटित स्थाप जांनिये ॥ ७ ॥

अथ संप्रविष्ट स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें एक छिन स्वर ठहरिकें तारस्थानकों छुइकें फिर मंद्रस्थानमें आवे । ओर अवरोहमें गहरि धुनि लिये होय । सो संप्रविष्ट स्थाप जांनिये ॥ ८ ॥

अथ उत्प्रविष्ट स्थापको लछन लिख्यंते ॥ जा रागखंडमें स्वर एक छिन ठहरिकें तारस्थानमें पहुंचे । अरु आरोहि वर्णमें होय । सो उत्प्रविष्ट स्थाप जांनिये ॥ ९ ॥

अथ निःसरण स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मंद्रस्थान-

के स्वर तारस्थानकों छूवे। अरु तारस्थानको मंद्रस्थानकों छूवे। या रीतिसों अपने स्थानकपे स्वर निकसे। सो निःसरण स्थाप जांनिये ॥ १० ॥

अथ भ्रामित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको च्यारों तरह हलाय भ्रमण करिके उच्चार कीजिये। सो भ्रामित स्थाप जांनिये ॥ ११ ॥

अथ दीर्घ कंपित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें दीर्घ कंपसों स्वरनको उच्चार होय। सो दीर्घ कंपित स्थाप जांनिये ॥ १२ ॥

अथ प्रतिगृह्योल्लासित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकों एक वेर उच्चार करिकें। फेर खोलिकें स्वरनकों उच्चार कीजिये। सो प्रतिगृह्योल्लासित स्थाप जांनिये ॥ १३ ॥

अथ अलंब विलंबक स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको द्रुतवेगसों उठायकें विलंबित वेगसों उतारिये। अनुरंजनके अरथ जैसे बालकनके खेलिवेकी दडी उछले। ऐसें स्वरनको वरतिये। सो अलंब विलंबक जांनिये ॥ १४ ॥

अथ त्रोटित प्रतिष्ट स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें तारस्थान। १। मंद्रस्थान। २। में पहले तारस्थानके स्वरनको उच्चार करि। दूसरे स्वरको मंद्रस्थानमें उच्चार कीजिये। अनुरंजनके लिये। सो त्रोटित प्रतिष्ट स्थाप जांनिये ॥ १५ ॥

अथ प्रसृताकुंचित स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी धुनि पहले तो विस्तारसों लीजिये। और पीछे तें संकोच करि दीजिये। सो प्रसृताकुंचित स्थाप जांनिये ॥ १६ ॥

अथ स्थिर स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्थाई वर्णके स्वरको कंप होय। सो स्थिर स्थाप जांनिये ॥ १७ ॥

अथ स्थायुक स्थापको नाम रचित या स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें एक एक स्वरनको अथवा दोय दोय स्वरनको अथवा तीन तीन स्वरनकों ठहराय ठहरायकें उच्चार कीजिये। सो स्थायुक रचित स्थाप जांनिये ॥ १८ ॥

अथ क्षिप्त स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी उपर-कों चढतो चढतो होय । सो क्षिप्त स्थाप जांनिये ॥ १९ ॥

अथ सूक्ष्मांत स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार पहले तो घणी धुनिसों कीजिये अरु पीछे ते रागके विश्राममें सूक्ष्म धुनिसों स्वर लीजिये । सो सूक्ष्मांत स्थाप जांनिये ॥ २० ॥ इति प्रसिद्ध **संकीर्ण वीस स्थापके भेद–लछन संपूर्णम् ॥**

॥ अथ संकीर्ण स्थापनके गुणकृत तेतीस नाम लिख्यते ॥

प्रकृतिस्थ शब्द स्थाप । १ । कला स्थाप । २ । आक्रमण स्थाप । ३ । घटना स्थाप । ४ । सुखद स्थाप । ५। चलित स्थाप । ६ । जीवस्वर स्थाप । ७। वेदध्वनि स्थाप । ८ । घनत्व स्थाप । ९ । शिथिल स्थाप। १० । अवघट स्थाप । ११ । प्लुत स्थाप । १२ । रागेष्ट स्थाप । १३ । अपस्वराभास स्थाप । १४। बद्धः स्थाप । १५ । कलरव स्थाप । १६ । छांदस स्थाप । १७ । सुकराभास स्थाप । १८ । संहित स्थाप । १९ । लघु स्थाप । २० । अंतर स्थाप । २१। वक्र स्थाप । २२ । दीप्त स्थाप । २३ । प्रसन्ना स्थाप । २४ । प्रसन्नमृदु स्थाप । २५ । गुरु स्थाप । २६ । न्हस्व स्थाप । २७। स्तोकस्वर स्थाप ।२८। दीर्घ स्थाप । २९ । साधारण स्थाप । ३०। निराधार स्थाप ।३१। दुष्कराभास स्थाप । ३२ । मिश्र स्थाप । ३३ ।

अथ इन तेतीसके लछन कहतहै ॥ तहां प्रथम प्रकृतिस्थ शब्द-स्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनकी धुंनिसों सहजही स्वरनको उच्चारतें अनुरंजन होय । सो प्रकृतिस्थ शब्दस्थाप जांनिये । १ ।

अथ कलास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको सुक्षिम धुंनिसों उच्चार कीजिये । सो कलास्थाप जांनिये । २ ।

अथ आक्रमणस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें बल करिवेसों स्वरनको उच्चार कियेसों राग बनें । सो आक्रमणस्थाप जांनिये । ३ ।

अथ घटनास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको बनायकें उच्चार कीजिये । जैसें कारीगर भाठा ईट खवारिके भीतमें चुंणे ऐसें स्वरनकों वरतिये । सो घटनास्थाप जांनिये । ४ ।

अथ सुखदस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार अत्यंतसुख उपजावे । जहां तांनको जिव होय । सो सुखदस्थाप जांनिये । ५ ।

अथ चलितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार ले कछिये क्रमक्रमसों उच्चार होय । यांको जक्र कहे हें । सो चलित-स्थाप जांनिये । ६ ।

अथ जीवस्वरस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें अंसस्वर मुख्य होय । सो जीवस्वरस्थाप जांनिये । ७ ।

अथ वेदध्वनिस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें सामवेदकी-सिनांई यमानसों स्वरनको उच्चार होय । सामवेदकीसि धुंनि जांनिजाय । सो वेदध्वनिस्थाप जांनिये । ८ ।

अथ घनत्वस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको गहरि ध्वनिसों उच्चार कीजिये । सो गुंकारजुत स्वरनकों पासेंम उच्चार होय । सो घनत्वस्थाप जांनिये । ९ ।

अथ शिथिलस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें जेसें स्वर कह तेसें स्वरनकों सिथलज उच्चार कीजिये । सो शिथिलस्थाप जांनिये। १० ।

अथ अवघटस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको जो गायवेमें कष्टसो बनें । सो अवघटस्थाप जांनिये । ११ ।

अथ प्लुतस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें गायवेमें स्वरको अत्यंत विलंबसों उच्चार होय । सो प्लुतस्थाप जांनिये । १२ ।

अथ रागेष्टस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें रागकी सुरत बनायवेवारो स्वर होय । ओर कोऊ रागखंडमें राग बनावनों होय । तब वा रागखंडके स्वरन लीजिये तो रागसिद्ध होय एसें रागकी जमाके स्वर बारा जो रागखंड । सो रागेष्टस्थाप जांनिये । १३ ।

अथ अपस्वराभासस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें गायवेमें कोईक सुद्ध स्वरको उच्चार बिगडे नही । परंतु बिगडेको सो भ्रमि आवे । सो अपस्वराभासस्थाप जांनिये । १४ ।

अथ बद्धःस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मधुरध्वनि घणी बांधिये। सो बद्धःस्थाप जांनिये । १५ ।

अथ कलरवस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें रागनकी कल कहिये । मधुर गंभीर ध्वनीको उच्चार होय । सो कलरवस्थाप जांनिये । १६ ।

अथ छांदसस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें अनेक तरहके रीतीसों स्वरनको उच्चार होय चतुरमुखको प्यारो होय । सो छांदस-स्थाप जांनिये । १७ ।

अथ सुकराभासस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार सुंनिवेमें सुधो लगे । अरु बरतिवेमें सीखवेमें महा कठिन होय । सो सुकराभासस्थाप जांनिये । १८ ।

अथ संहितस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें तारस्थानको स्वर मंद्रस्थानमें घंटाके नादकीसिनांई आवे । सो संहितस्थाप जांनिये। १९ ।

अथ लघुस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें लघुकालसों स्वरनको उच्चार होय ध्रुवका अरु आभोगमें सो ध्रुविका तो गीतकी गतीकी पीडा बंधिहें । अरुसमाप्तको बोल होय सो आभोग । तहा लघुकालसों उच्चार कीजिये । सो लघुस्थाप जांनिये । २० ।

अथ अंतरस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको अंतर-सा उच्चार होय ठहर ठहरकें । सो अंतरस्थाप जांनिये। २१ ।

अथ वक्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें बांके बांके स्वरन-को उच्चार होय । सो वक्रस्थाप जांनिये । २२ ।

अथ दीप्तस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको तार-स्थानमें उच्चार होय । सो वरतावे रागको बने । सो दीप्तस्थाप जांनिये । २३ ।

अथ प्रसन्नास्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मधुर कोमल धुंनिसों सब स्थानकमें स्वरनको उच्चार होय। सो प्रसन्नस्थाप जांनिये। २४ ।

अथ प्रसन्नमृदुस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें मंद्रस्थानमें अतिकोमल धुंनिसों स्वरनको उच्चार तारस्थानमें उंची ध्वनीसों उच्चार होय । सो प्रसन्नमृदुस्थाप जांनिये । २५ ।

अथ गुरुस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार भारी धुनिसों कीजिये । जैसें गंकार घणी वेरतांई रहे। सो गुरुस्थाप जांनिये ।२६।

अथ न्हस्वस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको एक मात्रासों उच्चार होय । सो न्हस्वस्थाप जांनिये । २७ ।

अथ स्तोकस्वरस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें दोय च्यारि स्वरनको उच्चार होय । कंपके बलसों राग भरि दीजिये । सो स्तोकस्वर-स्थाप जांनिये । २८ ।

अथ दीर्घस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको दोय मात्रासों उच्चार कीजिये । सो दीर्घस्थाप जांनिये । २९ ।

अथ साधारणस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें पूर्व-जन्मके पून्यतें वा अभ्यासतें नयासो स्वरको उच्चार करि । चमत्कार दिखावे । सो साधारणस्थाप जांनिये ॥ या रागखंडमें स्वरनको उच्चार और रागके समान-सों होय अनेक रागनमें स्वर होय । जो स्वरसमूह होय । वही स्वरसमूह ता रागखंडमें होय । ३० ।

अथ निराधारस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें वहनी आदि कंपविनाहि स्वरनको उच्चार अनुरंजन करे । सो निराधारस्थाप जांनिये ।३१।

अथ दुष्कराभासस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें स्वरनको उच्चार सुनिवेमें कठिन होय । वरतेवेमें सिखवेमें सुगम होय । सो दुष्कराभास-स्थाप जांनिये । ३२ ।

अथ मिश्रस्थापको लछन लिख्यते ॥ जा रागखंडमें दोय तीन वा च्यार स्थापको लछन होय । सो मिश्रस्थाप जांनिये । ३३ । याके भेद अनंतहें । सो बडी आयुरदावारे याको समझतेहें ॥ यह भरतादिक मुनीनें कहेहें ॥ **इति स्थापनकेछनवे ९६ भेद संपूर्णम् ॥**

॥ अथ आलापके लछन लिख्यते ॥

जहां रागके स्वरको रूप प्रगट करिवेकों विना तालस्वरनके समूहमें । राग वरतिये । सो आलाप जांनिये । सो आलाप दोय प्रकारकोहे ॥ रागआलाप । १ । रूपआलाप । २ । तहां प्रथम रागआलापको लछन कहेहे ॥

जो राग वरतिवेकों प्रबंध आदिके स्वरनकों क्रमसों छोडिकें शास्त्रोक्त स्वर समूहमें राग वरतिये। सो रागालाप जांनिये। सो रागआलाप मुखचाल आदि च्यारि स्वरनमें विश्राम पायकें च्यार प्रकारको होतहें॥

अबे विश्रामके च्यारि स्वर हें। तिनको लछन कहेहें॥ जा स्वरमें राग बेठायवेके वरतिये॥ जामें राग स्थित होय। सो स्थाईस्वर जांनिये॥ तहां जो राग औडव अथवा षाडव होय। तो जो स्वरको कियो होय। सो गिणतीमें गिण लीजिये॥ ऐसें एक स्वर हीन होयतो। सो एक स्वर लीन लीजिये॥ दोय स्वर हीन होयतो दोय स्वर लीन लीजिये॥ ऐसें आरोह क्रमसों जो स्वर चोथो आवे। सोद्व्यर्ध स्वर जांनिये॥ जेसें कोई ओडव रागमें षड्ज स्वर स्थाई होय ओर रिषभ गांधार नही होय। तो तहां आरोह क्रममें रिषभ गांधारहू गिन लीजिये॥ जेसें गिनते षड्ज स्वरतें चोथो मध्यम स्वर होतहे। सो मध्यम द्व्यर्धस्वर जांनिये॥ जैसें सब ठोर ओडवरागमें समझिये॥ जहां द्व्यर्धस्वरके बीचले स्वर अरु निचले स्वरमें सो कंप गमक जांनिये। २। के लहरि लेकें स्थाइपें विश्राम कीजिये। द्व्यर्धस्वरमें कंप नही कीजिये। सो विश्राम मुख चालक जांनिये। सो पहलो स्वस्थान कहें॥ १॥

जहां द्व्यर्धस्वरहूमें कंप गमककी लहरि लीजिये। द्व्यर्ध स्वरके निचले स्वरनहू कंप॥ १॥ गमक॥ २॥ गमककी लहरि जांनिये॥ पीछे स्थाइमें विश्राम कीजिये। सो द्वितीय न्यास जांनिये॥ यह दूसरे स्वस्थानहे॥ २॥

ओर स्थाइस्वर कंपसों आरोह क्रममें आठवो जो स्वर। सो द्विगुणस्वर जांनिये॥ इहांहू ओडव॥ १॥ षाडव॥ २॥ के हीनस्वर गिनतीमें गिन लीजिये॥ पहले लिखिहें जेसी तरह जांनिये॥ तहां चोथे आठवे स्वरके बीचके स्वर पांचमें छटमें सातमें स्वरको नाम द्व्यर्धस्थिति स्वर जांनिये॥ इन द्व्यर्धस्थिति स्वरनमें कंप॥ १॥ गमक॥ २॥ की लहरी लेकें स्थाईस्वरनमें विश्राम कीजिये। सो कटियन्मास जांनिये॥ यह तीसरो स्वस्थानहें॥३॥

ओर जहां द्विगुणस्वरमें ओर अर्धस्थित स्वरनमें कंप गमककी लहरि लेकें स्थाइस्वरनमें विश्राम कीजिये॥ यह चोथो स्वस्थान हें॥ ऐसें च्यारि प्रकारके

विश्राम रचिवेतं राग वरतिवेकों । रागआलाप च्यारि प्रकारको जांनिये ॥ इति रागालापके च्यारि भेद संपूर्णम् ॥

अथ रागालापको प्रयोजन लिख्यते ॥ इहां रागालापमें तो राग प्रगट होतहें ॥ ओर जहां प्रबंधादिकमें रागके खंड कहे हें । तहां कोऊ ओर रागके खंडसों भेद नही जान्यों पडेहें ॥ तातें सुनिवेवारेको संदेह दूरिवेकों पहले रागालाप कीजिये । तव रागको वरतावेमें । प्रगटरूप जानेहें ॥ प्रबंधादिकके रागखंडमें संदेह नही होयहें ॥ जेसें वडे महाराजकी सभामें सिगरे लोग वसन आभुषण पहरिकें हाजर होतहें ॥ तहां कोऊ पहली आवे । कोऊ पीछि आवे जहां राजमंडलिके लोक एक वस्त्र गहना तो सबके एकसेहें ॥ यातें पोसाकसें तो मुख्य पहचान्यों जाय नहीं । तव वाको स्वरूप देखिये । सो अवस्था । अथवा हसनि बोलनी नेत्रकी चेष्टा । काहूके मूछिविनाहें । काहूकी करि मुछिहें । तामें छोटि वडि हें । अथवा काहू पुरुषनकी धोरि मुछ हें ॥ ऐसें अंगअंगकी सहनानितें पिछानतहें । तेसें रागालापसों । एकके स्वरूपको निश्चय होत हें ॥ तासों रागालापकहो हे ॥ इति रागालापप्रयोजन संपूर्णम् ॥

॥ अथ रागालापमें रागको निश्चय होतहें ॥ यह बातपुष्टि करिवेकों रूपकालापको लछन लिख्यत ॥

जहां प्रबंधकी तरहको स्वरसमुह रचिकें वा स्वरसमूहमें प्रबंधके तालसों रागको वरताव कीजिये। सो रूपकालाप जांनिये । सो वह रूपकालाप दोय प्रकारको हें । सो एकतो प्रतिग्रहणिका । १ । दुसरो भंजनी । २ । ऐसें दोय प्रकारका जांनिये ॥

अथ प्रतिग्रहणिकाको लछन लिख्यते ॥ जहां पहले रागकों खंड वरतिवेकों राग प्रगट करि जनायवेकों । रागालापको खंडस्वरसमुहमें वरतिकें । फेर प्रबंधमें खंडमें राग वरतिवेकों प्रबंधकी चालसों न्यास । १ । संन्यास । २ । विन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । रचनासों स्वरसमुहमें रूपक- आलापकों खंड वरतिये । सो रूपक आलाप प्रतिग्रहणिका जांनिये ॥

अथ भंजनी नामक रूपक आलापके दोय भेदहें ॥ स्थापक भंजनी । १ । रूपकभंजनी । २ । तिनको लछन लिख्यत । तहां स्थापक भंजनिको लछन कहेहें ॥ तहां रूपके समानसों प्रबंधके अनुसार न्यास । १ । विन्यास । २।

संन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । जुत स्वरसमूहमें प्रबंधके एक खंडको अनेक प्रकार सुंदर रीतिसों वरताव कीजिये । सो रूपक आलापस्थाप भंजनी जांनिये ॥

अबे याके अवाडि रूपकभंजनीको लछन कहतहें ॥ जहां संपूर्ण प्रबंधकी रीतिसों न्यास । १ । विन्यास । २ । संन्यास । ३ । अपन्यास । ४ । जुत स्वरसमूहमें प्रबंधको वरताव कीजिये एक दोयवार । ओरहू रागनकी रागमें कंप गमक कहेहें तिनको दिखायकें ओर रागसों भेद प्रकास करनों । ऐसें प्रबंधके सिगरे खंडनको वरताव करि संदेह दूरि कीजिये । सो रूपक भंजनी जांनिये ॥ इति सात प्रकारके आलाप—भेद संपूर्णम् ॥

अथ भूरिभंग मनोहर आलापको लछन लिख्यते ॥ जहां स्थाई । १ । आरोहि । २ । अवरोहि । ३ । संचारि । ४ । च्यारों वर्ण अलंकार जामें होय । ओर अनेक भांतिके गमक जामें होय ॥ ऐसें स्वरसमूहमें जो रागको वरताव कीजिये । सो भूरिभंग मनोहर आलाप जांनिये ॥ जैसें कोऊ मनोहर स्त्री अपनें प्यारेके वसि करिवेकों । अपनें कुच उदरादिक अंग दिखाय दिखाय हावभाव कटाक्षनसों वसी करतहें तेसेंही यह आलाप गमक आदि करतव्यसों । सुनिवेवारेनके मनकों वसि करतहें ॥ इति भूरिभंग मनोहर आलाप—लछन संपूर्णम् ॥

अथ वृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां गाइवेवारे बजाइवेवारे महाचतुर होय आपसमें मिलिकें सास्त्रकी रीतिसों गान वाद्य नृत्य करे । सुनिवेवारेनके चित्तकों आनंद उपजावे । ऐसें पुरुषनको सुंदर होय । सो वृंद जांनिये ॥ सो वृंद तीन प्रकारको हें ॥ उत्तम । १ । मध्यम । २ । कनिष्ठ । ३ ।

अबे उत्तम वृंदको लछन कहे हें ॥ जहां मुख्य गायवेवारे ॥४॥ च्यारि होय ॥ उनके स्वर रचायवेकों ॥८॥ आठ गायवेवारेक समान होय । ओर वा गानके पुष्ट करिवेकों वा राग गायवेवारि सुंदर चतुर नायका ॥१२॥ बारा होय । ऐसें स्त्री ॥१॥ पुरुष ॥२॥ मिलिकें ॥२४॥ चोविस गायवेवारे होय । ओर बाजेनमें उनके गायवेके अनुसार स्वरमें मिलाय बजावे ॥ ऐसें च्यारि ॥ ४ ॥ मुरलि बजाय-वेवारे पुरुष होय ॥ च्यारि मृदंग बजायवेवारे पुरुष होय । मृदंगकी परन बजाय-वेवारे प्रवीन ऐसें आठ ॥ ८ ॥ बजायवेवारे होय । तब गायवेवारे बजाय-वेवारे मिलिकें ॥ ३२ ॥ बत्तीस स्त्रीपुरुषको समूह होय । सो उत्तम वृंद जांनिये ॥

अबे मध्यम वृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां उत्तम वृंदसों आधा समूह होय दोय मुख्य गायवेवारे। चार स्वर रचायवेवारे ॥४॥ ऐसें ॥६॥ छह पुरुष होय। गायवेवारी स्त्री ॥ ६ ॥ छह होय । दोय वंसीवारे होय । दोय मृदंगवारे मिलिकें ॥ १६ ॥ सोलह स्त्रीपुरुषको समूह होय । सो मध्यम वृंद जांनिये ॥

अथ कनिष्ठ वृंदको लछन कहे हैं ॥ जा वृंदमें मुख्य एक गायवेवारो है उपस्वरके रचायवेवारे तीन होय । च्यारि गायवेवारी स्त्री होय । मुरलीवारे मृदंगवारे दोय होय । सो कनिष्ठ वृंद जांनिये ॥

अथ महाराजके जनावनेमें संगीत वरतवेमें लिये । स्त्रीके वृंद कहे हैं ॥ तहां उत्तम स्त्रीवृंदको लछन कहे हैं ॥ उत्तम वृंदमें गायवेवारि स्त्री बारह ॥ १२ ॥ कहि हैं तहां दोय ॥ २ ॥ तो महाचतुर गायवेवारी मुख्य स्त्री होय। उनको स्वर रचायवेवारि स्त्री दस ॥ १० ॥ होय । ओर वंसीवारि स्त्री दोय ॥ २ ॥ होय। मृदंगवारी स्त्री दोय ॥ २ ॥ होय। इहां पुरुष नही लीजिये यह गायवेवारि स्त्री ॥ १६ ॥ को वृंद उत्तम जांनिये ॥

अथ मध्यम स्त्रीवृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां मुख्य गायवेवारि स्त्री एक होय । स्वर रचाइवेवारि ॥ ४ ॥ वंसी बजायवेवारि ॥ १ ॥ मृदंग बजायवेवारि ॥ १ ॥ यह स्त्रीवृंद मध्यम जांनिये ॥

अबे कनिष्ठ वृंदको लछन लिख्यते ॥ जहां मध्यम स्त्रीवृंदको घटतो समाज होय । सो कनिष्ठ वृंद जांनिये ॥ अबे कनिष्ठको हीन कहे है ॥ इति वृंद–लछन संपूर्णम् ॥

अथ वृंदके छह गुण हैं तिनके नाम मुख्यानुवृत्ति । १ । मिलन । २ । ताल लीलानुवर्तन । ३ । मिथ स्त्रुटित निर्वाह । ४ । त्रिस्थान व्याप्ति शक्तिता । ५ । शब्दसादृश्य । ६ । यह छह वृंदक गुण हैं । इनको लछन कहे हैं ॥ जो मुख्य गायवेवारो होय । ताकी मर्यादासों सब गावें । यह मुख्यानुवृत्ति जांनिये ॥१॥ गायवेवारे सिगरेनके स्वर एक स्वरमें लीन होय । सो मिलन जांनिये ॥ २ ॥ तालके वरतिवेकी रीतिसों ताल देनों । जामें राग बिगडे नहीं । सो ताल लीलानुवर्तन जांनिये ॥ ३ ॥ गायवेमें जाको स्वास कटे । ताको दूसरे गायवेवारो साधि ले । तूट्योसो जान्यो नही पडे । ओर आरंभसों विश्राम ताई

एकसी धुनि रहे। सो मिथस्त्रुटित निर्वाह जांनिये ॥ ४ ॥ गायवेवारेनकी कंठकी धुनि मंद्र ॥ १ ॥ मध्य ॥ २ ॥ तार ॥ ३ ॥ इन तीनों स्थानमें विना परिश्रम पहुंचे। सो त्रिस्थान व्याप्त शक्ति जांनिये ॥ सब गायवेवारेको गाइवेमें कंठके संग उच्चार होय। न्यारो न्यारो कंठ पहचान्यो नही जाय। सो शब्द-सादृश्य जांनिये ॥

अथ बाजेनके समूहको नाम कुतप जांनिये ॥ सो तीन प्रकारको हें ॥ तांतिके बाजेको समूह जासों ततकुतप जांनिये ॥ १ ॥ मृदंग आदि चामके मढे बाजेको समूह अवनद्धकुतप जांनिये ॥ २ ॥ मूरलीआदि फूकके बाजेको समूह सुषिर कुतप ॥ ३ ॥ तहां ततबाजेको नाम कहे हें ॥ वीणा ॥ १ ॥ घोषवती वीणा ॥ २ ॥ चित्रा वीणा ॥ ३ ॥ विपंची वीणा ॥ ४ ॥ परिवादिनी वीणा ॥ ५ ॥ वल्लकी वीणा ॥ ६ ॥ कुब्जिका वीणा ॥ ७ ॥ जेष्ठा वीणा ॥ ८ ॥ नकुलेष्ठी वीणा ॥ ९ ॥ याको लौकीकमें कान्हून कहे हें ॥ किन्नरि वीणा ॥ १० ॥ जया वीणा ॥११॥ कूर्मावीणा ॥१२॥ पिनाकि वीणा ॥ १३ ॥ हस्तिका वीणा ॥ १४ ॥ शत तंत्रिका वीणा ॥ १५ ॥ औदंबरी वीणा ॥ १६ ॥ षट्कर्ण वीणा ॥ १७ ॥ पौणा वीणा ॥ १८ ॥ रावणहस्त वीणा ॥ १९ ॥ याको लौकीकमें रबाब कहे हें ॥ सारंगी वीणा ॥ २० ॥ आलपनी वीणा ॥ २१ ॥ ओरहूंको वीणाके भेद हें। ते तत बाजेके समूहको नाम ततकुतप जांनिये ॥ ऐसें हि अबनवद्ध ॥ १ ॥ कुतप ॥ २ ॥ सुषिर कुतप ॥ ३ ॥ के भेद जांनिये ॥ सो वाद्याध्यायमें कहे हें ॥

॥ इति प्रकीर्णाध्याय संपूर्णम् ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED
BY
B. T. SAHASRABUDDHE
Hon. Secretary Gayan Samaj, Poona.

PART V.

PRABANDHADHYAYA.

(Rules of composition of Songs &c.)

Price of the complete Work in seven parts

Rs. 10-8, or Rs. 2 each.

POONA:
PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1910.

पूना गायन समाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक

बलवंत त्रियंबक सहस्रबुद्धी

सेक्रेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ५ वा.

प्रबंधाध्याय.

पूना ' आर्यभूषण ' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण ग्रन्थका मूल्य रु. १०॥,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २.

१९१०.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

पंचम प्रबंधाध्याय–सूचिपत्र.

विषयक्रम. पृष्ठ.

पंचम प्रबंधाध्याय.

गीतके भेद, गांधर्व गान व मार्गी गानको लछन.

प्रथम श्रीशिवजीकों नमस्कार करे हैं ॥ स्वर । १ । राग । २ । ताल । ३ । वाद्य । ४ । प्रकीर्ण । ५ । आदिक गीतकी सामग्री जिनके अनु-ग्रहतें ॥ अह अग्यानि तरह सहजमें पावे जगतमें प्रतिष्ठावान् होय ॥ ऐसें श्रीशिवजी श्रीपार्वतीजी श्रीगणेसजी आदिक गणजुत हमारे विघ्नके समूहका दूरि करो हम ऊंनके चरणारविंदको नमस्कार करते हैं ॥

॥ अथ प्रबंध आदिक छंदमें मुख्य गीत है ताको लछन लिख्यते ॥

जहां श्रोताके चितकों अनुरंजन करे । सो षड्जादि सात स्वरनको क्रम उपक्रमसों राग रीतिसों समूहसों गीत जांनिये ॥ ता गीतके दोय भेद हैं ॥ गांधर्व गान । १ । मार्गी गान । २ । यह दोय जांनिये ॥ इनको लछन लिख्यते ॥

जो अनादि कालसों ब्रह्मा शिव भरत हनुमान । आदि मुनि संप्रदायसों प्रसिद्ध । ओर नारद तुंबरादिक गंधर्व जाको वरताव करे च्यारि पदारथको दाता ऐसो जो गान । सो गांधर्व गान जांनिये ॥ १ ॥

जो लोकीकमें जनरंजनके लिये । बडेबडे नायक कंबल अश्वतर आदिक वरताव कियो । अपनें गुणलछनसों मिल्यो ऐसें जो मार्गी देसी रागनको रचिवो । सो मार्गी गान जांनिये ॥ २ ॥

॥ तहां गांधर्व गानको विस्तार आलापरूप प्रथम कह्यो हैं ॥

अबे गानके दोय प्रकार हैं ॥ निबद्ध । १ । अनिबद्ध । २ । यह दोय गानके भेद जांनिये ॥ जामें धातु कहते । प्रबंधके उद्ग्राह आदि खंड वरतावके होत हैं ॥ अंगस्वर कहिये आदि छह आलाप आदि रीतिसों कीजिये ॥ ऐसो जो प्रबंध छेद । आदि रचनाको जो गाइवो । सो निबद्ध हैं । १ ।

जामें आलापकी रीति होय छंद प्रबंध रचना नही होय । सो गान

अनिबद्ध हें। सो यह अनिबद्ध रागाध्यायमें । १ । प्रकीर्णाध्यायमें । २ । आलापको प्रकार कह्यो हें। सो अनिबद्ध जांनिये ॥ तहां निबद्ध भेद। ३ । तीन हें ॥ प्रथम प्रबंध । १ । द्वितीय वस्तु । २ । तृतीय रूपक । ३ । यह बुद्धि-वान् पुरुष निबद्धके भेद जान लीजियें ॥ इति निबद्धके तीन भेद संपूर्णम् ॥

अथ प्रथम निबद्धको भेद प्रबंध हे ताको लछन लिख्यते ॥

ताको कहिवेको धातु । १ । अंगको । २ । लछन लिख्यते ॥

तहां प्रबंधको जो खंड सो धातु कहिये ॥ सो खंड च्यारि प्रकारको हें ॥ उद्ग्राह । १ । मेलापक । २ । ध्रुव । ३ । आभोग । ४ । यह च्यारि जांनिये ॥

अथ इन च्यारानको लछन कहे हें ॥

जो प्रबंधके आरंभको पहिलो भाग होय । सो पीडाबंधी नामको पहलो खंड उद्ग्राह जांनिये ॥ १ ॥ यह प्रथम धातु हें ॥

जो उद्ग्राह ध्रुव तीसरो खंड इनके मिलापके लिये । बीचमें दूसरो खंड रचिये । सो मेलापक जांनिये ॥ २ ॥ यह दूसरो धातु हें ॥

प्रबंधमें जो खंड अवश्य वरतिये ॥ जाके वरतावे विना प्रबंध खंडत-भयो जांनि पडे । सो खंड ध्रुव जांनिये ॥ ३ ॥ यह तीसरो धातु हें ॥

जो प्रबंधको पिछलो खंड होय । जामें इष्टदेवको वा कवीश्वरको नाम आवे । प्रबंध पूरो होय । आगें ओर खंडकी इच्छा नही होय । सो आभोग जांनिये ॥ ४ ॥ यह चोथो धातु हें ॥

इहां ध्रुवखंड । १ । आभोगखंड । २ । इन दोऊनके बीचमें एक अंतरा नामको खंड ओर होत हें । सो पांचमो धातु हें । सो अंतरा । १ । सालग । २ । सूड । ३ । रूपकभेदमें प्रसिद्ध हें । सो रूपकमें लीजिये ॥ ४ ॥ प्रबंधमें नही लीजिये । ५ । जेसें देहमें वात । १ । पित्त । २ । कफ । ३ । ये तीन धातु हें । तसें प्रबंधमें उद्ग्राह । १ । मेलापक । २ । ध्रुव । ३ । आभोग । ४ । ऐसे च्यारि धातु जांनिये ॥ तहां प्रथमके तीन भेद हें ॥

जहां मेलापक खंड नही होय । सो तीन धातुको प्रबंध जांनिये । १ ।

जहां च्यारों धातु संपूर्ण होय । सो च्यार धातुको प्रबंध जांनिये । २ ।

जहां मेलापक और आभोग ये नही होय । केवल उद्ग्राह और ध्रुव होय तहां दोय धातूको प्रबंध जांनिये । ३ । ऐसें तीन प्रकारको प्रबंध जांनिये ॥

अथ प्रबंधके अंग छह तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥ स्वर। १। बिरुद । २ । पद । ३ । तेनक । ४ । पाट । ५ । ताल । ६ । ये छह प्रबंध रूप पुरुषके अंग जांनिये ॥ तेन । १ । पद । २ । यह दोय प्रबंध पुरुषके नेत्र हैं ॥ पाट । १। बिरुद । २ । यह दोऊ प्रबंध पुरुषके हात हैं ॥ स्वर । १ । तान । २ । यह दोय प्रबंध पुरुषके पांव हैं ॥

अबें इन अंगनके लछन कहे हैं ॥ तहां षड्ज आदि सात स्वरनके स्थानमें उच्चारसहित । १ । जो स रि ग म प ध नि । १ । यह सात अछिरतें स्वर जांनिये । १ ।

जहां दान । १ । बडाई । २ । भलाई । ३ । शूर वीरता । ४ । जो प्रसिद्ध पंडिताई आदि गुणसों नाम होय । सो बिरुद जांनिये । २ ।

जो कुल । १ । जाति । २ । अवस्था । ३ । आदि जतायवेको सब्द । सो पद जांनिये । ३ ।

जो तत्वके माहि ॐ सो महाआदि वाक्य हैं ॥ ॐ ततसत् ॥ या रीतिसों ब्रह्मको जो बतायवो हैं । या रीतिसों स्वर वरतिवेको तननारानिरी यों रीतिसों अछिरको समूहसों तेन जांनिये ॥ यह तेन शब्द मंगलको दाता हे ॥ ब्रह्मस्वरूप हे । ४ ।

जे मृदंग । १ । वीणा । २ । मुरली । ३ । जलतरंग । ४ । आदि बाजेमें तकधिनिथोम इत्यादि अछिर वरतिये । सो पाट जांनिये । ५ ।

जो चंचतपुट आदि तालनके भेद हैं । सो ताल जांनिये । ६ । इति धातुअंग लछन संपूर्णम् ॥

यह उद्ग्राह आदि । ४ । धातुस्वर आदिक । ६ । छह अंग जहां शास्त्रोक्त रीतिसों रचिये । सो प्रबंध जांनिये ॥

अथ प्रबंधकी पांच जाति हैं तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥ मेदिनी । १ । आनंदिनी । २ । दीपनी । ३ । भावनी । ४ । तारावली । ५ ।

॥ यह पांच जाति हैं तिनके लछन कहे हैं ॥

जहां प्रबंधमें छहो अंग होय । ताकी जाति मेदिनी जांनिये । १ ।

जहां पांच होय । सो आनंदिनी जांनिये । २ ।

जहां च्यार होय । सो दीपनी जांनिये । ३ ।

जहां तीन होय । सो भावनी जांनिये । ४ ।

जहां दोय होय । सो तारावली जांनिये । ५ ।

जहां दोऊ आचारिज इन पांचों जातिनके न्यारे नाम कहे हैं ॥ श्रुति ॥ १ ॥ नीति ॥ २ ॥ सेना ॥ ३ ॥ सेन ॥ ४ ॥ कविता ॥ ५ ॥ इति चंपूर्ण पांच जातिके नाम–लछन संपूर्णम् ॥

अबे प्रबंधके दोय भेद हैं ॥ अनिर्युक्त ॥ १ ॥ निर्युक्त ॥ २ ॥

जहां छंद तालका नियम नही होय ॥ अनेक छंद ॥ १ ॥ ताल ॥ २ ॥ लीजिये । सो अनिर्युक्त जांनिये । १ ।

जहां एक ताल एक छंदको नियम होय । सो निर्युक्त जांनिये । २ ।

फेर या प्रबंधके तीन भेद हैं ॥ सूडस्थ । १ । आलिसंश्रय । २ । विप्रकीर्ण । ३ । इन तीनों भेदके लछन कहे हैं ॥

॥ अथ प्रथम सूडस्थ प्रबंधको लछन लिख्यते ॥

जहां शृंगार आदि नवरस । १ । रसाभास । २ । भावाभास । ३ । भावोपद । ४ । भावसंधि । ५ । भाव शांति । ६ । भाव सबलत्व । ७ । ओर रसवत् । ८ । ऊर्जस्वी । ९ । प्रेय । १० । समाहित । ११ । ये रस अलंकार उपमादिक अलंकार । १२ । प्रसादादिक गुण । १३ । यम अनुप्रास आदि शब्द अलंकार । १४ । गौडी वैदर्भी आदि रीति । १५ । सहित शब्द अर्थको समूह । सो काव्य जांनिये ॥ सो काव्यके सूनिवेतें तत्काल श्रोतानकों सुख होत हैं ॥

ऐसो जो काव्य कोऊ कवि करे । ताको लाभ ॥ १ ॥ जस ॥ २ ॥ प्रतिष्ठा ॥ ३ ॥ धर्म ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ ५ ॥ काम ॥ ६ ॥ मोक्ष ॥ ७ ॥ इष्ट वस्तुकी प्राप्ति ॥ ८ ॥ अनिष्टको परित्याग ॥ ९ ॥ ज्ञानकी प्राप्ति ॥ १० ॥ लोकमें पूजा ॥ ११ ॥ बहुमान ॥ १२ ॥ ऐसें घणें फल पावे ॥

या काव्यके कारण पूर्वजन्मको संस्कार गु
साधुके सन्मानतें कृपा। आदिक ॥ व्याकरण । १ । अ
पिंगल काव्य । ४ ।

इनको गुरु संप्रदायसों पढिवो।१। सास्त्रनके
सुनाइवो । २ । पढिवो पढाइवो आदिकतें अभ्यास करि

ये काव्यके तीन कारण जांनिये ॥ इतनो समझिकें कविता बनावे । सो कविता प्रमान होय हे ॥ सो ऐसें पढियेसों कविता कीजिये। सो कविता भारती कहिये । सो भारती च्यारि प्रकारकी हे ॥ संस्कृत । १। प्राकृत । २ । पैसाची । ३ । मागधी । ४ । यह च्यारि हें ॥

जो वाणी व्याकरणसों शुद्ध । सो देववाणी । सो संस्कृत जांनिये। १ ।

जो किन्नरनकी वाणी संस्कृतके समान हें ॥ जो सरस्वतीकी बाल-अवस्थाकी वाणी । सो प्राकृत जांनिये । २ ।

जो पिशाच । १ । भूत । २ । प्रेत। ३ । निशाचर। ४। इनकी वाणी सो। पैसाची हे । ३ ।

जो मागध देशकी अथवा ग्रामीन जनकी भाषा। सो मागधी जांनिये।४।

इन च्यारों भाषामें मुख्य भाषा संस्कृत हें ॥ याके तीन भेद हें ॥

वचनीका रूप संस्कृत होय । सो गद्य जांनिये । १ ।

छंदबंध संस्कृत होय । सो पद्य जांनिये। २ ।

वचनिका पद्य मिले होय। सो मिश्र जांनिये । ३ ।

जहां अनेक देशकी भाशा हें। सो आपभूषण वाणी जांनिये ॥ यह अपभ्रंश हे प्राकृत हे ॥

जो वचनिका रूप काव्य । सो अनिबद्ध हें । जो छंदरूप काव्य । सो निबद्ध हें ॥ ऐसें काव्यके दोय भेद जांनिये ॥ सो काव्य तीन प्रकारको हे ॥ उत्तम । १ । मध्यम । २ । अधम। ३ ।

जहां अर्थतें पद्य अर्थ मुख्य होय। सो काव्य उत्तम जांनिये । १ ।

जहां अर्थ अरु व्यंग्य समान होय। सो काव्य मध्यम जांनिये । २ ।

जहां अर्थतें व्यंग्य अर्थ उदासीन होय । सो काव्य अधम जांनिये। ३।

जा । १ । लक्षणसों । २ । व्यंजनसों । ३ । जे तीन अंतनकों नाम बाच्य । १ । लक्ष्य । २ । व्यंग्य । ३ । भेद हैं । सो साहित्य शास्त्रसों जांनिये ॥ इति मूडस्य र्णम् ॥

॥ अथ मात्रा गण अछरनको गुणदोष मात्रा लिख्यते ॥

जहां मात्रा गण पांच जांनिये ॥ टगण । १ । ठगण । २ । डगण । ३ । ढगण । ४ । णगण । ५ । तहां टगण छह मात्राको । ६ । ठगण पांच मात्राको । ५ । डगण चार मात्राको । ४ । ढगण तीन मात्राको । ३ । णगण दोय मात्राको । २ । इहां लघुकी एक मात्रा है ॥ अथ टगणके भेद एक । १ । ठगणके भेद आठ । ८ । डगणके भेद पांच । ५ । ढगणके भेद तीन । ३ । णगणके भेद दोय । २ ।

अथ तेरह भेदके नाम लिख्यते ॥ हर । १ । शशि । २ । सूर्य । ३ । शक्ति । ४ । शेष । ५ । आहि । ६ । कमल । ७ । ब्रह्मा । ८ । कलि । ९ । चंद्र । १० । ध्रुव । ११ । कर्म । १२ । सालियर । १३ । यह तेरह भेद जांनिये ॥ यह रगण आदि पांचों गणनके नाम है ॥ बगण । १ । पगण । २ । चगण । ३ । नगण । ४ । डगण । ५ । यह क्रमसों नय । ऐसेंही पांच कल तीन कल दोय कल । इन गणनके भेद नाम पिंगलसों समझिये । इहां कल मात्राको नाम हैं । यह पांच मात्रा गणसों गाथा रूपहा कहिये । दोहा । इन आदि लेकें जे पिंगलके छंद हैं । ते यथा योग्य रचिये । इन छंदनमें कहुंक गुरु अक्षर एकार अथवा ओकार आदिक गुरु आय परे तामें गुरु उच्चार किये छंद बिगत होय तो । इन गुरु अक्षरनको सितावि हलकी जिभसों लघु अक्षरकी सिनाई लघु करि पढिये ताको दोष नही है ॥ यह पिंगल नागकी आज्ञा हैं ॥

॥ अथ वर्णके आठ गणनको नाम—लछन विचारफल लिख्यते ॥

जहां तीन गुरु अछर होय । सो मगण हैं ॥ राधाजी ॥ १ ॥

जहां आदिमें एक लघु पीछे दोय गुरुको यगण है ॥ भवानी ॥ २ ॥

जहां आदि अंतमें गुरु होय । बीचमें एक लघु होय । सो रगण हैं ॥ भारती ॥ ३ ॥

आदिमें दोय लघु होय । अंतमें एक गुरु होय । सो सगण हें ॥ शिवजी ॥ ४ ॥

जहां आदिमें दोय गुरु होय । अंतमें एक लघु होय । सो तगण हें ॥ श्रीनाथ ॥ ५ ॥

जहां आदि अंतमें लघु होय । बीचमें एक गुरु होय । सो जगण हें ॥ मुरारी ॥ ६ ॥

जहां आदि एक गुरु होय । अंतमें दोय लघु होय । सो भगण हें ॥ राघव ॥ ७ ॥

जहां तीन अक्षर लघु होय । सो नगण हें ॥ तपन ॥ ८ ॥ ऐसें ये आठ गण जांनिये ॥

अथ आठों गणनकें देवता । १ । पूल । २ । शत्रु । ३ । भृत्य । ४ । उमसी । ५ । मित्रता । ६ । इनके भेद लिख्यते ॥ म गणको देवता ।पृथ्वी । लक्ष्मी प्राप्ति फलहे । १ । य गणको देवता ।जल। सुखलाभ फलहें ।२। र गणको देवता ।अग्नि । मृत्यु फलहे । ३ । स गणको देवता। वायु । परदेस गमन फलहे । ४ । त गणको देवता । आकाश । शून्य फलहे । ५ । स गणको देवता ।सुरज। रोग फल हे । ६ ।भ गणको देवता । चंद्रमा ।जस फलहे ।७। न गणको देवता ।स्वर्ग । आयु वृध्द फलहे । ८ । यह आठो गण उद्ग्राह ॥ १ ॥ ध्रुव ॥ २ ॥ आभोग ॥ ३ ॥ इन तीनोंनके आदिमें । एकठोरसों भ गण च्यार हे । भ गण ॥ १ ॥ न गण ॥ २ ॥ य गण ॥ ३ ॥ भ गण ॥४॥ सो लीजिये । बाकी च्यार गण असुभहें । ज गण ॥ १ ॥ र गण ॥ २ ॥ त गण ॥ ३ ॥ स गण ॥ ४ ॥ यह गण नही लीजिये ॥

अथ प्रबंधके आदिमें दोय गण लीजिये । ताके विचार लिख्यते ॥ मगण ॥ १ ॥ न गण ॥ २ ॥ ये दोनो आपसमें मित्र हें॥ भ गण ॥१॥ य गण ॥ २ ॥ यह दोनों सेवकहें ॥ अवें इनको फल कहे हें ॥

जहां मित्रगण दोय । सो मंगलको देत हें ॥ १ ॥

जहां दोय सेवक होय । तहां कारिज सिध्द हें ॥ २ ॥

जहां दोय उदासीन होय । तहां रोग करत हें ॥ ३ ॥

जहां दोय शत्रु होय । तहां स्वामीको कष्ट करे हैं ॥ ४ ॥

ओर जहां प्रथम मित्र ।१। सेवक ।२। दोनु मिले। तहां विजय होत हैं ॥

जहां प्रथम सेवक ॥ १ ॥ मित्र दोनु मिले तब कारिज सिद्ध हैं ॥ २ ॥

जहां मित्र उदासीन ॥ २ ॥ दोनु मिले तहां कष्ट होत हैं ॥ ३ ॥

जहां उदासीन ॥ १ ॥ मित्र ॥ २ ॥ दोनु मीलि मिले । तहां दुःख होत हैं ॥ ४ ॥

जहां मित्र ॥१॥ शत्रु ॥ २ ॥ दोनु मिले। तहां अंगमें पीडा होय हैं ॥५॥

जहां शत्रु मित्र दोनु मिले । तहां सिद्ध नही होत हे ॥ ६ ॥

जहां भृत्य ॥ १ ॥ उदासीन ॥ २ ॥ दोनु मिले। तहां हानि करे ॥ ७ ॥

जहां उदासीन ॥ १ ॥ भृत्य ॥ २ ॥ दोनु मिले । तहां विपदा करे ॥८॥

जहां उदासीन ॥ १ ॥ शत्रु ॥ २ ॥ दोनु मिले। तहां वेग करे ॥ ९ ॥

जहां शत्रु ॥ १ ॥ उदासीन ॥२॥ दोनु मिले । तहां नास करे ॥१०॥

जहां भृत्य ॥ १ ॥ शत्रु ॥२॥ दोनु मिले । तहां पणों भृत्य करे ॥११॥

जहां शत्रु ॥ १ ॥ भृत्य ॥२॥ दोनु मिले । तहां घरको क्षय करे ॥१२॥

इति दोय गणको विचार संपूर्णम ॥

अथ अकारादि अक्षरनके आठ वर्ग तिनके नाम—लच्छन देवता फल लिख्यते ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः । १ । क ख ग घ ङ । २ । च छ ज झ ञ । ३ । ट ठ ड ढ ण । ४ । त थ द ध न । ५ । प फ ब भ म । ६ । य र ल व । ७ । श ष स । ८ । ह । कंठस्थान । ळ । दंतस्थान । क्ष । कंठस्थान । मर्धास्थान ॥ तत्र प्रथम अ वर्णको देवता चंद्रमा हे । सो आयुवृद्धि करे हे ॥ १ ॥ क वर्गको देवता मंगल हे । सो राज तेज वधावत हे ॥ २ ॥ च वर्गको देवता बुध हे । सो जस करे हे ॥ ३ ॥ ट वर्गको देवता गुरु हे । सो सौभाग्य करे हे ॥ ४ ॥ त वर्गको देवता भृगु हे । सो सुंदर वस्तु करे हे ॥ ५ ॥ प वर्गको देवता सनिश्वर हे । सो व्याधि करे हे ॥ ६ ॥ य वर्गको देवता सूर्य हे । सो मृत्यु करे हे ॥ ७ ॥ स वर्गको देवता राहु हे । सो शून्य फल करे हे ॥ ८ ॥ ऐसें वर्गके फल वीत गीत प्रबंधकी आदिमें रचिये । ओर कबित श्लोक आदि-

छंद गीत प्रबंधकी आदिमें । ह ॥ १ ॥ ज ॥ २ ॥ घ ॥ ३ ॥ उ ॥ ४ ॥ ध ॥ ५ ॥ र ॥ ६ ॥ व ॥ ७ ॥ भ ॥ ८ ॥ ड ॥ ९ ॥ ञ ॥ १० ॥ ण ॥ ११ ॥ न ॥ १२ ॥ म ॥ १३ ॥ यह तरह अक्षरही नहि लीजिये ॥

अथ श्रीमहादेवजीनें अक्षर सहरनको न्यारो न्यारो फल कह्यो है सो लिख्यते ॥

जहां अकारादि सोलह स्वर हें ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः इनको मंगल फल हे ॥ क कीर्ति ॥ १ ॥ ख दुःख ॥ २ ॥ ग ग्रामलाभ ॥ ३ ॥ घ रिपुको भय करे ॥ ४ ॥ ङ लक्ष्मी होय ॥ ५ ॥ च अश्वलाभ ॥ ६ ॥ छ राज्यलाभ ॥ ७ ॥ ज स्त्रीकष्ट ॥ ८ ॥ झः ञः यह दोनु निजसरीरको कष्ट करे ॥९।१०॥ ट गोलाभ ॥११॥ ठ भय करे ॥१२॥ ड सोक करे ॥ १३ ॥ ढ सुवर्णकी प्राप्ति करे ॥ १४ ॥ ण रत्नलाभ ॥ १५ ॥ तः रूपको लाभ ॥ १६ ॥ थ घने धनको लाभ ॥ १७ ॥ द कल्याण करे ॥ १८ ॥ ध महा आपद करे ॥ १९ ॥ न नास करे ॥ २० ॥ प विद्यालाभ करे ॥ २१ ॥ फः भोम करे ॥ २२ ॥ ब महा भय करे ॥ २३ ॥ भः विख्यात करे ॥ २४ ॥ मः मृत्यु करे ॥ २५ ॥ यः राज्य तें मृत्यु करे ॥ २६ ॥ रः शत्रुसों भय करे ॥ २७ ॥ लः पुत्रलाभ करे ॥ २८ ॥ वः धनलाभ करे ॥ २९ ॥ शः शून्य फल करे ॥ ३० ॥ ष शत्रूसों विग्रह करावे ॥ ३१ ॥ सः क्षत्रिसों मिलावे ॥ ३२ ॥ हः जसकरे ॥ ३३ ॥ क्षः शुभ करे ॥ श्री ॥ १ ॥ लक्ष्मी ॥ २ ॥ रति ॥ ३ ॥ शोभन ॥ ४ ॥ इन च्यारोंके नाम आवे तहां अक्षय शुभ जांनिये ॥ जैसें नमो नारायणाय नमः शिवाय नमः रामाय नमः कृष्णाय नमः ॥ ऐसें आवे जहां लीजिये ॥ हरिके नाममें हकार श्रेष्ठ हे ॥ हरि ॥१॥ हंस ॥ २ ॥ हिरण्य ॥ ३ ॥ हरहर ॥ ४ ॥ जयके नाममें जकार श्रेष्ठ हें । जैसें जान्हविकों जाय करे ॥ ऐसें देव ॥ १ ॥ मंगल ॥ २ ॥ वाचक शब्दमें जो कोऊ अशुभ अक्षर आवे । सो शुभ जांनिये ॥

अथ प्रबंधमें नव अक्षर नही लीजिये तिनको क्रम लिख्यते ॥

जहां गीतप्रबंधके पिंडाबंधिकी आदिमें । न । १ । ग । २ । र । ३ ।

यह तीन अक्षर नही लीजिये ॥ गीतप्रबंधके अंतरामें । स । १ । त । २ । ल । ३ । ए तीन नही लीजिये । ऐसें सव अक्षर नही लीजिये ॥ उद्ग्राहकी आदिमें दकार । १ । अंतरामें आदिमें मकार । २ । आभोगमें मकार । ३ । ए तीनो जमो तीन अक्षर लीजिये । सो शुभफल होय ॥ यह विचार महाराजनकी स्तुति प्रशंसामें कीजिये ॥ **इति श्रीशिवजीके कहे वर्णविचार गुणदोष संपूर्णम् ॥**

अथ पद वाक्य अर्थ । ३ । इनके सोलह दोष हैं ते दूर करि कविता कीजिये । सो नाम लिख्यते ॥ तहां प्रथम पददोष कहत हैं ॥ असाध । १। अप्रयुक्त । २ । कष्ट । ३ । असमर्थ । ४ । अन्यार्थ । ५ । अपुष्टक । ६ । असमर्थ । ७ । अप्रतीत । ८ । क्लेश । ९ । गूढ । १० । नेयार्थ । ११ । संदिग्ध । १२ । विरुद्ध । १३ । अप्रयोजक । १४ । देसको शब्द । १५ । ग्रामशब्द । १६ । **इति पददोष नाम संपूर्णम् ॥**

अथ वाक्यदोष नाम लिख्यते ॥ शब्दहीन । १ । क्रमभ्रष्ट । २ । विसंधि । ३ । पुनरुक्ति । ४ । व्याकीर्ण । ५ । काव्यसंकीर्ण ।६। अपदवाक्यगर्भित ।७। भिन्नलिंग ।८। भिन्न ।९। वचन ।१०। न्यूनोपम ।११। अधिकोपम ।१२। छंदर्भग । १३ । यतिभंग । १४ । असरीर । १५ । रीतिहीन । १६ । **इति वाक्यदोष नाम संपूर्णम् ॥**

अथ अर्थदोष नाम लिख्यते ॥ आप्पार्थ ।१। व्यर्थ ।२। एकार्थ । ३ । सतसंशय । ४ । अपक्रम ।५। खिन्न ।६। अतिमात्र ।७। पुरुष ।८। विरस ।९। हीनोपम । १० । अधिकोपम । ११ । असतवृक्षोपम । १२ । अप्रसिद्धोपम ।१३। अलंकारहीन । १४ । असलील । १५ । **इति अर्थदोष नाम संपूर्णम् ॥**

अथ रसदोष लिख्यते ॥ व्यभिचारीभाव अपरादिरसस्था इति आदि । इनको शब्द सो कहिवो ॥ अनुभाव विभाव । इनको कष्टसों प्रकाश विभाव । १ । अनुभाव । २ । संचारि । ३ । इनको विपरितग्रहण करिवो । थोरोवर्नन चाहिये । जहां अधिक वर्नन न करिवो । विना समासके ठिकाणें । विना समज वाक्यको पूरन करिवो जो जायगा वर्नन करिवकी होय ॥ तहां वर्नन नही करे ॥ जहां नही वर्नन चाहिजे ॥ तहां वर्नन करे मुख्य वस्तुकोहीन वरनिवो । कामदेवके

नाम प्रगटखेवो । ८ । ये आठ रसदोषहे सो नही लीजिये ॥ इति रसदोष नाम संपूर्णम् ॥

जो इतनें दोषनको समजजो गुण हे । जिनको समझे तिनकी कविता प्रमाण होत हे ॥

॥ अथ सूडप्रबंधके आठ भेद हे तिनको नाम अरु लछन लिख्यते ॥

एला, करण, ढंकि, वर्तिनी, झोंबड, लंभ, रास, एकताली । ये आठ भेद हे । इन भेदनसों सूंडप्रबंधके आठ भेद जांनिये ॥

अथ एलाप्रबंधको लछन लिख्यते ॥ तहां प्रथम एलामें तीन चरन कीजिये ॥ इन तीनों चरनमें प्रथम चरनके दो खंड लीजिये । वे दोऊ खंड अनु प्रासनुत कीजिये ॥ अरु दोऊ खंडके अर्खारकी रचना न्यारि न्यारि होय। सो एक गांनमें दोऊ खंड गाइये ॥ यह दोय खंडको प्रथम चरन हे । ताको नाम काम जांनिये ॥

ता उपरांत दूसरो चरन आलापके गमकसों पूरन कीजिये ॥ बहुत अखीर नहीं कीजिये ॥ अकारिके स्वर वरतिवेसों दूसरो चरन पूरन करि रचिये ॥ या दूसरो चरनको नाम मन्मथज्ञत जांनिये ॥

ता उपरांत तीसरे चरनमें तीन खंड कीजिये ॥ उन तीनों खंडनको नाम पल्लव हे ॥ इन तीनोनमें पहले दोय खंड विलंबित लयसों गाइये ॥ अरु याको तीसरो खंड द्रुत लयसों गाइये ॥ इन तीनो खंडको नाम क्रमसों कांत । १ । जित । २ । मत्त । ३ । यह तीनो जांनिये ॥ इन तीनो खंडको तीसरो चरन होत हे । याको नाम पल्लव हे ॥ ये तीन मात्र चरन एक गांनमें गाइये । तब इन तीन चरनको उद्ग्राह खंड एक होत हे । सो उद्ग्राह एलाप्रबंधको प्रथम धातु जांनिये ॥ १ ॥

ता उपरांत दूसरो चरन जो होय तामें ऐसाहि उद्ग्राहकीनाई तीन चरन करि । प्रथम चरनके दोय खंड अनुप्रासजुत एक गानमें गाइये । सो एक पद । १ । दूसरो चरन अकारिमें स्वरनकी गमकसों रचिये । २ । तीसरे चरनमें तीन खंड पल्लव नामके करि । ३ ।पहले दोय खंड विलंबित लयमें गाईये । ४ ।

तीसरो खंड द्रुतलयमें गाइये । ५ । इन पांचो पदनको नाम क्रमसों । विकारिणः, मांधातृ, सुमती, शोभी, सुशोभी । यह पांच जांनिये ॥ ऐसें पांच खंड तीन चरनमें होय ॥

उन तीन चरनको एला प्रबंधको दूसरो पद जांनिये ॥ ऐसे एलाके दोय पदमें दस लघुपद होत हे ॥ प्रथम पद पांचोको अरु दूसरो पद पांचवो । यह दूसरो पद हूं एक गांनमें गाइये। यह दूसरो एलाको पद उद्ग्राहमें जांनिये ॥ २ ॥

या उपरांत एला प्रबंधको तीसरो पद कीजिये॥ या पदके दोय चरन रचि प्रथम चरनके दोय खंड पहलिकीसिनाई । अनुप्रासजुत एक गांनमें गाइये । सो एक पद ॥ १ ॥ फेर दूसरा चरन अकारिमें स्वरनके गमकसों रचिये। या दूसरे चरनके अंतिमें संबोधन अर्थसों देवताको अथवा राजाको नाम धरिये । जैसे हे राम हे कृष्ण हे युधिष्ठिर हे विक्रम हे भोजराज । ये संबोधन अरथमें देवता वा राजाके नाम हे । सो ऐसें नाम धरिये अपनी रुचिसों ऐसो दूसरो चरन होय ॥ २ ॥

पहले गांनसों दूसरे गानमें गाइये । इन दोऊ चरन नाम क्रमसों । गीतक ॥ १ ॥ उचित ॥ २ ॥ यह दोय जांनिये । इन दोऊ पदको एक पद होय । सो एक प्रबंधको तीसरो पद होय । ऐसें तीन पदके बारह पद होतहे । ते बारह उद्ग्राहमें जांनिये जे आचारिज एला प्रबंधके मेलापक धातु नही मानेहें । उद्ग्राह ॥ १ ॥ ध्रुव ॥ २ ॥ आभोग ॥ ३ ॥ इन तीन धातुको मानेहें ॥

तिनके मतमें तो एलाके तीनों पद उद्ग्राहमें गावेहे । ओर जे आचारिज मेलापक धातु एला प्रबंधमें लेतहे । तिनके मतमें एलाके दोय पद पहले तीसरे पदके प्रथम पद गीतक नामको । ऐसें यह ग्यारह खंड उद्ग्राहमें लेतहें । ओर तीसरे पदको दूसरो खंड उचित नामको मेलापक धातुमें लीजिये ॥

यह महाराजाधिराज राज सोमेश्वर देव कहत हें । सो सारंगदेव आदि देव अनुष्टुप चक्रवर्ती आदि संगीतके कर्ता सोमेश्वर आदि मतपर पुराणा मानत आये हें । सो एला प्रबंधमें उद्ग्राह ॥ १ ॥ मेलापक ॥ २ ॥ यह दोऊ धातु जांनिये । ऐसें तीन पाद रचिकें ताउपरांत एक चरन कीजिये । तामें तीन खंड राच प्रथम दोय खंड मध्य लयसों एक गांनमें गाइये ॥ २ ॥ ओर तीन खंड

विलंबित लयसों पहले गानसों दुसरे गांनमें गाइये । ऐसें तीन खंड कीजिये ।इन तीनों खंडनमें काहू एक खंडमें इष्ट देवताको वा राजाको नाम राखिये ॥

इन तीनों खंडको क्रमसों नाम विचित्र ॥१॥ वासव ॥ २ ॥ मृदु ॥ ३ ॥ यह तीन जांनिये । इन तीन खंडको एक पद होय । सो एला प्रबंधको ध्रुव पद होयहे । याहीको ध्रुव धातु तीसरो कहतहे ॥ ३ ॥ ता उपरांत एक पद होय । सो या पदमेंसो एला प्रबंध बनायवेवारो कवीश्वर होय । सो आपनें नामकी छापधुनि । आपनें इष्ट देवसों वा आपनें स्वामीराजासों आपनें मतकी रुचिकी विनति करे । जैसे मनोरथ होय तैसो रचे । या पदको नाम सुचित्र हे । या पदको नाम आभोग कहतहे । यह प्रबंधको चोथो धातु आभोग जांनिये ॥

ऐसे एला प्रबंधमें प्रथम उद्ग्राह धातु ॥ १ ॥ मेलापक धातु ॥ २ ॥ ध्रुव धातु ॥ ३ ॥ आभोग धातु ॥ ४ ॥ सास्त्रोक्तरीति गुरुसंप्रदायसों समझिकें रचे तब देवता प्रसन्न प्रबंध होय वरदान देत है मनोरथ पूरन करत है ॥

या प्रबंधको बनाइवो गाइवो महाकठिनहै प्रभुके पूरन अनुग्रहसों होत है । यामें तहां उद्ग्राहके ग्यारहपद ॥ ११ ॥ मेलापकको एक पद ॥ १ ॥ ध्रुवके तीन पद ॥ ३ ॥ आभोगको एक पद ॥ १ ॥ एसें सब मिलके सोलह पद होत हें । इनको दोय वार गाइ ध्रुवके पहले खंडमें विश्राम कीजिये । ओर याको आरंभ तालके अतित ग्रह कहिये । पहले ताल लगायके । अथवा अनागत कहिये ॥ पहले प्रबंधको उच्चार करे पीछें तालको आरंभ ऐसी रीतिसों एला प्रबंधमें तालकों ग्रह कीजिये । यह भरत मतंग हनुमान आदि संगीतशास्त्रके करता कहे हे । या एलामें खंडताल ॥ १ ॥ द्वितीयताल ॥ २ ॥ कंकालताल ॥ ३ ॥ प्रतिताल ॥ ४ ॥ इन च्यारों तालनमें जो इछा होय सो एकताल राखिये । ओर या एला प्रबंधके अक्षरनमें इष्ट देवको वा राजाको । दान महिमा ॥ १ ॥ सौभाग्य महिमा ॥ २ ॥ शूरवीरता ॥ ३ ॥ धीरजता ॥ ४ ॥ आदिगुणहे तिन-को वरणनही कीजिये । यह नियुक्त नामको एला प्रबंधहे ॥

यह एला प्रबंध सिगरे प्रबंधको राजाहे । यांके अनेक भेदहें तिनमें कोऊ कोऊ भेद मतंगादि मुनिराजके मतसों कहेंगे ॥ **इति एला प्रबंधको सामान्य लछन संपूर्णम् ॥**

अथ एला प्रबंधके नाम देवता । १ । और उद्ग्राहमें । मेलापक । २ । ध्रुव ॥ ३ ॥ आभोग ॥ ४ ॥ इन च्यारो धातुनके मिलिके सोलह पद हैं तिनके नाम देवता लिख्यते ॥

जहां एला शब्दमें । अकार इकार ळकार यह तीन अक्षर हे तिनमें अकारके स्वामी विष्णु ॥ १ ॥ इकारके स्वामी कामदेव ॥ २ ॥ ळकारकी स्वामी लक्ष्मी ॥ ३ ॥ ऐसें तीन अक्षरनके तीन देवता हैं । ये तीन देवता एला प्रबंधके जांनिये । औरनके सोलो पदनको क्रमसो नाम कहतहें । काम ॥ १ ॥ मन्मथवत ॥ २ ॥ कांत ॥३॥ जित ॥४॥ मत्त (मित्र) ॥५॥ विकारिणः ॥६॥ मांधातृ ॥ ७ ॥ सुमति ॥ ८ ॥ शोभि ॥ ९ ॥ सुशोभि ॥ १० ॥ गीतक ॥११॥ यह ग्यारह नाम उद्ग्राह धातुके क्रमसों ग्यारह पदनके जांनिये । और अद्भुत ॥ १२ ॥ यह मेलापक धातुके जांनिये । मेलापकमें एकहि पद होत हे । याको नाम कोऊक उदित कहत हे । ऐसें विचित्र ॥ १३ ॥ वासव ॥१४॥ मृदु ॥ १५ ॥ यह तीन नाम ध्रुनि धातुके तीनों खंडके जांनिये । अरु सुचित्र ॥ १६ ॥ यह नाम आभोग धातुको पद हैं । यहां आभोगको एकही पद हे । अवं इन पदनके देवता कहत हैं । पद्मालया ॥१॥ पत्रिणी ॥२॥ रंजनी ॥ ३ ॥ सुमुखी ॥ ४ ॥ शची ॥ ५ ॥ वरेण्या ॥ ६ ॥ वायुवेगा ॥ ७ ॥ वेदिनी ॥ ८ ॥ मोहिनी ॥ ९ ॥ जया ॥ १० ॥ गौरी ॥ ११ ॥ ब्राह्मी ॥ १२ ॥ मातंगी ॥ १३ ॥ चंडिका ॥ १४ ॥ विजया ॥ १५ ॥ चामुंडा ॥ १६ ॥ ये सोले देवता क्रमसों सोलह पदके जांनिये ॥ **इति पदनके नाम देवता संपूर्णम् ॥**

अथ एला प्रबंधके सातवे पद मांधातृतें लेकें सोलहवे पद सुचित्रता पद सदनमें दश प्राणहै तिनके नाम–लछन लिख्यते ॥ समान ॥ १ ॥ मधुर ॥ २ ॥ सांद्र ॥ ३ ॥ कांत ॥ ४ ॥ दीप्त ॥ ५ ॥ समाहित ॥ ६ ॥ अग्राम्य ॥ ७ ॥ सुकुमार ॥ ८ ॥ प्रसन्न ॥ ९ ॥ ओजस्वी ॥ १० ॥ यह दस प्राणनके नाम जांनिये ॥

अवे इनके लछन लिख्यते ॥ जहां ध्वनि ॥ १ ॥ अर अक्षर ॥ २ ॥ यह दोऊ मिपट थोरे होय । सो प्राण समान नाम जांनिये ॥ १ ॥

जहां थोडी ध्वनिसों स्वरनको उच्चार करि अल्प मूर्छना कहिये। जो तांनके पहले स्वरको उच्चार करि। आरोह क्रमसों वा अवरोह क्रमसों बीचके स्वरनको सितावि अतिसूक्ष्म उच्चार करि। पिछले स्वरको उच्चार कीयेतें अल्प मूर्छना होत हे। या अल्प मूर्छनासों स्वरनको उच्चार होय। सो मधुर प्राण जांनिये॥ २॥

जहां अक्षर बहुत होय ओर गाइवेके स्वरकों थोडे होय। यातें गाइवेमें थोरि धुनिसों बहुत अक्षर आवे। ओर उन स्वरनको पेठाबताय स्थानेंमें होय। सो सांद्र प्राण जांनिये॥ ३॥

जहां सुंदर मधुर धुनिसों स्वरनमें अक्षरनको उच्चार कीजिये। सो कांत प्राण जांनिये॥ ४॥

जहां तारस्थानके स्वरनमें अथवा गहरि ध्वनिके स्वरनमें अक्षर वरतिये। तीव्रतासों। सो दीप्त प्राण जांनिये॥ ५॥

जहां स्थाइ वर्णके स्वरमें ठहराय गमक वरतिये। कहु कहु गमक जूत अक्षर जूत अक्षर बहु वरतिये गमक अक्षर एक रूपकर वरतिये। सो समाहित प्राण जांनिये॥ ६॥

जहां पदके अंग जे पद तिनके अक्षर जे होय। तिनके पहले पहले पदके दोय दोय वा तीन तीन अक्षर आगले आमले पदकी आदिमें कहि कहि आगले आगले पदको उच्चार होय। एसेंहि उन पहले पदनके अंत अक्षरनके जे स्वर होय। तिनको आगले आगले पदनके स्वरनकी आदिमें उच्चार करि। आगले पदनके स्वरको उच्चार होय। या रीतिसों अक्षरनकी ओर अक्षरनके स्वरनकी रचना होय। जैसें रामचंद्र॥ १॥ कृष्णचंद्र ॥ २॥ इन दोऊ पदनमें पहला पद रामचेंद्रहे ताके अंतमें दोय अक्षर तो चंद्र यह। ओर तीन अक्षरमें चंद्र यह तो रामचंद्र पहले कहिये॥ फेरचंद्र रामचंद्र यह दोय वा तीन अक्षर कहि कृष्णचंद्र पदको उच्चार कीजिये। फेर कृष्णचंद्र पदके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर। ओर तीन अक्षर कृष्णचंद्रके पिछले दोय चंद्र जो अक्षर। ओर तीन अक्षर कृष्णचंद्रको उच्चार करि। आगलो जो पद होय। याको उच्चार कीजिये। या रीतिसों पदनमें। अक्षरकी आवृति जांनिये॥

ऐसेंहि इन पदनके अंत दोय अक्षर वा तीन अक्षरमें जो स्वर षड्जादिक स्वर होय। ताको दूसरीवेर अक्षरविना आकारिसों उच्चार करि वा स रि आदिक अक्षरसों उच्चार करि। आगले पदके स्वर अक्षरविना उच्चार कीजिये। सो स्वरावृत्ति जांनिये ॥

ऐसें अक्षरनकी ओर अक्षरनके स्वरनकी जुदि जुदि रचना होय। सो अग्राम्य प्राण जांनिये ॥ ७ ॥

जहां अक्षर ओर स्वर ॥ २ ॥ स्वरनकी तांन ॥ ३ ॥ ये कोमल होय। सो सुकुमार प्राण जांनिये ॥ ८ ॥

जहां अक्षरनके स्वरनकी विलंबित लयसों प्रगटता गंभीरता दिखे। ओर स्वरध्वनिसों भरे होय। सो प्रसन्न प्राण जांनिये ॥ ९ ॥

जहां अनेक छोटे छोटे राम कृष्णादि शब्दनको एक बडो शब्द होय। ओर स्वरनमें पहले प्राणके गमक आदि दोय वा च्यारि वा अनेक गुण होय। सो ओजस्वि प्राण जांनिये ॥ १० ॥

इन दश प्राणनको लछनसों समझिवो जो कोई सुनें सुनावे तिन दोऊनको धर्म ॥ १ ॥ अर्थ ॥ २ ॥ काम ॥ ३ ॥ मोक्ष ॥ ४ ॥ की प्राप्ति होत हे ॥ ११ ॥ ये दश ॥ १० ॥ प्राण एला प्रबंधके सोलह ॥ १६ ॥ पदमें जेसे होतहे। सो प्रकार कहतहे ॥

तहां एलाके पहले चरनके दूसरो खंड मन्मथवत। ओर एलाके पहले खंडको तीसरो खंड कांत। एलाके दूसरे खंडको तीसरो खंड सुमति। इनको उनके मधुमति इनको उनके मधुर प्राणहें ॥

ओर एलाके प्रथम खंडको चोथो खंड जितनें नाम। ओर एलाके दुसरे खंडके नाम शोभि। इम दोऊनको सांद्र प्राणहे ॥

ओर एलाके प्रथम खंडको पांचवो खंड गत। एलाके दूसरे खंडको पांचवो खंड सुशोभि। इन दोऊनको कांत प्राणहे ॥

ऐसे एलाके पहले खंडको प्रथम खंडको पहलो खंड काम। एलाके दूसरे खंडको पहलो खंड विकारिणा। एलाके तीसरे खंडको पहलो खंड गीतक। इन तीनो खंडनको दीप्त प्राणहे ॥

ऐसो उद्ग्राहके सोलह खंडनमें पांच प्राण वरतेहें । ओर एलाके तीसरे खंडको । दुसरो खंड उचित तामें समाहित प्राणहे ॥

ऐसे एलाके ध्रुवके विचित्र ॥ १ ॥ वासव ॥ २ ॥ मृदु ॥ ३ ॥ ये तीन खंडहे । तिनमें क्रमसों अग्राम्य ॥ १ ॥ सुकुमार ॥ २ ॥ प्रसन्न ॥ ३ ॥ ये तीन प्राण होत हैं ॥

एलाके आभोगको सुचित्र नाम एक खंडहे । तामें ओजस्वी प्राण हे । या रीतिसों सोलह पद एला प्रबंधके हैं । तिनमें कहि रीतिसों दश प्राण जांनिये । ओर एलाके पहले दोय चरन तीसरे चरनको पहलो खंड एक गांनमें गावनो जा गांनमें पहल एलाके पांच खंड जाय होय । ताही गांनमें दूसरे चरनको पांच खंड गावनों । ओर तीसरे चरनको जैसे पहले चरनके पहले खंड गाये तैसे गावनो ॥

ऐसे ग्यारह खंड उद्ग्राहमें गाय । तीसरे चरनको दूसरो खंड ओर गांनमें गावे तो सो दूसरे खंडमें मेलापक जांनिये ॥ ऐसे ध्रुवके तीन खंडमें पहले दोय खंड मध्य लयसों एक गांनमें गावे । अरु तीसरे खंड विलंबित लयसों न्यारे गांनमें गावनों । ऐसें एलाके सोलह खंडको या रीतिसों गांन कीजिये ॥ इति **एला प्रबंधके दश प्राण नाम--लछन संपूर्णम् ॥**

अथ एलाके भेद--लछन लिख्यते ॥ गण ॥ १ ॥ मात्रा ॥ २ ॥ वर्ण ॥ ३ ॥ देश ॥ ४ ॥ इन च्यार भेदसों एला प्रबंध च्यारि प्रकारको जांनिये ॥ तहां गणके दोय भेद हैं जो छह मात्रासों लेके दोय मात्रातांई छगण ॥ १ ॥ पगण ॥ २ ॥ चगण ॥ ३ ॥ तगण ॥ ४ ॥ दगण ॥५॥ ये पांचगण गणमात्रा जांनिये । ओर मगण ॥ १ ॥ यगण ॥ २ ॥ सगण ॥ ४ ॥ तगण ॥ ५ ॥ जगण ॥ ६ ॥ भगण ॥ ७ ॥ नगण ॥ ८ ॥ ये आठ वर्ग गण कहेहें ॥

सो मात्रा गण ॥ १ ॥ वर्ण गण ॥ २ ॥ ये दोऊ प्रथम कहेहें ॥ तहां वर्ण गणनके छंदमें जो एलाप्रबंध रचिये । सो गण एला जांनिये ॥ १ ॥

जो मात्राके छंद दोहा चोपाई गाथा आर्या इत्यादिकनमें रचिये । सो

मात्रा एला जांनिये ॥ २ ॥ ओरें वर्णके दोय भेदहें । गुरु ॥ १ ॥ लघु ॥ २ ॥ जहां लघुके ऊरके होय । अथवा आगें दोय विसर्ग होय । अथवा व्यंजन अक्षर होय । अथवा द्वित्त अक्षर होय । अथवा द्वित्त अक्षर आगें होय । सो लघु अक्षर गुरु अक्षर जांनिये ॥ पदकी अंतको लघु अक्षर गुरु जांनिये ॥ दोय मात्राको अक्षर गुरु जांनिये ॥ एक मात्राको अक्षर लघु जांनिये ॥ लिखनमें सूधी लकीरको लघु जांनिये ॥

लकार ककार मिले ल्क ॥ १ ॥ सकार ककार मिले स्क ॥२॥ पकार रकार मिले प्र ॥ ३ ॥ हकार रकार मिले न्ह ॥ ४ ॥ ये द्वित्त अक्षर लघुके आगें होय तब वह लघु गुरु जांनिये ॥ अरु लघु मानिये ॥ जहां जैसो उच्चार चहिये । तहां तैसो गुरु लघु जांनिये ॥ इन च्यारतें ओर कोई मिले अक्षर लघुके आगे होय तो वह लघु गुरुही मानिये लघु नही उच्चार कीजिये ॥

ओर पदकी अंत्यमें एं ऊं न्हीं हें ये च्यार अक्षर प्राकृत गाथा आदि छंदमें लघु जांनिये ये अक्षर गुरुहें । परंतु प्राकृत पदके अंतमेंभी काम पडे तो लघुभि जांनिये । ओर अपभ्रंश भाषाके श्लोकके पदके मध्यमें हुं हुं एं ओं श । ये पंच अक्षर गुरु हें परंतु काम पडे तो लघुभी मानिये ॥ ऐसें गुरु लघु वर्णके छंदमें जो एला प्रबंध । सो वर्ण एला जांनिये ॥

ओर गौड महाराष्ट्र देसदेसकी भाषामें एला होय । सो देसी एला जांनिये ॥ तहां अर्वति गणको लछन कहेहें ॥ तहां दोय गुरुको गण । १ । दोय लघु एक गुरुको गण । २ । एक गुरु एक लघुको गण । ३ । तीन लघुको गण । ४ । ये च्यारि मात्रागण तीन रतिगण कहिये । सो निश्चेय जांनिये ॥

॥ अथ आठ कामगणको यंत्र ॥

ऽऽऽ १	॥ऽऽ २	ऽ।ऽ ३	॥। ऽ ४	ऽऽ। ५	॥ऽ। ६	ऽ॥ ७	॥॥ ८
तीन गुरु	दोय लघु दोय गुरु	ल १ गु २	ल ३ गु १	गु २ ल १	ल ३ गु १	गु १ ल २	लघु ४

॥ अथ सोलह बाणगणको जंत्र ॥

१	२	३	४	५	६	७	८
ऽऽऽऽ	॥ऽऽऽ	ऽ।ऽऽ	।॥ऽऽ	ऽऽ।ऽ	ऽ॥ऽ	॥॥ऽ	ऽऽ॥
गुरु ४	ल २ गु ३	गु ३ ल १	ल ३ गु २	गु ३ ल १	गु २ ल २	ल ४ गु १	ल २ गु २
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
ऽऽऽ।	॥ऽऽ।	ऽ।ऽ।	।॥ऽ।	ऽऽ॥	ऽऽऽ॥	ऽ।॥	॥॥।
गु ३ ल १	ल ३ गु २	गु २ ल २	ल ४ गु १	गु २ ल २	गु ३ ल २	ल ३ गु १	ल ५

ये सोलह बाण गण जांनिये ॥ रति गण । १ । काम गण । २ । बाण गण । ३ । यह तीनों मात्रा गण जांनिये ॥ तहां गणपलाके तीन भेद हैं ॥ शुद्धा । १ । संकीर्ण । २ । विकृत । ३ । ये तीन जांनिये ॥ तहां शुद्धके च्यारि भेद हैं ॥ नादावर्ता । १ । हंसावती । २ । नंदावती । ३ । भद्रावती । ४ । तहां इन च्यारों एलानमें च्यारि वृत्त हैं । कैसिकी । १ । आरभटी। २ । सात्वती । ३ भारती । ४ । यह जांनिये ॥ च्यारि रीति हैं । पांचाली । १ । लाटी । २ । गौडी । ३ । वैदर्भी । ४ । यह च्यारि जांनिये ॥

तहां कैशिकी आदि वृत्ति । ४ । पांचाली आदि । ४ । प्रीति इनको लछन क्रमसों कहत हैं ॥ च्यारि पदारथ साधिवेको मन बचन कायककी चेष्टा सो वृत्ति कहावे हैं । १ ।

जहां सुकुमार अरथको वर्णन कीजिये । सो कैशिकी वृत्ति हैं । १ ।
जहां बहुत उद्धतपनेसों अरथकों वर्णन कीजिये। सो नाम आरभटी है ।२।
जहां प्रौढ अरथ गंभीरतासों वर्णन कीजिये । सो सात्वती हैं । ३ ।
जहां मृदुतासों अरथको वर्णन कीजिये । सो भारती वृत्ति हैं । ४ ।

अथ च्यारि रीतिके लछन लिख्यते ॥ जहां सुंदर पदनकी रचना रीति हैं । सो जहां छंद प्रबंधमें दोय तीन पदको मिलाप होय । ओर पांच

सात पदको मिलाप होय । सो पांचाली रीति हें । १ । जहां अनुप्रास लिये । पदनको दोय तीनको मिलाप कहूं कहूं होय । अथवा कहूं कहूं नही होय । सो लाटि रीति हें । २ । जहां सुंदर पांच सात पदको मिलाप होय । सो पद कोमल होय । जिनको अरथ सुखसों होय । सो गौडी रीति हें । ३ । जहां दोय तीन पदको मिलाप होय । अर सुखसों पदनको अर्थ जान्या जाय । पद कोमल होय । सो वैदर्भी रीति हें । ४ ।

अथ इन च्यारों गणनके लछन लिख्यंत॥ इन च्यारों एला प्रबंधनमें पहले चरनको पहलो काम नाम जो पद । ताको दोय खंडनमें गणको नेम हें। ओर ठोर पदमें अपनि रूचिगण गण धरिये ॥

अथ प्रथम नादावर्तीको लछन लिख्यंत॥ जहां पहल चरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच भ गण होय ॥ आगें एक न गण होय । राग टक्क । २ । गाइये । ताल मंठ होग । सो नादावती जांनिये ॥ यह नादावती ऋग्वेदमें उपजी हें । ब्राह्मणवर्ण हें । श्वेत रंग हें । कैशिकी वृत्ति हें । पांचाली रीति हें । सरस्वती माता याकी स्वामिनी हें । याको शृंगारमें गाइये । याको गायेतें सरस्वती वरदान देत हें ॥

अथ हंसावतीको लछन लिख्यंत ॥ जहां पहले चरनके पहले काम पदके दोय खंडमें पांच र गण होय ऽ।ऽ आगें एक स गण होय ॥ऽ ताल द्वितीय नामको होय । हिंदोल रागमें गाइये । सो हंसावती जांनिये ॥ यह क्षत्रिय वर्ण हें । यजुर्वेदसों उपजि हे । लाल रंग हे । आरभटी वृत्ति हें । लाटी रीति हे। याकी चंडिका देवता हें । रौद्र रसमें गाइये । याके गायेते चंडिका वरदान देत हें ॥

अथ नंदावर्तीको लछन लिख्यंत ॥ जहां पहले चरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच त गण होय ऽऽ। अंतमें एक ज गण होय । ऽ । सो नंदावती हें ॥ याको मालवकंस रागमें प्रतितालसों गाइये । यह सामवेद तें उपजी हें । वैश्य वर्ण हें । धोरो रंग हें । ओर सावती वृत्ति हें । गौडी रीति हें । याकी इंद्राणी देवता हें । याके गाये तें इंद्राणी वरदाम देत हें ॥

अथ भद्रावर्तीको लछन लिख्यंत ॥ जहां पहले चरनके पहले काम नाम पदके दोय खंडमें पांच म गण होय। अंतमें एक य गण होय। सो भद्रावती हें॥

याकों ककुभ रागमें कंकाल तालसों गाइये ॥ यह अथर्वणवेदसों उपजीहें । शूद्र वर्णहे । स्याम रंगहें । भारती वृत्तिहें । वैदर्भी रीतिहे । बीभत्स रसमेंहें । याकी वाराही देवताहे । याके गायेतें वाराही देवी वरदान देतहें ॥

इन च्यारोंनके संकीर्ण भेद अनेकहें ॥ ते प्रसिद्ध नहींहें ॥ अपनी बुद्धीसों इन च्यारों एलाप्रबंधसें दोयके लछन अथवा तीनके लछन वा च्यारिके लछनसों संकीर्ण भेद जांनिये ॥

अथ विकृतगणके तीन भेदहें तिनको नाम–लछन लिख्यते ॥

जहां पहले चरनके पहले काम नाम पदके दोऊ खंडमें जे भ गण आदि पांच गण कहेहें तिनमें गणके गुरु लघु अक्षरके उलट पलटतें । विकृता नाम एला प्रबंध होत हें । तहां एक गणके उलट पलटतें । वासवी । १ । दोय गणके उलट पलटते । संगत । २ । तीन गणनके उलट पलटतें । नेता । ३ । एसें च्यार गणतें । चतुरा । ४ । पांच गण उलट पलटतें । बाण संज्ञा । ५ । ये पांच भेद होतहें ॥

तहां पांचो गणमें प्रथम ।१। वा दुसरो ।२। वा तीसरो ।३। वा चोथो । ४ । वा पांचमों । ५ । एक एक गणके विकारसों वासवीके पांच भेदहें ॥

तहां प्रथम गण विकारसों रामा । १ । ऐसें दुसरे गणसों मनोरमा । २ । तीसरे गणसों उन्नता । ३ । चोथो गणसों । शांतिसंज्ञा । ४ । पांचवे गणसों । नागरा । ५ । ये पांच जांनिये ॥

जहां पांचो गणमें दोय दोय गणमें दोय दोय गणके एक संग विकारसों । संगता एला हें । १ । ताके दस भेद हें ॥ सो कहूं रमणीया । १ । विषमा । २ । समा । ३ । लक्ष्मी । ४ । कौमुदि । ५ । कामोत्सवा । ६ । नंदिनी । ७ । गौरी । ८ । सौम्या । ९ । रतिदेहा । १० । ये दस जांनिये ॥

जहां पांचो गणनमें तीन तीन गणनके एक संगविकारके नेता ताके क्रमसों दस भेद होत हें ॥ मंगला । १ । रतिमंमला । २ । कलिका । ३ । तनुमध्या । ४ । वीरश्री । ५ । जयमंगला । ६ । विजया । ७ । रत्नमाला । ८ । गुरुमध्या । ९ । रतिप्रभा । १० । यह दस जांनिये ॥

जहां इन पांचो गणमें च्यारि च्यारि गणके एक संगविकार होय । सो

क्रमसों चतुरा है ॥ ताके पांच भेद हैं ॥ उत्सवप्रिया ॥ १ ॥ महामंदा ॥ २ ॥ मल्हरि ॥ ३ ॥ जया ॥ ४ ॥ कुसुमावती ॥ ५ ॥ यह पांच भेद जांनिये ॥

जहां पांच गण एक संगविकार होय । सो बाणाएला है ॥ ताको पार्वतीप्रिया एक भेद है । ऐसें विकृत इकतीस भेद हैं ॥ इहां गणको विकार गणके गुरु लघु अक्षर उलटपलट कीजिये ॥ तब होत है ॥

ऐसें भ गणमें एक गुरु दोय लघु है ॥ ऽ इनमें पहले लघु बीचमें गुरु अंतम लघु ऐसें कीजियें ॥ तब यह विकारसों । ज गण होत हैं ॥ ऐसें यामें पहले दोय लघु आगें एक गुरु ऐसो विकार करे । तब स गण होत हैं ॥ ऐसें जो गणमें गुरु लघु होय । तहां विकार होत है ॥ जो गणमें सब गुरु अक्षर होय । अथवा गणमें सब अक्षर लघु होय । तहां गणमें विकार नहीं होय । जैसें म गणमें तीनों गुरु हैं । न गणमें तीन लघु हैं । तातें इन दोनू गणमें विकार नहीं होत है । यह जांनिये ॥

यह पांचो गण एलाके इकतीस भेद हैं । सो नादावतीमें ॥ १ ॥ हंसावतीमें दोय ॥ २ ॥ नंदावतीमें तीन ॥ ३ ॥ इन तीनों एलानमें होत है । यातें यह भेद तरेण्णव ॥ ९३ ॥ जांनिये ॥

ओर भद्रावती नाम चोथी एलामें म गण है । सो ताके तीनो अक्षर गुरु हैं । तासों वामें विकार नहीं । यातें भद्रावतीके भेद इकतीस नहीं लेत हे । ओर नादावती ॥ १ ॥ हंसावती ॥ २ ॥ नंदावती ॥ ३ ॥ इन तीन एलामें वासवि संग ताके पांच पांच भेद ओर हैं । सो मिलिकें पनदरह भेद होत हैं ॥

तहां नादावतीमें दोय भ गणके विकार तें संगता होय । तहां दोय भ गणके स्थान दोय ज गण कीजिये । तब सावित्री ॥ १ ॥ उनही दोय भ गणके स्थानविकारसों स गण कीजिये । तब पावनी ॥ २ ॥ जहां दोय भ गणके स्थान प्रथम भ गणके विकारमें ज गण कीजिये । दूसरे भ गणके स्थान स गण कीजिये । ऐसें दोय जुदजुदे न्यारे गण कीयेतें । ए तीन भेद संगता कहे ॥

ऐसें नादावतीमें एक भ गणके विकारतें वासवी होय । तहां भ गणके स्थान ज गण होय । तब सावित्री ॥ १ ॥ अरु भ गणके स्थान स गण होय । तब

पावनी ॥ २ ॥ ए दोय भेद वासवींमें होय । सो संगता वासवींके मिलिकें नादावतींमें पांच भेद हें ॥

और हंसावर्तीमें दोय र गणके विकारतें संगता होय । तहां दोऊ र गणके स्थान त गण कियेतें व्योमजा ॥ १ ॥ ओर दोऊ गणस्थान य गण कियेतें वारुणी ॥ २ ॥ ओर दोऊ र गणमेंके स्थान य गण कीयेतें व्योमजा वारुणी ॥ ३ ॥ ए तीन भेद स गणके है ॥

ओर एक गण विकारतें वासवि होय तहां र गणके स्थान त गण कियेतें व्योमजा ॥ १ ॥ ओर र गणके स्थान यह कियेतें वारुणी ॥ २ ॥ ए दोय भेद वासवींके हें ॥ ऐसें हंसावतिमें पांच भेद हें ॥ ओर नंदावतींमें दोय त गणके विकार तें संगता होय । तहां दोय गणके स्थान र गण कियेतें वन्हिजा ॥ १ ॥ दोय त गणके स्थान दोय य गण कियेतें वन्हि वारुणी ॥ २ ॥ एक त गणके विकार तें वासवी ॥ ३ ॥ यह तीन भेद संगताके हें ॥

तहां त गणके स्थान र गण कियेतें वन्हिजा ॥ १ ॥ त गणके स्थान प गण कियेतें वारुणी ॥ २ ॥ ये दोय भेद वासवींके हे ॥ ऐसें नंदावतींमें संगता वासवींके पांच भेद हें ॥ इन तीनोंके मिलिके पनद्रह ॥ १५ ॥ भेद छिन्नव ॥९६॥ भेद पहले सब मिलिकें एकसो आठ ॥ १०८ ॥ भेद होत हे । सो जांनिये ॥

॥ अथ पार्वतीजी कृतमात्रा एलाको लछन लिख्यते ॥

तहां एला प्रबंधके पांच पदनको जो पहलो पद तांमें दूसरे एलाके पदमें वा तीसेरमें मात्रा गण होय तब मात्रेला जांनिये ॥ याके च्यार ॥ ४ ॥ भेद हे ॥ रतिलेखा ॥ १ ॥ कामलेखा ॥ २ ॥ बाणलेखा ॥ ३ ॥ चंद्रलेखा ॥ ४ ॥ यह च्यारि जांनिये ॥

जहां एला प्रबंधके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चरनमें ग्यारह ग्यारह मात्रा होय । ओर तीसरे चरनमें दस मात्रा होय । ऐसें तीनों चरनकी बत्तीस मात्रा होय । तहां पहले चरनकी ग्यारह मात्रा । च्यार रतिगण हे तिनमें पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ अथवा पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ इण तीन गणनसों ग्यारह मात्रा पूरि कीजिये । एसेंहि दूसरे चरनकी ग्यारह मात्रा पूरी कीजिये ॥

ओर तीसरे चरनकी दस मात्राहे सो च्यार त गणहे ॥ पहले ॥ १ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ अथवा दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ गणनसों पूरिये । सो रतिलेखा नाम एला जांनिये ॥ १ ॥

जहां एलाके पहले दूसरे चरनमें बाईस बाईस मात्रा होय । तीसरे चरनमें बीस मात्रा होय । सो ऐसें तीनो चरनमें चोसठि मात्रा तहां पहले चरनकी बाइस मात्राहें । सो काम गण आठ कहेहें । तिनमें पहलो ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरे ॥ ३ ॥ चोथ ॥ ४ ॥ गणसों पूरिय । एसेंहि दूसरे चरनकी बाइस मात्रा पूरिये । ओर तीसरे चरनकी बीस मात्रा हें । सो काम गणमें पहलो ॥ १ ॥ दूसरो ॥ २ ॥ सातवो ॥ ७ ॥ आठवो ॥ ८ ॥ इन गणनसों पूरिये । सो कामलेखा जांनिये ॥ २ ॥

अथ बाणलेखाको लछन लिख्यते ॥ तहां एलाके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चरनमें तेतीस तेतीस मात्रा होय । तीसरे चरनमें तीस मात्रा होय। ऐसें तीनों चरनमें छिन्नव मात्रा होय ॥

तहां पहले चरनमेंकि बतिस मात्रा तो बाण गण सोलह कहें । तीनोमें तीसरो ॥ ३ ॥ चोथो ॥ ४ ॥ पांचवो ॥ ५ ॥ छटो ॥ ६ ॥ सोलहो ॥ १६ ॥ इन गणसो पूरिये । ऐसें दूसरे चरनकी मात्रा पूरन कीजिये । तीसरे चरनकी तीस मात्रा काम गणमें । प्रथम ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ तीसरो ॥ ३ ॥ चोथे ॥ ४ ॥ इन गणनसों पूरिये । सो बाणलेखा जांनिये ॥ ३ ॥

अथ चंद्रलेखाको लछन लिख्यते ॥ जहां एलाके पहले ॥ १ ॥ दूसरे ॥ २ ॥ चरनमें चंमालिस चंमालिस ॥ ४४ ॥ मात्राहे । तिसरे चरनमें चालिस मात्रा ऐसें तीनो चरनमें मात्रा एकसोअठाइस ॥ १२८ ॥ कीजिये ॥

जहां पहले चरनमें चंमालिस मात्रासों रतिगण च्यारि ॥ ४ ॥ कामगण आठि ॥ ८ ॥ बाणगण सोलह ॥ १६ ॥ इनमें जो जो गणके लिये सो चंमालिस मात्रा जांनिये । होयसो गण लीजिये ॥ एसेंहि दूसरे चरनमें मात्रा पूरवको गण लीजिये । एसेंहि तीसरें चरनकी चालिस मात्रा पूरवेकों गण लीजिये । सो चंद्र-लेखा जांनिये ॥ ४ ॥ इति चंद्रलेखा संपूर्णम् ॥

अथ नंदिके स्वरके मतसों मात्रा एलाको लछन लिख्यते ॥ सो बह एला पांच प्रकारकी हे ॥ इंदुमति । १ । ज्योति । २ । स्मृति । ३ । अंतमें

नभस्मृति । ३ । वसुमति । ४ । जहां एलाके तीनों चरनमें पांच छ गण अरु एक तीन मात्राको गण होय । सो इंदुमति । १ । जहां तीनों चरनमें प गण नाम पांच मात्राके गण होय । आगें एक च्यारि मात्राको च गण होय । सो ज्योतिस्मृति । २ । जहां तीनों चरनमें बीचबीचमें तीन तीन च गण होय । एक एक पांच मात्राको गण होय । चरनकी आदि अंतमें छ गण छ मात्राको होय । सो नभस्मृति । ३ । जहां दोय मात्राको द गण पांच मात्राको प गण । च्यारि मात्राको च गण । आगे पांच मात्राके तीन गण । ओर छ गण छह मात्राको तीन मात्राको त गण । ए तीनों चरनमें होय । सो वसुमति । ४। **इति नंदिकेश्वरके मतसों एला च्यारि संपूर्णम् ॥**

अथ अर्जुनके मतसों नादावती । १ । हंसावती । २ । नंदावती । ३ । भद्रावती । ४ । यह मात्रामाहि होत हें । सो इनको मात्रारीतिसों लछन लिख्यते ॥

जहां नादावतीके पहले चरनके कामनी पदमें तेइस । २३ । लघु होय । तहां त गण च्यारि च्यारि मात्राके पांच होय अंतमें तीन लघू । सो नादावती मात्रा एला । १ ।

जहां एगुण तीस लघु होय तिनमें मात्राके तीन तीन गण आठ अंतमें एक लघु ताआगें तीन लघु । सो हंसावती । २ ।

जहां गुण तीस लघु होय तिनमें तीन तीन मात्राके आठ गण एक लघु अंतमें आगें च्यारि लघु । सो नंदावती । ३ ।

जहां पेंतिस मात्रा होय । तहां आठ च गण होय तीन लघु होय । सो भद्रावती जांनिये । ४ ।

इन च्यारो एलामें एक मात्रा । १। दोय मात्रा । २ । तीन मात्रा । ३ । च्यारि मात्रा । ४ । पांच मात्रा । ५ । अधिक होय ए च्यारों एला विचित्र मात्रा जांनिये । यह अर्जुन कहतहे ॥

॥ अथ मतंगादि मतसों एलाके भेद लिख्यते ॥

जहां रति लेखादिक च्यारि एलानके तीनों पदमें ३२ बतीस । १ । ६४ चोसटि । २ । ९६ छिन्नव । ३ । १२८ इकसोअठाइस । ४ ।

क्रमसों लघु होय तब क्रमसों ये च्यारि नाम च्यारि एलानकेहें । नंदिनी । १ । चित्रिणी । २ । चित्रा । ३ । विचित्रा । ४ । ये जांनिये ओर इहा रति लेखा कामलेखामें रति लेखाके प्रथम चरनमें दस । १० । तीसरेमें मात्रा ग्यारह । ११ । एसें कामलेखाके प्रथम चरनमें बीस । २० । तीसरेमें बाइस । २२ । ये दोय भेदहें ॥ ऐसें बीस मात्रा एला जांनिये ॥

इन मात्रा एलानमें तीनों चरनके दोय दोय खंडके काम । १ । विकारी । २ । गीतक । ३ । पदनमें मात्रा संख्या वा गणनकी संख्या समझिये । आगें अपनि रुचीसों मात्रा गण रचिकें तिनों पद पूरन कीजिये ॥ **इति बीस मात्रा एला संपूर्णम् ॥**

॥ अथ वर्ण एलाको लछन लिख्यंत ॥

जहां तिनों चरनको पहले दोय खंडके काम । १ । विकारि । २ । गीतक । ३ । पदनमें छह छह गुरु अक्षरनके एक एक खंड कीजिये । ऐसें दोऊ खंडनके बारह अक्षरको एक पद होय । सो वर्ण एला मधुकरीहें ॥ छह छह अक्षरनके दोऊ खंडमें क्रमसों एक एक अक्षर वधायके एगुणतीस अक्षर ताईं वधावते । तब वर्ण एलाके चोईस भेद होतहें । १ ।

तहां प्रथम कहि जो मधुकरि सो छह अक्षरकीहे । १ । या मधुकरिके खंडमें एगुणतीस तांइ । एक एक अक्षर वधायेतें सु । १ । स्वरा । २ । करिणी । ३ । सुरसा । ४ । प्रभंजनी । ५ । मदनवती । ६ । शशिनि । ७ । प्रभाविनि । ८ । मालती । ९ । ललिता । १० । भोगवती । ११ । कुसुमवती । १२ । कांतमती । १३ । कुमदिनी । १४ । कलिका । १५ । कमला । १६ । विमला । १७ । नलिनी । १८ । कालिंदि । १९ । विपुला । २० । विलुप्तता । २१ । विशाला । २२ । सरला । २३ । तरला । २४ ।

इन वरन इलामें कंठताल । १ । द्वितीयताल । २ । कंकालताल । ३ । प्रतिताल । ४ । इन च्यारि तालमें दोऊ एकताल रचिये । राग चाहोसो गावो । इहां रागको भेद नहीहे ॥

इहां मतंग मुनिनें यतिनके भेदसों वर्ण । एलानके सात भेद कहेहें ॥ रमणी । १ । चंद्रिका । २ । लक्ष्मी । ३ । पद्मिनी । ४ । रंजनी । ५ । मालती

। ६ । मोहिनी । ७ । ये सात जांनिये ॥ मधुकरि आदि वर्ण एलामें यतीनके भेदक समझिये ॥ यति कहिये पदनको विश्राम करिकें ॥ इति वर्ण एला लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ देश एलाके नाम–लछन लिख्यते ॥

तहां करनाट । १ । लाट । २ । गौड । ३ । आंध्र । ४ । द्राविड ।५। इन देसनकी भाषा करिकें जो एला प्रबंध रचेहे । सो देस एलाहे । सो ताके पांच भेदहें ॥ करनाटी ।१। लाटी ।२। गौडी । ३ । आंध्री ।४। द्राविडी । ५। ये जांनिये ॥ मंठ द्वितीय । २ । कंकाल । ३ । प्रतिताल । ४ । इनमेंसों एक कोऊ तालसों वरतिये ॥

जहां जो करनाट भाषामें नादावती आदि च्यारि एला रचि । इनके वा तीन च्यारि आदि । १ । मध्य । २ । अंतमें अनुप्रास कीजिये । ओर सब लक्षण पहले । आदि नादावतीको होय । सो करनाटी जांनिये ॥ यह प्रथम भेदहे । १ । यह नादावती आदि करनाटी च्यारि भेदके छह प्रकारहे । तामें प्रथम कह्यो हे ॥

अबे दूसरो प्रकार कहेहें ॥ जहां नादावती एलाके पहले दो चरनकी आदिमें अनुप्रास होय । ओर दोय काम गण । आगें एक रति गण होय । ओर तीसरे चरनमें मध्यम अनुप्रास होय । ओर च्यारि काम गण । आगें एक रति गण होय। सो सुरेखा जांनिये ॥ यह ब्रह्माके पूर्व मुखसों भइहे । याको शिवजी देवताहे ।१।

जहां हंसावतीके पहले दोय चरनमें च्यारि च्यारि काम गण होय । अरु पहले चरनकी आदिमें दूसरे चरनके मध्यम अनुप्रास होय । तीसरे चरनमें आदि अंत्य मध्यमें अनुप्रास होय । आठ काम गण होय । सो हंसावती काम लेखाहे । यह ब्रह्माके दक्षिण मुखसों भई । यह गणके सावित्री देवताहे । २ ।

जहां नंदावतीके तीनों चरनमें आदि अंतमें अनुप्रास होय । ओर तीनों पदमें च्यारि च्यारि म गण होय । सो नंदावती स्वर लेखिका (सुलेखा) हे । यह ब्रह्माजीके पश्चिम मुखसों भइहे । यह गणके गायत्री देवताहे । ३ ।

जहां भद्रावतीके पहले दोय चरनमें छह काम गण आगें एक बाणगण होय । ओर तीसरे पदमें आठ काम गण होय । तीन चरनमें आदि मध्य अत

अनुप्रास होय । सो भद्रावती भद्रलेखाहै । यह एलाके उत्तर मुखसों भइहे । गांधर्व याको देवतागणको स्वामीहे । ४ । यह करनाटिके दूसरे भेदके नादावती आदिक च्यार प्रकारकीहे ॥

॥ अब तीसरे भेदको प्रस्तार लिख्यते ॥

जहां नादावती आदिक च्यारों एलानके तीनों चरनमें पांच पांच काम गण होय । आगे एक एक रति गण आगे एक एक काम गण ये च्यारों एला छंद जाति जांनिये । ३ ।

अथ कर्नाटीको चोथो भेद लिख्यते ॥ नादावती आदि च्यारों एलानके तीनों चरनमें कहे कामगण रतिगण संख्यासों घाटि वा वाधि गण होय । तब च्यारों एलाष्टलाभस जांनिये ॥

॥ अब कर्नाटीको पांचवां भेद लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि च्यारों एलानके तीनों चरनमें पहले चरनके वा पहले दोय चरनके वा तीनों चरनके अंतमें चरनके पूरन करिवेकों । ओर कोइ काम गण आदिकसों पद रचिये । सो पांचवों भेदहे ॥

॥ अथ कर्नाटीको छटो भेद लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि च्यारों एलानके तीसरे तीसरे चरनमें वा तीसरे चरनकी बरोबरी एक अधिक शिखा पद नामको रचिये । ओर मेलापक ध्रुव आभोगमें नादावती आदिकके सब ठोर पहलेकी सिनाई होय । सो कर्नाटी एलाका छटो भेदहे ॥ इति कर्णाटी देश एलाके छह भेद संपूर्णम् ॥

॥ अथ लाटी एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि च्यारो एलामें अनुप्रास अधिक होय । शृंगार-रस वर्णन होय । लाट देसकी भाषामें होय । सो लाट देस पंजाबको नाम है । लाहोर वगेहरकी भाषासों लाटि एला जांनिये ॥ इति लाटी एलाके लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ गौडी एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एलामें गमक । १ । अनुप्रास होय । ओर एक रसको वरताव होय । सो गौडी जांनिये ॥ इति गौडीके लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ आंध्री एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एलानमें अनेक प्रकारके गमक । १ । रागांग आदि सब शृंगार आदिरस इष्ट देवताकी भक्तिनको वर्णन होय। तैलंगी भाषामें होय । सो आंध्रि एला जांनिये । इति आंध्रि एला संपूर्णम् ॥

॥ अथ द्राविडी एलाको लछन लिख्यते ॥

जहां नादावती आदि एलामें घणी भक्तिभावकों वर्णन होय। रसजामे ही पुष्ट होय। गमक आंध्रिके गुण सिगरे होय। द्राविडी भाषामें होय। अनुप्रास नही। सो द्राविडी एला जांनिये ॥ इति द्राविडी एला संपूर्णम् ॥

इन लाटि आदि एलानके भेदमें जे नादावती आदि च्यारि । ४ । एलाहे तिनमें तीसरे तीसरे चरनके समान एक एक चरन अधिक रचिये। तब ये छंदस्वती एला कहावे॥ जहां नादावती आदि एलानमें पहले दोय चरन अनुप्रासविना होय तीसरे चरनमें अनुप्रास होय। ओर तीसरे चरनके प्रमान चोथो चरन ओर होय। ओर ध्रुव आभोग अनुप्रास संजुत होय । इन च्यारों चरनमें च्यारि च्यारि होय। ओर रीति । १ । वृत्त । २ । देवता । ३ । राग । ४ । इनको जहां नेम नहि मंठ आदि च्यारि ताल होय। सो वस्तु एला जांनिये ॥

ऐसे पांचों देश एलानके चालिस चालिस भेद होतहे सो ॥ २०० ॥ ते भेद मिलिकें देसी एला कहेहै ॥ ओर सुध्द एला चारि ॥ ४ ॥ विकृत ॥ ९३ ॥ त्रेणवगें प्रकारांतरके विकृत ॥ १५ ॥ मात्रा ॥ २० ॥ करण एला ॥ २४॥ चोइस ये मिलि सब तीनसें छपन ॥ ३५६ ॥ भेद एला प्रबंधके होत हे ॥ ओर संकीर्ण एलाके भेद अनंत कोटि तिनके लछन कोऊ मुनिस्वरनें कहे नही या लिखेभी नही। यह एला सब प्रबंधनमें श्रेष्ठ हें । याकी महिमा ब्रह्मके समान हें ॥ इति एला प्रबंधके लछन संपूर्णम् ॥

॥ अथ सोमेश्वरके मतसों गीतको साधारण विधि लिख्यते ॥

जहां उद्ग्राह पूर्वभाग होय। ओर दूसरो भाग मेलापक होय। तीसरो भाग ध्रुव होय। चोथो भाग आभोग कीजिये ॥ जहां उद्ग्राहसों रागको आरंभ अरु मेलापकसों उद्ग्राहको अरु ध्रुवको मेलापक हे । ओर ध्रुवसों बार बार ये

राग वरती स्थिर कीजिये। ओर आभोगसों राग परिपूर्ण कीजिये। यह सब गीतनमें साधारण विधि जांनिये ॥ इति साधारण विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ गीतप्रबंधको लछन लिख्यते ॥

जहां अनुप्राससहित वो पद होय। एक पद अकारिके स्वरनके गमकसों होय। आगे अक्षरको पद होय। इन च्यारों पदनको प्रथम पद होय। ओर दूसरे पदनमें ही च्यारों पद कीजिये ये दोय पद उद्ग्राहमें होय। ओर गीतके तीसरे पदमें दोय पद रचि पहलो पद अनुप्रासजुत कीजिये। ओर दूसरो पद गमकजुत स्वरनके आलापसो कीजिये। ता उपरांत गण। १। वर्ण। २। मात्रा। ३। विना तीन पदको ध्रुव रचिये। ता उपरांत गीतके नामजुत आभोग कीजिये। ऐसे गीत रचि उद्ग्राहतें आभोगताईं दोय बेर गाइये। ध्रुवमें त्याग कीजिये ऐसे गीत प्रबंध गाइये ॥

अथ नादावती आदि एलाको लछन लिख्यते ॥ तहां भ गण पांच। ५। नगण एक। १। जिनमें होय। ऐसे पद एक रचि आगे ऐसेहि। इन गणसों पद अनुयुक्त दूसरो पद कीजिये। ऐसें दोय दोय पदके तीन चरन होय। सो एक पद जांनिये। ओर ध्रुव। १। आभोग। २। इनकी रचना प्रथमकी है। सो नादावती एला प्रबंध जांनिये ॥

॥ अथ नादावतीको उदाहरण राजर्षि सोमेश्वरको मतसो लिख्यते ॥

यौवन भूषित गोप वधू मुख पद्म मधुकर ॥ श्यामल विग्रह कांति विनिर्जित नयनजलधर ॥ १ ॥ इति प्रथम पद ॥

देवकीनंदन केसरि संचय पिंजर वसन ॥ केलि लसत्कमला नयनांबुज विभ्रम भवन ॥ १ ॥ इति द्वितीय पद ॥

स्मेर सरोरुह सुंदर वक्र सुनंदन म प्नुतज ॥ गोकुल पालक कालियमर्दन तर्जित तद्भुज ॥ १ ॥ इति तृतीय पद ॥

अथ ॥ ध्रुव भूम्यादिप्रकृतितसमय दलि पुंडरीकनयन ॥ १ ॥

कौस्तुभ मणि मरिचि कर भासुर वरद पाहि पुरंदर ॥ २ ॥

मंदर गीत सुस्वावहति रुक्परमकुसुम सरजनन ॥ विमोहित निखिल भुवन उत्पत्ति स्थिति कारण प्रभो नारायण ॥ ३ ॥ इति ध्रुव संपूर्णम् ॥

इति ध्रुव आभाग सोमेश्वर देव विरचितं एला नादावती इति आभोग। इति नादावती टंक राग चंचत्पुट ताल देवता आदि पहले कहे हैं ॥ १ ॥

अथ हंसावती एलाके लछन लिख्यते ॥ तहां पांच र गण ॥ ५ ॥ अंतमें एक स गण ॥१॥ कीजिये। सो एक पद। ये सोहि अनुप्रास संजुत दुसरो पद इनही गणसों होय। ऐसें दोय दोय पदनके तीन पद जहां होय। सो हंसावती एला प्रबंध जांनिये ॥

अथ हंसावतीको उदाहरण लिख्यते ॥ रौद्रकालान। लोधूतखड्ग प्रभा शोभिता इति जांनिते। १। सुरकरि कराकार कल्पतरु साखानिभ राजते कमलायते। २। निजितो नुरश्मी भानुप्रभाव प्रमाणशिखिरुद्यत्सधाकीर्तिविविधधारिता दिगंतरसाखि प्रदग्धरिपुमंडल दिग्वधुगीयमाना दतप्रसरधृतदैत्यवनिता मुखाम्भोज चंद्रोदय कीर्ति सुधारस बिसागर जगदेकवीर आह श्रीनारायण। इति ध्रुव सोमेश्वरविरचिता एला हंसावती। इति आभोग राग हिंदोल ताल द्वितीय रसदेवता आदि पहली कहे हैं सो जांनिये ॥ इति **हंसावतीको उदाहरण संपूर्णम्** ॥

॥ अथ नंदावतीको लछन उदाहरण लिख्यते ॥

जहां पांच त मण एक ज गणको एक पद होये। इन [illegible]णमों दूसरो पद अनुप्रासजुत कीजिये। ऐसें दोय दोय द होय। सो नंदावती हे ॥ उदाहरण कुंडली दे मिल्यो वामके शनि दरि श्ड संतुष्ट गीर्वाण ॥

॥ इति पंचम प्रबंधाध्याय र्णम् ॥

The Poona Gayan Samaj.

SANGIT SAR

COMPILED BY

H. H. MAHARAJA SAWAI PRATAP SINHA DEO OF JAIPUR.

IN SEVEN PARTS.

PUBLISHED

BY

B. T. SAHASRABUDDHE

Hon. Secretary, Gayan Samaj, Poona.

PART VI:

TALADHYAYA.

Price of the complete Work in seven parts Rs. 15.

POONA:

PRINTED AT THE 'ARYA BHUSHANA' PRESS BY NATESH APPAJI DRAVID.

1912.

पूना-गायनसमाज.

संगीतसार ७ भाग.

जयपूराधीश महाराजा सवाई प्रतापसिंह देवकृत.

प्रकाशक:

बलवंत त्रियंबक सहस्त्रबुद्धी

सेक्रेटरी, गायनसमाज, पुणें.

भाग ६ वा तालाध्याय.

पूना 'आर्यभूषण' प्रेसमें छपा.

संपूर्ण सात अध्यायका मूल्य रु. १५,
और प्रत्येक भागका मूल्य रु. २॥.

१९१२.

श्रीराधागोविंद संगीतसार.

षष्ठो तालाध्याय–सूचिपत्र.

षष्ठो तालाध्याय समाप्त.

षष्ठो तालाध्याय.

॥ अथ तालाध्याय लिख्यते ॥

नानामार्गे लयो यत्र यतीनां स्यात्कलानिधौ ।
तं दक्षिणं शिवं नौमि चित्रं वृत्तिमयं ध्रुवम् ॥ १ ॥

अथ तालाध्यायकी वचनिका लिख्यते ॥ प्रथम गान । प्रगटभयो सो तो ब्रह्म ॥ माया विना ब्रह्म पहीचान्यो जात नही यातें तालरूप माया प्रगट करि । ताल कहिये ॥ तारवेवाले शिवजी कहिये । लालसा रूप पार्वतीर्जा । लाल साजो कीयो चाहेसो । तालमें प्रभूको गान करे । या ताल साथ करे जाय अरु दोऊ हातकी ताल लगी तब शब्दभयो । सो शब्दरूप प्रगट होय करिके । सबनके कानमें ज्ञानरूप धर्यो ॥ अरु अलक्ष हे । याको निर्गुण स्वरूप धरिके सगुणभयो तातें ताल लिये । राग गान किये तो निर्गुणब्रह्म सगुणरूप धर्यो हे । यासों याको काल कहत हें । सो अरु माया ब्रह्मसों चारि वस्तु पाइये । धर्म ।१। अर्थ । २ । काम । ३ । मोक्ष । ४ । अरु गीत । १ । नृत्य । २ । नाट्य । ३ । वाद्य ये सब तालकी जातिके अनुसारमें लेकें करिये । बाहिर निकसें ऐसो न करिये । सुर असुर स्थावर जंगम ये । सब तालकी गतिमें हे ॥ तातें ताल विना गान नही । गान विना ताल नही यातें ताल मुख्यतें कहेहें । सो यह ताल माया हें । जैसें मायाके अनेक भेद हें । ऐसें तालके अनेक भेद हें ॥ जैसें ब्रह्म एकरूप हें । ऐसें रागको स्वरतो एकरूप हें । अरु राग अनेक प्रकारके हें । ऐसें ब्रह्म चैतन्यतो एकरूप हें । अरु स्थावर जंगम हें । अलक्ष-व्याप रह्यो हें ऐसें ही राग श्रवणमात्र हें । अरु देखिवेमें नही आवे । यातें ब्रह्म-रूप हें ॥ तैसें गानको स्वर तो एकरूपही हें । अरु ताल मायारूप हें । राग ब्रह्मरूप हें ॥ जो दोनू हातनको अंतर रहें ताही ताई अकाल रहे हें ॥ अरु जो दोनू हात मिलिकें शब्द उत्पत्ति होय । सो काल कहिये ॥ अठनो देही जो हात नाही मिल्यो । तालभी नाही मिल्यो । जहां ताई अकाल हे । अरु जब इनको संयोग होयकें ॥ शब्द भयो तब ताकों ताल कहिये । सो वह ताल हे यह जांनिये ॥

॥ अथ तालके दस प्राणनके नाम लिख्यते ॥

प्रथम प्राण काल । १ । दूजो प्राण मार्ग । २ । तीजो प्राण क्रिया । ३ । चोथो प्राण अंग । ४ । पांचमों प्राण ग्रह । ५ । छटवो प्राण जाति । ६ । सातमों प्राण कला । ७ । आठमों प्राण लय । ८ । नवमों प्राण यति । ९ । दसमों प्राण प्रस्तार । १० ।

अथ प्रथम प्राण काल ताको लछन लिख्यते ॥ तहां गिनतें लेकें। ब्रह्माके दीन ताई जो काल ता कालको लछन लिख्यते ॥ जा कालमें कमलको एक पत्र बडी सितावीसों कांटा करिकें वेधिये । सो काल—लछन कहिये ॥ वे आठ क्षण होय । तब एक लव होय । ओर आठ लवकी एक काष्ठा होय । आठ काष्ठाको एक निमेष होय । अरु आठ निमेषनकी एक कला होय । दोय कलाकी एक चतुर्भाग होय ॥ वाहीको त्रुटि कहेहें ॥ ओर दोय चतुर्भाग अथवा दोय त्रुटीको एक बिंदार्ध (बिंदु) होय । वाको अणु कहेहें। ओर वाहीको अणुद्रुत कहे हें ॥ दोय आधे बिंदूनको एक बिंदु होत हें ताको द्रुत कहे हें । ओर दोय बिंदूनको एक लघु होय हें । दोय लघूको एक गुरु होय हें । तीन लघूको एक प्लुत होय हें । ओर दस लघूको एक पल होत हें । साठी पलकी एक घटी होय हें । ओर साठी घटीको एक दीन होय हें ॥ ओर तीस ३० दिनको एक महिनों होत हें। ओर बारह महिनाको एक १ वरस होय हें । ओर पुराणकी रीतिसों तियालीस लाख वीस हजार ४३,२०,००० वरसनकी एक युग चोकडी होय हें । हजार युग चोकडीको ब्रह्माको एक दिन होय हें । सो तासों कल्प कहे हें । अरु तीस ब्रह्माके दीनको एक ब्रह्ममास होत हें । बारह ब्रह्ममासको एक ब्रह्मवर्ष होय । सो १०० ब्रह्मवर्ष ब्रह्माणीकी आयुर्दा होत हें । ताको ब्रह्म-कल्प कहे हें ॥ **इति काललक्षण संपूर्णम् ॥ इति प्रथम प्राण काल संपूर्णम् ॥**

अथ दूसरो प्राण मार्ग ताको लछन लिख्यते ॥ तालनमें चारि मार्ग हें ॥ एक तो ध्रुव । १ । दूसरो चित्र । २ । तीसरो वार्तिक । ३ । चोथो दक्षिण । ४ । तहां ध्रुवमें तो एक मात्रा कला होय । १ । ओर चित्रमें दोय मात्रा कला होय । २ । ओर वार्तिकमें च्यार मात्रा कला होय । ३ । ओर दक्षिणमें आठ मात्रा कला होय । ४ । ये तो संगीत रत्नाकरके मतसा कहेहें ॥

और शास्त्रमें यह मार्ग भी कहेहैं ॥ पहलो तो दक्षिण । १ । दूसरो वार्तिक । २ । तीसरो चित्र । ३ । चोथो ध्रुव । ४ । पांचवो चित्रतर । ५ । अरु छटवो चित्रतम । ६ ।

तहां दक्षिण मार्गमें आठ कला हैं ॥ वें आठुनके नाम लिख्यते ॥ प्रथम ध्रुविका । १ । दूसरी सर्पिणी । २ । तीसरी कृष्णा । ३ । चोथी पद्मिनी । ४ । पांचमी विसर्जिता । ५ । छटवी विक्षिप्ता । ६ । सातमी पताका । ७ । आठमी पतिता । ८ ।

अरु दूसरो मार्ग वार्तिक तामें चारि कला हैं ॥ एक तो ध्रुविका । १ । दूसरो सर्पिणी । २ । तिसरी पताका । ३ । चोथी पतिता । ४ ।

तीसरो मार्गचित्र तामें दोय कला हैं ॥ प्रथम ध्रुविका ।१। दूसरी पतिता ।२।

अथ चोथो मार्ग ध्रुव तामें कलाष्टक ध्रुविका नाम एक कला हैं । १ ।

अथ पांचमों मार्ग चित्रतर तामें आधी कला हैं ॥ ताको प्रमाण एक द्रुत हैं ।१।

अथ छटमों मार्ग चित्रतम तामें पाव कला हैं ॥ ताको प्रमाण अणु हैं ॥ ऐसें छह मार्ग हैं ॥

कोईक ऐसें कहत हैं ॥ प्रथम दक्षिण ॥ १ ॥ दुसरो वार्तिक ॥ २ ॥ तीसरो चित्र ॥ ३ ॥ चोथो चित्रतर ॥ ४ ॥ पांचमों चित्रतम ॥ ५ ॥ छटवो अतिचित्रतम ॥ ६ ॥ तिनको लछन कहत हैं ॥

तहां दक्षिण मार्गमें आधो अणु कला हैं ॥ याको प्रमाण चतुर्भाग हैं ॥

अथ दूसरो मार्ग वार्तिक तामें त्रुटिकला हैं ॥ याको प्रमाण आधो चतुर्भाग हैं ॥

अथ तीसरो मार्ग चित्र तामें त्रुटि कला हैं ॥ ताको प्रमाण त्रुटीको अर्ध हैं ॥

अथ चोथो मार्ग चित्रतर तामें घर्षण कला हैं ॥ सो अनुत्रुटीको अर्ध हैं ॥

अथ पांचमों मार्ग चित्रतम ॥ तामें अनुघर्षण कला हैं । सो घर्षणको अर्ध हैं ॥

अथ छटो मार्ग अतिचित्रतम तामें स्वरकला हैं ॥ याको प्रमाण अनु-घर्षणको अर्ध हैं ॥ इति द्वितीय मार्गप्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको तीसरो प्राण क्रिया ताको लछन लिख्यते ॥ तालकी

क्रिया दोय प्रकारकी हें । प्रथम निशब्द ॥१॥ दूसरी सशब्द ॥२॥ तहां जामें शब्द नही होय । सो निशब्द कहिये ॥ ओर जामें शब्द होय । सो सशब्द कहिये ॥

तहां प्रथम निशब्द क्रिया पांच प्रकारकी हें ॥ प्रथम आवाप ॥ १ ॥ दूसरी निष्काम ॥ २ ॥ तीसरी क्षेप ॥ ३ ॥ चोथी विक्षेप ॥ ४ ॥ पांचमीं प्रवेशक ॥ ५ ॥ ऐसें पांच प्रकारकी हें ॥ अरु सशब्द चार प्रकारकी हें ॥ प्रथम ध्रुव ॥ १ ॥ दूसरी शंपा ॥२॥ तीसरी ताल ॥३॥ चोथी सन्निपात ॥४॥

ऐसें निशब्दाके आवाप आदि चार भेद हे तिनको लछन लिख्यते ॥ जहां उंचो सूधो हात करि अंगुरीनको संकोचिये । सो आवाप जांनिये ॥ ओर लौकीकमें बांई । ओर तीरछो हातको चलावे तो आवाप हे ॥ १ ॥ इति आवाप संपूर्णम् ॥

ओर हातके नीचेकी ओर अंगुरीनको चलावे । सो निष्काम कहिये ॥ ओर लौकीकमें उपरली ओर हातको चलावे तो निष्काम कहिये ॥ २ ॥ इति निष्काम संपूर्णम् ॥

सूधो ात करि दाहिनी पांसुकी ओर अंगुरीनको पसारनो । ताही क्षेप कहे हें । ओर दाहिनी ओर हातको चलायवो तो विक्षेप कहे हें ॥ ३ ॥ इति क्षेप विक्षेप संपूर्णम् ॥

हातको नीचेकी ओरको जो अंगुरीनको संकोरिवो । सो प्रवेशक हें ॥ ओर लौकीकमें नीचेकों हातको चलायवो । सो प्रवेशक हें ॥ ४ ॥ इति प्रवेशक संपूर्णम् ॥

अथ शब्दक्रियाके ध्रुव आदि च्यार भेदनके लछन लिख्यते ॥ जहां तालिदे उंचे हातसों चुटकी बजायकें हातकों ऊंचे डारनो । सो ध्रुव कहिये । ओर दाहिनें हातसों ताल दीजिये । ताको नाम शंपा है । ओर बांये हातके तालसों ताल कहेहें । ओर दोऊ हातके तालसों सन्निपात कहेहें । इन चारों भेदनकों पातकला कहेहें ॥ इति तृतीय क्रियाप्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको चोथो प्राण अंग ताको लछन लिख्यते ॥ तहां तालके सात अंग हें ॥ प्रथम अणु । १ । दूसरो द्रुत । २ । तीसरो विरामद्रुत ।३। चोथो लघु ।४। पांचमों विरामलघु ।५। छटमों गुरू ।६। सातमों प्लुत ।७।

तहां प्रथम अंग अणु ताको लछन लिख्यते ॥ यह तो अणुको चिन्ह हें ॥ ᵕ

अथ अणूको शब्द लिख्यते ॥ तिय शब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहीये तुहें अणूको तिय नाम हें। या अणूकी पाव मात्रा हें। याकी पवनतें उत्पत्ति हे। चंद्रमा याको देवता हें। ओर तीतरकी बोलीसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको घात अतिसूक्ष्म हे। याके बजायवेमें दोऊ हातको अंतर डेढ अंगुल होय ॥ १ ॥

अथ तालको दूसरो अंग द्रुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ योतो द्रुतको चिन्ह हें ॥ ०

अथ द्रुतको शब्द लिख्यते ॥ ते यह शब्द तालके वरतिवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहीये। ते यह द्रुतको नाम हें। या द्रुतकी आधी मात्रा हें याकी जलसों उत्पत्ति हे। शिव देवता हें। चिडायाकी बोलीसों द्रुत उच्चार जांनिये ॥ याको सूक्ष्म घात हें। याके बजायवेमें दोऊ हातको अंतर तीन अंगुलको जांनिये ॥ २ ॥

अथ तालको तीसरो अंग विरामद्रुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यह तो याको चिन्ह हें ॥ ०̆, ०́

अथ विरामद्रुतको शब्द लिख्यते ॥ तिते यह शब्द तालके वरतवकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहत हें ॥ तिते यह द्रुतविरामको नाम हें। या द्रुतविरामकी तीन मात्रा हें। या द्रुतविरामको द विरामहू कहत हें। याकी जल अरु पोंनकें मिलायतें उत्पत्ति हें। स्वामी कार्तिकेय याके देवता हें। बगुलाके बोलसों द्रुत विरामको उच्चार जांनिये ॥ याको घात पावघाति पूर्ण हें। यातें घात सूक्ष्म हें। याके बजायवेमें दोनू हातनको अंतर साडिच्यारि अंगुलकोहें ॥ ३ ॥

अथ तालको चोथो अंग लघु ताको लछन लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहें।

अथ लघूको शब्दार्थ लिख्यते ॥ थेई ॥ यह शब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये ॥ तुहें। थेई। यह लघूको नामहे। या लघूकी संपूर्ण मात्राहें। याकी अग्नीतें उत्पत्तिहे। भवानी यांकी देवताहें। अरु नीलकंठकी

बोलीसों याको उच्चार जांनिये। ओर याको घात पूर्ण है। याके बजायवेमें दोनू हातनको अंतर छह अंगुलको जांनिये ॥ ४ ॥

अथ तालको पांचमों अंग लघुविराम ताको लछन लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहें ा, ľ

अथ लघुविरामको शब्द लिख्यते ॥ तिप्पतुं यह शब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये। तुये। ति थि ई यह लघु विरामको नामहें ॥ याकी सवा मात्राहें। कोइक याकी डेडमात्रा कहेहें ॥ याको नाम ल विरामहूहे। याकी अग्नि ओर जलके मिलापतें उत्पत्ति होतहें। याको बृहस्पति देवताहें। कोकिलके उच्चारसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको घात डेड पूर्णहें। याके बजायवेमें दोनू हातनको अंतर नो। ९। अंगुलको जांनिये ॥ ५ ॥

अथ तालको छटवो अंग गुरु ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यहतो याको चिन्हहे ॥ ऽ

अथ गुरुको शब्द लिख्यते ॥ थे ई तित तत। यह शब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये तुये। थे ई तित तत। यह गुरुको नामहें। या गुरुकी दोय मात्राहें। याकी आकाससों उत्पत्तिहें। याके शिव पार्वती देवता हें। ओर कागलाके बोलसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको घात पूर्ण करि दाहिनी तरफ हात चलावे तो याके बजायवेमें दोऊ हातनको अंतर बारह अंगुलको जांनिये ॥ ६ ॥

अथ तालको सातमों अंग प्लुत ताको चिन्ह लिख्यते ॥ यह तो याको चिन्ह हें ऽ, ३ ॥ अथ प्लुतको शब्द लिख्यते ॥ थे ई तित तत थे ई थे ई। यह सब्द तालके वरतवेकी चचकारमें वा अछरोटीमें कहिये। तुये थे ई तित तत थे ई थे ई। यह प्लुतको नाम हें। या प्लुतकी तीन मात्रा हें। याकी पृथ्वीतें उत्पत्ति हे। याके ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवता हें ॥ ओर कुकडाकी बोलिसों याको उच्चार जांनिये ॥ याको पूर्ण घात करिकें गोल हात फेरि करिकें दाहिनी तरफ आडो हात चलावे तो याके बजायवेमें दोऊ हातको अंतर। अठारह।१८। अंगुलको कहत हें। ७।

अथ सातों अंगके नाम लिख्यते॥ तहां प्रथम अंग अणु ताको नाम लिख्यते ॥ अणुद्रुत । १ । अर्धचंद्र । २ । करज । ३ । अर्धबिंदु । ४ । अर्ध-द्रुत । ५ । अणु । ६ । अंकुस । ७ । धनुख । ८ । ये आठ अणुके नाम हैं ॥

अथ तालको दूसरो अंग द्रुत ताके नाम लिख्यते ॥ बिंदु एक।१। व्यंजन दूसरो । २ । सन्य तीसरो । ३ । द्रुत चोथो । ४ । अर्धमात्रक पांचमों । ५ । सुदत छटो । ६ । आकास सातमों । ७ । उतर आठवो । ८ । ख नवमों । ९ । कूप दसमों । १० । वलय ग्यारमों । ११ । यह द्रुतके नाम हैं ॥

अथ तालको तीसरो अंग द्‌विराम ताके नाम लिख्यते ॥ द्रुत-विराम एक ॥ १ ॥ द्‌विराम दोय ॥ २ ॥ ओर जितनें द्रुतके नाम हैं तिनमें विरामपद लगें तब द्‌विरामके नाम होतहै ॥ जैसें द्रुतविराम या नाममें द्रुतपदसों विरामपद लगायकें द्‌विरामके नाम होत हैं ॥

अथ तालको चोथो अंग लघु ताके नाम लिख्यते ॥ प्रथम व्यापक । १ । दूसरो सरल । २ । तीसरो सरल । ३ । चोथो शर । ४ । पांचमों दंड । ५ । छटो ल । ६ । सातमों मेरु । ७ । आठमों लघु । ८ । ओर वाके जितनें नाम हैं तितनें लघुको नाम हैं । सो जांनियें ॥

अथ तालको पांचमों अंग लविराम ताके नाम लिख्यते ॥ प्रथम लघुविराम । १ । दूसरो लविराम । २ । अरु लघुके जितनें नाम हैं तिनमें विरामपद लगायकें लविरामके नाम जांनियें ॥ जैसें लघुविराम ये नाम हैं लघु पदसों विरामपद लगायकें लविरामके नाम हैं । ५ ।

अथ तालको छटो अंग गुरु ताके नाम लिख्यते ॥ प्रथम नाम दीर्घ । १ । दूसरो वक्र । २ । तीसरो द्विमात्री । ३ । चोथो पूज्य । ४ । पांचवो गोप्पकल । ५ । छटवो केयूर । ६ । सातमों नूपुर । ७ । आठमों हार । ८ । नवमो मातटंक । ९ । दसमो कंकन । १० । ग्यारमों गुरु । ११ । और गुरु पूज्य के ज्यो नाम हो तेहू गुरुके नाम जांनियें । ६ ।

अथ तालको सातमों अंग प्लुत ताके नाम लिख्यते ॥ प्रथम त्रिमात्र । १ । दूसरो सामज । २ । तीसरो स्रृंगी । ३ । चोथो दीप्त । ४ ।

पांचमों प्लुत । ५ । छटवो लघु । ६ । सातमों अंग । ७ । आठमों सामोद्भव । ८ । नवमों तारस्थान । ९ । सो जांनिये ॥

अथ सातों अंगनके घात लिख्यंत ॥ तहां प्रथम अनुद्रुतको अतिसूक्ष्म घात जांनिये। अरुद्रुतको सूक्ष्म घात जांनिये । ओर द्र विरामको डोड सूक्ष्म घात जांनिये । लघुको पूरन घात जांनिये ओर ल विरामको डोड पूरन घात जांनिये । गुरुको पूरन घात करि नीचेकर हातको झालो दीजिये । सो दूसरो पूरनहें । ऐसें दो पूरन घात गुरुके हें । ओर प्लुतको पूरन घात करि । बांये हातके ओरपास दांये हातको फिरावेतो । यह दूसरो पूरनहें ओर पीछे नीचे करतो दाहिनें हातको झालोहे । सो तीसरो पूरनहें । ऐसे तीन पूरन प्लुतकेहें ॥

अथ बजायवेमें सातोंमें अंतर लिख्यते ॥ दोऊ हातनसों बाजो बजाइये ताको । ओर हातको जो अंतर ताको प्रमान अनुद्रुतमें डेड अंगुलको अंतर जांनिये ॥ ओर द्रुतमें तीन अंगुलको अंतर जांनिये ॥ द्र विराममें साडिच्यारि अंगुलको अंतर जांनिये ॥ लघुके बजायवेमें छह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ ल विरामके बजायवेमें नो अंगुलको अंतर जांनिये ॥ गुरुके बजायवेमें बारह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ प्लुतको बजायवेमें अठारह अंगुलको अंतर जांनिये ॥ **इति बजायवेमें सातों अंगनके अंतर संपूर्णम् ॥**

अथ लघु सुरकी मात्राको लछन लिख्यते ॥ जाकालमें पांच लघु अछरनको उच्चार होय सो कालमात्रा जांनिये ॥ यहां एक मात्रासों लघु जांनिये ॥ ओर ऐसी दोय मात्रानसों गुरु जांनिये ॥ ऐसी तीन मात्रासों प्लुत जांनिये ॥ आधि मात्राको द्रुत जांनिये ॥ अर पावमात्राको अणु जांनिये ॥ पोणमात्राको द्र विराम जांनिये ॥ ओर डेड मात्राको ल विराम जांनिये ॥ द्रुतविराममें एक द्रुत ओर एक अणु जांनिये ॥ ल विराममें एक लघु एक द्रुत जांनिये ॥ जब द्र विरामको चिन्ह करनों होय तब द्रुतके उपर एक रेखा दीजिये ॥ जैसे ०, ० ओर जब ल विरामको चिन्ह बनावनो होय तब लघुके उपर एक मात्रा दीजिये ॥ जैसे ।, । यो द्र विराम ल विरामके चिन्ह लिखेहे ॥ ऐसें सातों अंगनको कालको प्रमाण विचारिये । ओर ल विराम द्र विराम हूंको विचार कीजिये ॥

तालके सात अंग, देवता, उत्पत्ति, जानवरकी बोली, मात्रा, अंतर, सहनाणी.

	नाम	देवता	उत्पत्ति	जानवरकी बोली	मात्रा	घात	अंबर	सहनाणी	शब्द
१	अनुद्रुत	चंद्रमा	पवन	तीतर	चोथाई	अतिसूक्ष्म	हातसों अंगुल डेड	ॅ	तिय
२	द्रुत	शिव	जल	चिडियो	आधि	सूक्ष्म	अंगुल ३	०	ते
३	द्रु विराम	स्वामि कार्तिकेय	उतावे जल	बगुलो	३	डोड, सूक्ष्म	अंगुल ४॥	ं, ऺ	तिते
४	लघु	देवि	अग्नि	नीलकंठ अथवा चाष	१	पूर्ण	अंगुल ६	।	थेई
५	ल विराम	गुरु	जल, अग्नि	कोयल	१। अथवा १॥	डेड पूर्ण	अंगुल ९	ो, ि	त्थेई
६	गुरु	शिव, गौरी	आकाश	काग	२	पूर्ण घात करिके हात आडो	अंगुल १२	ऽ	थेई तित तत
७	प्लुत	ब्रह्मा, विष्णु, महेश	पृथ्वी	मुरगो (कुकडो)	३	पूर्ण, गोल हात फेरि करिके दाहिनी तरफ आडो हात चलावे.	अंगुल १८	ऽ, ३	थेई तित तत थेई थेई

॥ इति तालको चोथो प्राण संपूर्णम् ॥

अथ तालको पांचमों प्राण ग्रह ताको लछन लिख्यते ॥ तालको जो प्रारंभ ताको ग्रह कहे हें ॥ सो ग्रह च्यार प्रकारको हें ॥ प्रथम सम । १ । दूसरो अतीत । २ । तीसरो अनागत । ३ । चोथो विषम । ४ ।

अथ च्यारों ग्रहको लछन लिख्यते ॥ जहां ताल अर गीतको एक तालमें प्रारंभ होय । सो समग्रह जांनिये ॥ याको नाम समपाणि कहत हें ॥

ओर जहां गीतको प्रारंभ पहले होय अर तालको प्रारंभ पिछे होय । सो अतीतग्रह जांनिये ॥ याको अवपाणि कहे हें ॥

जहां पहले तो तालको प्रारंभ होय ओर पीछे गीतको प्रारंभ होय । सो अनागतग्रह जांनिये ॥ याकों उपरिपाणि कहत हें ॥

ओर जहां गीत अर तालके आदि अंतका नेम नही होय उचडिवेमें पहले ताल देल्यो पीछो गीत गाल्यो अथवा तालके साथ पहले गीत गाल्यो । कछू यामें अटकाव नही । यह विषम ग्रहमेंहे कछू यामें दोऊ तरहको अटकाव नही । सो विषमग्रह जांनिये ॥ ऐसे च्यार ग्रहके लछन कहे हें ॥ **इति तालको पांचमों प्राण ग्रह संपूर्णम् ॥**

अथ तालको छटवो प्राण जाति ताको लछन लिख्यते ॥ जहां तालको स्वरूपसों जाति कहिये । सो पांच प्रकारकी हें । प्रथम चतुरस्र । १ । दुसरी त्र्यस्र । २ । तीसरि खंड । ३ । चोथि मिश्र । ४ । पांचमी संकीर्ण । ५ । ऐसें पांच प्रकारकी कहीहें ॥

तहां चतुरस्र जो तालहें । सो च्यारि वर्णकोहें ॥

ओर त्र्यस्र जो तालहे । सो तीन वर्णकेहें ॥

खंड जातिको तालहे । सो पांच वर्णकोहें ॥

अर मिश्रजातिको तालहे । सो सात वर्णकोहें ॥

ओर संकीर्ण जातिको तालहे । सो नोवर्णकोहें । इन जातिनके वर्णकोहें । तेसेंहि मात्रा जांनिये ॥ क्रमसूं दूनि जांनिये ॥ प्रयोगके अनुसार तहां चतुरस्र जो ब्राह्मण हें अर त्र्यस्र क्षत्री हें । खंड वैश्यहें । अर मिश्र शुद्र जातिहें । संकीर्णताल जेहें । ते संकीर्ण जाति जांनिये ॥ **इति छटवो प्राण जाति संपूर्णम् ॥**

अथ तालको सातमों प्राण कला ताको लछन लिख्यते ॥ सो

वे कला मात्राहे। ते आठ प्रकारकी हें ॥ प्रथम ध्रुविका ।१। दुसरी सर्पिणी । २ । तीसरी कृष्णा । ३ । चोथी पद्मिनी । ४ । पांचमी विसर्जिता । ५ । छटवी विक्षिप्ता । ६ । सातमी पताका । ७ । आठवी पतिता । ८ ।

तहां सब्द करिकें सहित जो मात्रा । सो ध्रुविका जांनिये ॥
ओर जामें बांई ओर हातको चलावनों होय। सो सर्पिणी कहिये ॥
जाको दाहिनी ओर हात होय । सो कृष्णा जांनिये ॥
ओर जांको निचे करे तो संचार होय । सो पद्मिनी जांनिये ॥
ओर बाहीरको जाको संचार होय । सो विसर्जिता जांनिये ॥
जामें हातपसारि अंगुरिनको संकोचिये । सो विक्षिप्ता जांनिये ॥
ओर जामें उपरिको हातको चलावनों होय । सो पताका जांनिये ॥
जामें हातको नीचेंकूं पटकीयें । सो पतिता जांनिये ॥
तहां लघुमात्रामें तो ध्रुविका जांनिये ॥
ओर गुरुमें । ध्रुविका ओर पतिता जांनिये ॥

अरु लघुमें ॥ ध्रुविका । सर्पिणी । कृष्णा ये जांनिये ॥ इन तीनको शब्दजुत क्रियामें प्रयोग हें ॥ निशब्द क्रियामें प्रयोग नही॥ इति तालको सातमों प्राण कला संपूर्णम् ॥

अथ तालको आठमों प्राण लय ताको लछन लिख्यते ॥ क्रिया कहिये तालको शब्द । अथ तिह शब्द क्रिया तालको उपरांत जो विश्राम हें । सो लय जांनिये ॥ लय तीन प्रकारको हें ॥ प्रथम द्रुत । १ । दूसरो मध्य । २ । तीसरो विलंबित । ३ ।

जहां बहुत सितावीसों लयको विश्राम होय। सो द्रुत जांनिये॥ तातें दूनो विश्राम होय । सो मध्य लय जांनिये ॥ ओर मध्यसों जाको दूनो विश्राम होय । सो विलंबित लय जांनिये ॥ इति तालको आठमों प्राण लय ताको लछन संपूर्णम् ॥

अथ द्रुत मध्य विलंबितको प्रमाण लिख्यते ॥ वेरके बरोबर तो द्रुतलय जांनिये ॥ ओर आवेरके बरोबर मध्य लय जांनिये ॥ वील वेलीकी

बरोबर विलंबित जांनिये ॥ ये शीघ्र मध्य मंद जांनिये ॥ ऐसें इनको तालनमें विचार जांनिये ॥ **इति द्रुत मध्य विलंबितको प्रमाण–लछन संपूर्णम् ॥**

अथ तालको नवां प्राण यति ताको लछन लिख्यते ॥ तालके लयको जो नियम ताको यति कहे हैं ॥ यति पांच प्रकारकी हैं । तहां प्रथमतो समा । १ । दूसरी स्रोतो गता । २ । तीसरी मृदंग । ३ । चोथो पिपीलिका । ४ । पांचवी गोपुच्छा । ५ ।

अथ प्रथम समाको लछन लिख्यते ॥ जा यतिमें आदिमें मध्यमें ओर अंतमें द्रुतलयही होय । अथवा तीनो ओर मध्य लय होय । अथवा विलंबितहीं तीनो ठोर लय होय । ये तीन प्रकार समाको हें ॥ **इति समाको लछन संपूर्णम् ॥**

अथ स्रोतोगताके लछन लिख्यंते ॥ स्रोतोगता तीन प्रकारकी हे ॥ जहां आदि मध्य अंतमें विलंबित मध्य द्रुत ये लय होय । सो प्रथम स्रोतोगताको भेद जांनिये ॥ जहां तीनो ठिकानें द्रुत चिर मध्यम लय होय । सो भेद स्रोतोगताको दूसरो जांनिये ॥ जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम द्रुतलय आवे । सो भेद स्रोतोगताको तीसरो जांनिये ॥ **इति स्रोतोगता–लछन संपूर्णम् ॥**

अथ मृदंगकी तीन भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें द्रुत चिरद्रुत ये लय होय । सो मृदंगाको प्रथम भेद जांनिये ॥

अरु जहां आदि मध्य अंतमें द्रुतमे मध्य द्रुत लय होय । सो मृदंगाको दूसरो भेद जांनिये ॥

जहां आदि मध्य अंतमें चिर मध्यम होय । सो मृदंगाको तीसरो भेद जांनिये ॥

अथ पिपीलिका नाम चोथी यति ताके तीन भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें चिरद्रुत चिर ये लय होय । सो पिपीलिकाको प्रथम भेद जांनिये ॥

अरु जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम, द्रुत, मध्यम, ये लय होय । सो पिपीलिकाको दूसरो भेद जांनिये ॥

जहां आदि मध्य अंतमें चिर मध्यम चिर ये लय होय। सो पिपीलिकाको तीसरो भेद जांनिये ॥ ३ ॥

अथ गोपुच्छा नाम पांचई यति ताके भेद लिख्यते ॥ जहां आदि मध्य अंतमें द्रुत मध्यम चिर ये लय होय। सो गोपुच्छाको प्रथम भेद जांनिये। १।

जहां आदि मध्य अंतमें मध्यम चिर द्रुत ये लय होय। सो गोपुच्छाको दूसरो भेद जांनिये। २।

जहां आदि मध्य अंतमें द्रुत चिर मध्यम होय। सो गोपुच्छाको तीसरो भेद जांनिये। ३। **इति यति नाम नवों प्राण संपूर्णम् ॥**

अथ तालको दसवो प्राण प्रस्तार ताको लछन लिख्यते ॥ अनुद्रुतादिकनको पंक्ति रीतिसो लिखिये। सो प्रस्तार जांनिये ॥ सो प्रस्तार संख्या नष्ट उद्दिष्ट अणु आदि सातो अंगनके खंड प्रस्तार साधिवेकों सातो मेरुनकी खानां उनमें अंक भरिवेको प्रकार देसी तालके आगे निरूपण करेंगें ॥

अब प्रथम मार्गीको लछन कहत हें ॥ अथ मार्ग तालनकी उत्पत्ति–लछन लिख्यते ॥ तिनमें मुख्य पांच ताल हे ॥ प्रथम चंचतपुट। १। दूसरो चाचपुट। २। तीसरो षट् पितापुत्र। ३। चोथो संपक्केष्टाक। ४। पांचवो उद्घट। ५।

(१) प्रथम चंचतपुट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें भरत मुनिके आगे तांडव नृत्यमें मार्ग तालमें मुख्य चंचतपुट नाम ताल वरत्यो। सो याको स्वरूप चोकुंटो हे ॥ यांकी जाति ब्राह्मण ॥ यांके तीन भेद हे ॥ तहां प्रथम यथाक्षरसो तो एक कल जांनिये। १। दूसरो द्विकल जांनिये। २। तीसरो चतुष्कल जांनिये। ३।

अथ चंचतपुटको स्वरूप लिख्यते ॥ जाके वरतवेमें आदि तो गुरु दोय होय ओर लघु एक होय ओर प्लुत एक होय। सो यह ताल शिवजीके सद्योजात नाम प्रथम मुखतें उत्पत्ति भयो श्वेतजाको वर्ण हे आठ जाकी मात्रा हे ॥ ऐसो जो ताल ताहि चंचतपुट जांनिये ॥ **इति चंचतपुट ताल संपूर्णम् ॥**

चंचतपुट ताल.

ताल	अक्षरताल मात्रा	चचकार	परमलु	समस्या
१. प्रथम	गत तालकी मात्रा ३१७	थेई तित तत	ज कि र क	प्रथम गुरू अक्षरकी सहनाणी ता पीछे जो अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे दोय लीक है सो मात्रा दोय है. मात्रा दुसरीके नीचे विदी है सो तालके हातके नीचे करीके डो झालो है.
२. दूसरी	गुरु तालकी मात्रा ३८	थेई तित तत	तक थ रि	प्रथम गुरू अक्षरकी सहनाणी ता पीछे जो अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे दोय लीक है सो मात्रा दोय है. दुसरीके मात्रा नीचे विदी है सो ताल देके हात नीचे नीचे करिवो झालो है.
३. तीसरी	लघु तालकी मात्रा ३	थेई	जक	प्रथम लघु अक्षरकी सहनाणी ता पीछे अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे एक लीक है सो एक मात्रा जांनिये.
४. चौथी	प्लुत तालकी मात्रा ३४	थेई तित तित थेई थेई थेई	त कुकु थरिक रुंद क क	प्रथम प्लुत अक्षरकी सहनाणी ता पीछे अंक है सो ताल जांनिये. ताल पीछे तीन लीक है सो मात्रा तीन जांनिये. तीसरी मात्राके नीचे विदी है सो झालो है ओर कुंडालो गोलही सो दाहिने हातको वांये हातकी परिकमा एक कीजे पीछे झालो हातको झालो उपरीही मान है.

ओर परमलु इनहीके अक्षर मिलाके जाति परनै बिठाय लेतहै या समझनेके लिये यह अक्षर लियेहै । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करती वेर पगमें वा मुखमें वा पखावजमें ये अक्षर उघटीये ॥ **इति यथाक्षर चंचतपुट ताल उत्पत्ति—लक्षण संपूर्णम् ॥**

(२) अथ चाचपुट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने अपने वामदेव नाम मुखसों वरतिके चाचपुट नाम ताल उत्पन्न कियो । अथ चाचपुटको स्वरूप लिखे है ॥ या चाचपुट तालमें प्रथम गुरु होय ओर दो लघु होय । चोथो गुरु होय यह जाको प्रमाण होय । ओर वामदेव नाम मुखतें जाकि उत्पत्ति है । पीरो जाको रंग है । छह जाकी मात्रा है । ओर या तालको स्वरूप तिकुंटो है। याकी जाति क्षत्रिय याके तीन भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों तो एक कल जांनिये ॥ १ ॥ दूसरो द्विकल जांनिये ॥ २ ॥ तीसरो चतुष्कल जांनिये ॥ ३ ॥ ऐसो जो ताल ताहि चाचपुट जांनिये ॥ **इति चाचपुट संपूर्णम् ॥**

ओर परमलु इनहीको अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेतहै । या समझनेके लिये । यह अक्षर लिखेहै । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करति वेर पगमें वा मुखमेंभी वा पखावजमें यह अक्षर उघटिये ॥ **इति यथाक्षर चाचपुट तालकी उत्पत्ति—लछन संपूर्णम् ॥**

(३) अथ षट् पितापुत्रकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने अपनें अघोर नाम मुखसें वरतिके षट् पितापुत्र नाम ताल उत्पन्न कियो । अथ षट् पितापुत्रको स्वरूप लिख्यते ॥ जामें एक प्लुत होय अरु एक लघु होय दोय गुरु होय एक लघु होय । ओर एक प्लुत होय यह जाको प्रमाणहै । ओर अघोर नाम मुखसें जाकी उत्पत्ति है श्याम जाको रंग है अरु बारह जाकी मात्रा है या तालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाति क्षत्रिय है । याके तीन भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों तो एक कल जांनिये ॥ १ ॥ दुसरो द्विकल जांनिये ॥ तीसरो चतुष्कल जांनिये ॥ ३ ॥ ऐसो जो ताल ताहि षट् पितापुत्र जांनिये ॥ **इति षट् पितापुत्र ताल संपूर्णम् ॥**

ओर परमलु इनहीके अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेतहै या समझनेके लिये । यह अक्षर लिये है । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करति

वेर । पगनमें वा मुखमें वा पखावजमें ये अक्षर उघटिये ॥ इति यथाक्षर षट् पितापुत्रकी उत्पत्ति-लछन संपूर्णम् ॥

(४) अथ संपक्केष्टाक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने तांडव नृत्यमें प्रथम प्लुत अपने ईशान नाम मुखसें मार्गतालमें वरतिके । वाको संपक्केष्टाक नामकीनो । अथ संपक्केष्टाकको स्वरूप लिख्यते ॥ या संपक्केष्टाकतालमें प्रथम प्लुत हे । फेर तीन गुरु हें । एक प्लुत हे । ओर ईशान नाम मुखसें उत्पन्न भयोहै । लाल जाको रंग है । ओर बारह जाकी मात्रा है । या तालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाति क्षत्रिय है। तीन याके भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों एक कल जांनिये । १ । दूसरो द्विकल जांनिये ।२। तीसरो चतुष्कल जांनिये ।३। ऐसो जो ताल ताहि संपक्केष्टाक जांनिये ॥ इति संपक्केष्टाक ताल संपूर्णम् ॥

ओर परमलु इनहींकी अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेत हैं । या समझनेके लिये । यह अक्षर लिखे हैं । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करती वेर । पगनमें वा मुखमें वा पखावजमें ये अक्षर उघटिये ॥ इति संपक्केष्टाक तालकी उत्पत्ति-लछन संपूर्णम् ॥

(५) अथ उद्धट तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें तांडव नृत्यमें अपनें तत्पुरुष नाम मुखसें मार्गताल वरतिके वाको उद्धटनाम ताल कीनो । अथ उद्धट तालको स्वरूप लिख्यते ॥ या उद्धटतालमें तीन गुरु अक्षर होय । ओर तत्पुरुषनाम मुखसों जाकी उत्पत्ति है अरु बहुत जाके वर्ण है । छह जाकी मात्रा है । ओर या तालको स्वरूप तिकुंटो है । याकी जाति क्षत्रिय है । तीन याके भेद है । तहां प्रथम यथाक्षरसों तो एक कल जांनिये । १ । दूसरो द्विकल जांनिये । २ । तीसरो चतुष्कल जांनिये ।३। ऐसो जो ताल ताहि उद्धट जांनिये ॥ इति उद्धट ताल संपूर्णम् ॥

ओर परमलु इनहीके अक्षर मिलायके जाति परन बिठाय लेत है । या समझनेके लीये यह अक्षर लिखे है । परमलु वा चचकार ताल देती वेर वा नृत्य करति वेर पगनमें वा मुखमें वा पखावजमें यह अक्षर उघटिये ॥ इति यथाक्षर उद्धट तालकी उत्पत्ति-लछन संपूर्णम् ॥

अथ मार्गी तालनके च्यारां मार्गमें वरताव लछन लिख्यते ॥

ध्रुव । १ । चित्र । २ । वार्तिक । ३ । दक्षिण । ४ । इन चारों मार्गमें जा तालकी जितनी मात्रा होय । सो मात्रा क्रमसों प्रथम ध्रुव मार्गमें एक वेर । १ । दूसरो चित्र मार्गमें दोय वेर । २ । तीसरो वार्तिक मार्गमें चार वेर । ३ । चोथो दक्षण मार्गमें आठ वेर । ४ । वरतिये तैसे चंचतपुटकी आठ कला हैं । दोय गुरु अक्षरकी चार कला हैं । एक लघु अक्षरकी एक कला एक प्लुत अक्षरकी तीन कला ऐसें इन आठ कलानके आठ पाठाक्षर रचि । एक वेर उच्चार करे । सो ध्रुवमार्ग जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिख्यते ॥ तकि । किण-कुकु जग जग–टउणडके । झंतरि कुटकु । किडि किडि टिंटिं । तथ दिधि नतथों ॥ **इति ध्रुवमार्ग चंचतपुटको लछन संपूर्णम् ॥**

जहां इन आठो कलानकें पाठाक्षर दुणे करिकें वरतिये । सो चित्रमार्ग जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिख्यते ॥ त्तगरु गनककुंदरी कुंन । थरिथ कुंथरि कुकुं तक्र । थरि थोंगिणि झे जग जग । धिमि धिमि त्तित्त थरि तग थरि थरि थरि धिमि थरि नक्र धिमि धिमि धिमि । थरि थिमि धिमि धधि गणथों ॥ **इति चित्रमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥**

जहां तालकी कलाके पाठाक्षर चोगुने करिकें वरतिये । सो वार्तिकमार्ग जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिख्यते ॥ था धिमि त्तत्त धिमि धिमित्ता धिमि त्ता । धलांग धलांग त्तग त्तम धलांग । किकीरिकि कुद्रीकी तत धल ताहं ताहं । धिमित्ता किट धविकिरगथों झगनग तगथों । तगथों तगथों किट धिमि किरट । तग धिमि तेत्थां धिमि धिमि तत्था तत्था तत्था । थोंगणि थों थों । नकधधि थोंगणथोंग ॥ **इति वार्तिकमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥**

अथ दक्षिणमार्ग चंचतपुट लिख्यते ॥ जहां तालकी कलाके पाठा-क्षर आठ गुणा करि वरतिये सो दक्षिणमार्ग जांनिये ॥ अथ उदाहरण लिख्यते ॥ किट किण किड दगथों किडदग किडदग किडदगथों । तग तग जग नग नग जग तगथों । कुकु थरि थरि किटदा धिमि धिमि धिमि तत धिमि तत थरि थरि थरि थरिथों । तीधिमि धिकितां तत किधिकिधि । धितां धिधितां धिधितधिथों । थाथै तथथै तत-धिमि । तदिदांदां । तदिदितदांदां धधिगणथों । किटकिण किणटगथों । कुकुथरि किडदग किडदग किडदगथों । तगतग जगतजग ततथों । कुकु थरि थरि किटदां धिमि धि मि धिमि

ततधिमि तत्तथरि थरिथरिथों। तांधिमिधिकिनां ततधि द्रांदां। तदितदिदां दांधधि-गणथों। इति दक्षिणमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥ इति चतुर्विधमार्ग चंचतपुट संपूर्णम् ॥

ऐसेंही चाचपुट षट् पितापुत्र संपक्केष्टाक उद्घट। इन तालमें गुरु लघु प्लुत अक्षरनकी जितनी कला होय तितने पाटाक्षर रचि अनुक्रमसों एक दो च्यार आठ वार वरतिकें च्यारों मार्ग कीजिये ॥ इति मार्गी तालनकी ध्रुव। १। चित्र। २। वार्तिक। ३। दक्षिण। ४। मार्ग लछन संपूर्णम् ॥

अथ संगीत पारिजातकसों पांचों मार्गी तालनके द्विकल चतुष्कल भेद लिख्यते ॥ जहां तालनकी कला दूसरी वरति दोय तालके प्रमाण एक ताल कीजिये। सो द्विकल जांनिये ॥ सो यहां प्रथम चंचतपुटको उदाहरण लिख्यते। या द्विकल चंचतपुटकी सोलह मात्रा है। सो सोलह पाटाक्षर रचि एक दो च्यार आठ बारह वरति च्यारों मार्ग साधिये। अथ चंचतपुटको पाटाक्षर लिख्यते ॥ तमरुगतकाकुंदरी। कुनकथरि थरि कुकुतकथरि। थोंगिणके जगजगधिमि-थरि। तत थरि थरि थरि धिमि थरिनक। धिमि धिमि धिमि थरि धिमिथधिमि धधि गणथां ॥ इति द्विकल चंचतपुटको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चतुष्कल चंचतपुटको लछन लिख्यते ॥ जहां पांचों मार्ग तालनकी कला चोगुनी करि च्यारि तालनके प्रमाण एक ताल कीजिये। सो चतुष्कल जांनिये ॥ तहां चतुष्कल चंचतपुटको पाटाक्षर लिख्यते ॥ था धिमि तत धिमि धिमिथां। धिमिथां धलांगत गतधलांग। किटरीकि कुंद्रीकी ततधलतां। हंतांहं धिमितां किट धधि किण थोंड। गनगतगथां तगथों। किट धिमि किरिट तगधिमि तत्था धिमि धिमि तत्था। तत्था तत्थाथों गिणथों थों। नकधधि गणथों ॥ इति चतुष्कल चंचतपुटको ताल संपूर्णम् ॥

या चतुष्कल चंचतपुटकी बत्तीस मात्रा हैं। सो बत्तीस पाटाक्षर रचिके एक दोय च्यार आठ वेर वरतिके च्यारो मार्ग साधिये। ऐसेंही चाचपुट आदि च्यारों तालके भेद जंत्रसों समझिये ॥ इति चतुष्कल चंचतपुट तालको भेद संपूर्णम् ॥

अथ अष्टकल चंचतपुटको लछन लिख्यते ॥ जहां तालकी कला आठ गुनी करि आठ तालके प्रमाण एक ताल वरतिये सो अष्टकल जांनिये ॥ अष्टकल चंचतपुटके पाटाक्षर लिख्यते ॥ किटकणकिडगदथों। किडदग किडदग किड-दगथों। तग तग जग तग नग जग तम थों। कुकु थरि थरि किटदां। धिमि धिमि धिमि तत। थरि थरि थरि थरिथों। तां धिमि धिकितां। तत धि किधि धितां धितां।

धित धितातांधि धित धिथों। था थै तथ थै तथ धिमि तधि दांदां। तदि दिद दांदां धधि गणथों। किट किण किड दगथों। किड दगकिड गदकिड दगथों। तग नग जग तनग जग तगथों। कुकु थरि थरि किट दां। धिमि धिमि धिमि तत धिमि तत थरि थरि थरि थरिथों। ता धिमि धिकितां। तत धिकि धिधितां। धितां धित धितां तांधि धि तथिथों। था थै तथ थ तत धिमि तदाहि दांत। दि दि तदांदां दधि गणथों ॥ इति अष्टकल चंचतपुटके पाठाक्षर संपूर्णम् ॥

अथ द्विकल चाचपुटके भेद लिख्यते ॥ या द्विकल चाचपुटकी तालनकी कला चोगुनी करि च्यारि तालनके प्रमाण एक ताल कीजिये सो चतुष्कल जांनिये ॥ तहां चतुष्कल चंचत्पुटको पाटाक्षर लिख्यते ॥ था धिमि तत धिमि धिमि था। धिमिथाधलांग तग तग धलांग। किटरिक कुंदरिकि तत धल ताहं ताहं धिमि तां। किट धधि किणथों। डग नग तगथों। तगथों तगथों किटि धिमि किरिंट तग धिमि तत्था। धिमि धिमि तत्था तत्था। तत्थार्थो। गिणथों। थोंनकधि गणर्थो ॥ इति द्विकल चाचपुटके भेद–लछन संपूर्णम् ॥

या द्विकल चाचपुटकी बारह मात्रा है सो बारह मात्रा रचि एक दोय आठ वेर अनुक्रमसां वरतिये च्यारो मार्ग साधिये ॥ इति द्विकल चाचपुटको लछन संपूर्णम् ॥

अथ चतुष्कल चाचपुटको लछन लिख्यते ॥ या चतुष्कल चाचपुटकी चोविस मात्रा ह। चोविस पाटाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरतिये च्यारों मार्ग साधिये ॥ इति चतुष्कल चाचपुटको लछन संपूर्णम् ॥

अथ अष्टकल चाचपुटको लछन लिख्यते ॥ चाचपुटके अष्टकल ॥ १ ॥ षोडशकल ॥ २ ॥ ये दोय भेद होय हं। अष्टकल चाचपुटकी अडतालिस माबा है सो अडतालिस पाटाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरति च्यारों गार्ग साधिये ॥ इति अष्ट कल चाचपुटको लछनं संपूर्णम् ॥

या सोलह कल चाचपुटकी छण्णो मात्रा ह। सो छण्णो पाटाक्षर रचि एक दोय चार आठ वेर वरतिके चारों मार्ग साधिये॥ इति षोडश चाचपुटको भेद संपूर्णम् ॥

अथ अष्टकल षट् पितापुत्रको लछन लिख्यते॥ द्विकल चतुष्कल अष्टकल षट् पितापुत्रकी जितनी कला होय तितने पाठाक्षर रचि एक दोय चार वेर वराति चारो मार्ग साधिये ॥ इति अष्टकल षट पितापुत्रको लछन संपूर्णम् ॥

द्विकल चंचतपुट ताल.

पाटाक्षर नाम परमलु	अक्षरताल मात्रा सहनाणी.	समस्या
तग तगक कुदरी कुंनक थरी थरि कुकु	गुरु २ ऽ ऽ १॥। ○	गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल
तक थरियों गिणकें जग जधिमि थरि	गुरु २ ऽ ऽ २	गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल
तत थरि थरि थरि धिमि थरिनक धिम	लघु २ ऽ ऽ ३	लघुकी सहनाणी अंक हे सों ताल
धिमि धिमि थरि धिमि धिमि धधिगणथां	प्लुत २ ऽ	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सों ताल

अथ चतुष्कल चंचतपुट ताल जंत्र.

पाटाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा	समस्या
थां धिसे तत धिमि धिमि थां धिम थां धलांग धलांग तग तग धलांग	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ १	गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल
किटरीकि कुंदरीकी तत धल तांहं तांहं धिमि तां किटधधिकेणथां डगनग	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ २	गुरुकी सहनाणी अंक हे सों ताल

पाटाक्षरको नाम परमलु	अक्षरताल मात्रा	समस्या
तगत्थो तगत्थो तगत्थो किटधिमि किरिट तग धिमि तत्थाधिधिमि धि	लघु ४ ॥॥३	लघुकी सहनाणी अंकहै सों ताल
तत्थातत्थाथो गिणथोथो नक धधिगणथों	प्लुत ४ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सों ताल

अथ अष्टकल चंचतपुट ताल जंत्र.

पाटाक्षरको नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
किटकिण किडदगथों किडदग किडगकिडदगथों जग नग जग तग नजम तगथों कुकु थरि थरि किटद् धिमि धिमि तत धिमिततथ	गुरु ८ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थरिथो ता धिमिधिकीतां तत धिकिधिधिता धितां धितधितांता धिमि ताधिमितधिथों	गुरु ८ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
तगत्थो तगत्थो तगत्थो किटधिधिमि किरि तग धिमि तत्थाधिधिमि धि	लघु ८ ॥॥॥॥ ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
धिकितां तत धिकिधिधि ताधिंथि ताधितधितां ताधिधिधित धिथाथा थों तथै तत धिमितदि दांदां तदित दादादधि गणथों	प्लुत ८ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ऽ३ ४	प्नुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

चाचपुट ताल चोतालो.

ताल	अक्षर ताल मात्रा	चचकार	परमलु	समस्या
१. प्रथम	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ९	थेई तित तत	तत्था तत तत्था	प्रथम दीर्घकी सहनाणी ताके आगे अंक है सो ताल है ता पीछे दोय लकि है सो मात्रा दोय आर दुसरी मात्राके नीचे बिंदी है सो ताल देके दाहिना हातको नीचेके झालो देणों।
२. दूसरी	लघु ताल मात्रा २	थेई	कु क दत्था	प्रथम लघूकी सहनाणी ता पीछे दूसरो अंक है सो ताल है ता पीछे लकि है सो एक मात्रा है।
३. तीसरी	लघु ताल मात्रा ३	थेई	तक तकथों	प्रथम लघूकी सहनाणी ता पीछे अंक है सो ताल है पीछे लकि है सो मात्रा है।
४. चोथी	गुरु ताल मात्रा ९ ४ ९	थेई तित तत	धिता कोकिण गग व क कित्था	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक है सो ताल है पीछे जो लकि है सो दोय मात्रा है दूसरी मात्राके नीचे बिंदी है सो दाहिना हातसों तालके हात नीचे करे वो झाला ह झाला उपरही मान है।

अथ द्विकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई २ तिततत दोय वार कहिये	गुरु २ ऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई २ दोय वार कहिये	लघु २ ॥ २	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई २ दोय वार कहिये	लघु २ ॥ ३	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई तिततत २ दोय वार कहिये	गरु २ ऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल

अथ चतुष्कल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई ४ च्यार वार कहिये	लघु ४ ॥॥ २	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई ४ च्यार वार कहिये	लघु ४ ॥॥ ३	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल

अथ अष्टकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षरको नाम परमलू	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ८ आठवार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ८ आठवार कहिये	लघु ८ |||||||| २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ८ आठवार कहिये	लघु ८ |||||||| ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठवार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

षट् पितापुत्रको जंत्र षट्तालो.

ताल	अक्षर ताल मात्रा	चचकार	परमलु	समस्या
१. प्रथम	प्लुत ताल मात्रा ३ १॥	थेई तित तत थेई थेई १	झूझूनक झूकनक क	प्रथम दीर्घकी सहनाणी ताके आगे अंक हे सो ताल हे ता पीछे लीक हे सो मात्रा तीन हे तीसरी विंदी मात्राके हाथको झालोगोल कुंडालो हे सो परिक्रमा वा हाथकी दाहिणे सो करे वा झालो,झालो उपर मान।
२. दूसरी	लघु ताल मात्रा २	थेई ॥॥ २	थूंथ डिक	प्रथम लघुकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल पीछे लीक हे सो मात्रा।
३. तीसरी	गुरु ताल मात्रा ऽ३९	थेई तित तत ३	थूंमथ–डिथा	प्रथम दीर्घकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल ता पीछे लीक हे सो मात्रा दुसरी लीक हें विंदी हे सो दाहिना हाथसो बांये पर-झालो देणो नीचेका।
४. चोथी	गुरु ताल मात्रा ऽ४९	थेई तित तत ४	तथु झझन झनन थरिर	प्रथम गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल पीछे लीक हे सो मात्रा दुसरी लीक है विंदी हे सो तालके हाथको नीचे करेवा झालो हे।
५. पांचमी	लघु ताल मात्रा ५	थेई ५	ता थं	प्रथम लघुकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल ता पीछे लीक हे सो मात्रा हे।
६. छटमी	प्लुत ताल मात्रा ३६	थेई तित तत थेई थेई ६	थगिकै जकि ट किटिकजे	प्रथम प्लुतकी सहनाणी ता पीछे अंक हे सो ताल ता पीछे लीक हे सो मात्रा हे गोल कुंडाला हे सो दाहिणा हाथसो बांयेकी परक्रमा कर विंदी हे सो हाथको नीचेको झालो हे झाला उपरही मान हे।

अथ द्विकल पट पितापुत्रको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई २ दोयवार कहिये	प्लुत २ ऽे ऽे १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई २ दोयवार कहिये	लघु २ ॥ २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत २ दोयवार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत २ दोयवार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई २ दोयवार कहिये	लघु २ ॥ ५	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई २ दोयवार कहिये	प्लुत २ ऽे ऽ ६	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

अथ चतुष्कल पट पितापुत्र–लछन लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई ४ च्यार बार कहिये	प्लुत ४ ऽे ऽे ऽे ऽे १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ४ च्यार बार कहिये	लघु ४ ।।।। २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ४ च्यार बार कहिये	लघु ४ ।।।। ५	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

अथ अष्टकल, षट्र पितापुत्र-लछन लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई ८ आठ बार कहिये	प्लुत ८ ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ८ आठ बार कहिये	लघु ८ ।।।।।।।। २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठ बार कहिये	गुरु ८ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठ बार कहिये	गुरु ८ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई ८ आठ बार कहिये	लघु ८ ।।।।।।।। ५	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई ८ आठ बार कहिये	प्लुत ८ ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ऽ३ ६	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

संपकेष्टाकको जंत्र चौतालो.

ताल	अक्षर ताल मात्रा	चचकार	परमलु	समस्या
१. प्रथम	गुरु ताल मात्रा ३ १॥	थेई तित तत थे ई थे ई	तथा किराकी ताज गजमटगत कनकथिरिरिवे	प्रथम प्लुतकी सहनाणी ता पीछे जो अंक है सो ताल है ता पीछे लीक है सो तीन मात्रा है कुंडालो हात परिक्रमा बिंदी है सो हातको नीचे झालो है झाला पेही मान ।
२. दूसरी	गुरु ताल मात्रा ऽ २।८	थे ई निन तत	तस्थरि थोक कुटी दीटी	प्रथम दीर्घकी सहनाणी आगे अंक है सो ताल है ताल पीछे लीक है सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विंदी है सो हातको नीचेको झालो है ।
३. तीसरी	गुरु ताल मात्रा ऽ ३।८	थे ई तित तत	किंटि थुम थुझन्का ममकुट	प्रथम दीर्घकी सहनाणी आगे अंक है सो ताल है ताल पीछे लीक है सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विंदी है सो हातको नीचेको झालो है ।
४. चोथी	गुरु ताल मात्रा ३ ४८।	थे ई तित तत	तथुझझन झ-ननथरिर	प्रथम दीर्घकी सहनाणी आगे अंक है सो ताल है ता पीछे लीक है सो मात्रा ––सो लीक है नीचे विंदी है सो हातको नीचेको झालो है ।
५. पांचमी	प्लुत ताल मात्रा ३ ५॥	थे ई तित तत थे ई थे ई	सिद्ध लंग क्रगि रिगि क झझजा किटिनकी कि-स्था	प्रथम प्लुतकी सहनाणी ता आगे अंक है सो ताल है ताल पीछे लीक है सो मात्रा मात्रा नीचे विंदी है सो हातको झालो गोल कुंडालो है परिक्रमा है नीचेको हातको झालो है झाला उपर मान है ।

अथ द्विकल संपक्वेष्टाकको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तितत थेई थेई २ दोयवार कहिये	प्लुत २ ऽऽ १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत २ दोयवार कहिये	गुरु २ ऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत २ दोयवार कहिये	गुरु २ ऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत २ दोयवार कहिये	गुरु २ ऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत थेई थेई २ दोयवार कहिये	प्लुत २ ऽऽ ५	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

अथ चतुष्कल संपक्वेष्टाकको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तितत थेई थेई ४ च्यार वार कहिये	प्लुत ४ ऽऽऽऽ १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ४ च्यार वार कहिये	गुरु २ ऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई ४ च्यार वार कहिये	प्लुत ४ ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ ५	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

अथ अष्टकल संपक्केष्टाके जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तिततत थेई थेई ८ आठ वार कहिये	प्लुत ८ ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई ८ आठ वार कहिये	प्लुत ८ ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ऽ̀ ५	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

जहां द्विकल चतुष्कल अष्टकल संपक्केष्टाकके कला प्रस्तार पाटाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वार वरतिकें च्यारों मार्ग साधिये ॥ इति अष्टकल संपक्केष्टाके जं० भे० संपूर्णम् ॥

उद्धट तालको जंत्र तितालो.

ताल	अक्षर ताल मात्रा	चचकार	परमलु	समस्या
१. प्रथम	गुरु ताल मात्रा ऽ१।६	थेई तित तत १	थोरकि सकुक कज गनगन कुक	प्रथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो तालहे ता पीछे दोय लीकहे सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विंदी हे सो हाथको नीचो झालो हैं
२. दूसरी	गुरु ताल मात्रा ऽ२।८	थेई तित तत २	जकन कक कुकु जग कु	प्रथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो तालहैं ता पीछे दोय लीकहें सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विंदी हे सो हाथको नीचो झालो हैं
३. तीसरी	गुरु ताल मात्रा ऽ३।८	थेई तित तत	जककत स्थारिक ड न न के डे	प्रथम तो गुरुकी सहनाणी ता पीछे अंकहे सो तालहे ता पीछे दोय लीक हे सो मात्रा दूसरी मात्राके नीचे विंदी हे सो हाथको नीचो झालो हैं गोल कुंडालो हे सो हाथको दाहिणों थापपें परिक्रमा करि हाथको नीचो झालो कीजिये झाला ऊपर मान हें

अथ चतुष्कल उद्धटको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तितत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

अथ अष्टकल उद्धटको जंत्र लिख्यते.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तितत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत ८ आठ वार कहिये	गुरु ८ ऽऽऽऽऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इहां द्विकल चतुष्कल अष्टकल उद्धटकी कलानके प्रमान पाठाक्षर रचि एक दोय च्यार आठ वेर वरविके च्यारो मार्ग साधिये॥ इति अष्टकल उद्धटके जंत्र संपूर्णम् ॥

इहां पांचों मार्गी तालनमें सब ठोर ध्रुव चित्र वार्तिक दक्षिण ॥ इन च्यारों मार्गोंमें ॥ एककल द्विकल चतुष्कल अष्टकल ये च्यारों भेद क्रमसों जांनिये ॥ ऐसेही द्विकल चतुष्कल अष्टकल भेदनको दुने चौगुने आठ गुने प्रमानसों च्यारों मार्ग कीजिये ॥ ऐसें अपनी बुद्धिसों शास्त्र प्रमानसों समझिकें मार्गी तालनके अनेक भेद जांनिये ॥ इति संगीत पारिजातकें मतसों **मार्गी ताल संपूर्णम् ॥**

अथ सारंगदेव महाराज ऋषीके मतसों चंचतपुट आदि पांचों मार्गी तालनके द्विकलादि भेदके ध्रुव आदि च्यार मार्ग वरतिवेको लछन लिख्यते ॥

चंचतपुट ताल एककल.

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई तितत्त १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ सं १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत्त १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । ता ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत्त थेई थेई १ एक बार कहिये	प्लुत १ ऽे श ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत्त १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तितत्त १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी	समस्या
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । श ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई १ एक बार कहिये	प्लुत १ ऽ ता ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । ता ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत थेई थेई १ एक बार कहिये	प्लुत १ ऽ श ४	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इहां यथाक्षर चंचतपुटमें गुरु लघु प्लुत अक्षरके सं श ता श ये चार अक्षर अनुक्रमसों जांनिये ॥ अथवा ता श ता श जांनिये ॥

तहां सकार तो संपातकी संज्ञा है । तकार पातकी संज्ञा है ॥

ओर बिंदिसहित सकार सन्निपात जांनिये ॥

ओर श ता श ता इन चारों अक्षरसों चंचतपुटके गुरु लघु प्लुत काहू काहू गीतिमें वरतिये ॥ इहां सकारको संपात है । तकारको तालपात है । सो काहू काहू गीतीमें स ता श इन अक्षरसों चंचतपुट तालके अक्षर वरतिये । इहां क्रमसों तकारसों ताल सकारसों संपात ये रीति जांनिये ॥ इति एककल चंचतपुट संपूर्णम् ॥

अथ द्विकल चंचतपुटको जंत्र.

इहां तालके गुरु लघु अक्षर दुने कीजिये । सो द्विकल भेद जांनिये ॥

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तिततत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निता २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ शप्र ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ नि सं ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इहां द्विकलमें एक गुरु अक्षरकी एक मात्रा जांनिये ॥ तहां दोय गुरनमें एक गुरुसों शब्दजुत क्रियाको पात कहिये एक गुरुसों असब्द क्रियाको कला कहिये इनसो वरतिये निः अक्षरसों निस् क्रामक असशब्दक्रिया ओर संअक्षरसों संपात-क्रिया ताअक्षरसों तालपात क्रिया प्र अक्षरसो प्रवेशक अशब्द क्रियाक्रमसो जहां जहां आवे तहां तहां वरतिये. पहलेकी सिनाई समझिये इति द्विकल चंचतपुट संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल चंचतपुटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तिततत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनि विश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनि विता २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आशविप्र ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविसं ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति चतुष्कल चंचतपुटको जंत्र संपूर्णम्.

अथ एककल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । ता २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । श ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । श ६	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १	लघु १ । ता ७	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति एककल चाचपुट संपूर्णम्.

अथ द्विकल चाचपुटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ निश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ ताश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ निसं ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इन अक्षरमैं निस्क्राम अशब्द क्रिया सकारसों संपात तकारसों तालपात ऐसे जांनिये इति द्विकल चाचपुट संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल चाचपुट तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनिविश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनिविश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनिविश ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

या चतुष्कल चाचपुटको पहलेकी सिनाई अक्षर समझिये ॥

इति चतुष्कल चाचपुटको जंत्र संपूर्णम्.

अथ एककल षट्र पितापुत्र तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत थेई थेई १ एक बार कहिये	प्लुत १ ऽ̀ सं १	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । ता २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई १ एक बार कहिये	लघु १ । श ५	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत थेई थेई १ एक बार कहिये	प्लुत १ ऽ̀ ता ६	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति एककल षट् पितापुत्र संपूर्णम्.

अथ द्विकल षट्र पितापुत्र तालको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निम १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ ताश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निता ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ निश ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ ताम्र ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ निसं ६	गुरुकी सहानाणी अंकहे सो ताल

पहलेकी सीनाई अक्षर समझिये इति षट् पितापुत्र द्विकल संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल षट् पितापुत्रको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार वार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविम्र १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आताविशं २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविता ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो मात्रा
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविशं ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आताविम्र ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविसं ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पहलीकी सीनाई अक्षर समझिये इति चतुष्कल षट् पितापुत्रको ताल संपूर्णम्.

अथ एककल संपक्केष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत थेई थेई १ एक बार कहिये	द विराम १ ऽ ता १	द विरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ ता ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत थेई थेई १ एक बार कहिये	गुरु १ विराम ऽ ता ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति एककल संपक्केष्टाकको जंत्र संपूर्णम्.

अथ द्विकल संपक्केष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ नि प्र १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ ता श २	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ नि ता ३	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाटाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ नि श ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ ता म ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽऽ नि सं ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पहलेकी तिनाई अक्षर जानिये ॥ इति द्विकल संपक्केष्टाकको जंत्र संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल संपक्केष्टाकको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविम १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आताविश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविता ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविश ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आताविम ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ आनिविसं ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति संपक्केष्टाक चतुष्कल तालको जंत्र संपूर्णम्.

अथ एककल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ नि १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श. २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत १ एक बार कहिये	गुरु १ ऽ श ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति एककल उद्धटको जंत्र संपूर्णम्.

अथ द्विकल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ ताश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत २ दोय बार कहिये	गुरु २ ऽ ऽ निसं ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति द्विकल उद्धटको जंत्र संपूर्णम्.

अथ चतुष्कल उद्धटको जंत्र.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनिविश १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आताविश २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ आनिविस ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पहलकी सिनाई जांनिये. इति चतुष्कल उद्धट जंत्र संपूर्णम्.

चाचपुट तालको प्रथम भेद.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति चाचपुट तालको प्रथम भेद संपूर्णम्.

चाचपुटको दूसरो भेद.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ७	गुरुकी सहनाणी अकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ९	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ११	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १२	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति चाचपुटको दूसरो भेद संपुर्णम्.

अथ चाचपुटको तीसरो भेद.

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ १	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ २	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तिततत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ७	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ८	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽ ऽ ऽ ऽ ९	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ ११	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १२	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १५	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १६	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १७	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १८	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ १९	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

पाठाक्षर नाम परमलु.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	समस्या.
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २१	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २२	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २३	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल
थेई तित तत ४ च्यार बार कहिये	गुरु ४ ऽऽऽऽ २४	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल

इति चाचपुटको तीसरो भेद संपूर्णम्.

इहां मार्ग तालनमें चंचत्पुट तालके च्यारो गुरु आदिके अक्षरनमें द्विकल चतुष्कल रचिये तब पहले भागमें । चट्टी आगुलीसों ॥ दुसरे भागमें अनामिका अंगुलीसों । तीसरे भागमें मध्यम अंगलीसों। चोथे भागमे तर्जनी अंगुलीसों कलानकी समस्या कीजिये । ओर चाचपुटके द्विकलादिक भेदके तीन भागोंके कनिष्टका अनामिका तर्जनी इतनी अंगलूसों कलाकी समस्या कीजिये ॥ इहां मध्यमा अंगुली नही लीजिये । ओर षट् पिता पुत्रके द्विकलादिक भेदके छहो भागनमें कनिष्टका ॥ १ ॥ अनामिका मध्यमा तर्जनी ॥ २ ॥ फेर कनिष्टका ॥ ३ ॥ फेर तर्जनी इन अंगुलीनसों कलानकी समस्या । छहो भागनमें क्रमसों कीजिये ॥ इहां उद्धट ताल संपक्केष्टाक ताल द्विकलादिक भेदके गुरुअक्षर आदिके भागमें चाचपुटकी सिनाई बीचली मध्यमा अंगुली बीना अंगुलीसों उद्ध-

टमें ओर षट् पिता पुत्रकी सिनाई कनिष्टका ॥ १ ॥ अनामिका ॥ २ ॥ मध्यमा ॥ ३ ॥ तर्जनी ॥ ४ ॥ फेर कनिष्टका फेर तर्जनी इन अंगुलिनसों संपक्वेष्टाक तालमें कलानकी समस्या जांनिये ॥ ओर पातमें अंगुरीनको विचार नही कीजिये ॥ इति च्यारो, पांचो मार्गी तालनके च्यारों मार्गीनमें द्विकलादिक भेदवर्णन संपूर्णम् ॥

अथ मार्गी तालनके उद्धटको प्रकार लिख्यते ॥ वाद्याध्यायमें कहे जें प्रमांण तासों कांसिके ताल बनायके जो कोऊ पुरुष गांधर्व कहिये । शुष्क वाद्य ॥ १ ॥ आरितादिगीत ॥ २ ॥ षाड्जी आदिजाति छह छह तरहके ग्राम राग ॥ ४ ॥ इनकों गावें रचें ओर संपूर्ण । संगीत सास्त्रके भेदकों गुरु मुखसों विचारकें अभ्यास करें । सो हातके ताल लेके मार्गीताल प्रबंधादिक गायवेवारे पुरुषको सहाय करे । तासों गायवेवारेंको मन चुके नाही ऐसें बजावें । यह गान् विद्याको जज्ञको फलहे । सो जो असुद्ध गावे वा बजावे तो श्रोतानको फल नही होय तासों शुद्ध समझिके शुद्ध गावे ॥ १ ॥ इति मार्गी तालनके शुद्ध उद्धटको प्रकार संपूर्णम् ॥

अथ देशी तालनको लछन लिख्यते ॥ अनुद्रुत आदिक सातों अंगन करिके ध्रुव मार्गसों पंडितानें जे ताल कहेहैं उनको देशी ताल कहेहैं ॥

अथ परिवरतनको लछन लिख्यते ॥ मार्ग तालकी चोथाई अथवा आठवे भाग आदिकं जो देशी तालनमें फेर फेर वरतिये सो परिवरतना जांनिये ॥

अथ परिवरतनाको लछन लिख्यते ॥ जहां तालको विश्राम होय ऐसी जो कालक्रिया नाम समयकी तोलकों मान कहे हैं ॥ इति मान०

अथ गीतनको लछन लिख्यते ॥ ये शास्त्रमे कहे मार्गताल वा देशी ताल जिनमें वरतिये ते देवतानकी स्तुति गीतरूप कहिहे । सो वह गीत चोदहहैं ॥ १४ ॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ तहां प्रथमतो मद्रक ॥ १ ॥ दूसरो अपरांतक ॥ २ ॥ तीसरो उल्लोप्य ॥ ३ ॥ चोथो प्रकर्या ॥ ४ ॥ पांचवो वेणक ॥ ५ ॥ छटो रविन्द ॥ ६ ॥ सातवो कोत्तर ॥ ७ ॥ ऐसें सात तो ये गीत हे ॥ अरु सात ओर गीत हे ॥ तिनके नाम लिख्यते ॥ प्रथम छन्दक ॥ १ ॥ दूसरो आसारिता ॥ २ ॥ तीसरो वर्धमानक ॥ ३ ॥ चोथो पाणिका ॥ ४ ॥ पांचवी ऋचा ॥ ५ ॥

छटि गाथा ॥ ६ ॥ सातवी सामानि ॥ ७ ॥ ऐसे ये दोनु मिलिके चौदह गीत हैं ॥ १४ ॥ ऐसें ये चौदह गीत ब्रह्मा विष्णु आदि देवतानकी स्तुतिमें प्रयोग किये । तो धर्म अर्थ काम मोक्ष मिले या लिये ब्रह्माजीने कहे हैं ॥ तहां देसी ताल लघु गुरु प्लुतनकी मात्रा करिकें प्रमान कियो है ॥ तहां या लघु अक्षरको उच्चार जितने कालमें होय । सो काल लघुकी मात्रा जांनिये ॥ तैसी दोय मात्रा गुरुकी हें ॥ ओर तैसी तीन मात्रा प्लुतकी हे ॥ ओर कहूं देशी तालमे अधिक हूंमात्रा कहे हे ॥ तहां तालनमेंसों यति मात्र लेलीजिये इन देशी तालके लेवेमें । ओर छोडवेमें लघुको मुख्य जांनिये ॥ यातें द्रुत गुरु प्लुत ये मुख्य नही ओर जहां देशी तालनमें द्रुत आवे तहां भी लघु करिके स्थान जांनिये ॥ ओर लेवो छोडवो अपनी इच्छासो द्रुतादिकनमें जांनिये ॥ ये ताल संगीत रूप शरीरके प्राण कहे हे ॥ यासों सब जतन करिके गीत आदिकमें ताल विचार मुख्य हे ॥ यहां सब तालनकी आदिमें लघु जांनिये ॥ कितनेहू तालनको रूप समान हें नाम जुदे हैं ॥ ताको रण कहत हें ॥ सो सुनो यहां उन तालनको मान जुदे जुदे है ॥ ओर रूप एकही है ॥ प्रमाण भेदसें नाम भेद हे॥ जो मान एक होय तो नामहू एक होय ॥ यातें जुदो नाममें जुदो नाम कारण हें ॥ यातें भरत मुनिनें जुदों मानसों जुदे नाम करे हैं ॥ ओर कितनें उन तालनमें अंतमें विराम होय सो उन तालनमें संदेह करे हें के कहां वांको सरूप हें ॥ ओर कहां विराम हें ॥ ओर कोंन काल है ॥ ओर कोंन क्रिया है ॥ तहां समाधान कहत हैं ॥ यह ताल ओर पहले यातें या तालको सरूप नहीं यह गीत प्रबंधादिककें आधीन हें ॥ यातें याको काल प्रमाण नहीं याके क्रिया हुवी नहीं है ॥ यह अक्रिय शिवरूप हें ॥ यातें या ताल शिवजीकी सिनाई अनादि सिद्ध है ॥ परंतु गीत नृत्यमें द्रुत अथवा लघु अंतमे कीजिये है ॥ ओर जो कोऊ देशी ताल जा तालमें वरत्यो होय ता तालको जो विराम ताको अर्ध वा देशी तालमें विराम जांनिये ॥ ओर जो जासुं उत्पन्न भयो सो वांको अर्ध लेत हे ॥ ओर गुरुप्लुतादिक वर्ण मार्ग तालनमेंसें खेंचीके देशी तालवमें राखे हें ॥ ओर जो लघु द्रुतादिक खंड मार्ग तालनके खंडनमे ताल जांनिये ॥ यह पुराणी महामुनि कहत हैं ॥ यहां प्रस्तार रीति करिकें द्रुतमें लघु आदिनकी रचनासों एक एक तालकें अनेक अनेक भेद है ॥

अब देशी तालके भेद कहत हैं ॥ जहां मार्गी ताल चंचतपुट आदिकहें तिनके लघु गुरु आदिकें अंगनसों ॥ अथवा लघु गुरु आदिक अंगनके अणु । १ । द्रुत । २ । द विराम । ३ । ल विराम । ४ । इनमें जो जहां जैसो चाहिये तैसो तहां रचिये देशी नृत्य ॥ अरु देशी रागनके देशी प्रबंधनमें लोकानुरंजनकें लिये रचे जे ताल ते देशी ताल जांनिये ॥ जैसे मार्गी तालनमें अपनी बुद्धिसों लोकानुरंजनके लिये सूरनकों घाटि वाधि करिकें मुनीश्वरोंनें देशी ताल रचे हैं ॥ ऐसेही मार्गी एला आदि प्रबंधसो घाटि वाधि प्रमाणके देशी ताल होत है तैसेही मार्गी तालकें लघु । १ । गुरु । २ । प्लुत । ३ । इन तीनो अंगनको घाटि वधि कियेतें अथवा इन लघु आदि अंगनके स्थानकमें इनकें प्रमाणसों । अणु । १ । द्रुत । २ । द विराम । ३ । ल विराम । ४ । इनके रचवेसों मार्गी तालनसों नई रचनाके ताल अनेक होत हैं तिनमें जितने ताल शास्त्रमें प्रसिद्ध भरत वा मतंग आचारीज मुनीस्वरननें वरतेहैं ॥ ते सब देशी तालनको अनुक्रमसों न्यारो न्यारो लछन कहे हैं ॥ इनके अनुसारसों जंत्र जांनिये ॥

अथ देशी तालनकी उत्पत्ति नाम लिख्यते ॥ शिवजीने गीत छंद प्रबंध आदिक गान रचनानमें वरतिबके उन मार्ग तालनमेंसों देशी ताल उत्पन्न कीयो तहां प्रथम सातों अंगनके जुदे जुदे तालनके लछन लिख्यते ॥

तहां प्रथम चित्रताल ताको लछन लिखियें ॥ जा तालमें अणु द्रुतकों वरतिबो होय । और कोऊ अंग नही आवे । सो ताल चित्रताल जांनिये॥ या तालमें च्यार अनुद्रुत हैं ॥ ० ० ० ० यामें दोऊ हाथको अंतर आंगुल डेडको राखणो आंगुल डेड प्रमाण डोरा हाथमें राखिके साधिये । अब इन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें सातो अंगनमेंसों दुसरो अंग द्रुत लेके वांसो चित्र ताल उत्पन्न कियो ॥

१ चित्र ताल चौतालो.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	अणुद्रुत ‿१–	चचकार ति	प्रथम तालके परमलु त	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहै सो ताल है ताल आगे आडी लीकहै सो चोथाई मात्रा
२.	अणुद्रुत ‿२–	चचकार ति	दूसरी तालके परमलु धि	अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहै सो तालहै आडी लीकहै सो चोथाई मात्रा
३.	अणुद्रुत ‿३–	चचकार ति	तीसरी तालके परमलु थों	अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहै सो तालहै तालके आगे आडी लीकहै सो चोथाई मात्रा है
४.	अणुद्रुत ४–	चचकार ति	चोथी तालके परमलु न	अणुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहै सो तालआगे लीक है सो मात्रापें विश्राम विश्रामपें मानहै.

अथ एकताली तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें द्रुतही वरतिये ॥ ओर अंग नही आवे सो एकताली ताल जांनिये ॥ यामें च्यार द्रुतहें ० ० ० ० इति एकताली ताल–याहीका कंटुकार्य ताल कहतहें ॥ यामें दोऊ हाथको अतर अंगुल तीनको राखणो सो डोरो हाथमें राखिके साधिये डोर अंगुल तीनकी ॥

२ एकतालि ताल (कंटुकार्य).

ताल.	सहनाणी. ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	अनु ताल मात्रा ◡१–	चचकार ति १	प्रथम तालके परमलु नग	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सा ताल हे तालके आगे लीकहे सा चोथाई मात्रा है
२.	अनु ताल मात्रा ◡२–	चचकार ति २	दूसरी तालके परमलु धिग	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक हे सो चोथाई मात्रा है
३.	अनु ताल मात्रा ◡३–	चचकार ति ३	तीसरी तालके परमलु धिग	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक हे सो मात्रा जांनिये
४.	अनु ताल मात्रा ◡४–	चचकार ति ४	चौथी तालके परमलु नग	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल आगे लीकहे सो मात्रा
५.	अनु ताल मात्रा ◡५–	चचकार ति ५	पांचवी तालके परमलु थों	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो ताल हे आगे लीकहे सो मात्रा मात्रापे मान हैं.

२ दूसरो कंटुकार्य ताल चोतालो.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द्रुत ताल मात्रा ०१ =	चचकार ते १	प्रथम तालके परमलु तग धिग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल हे तालके आगे लीक आडीहे सो मात्रा आधी हे
२.	द्रुत ताल मात्रा ०२ =	चचकार ते २	दूसरी तालके परमलु धिग धिग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे तालके आगे लीकहे सो मात्रा आधी हे
३.	द्रुत ताल मात्रा ०३ =	चचकार ते ३	तीसरी तालके परमलु तग तग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक हे सो आधी मात्रा हे
४.	द्रुत ताल मात्रा ०४ =	चचकार ते ४	चोथी तालके परमलु थों थों	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक हे सो आधी मात्रा हे

यामे दोऊ हाथको अंतर अंगुल तीनको राखणों सो डोर हाथमें राखिके साधिये डोर अंगुल तीनकी ॥

अथ कंटुकार्य तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन सातों अंगनसों तीसरो अंग द विराम लेके वांसो कंटुकार्य ताल उत्पन्न कियो ॥ अथ कंटुकार्य तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें द विराम वरतिये ओर अंग नही आवे सो कंटुकार्य ताल

जांनिये ॥ या तालमें छह द विराम वरतहें । ऽऽऽऽऽऽ । इति कंदुकार्य । ३ । यामें दोऊ हाथको अंतर ॥ अंगुल साढा-च्यारिकों राखणो सो साढाच्यार अंगुल प्रमाण राखि डोरो साधिये ॥ इति कंदुकार्य तीसरो संपूर्णम् ॥

३ तीसरो कंदुकार्य पट्तालो.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द विराम ताल मात्रा ऽ१ ≡	चचकार तत	प्रथम तालके परमलु तगत	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे तीन आडी लीकहे सो मात्रा पोणहें
२.	द विराम ताल मात्रा ऽ२ ≡	चचकार तत्त	दूसरी तालके परमलु धिगित	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीकहे सो मात्रा पोणहें
३.	द विराम ताल मात्रा ऽ३ ≡	चचकार तत्त	तीसरी तालके परमलु धिगित	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीकहे सो मात्रा पोणहें
४.	द विराम ताल मात्रा ऽ४ ≡	चचकार तत	चोथी तालके परमलु तककु	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीकहे सो पोण मात्राहें
५.	द विराम ताल मात्रा ऽ५ ≡	चचकार तत	पांचवी तालके परमलु तककु	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो ताल हे आगे लीक हे सो मात्रा पोण हें
६.	द विराम ताल मात्रा ऽ६ ≡	चचकार तत्त	छटी तालके परमलु थों	प्रथम दविरामकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो ताल हे आगे तीन लीकहे सो पोण मात्रा हें याके विश्रामपर मान हे.

अथ आदि तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन सातों अंगनमेंसों चोथो अंग लघुके वांसों आदि ताल उत्पन्न कीयो ॥ अथ आदि तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें सात लघु आवें । ओर अंग नही आवें । सो आदि ताल जांनिये ॥ याहीको रासताल कहत है ॥ या तालमें सात लवुही वरतें हें ॥ इति आदि ताल ॥ यामें दोऊ हाथको अंतर अंगुल छह कहे है सो अंगुल साडाछह प्रमाण डोरो लेके साधिये ॥

४ चोथो रासताल यह सात तालो हे.

याको आदि ताल कहे हैं.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	लघु ताल मात्रा ।१।	चचकार थेई १	प्रथम तालके परमलु तत धि गि	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा एक १
२.	लघु ताल मात्रा ।२।	चचकार थेई २	दूसरी तालके परमलु धिगि तग	प्रथम लघुकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक हे सो मात्रा
३.	लघु ताल मात्रा ।३।	चचकार थेई ३	तीसरी तालके परमलु नगथों	प्रथम लघुकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक हे सो मात्रा
४.	लघु ताल मात्रा ।४।	चचकार थेई ४	चोथी तालके परमलु जग जग	प्रथम लघुकी सहनाणी ताके आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक हे सो मात्रा.

४ चौथो रासताल यह सात तालो हे.

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
५.	लघु ताल मात्रा । ५ ।	चचकार थेईं ५	पांचवी तालके परमलु नगथों	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो ताल हे आगे अंक हे सो मात्रा
६.	लघु ताल मात्रा । ६ ।	चचकार थेईं ६	छटी तालके परमलु तजधिमि	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो ताल हे आगे लीक हे सो मात्रा
७.	लघु ताल मात्रा । ७ ।	चचकार थेईं ७	सातवी तालके परमलु धिमिथों	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंक हे सो ताल ता आगे लीक हे सो मात्रा.

५ लघुशेखर ताल आठ तालो.

अथ लघुशेखर तालकी उत्पत्ति लिख्यत ॥ शिवजीने उन सातो अंगनमेंसा पांचवो अंग ल विराम लेके वासों लघुशेखर नाम ताल उत्पन्न कीयो ॥ लघुशेखरको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें ल विरामही वरतें ओर अंग नाहि आवें सो लघुशेखर नाम ताल जांनिये ॥ या तालमें आठ ल विराम हे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ इति लघुशेखर ताल । ५ । यामें दोऊ हाथको अंतर अंगुल नवको राखनो । सो नो अंगुलको डोरो हाथमें राखिके साधिये ॥

अथ पांचवो लघुशेखर ताल आठ तालो जंत्र ॥ ८ ॥

ताल.	ल विराम ता. मा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	ो १। =	तथेई	तत धिमि धिमि	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
२.	ो २। =	तथेई	था धिमि धिमि	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
३.	ो ३। =	तथेई	तग धिमि धिमि	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
४.	ो ४। =	तथेई	तग नग जग	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
५.	ो ५। =	तथेई	नग तग जग	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सा तालहै ता आग इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
६.	ो ६। =	तथेई	जग नग नग	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आग अंकहै सो तालहै ता आग इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
७.	ो ७। =	तथेई	नग धिगि तग	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.
८.	ो ८। =	तथेई	धधिगणथों	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै ता आगे इचोड लीकहै सो इचोड मात्राहै.

याम दोऊ हातको अंतर नो अंगुलको राखणो सो नों अंगुलको डोरो हातमें राखीके साधिये.

करुणा ताल आठ तालो.

अथ करुणा तालकी उत्पत्ति लिख्यते । शिवजीनें उनसातों अंगनमेसों छटवो अंग गुरु लेके वांसों करुणा ताल उत्पन्न कियो करुणा तालको लक्षण लिख्यते. जा तालमें गुरु आवे और अंगनही आवे सो करुणा ताल जानिये. या करुणा तालमें आठ गुरु बरते है ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ इति करुणा ताल ६ यामें दो हातको अंतर बारह अंगुलकी डोरी हातमें राखि साधिये.

छटो करुणा ताल आठ तालो.

ताल.	सहनाणी तालमात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	दीरघ ताल मात्रा बिंदी हातको झालो नीचेको ऽ१॥०	थेई तित तत ॥ १ ॥	कुकु थिर कुकु थिर	प्रथम दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो ताल आगे दोय लीकहै सो मात्राहै बिंदी हातको झालोहै.
२.	दीरघ ताल मात्रा बिंदी हातको झालो नीचेको ऽ२॥०	थेई तित तत	तग नग धिमिथों	प्रथम दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै आगे लीक दोयहै सो मात्राहै बिंदी हातको झालोहै.
३.	दीरघ ताल मात्रा बिंदी झालो नीचेको ऽ३॥०	थेई तित तत	थरि थरि किर थरि	दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीक मात्रा बिंदी हातको झालो नीचेकोहै.

४.	दीरघ ताल मात्रा विंदी हातको झालो नीचेको ऽ४॥०	थेई तित तत	किट थरि किट थों	दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहै सो मात्राहै विंदी है सो हातको झालो नीचेकोहै.
५.	दीरघ ताल मात्रा विंदी हातको झालो ऽ५॥०	थेई तित तत	था धिमि धिमि किट	दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहै सो मात्राहै विंदी है सो हातको झालो नीचेकोहै.
६.	दीरघ ताल मात्रा विंदी हातको झालो ऽ६॥०	थेई तित तत	तत धिमि धिमि किट	प्रथम दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहै सो मात्राहै विंदी हातको झालो नीचेकोहै.
७.	दीरघ ताल मा. विंदी हातका झालो ऽ ७॥०	थेई तित तत	तथा ततथा	दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहै सो मात्राहै विंदी हातको झालो है नीचेकोहै.
८.	दीरघ ताल मा. विंदी हातका झालो ऽ८॥०	थेई तित तत	तत ध धिगणथों	दीरघकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै लीकहै सो मात्राहै विंदी हातको झालोहै झाला उपर मान है.

सन्निपात या पिंड मंठ पट्ट तालो.

शिवजीनें उन सातों अंगनमेंसों सातवो अंग प्लुत लेके पिंड मंठ ताल उत्पन्न कियो. अथ पिंड मंठ तालको लछन लिख्यते. जो तालमें प्लुतही आवे ओर अंग नहीं आवे सो पिंड मंठ ताल जानिये. या तालमे छह प्लुतहै ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

इति पिंड मंठ ७ याको सन्निपातभी कहेहैं यामें दोऊ हातको अंतर अंगुल अठरहको राखनो अठार अंगुलकी डोरी हातमें राखि साधिये.

सातवो सन्निपात याको पिंड मंठ कहेहैं पट्ट तालो ॥ ६ ॥

ताल.	सहनाणी ताल मात्रा.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	प्लुत ताल मात्रा गोल कुंडालो हातको परि-क्रमा बिंदी झालो झालापे मान ऽ १॥।०	थेई तित तत थेई थेई.	तत धिमि धिमि नग थोंग	प्लुतकी सहनाणी ता आगे अंकहै सो तालहै आगे तीन लीकहै सो मा.हैं गोल कुंडालो हातकी परिक्रमाहै बिंदी नीचेको झालो है
२.	प्लुत ताल मात्रा गो. कुं हातकी परिक्रमा बिंदी झालो झालापे मान ऽ २॥।०	थेई तित तत थेई थेई.	तम तग तग तग कुंदरी कुंकुंदथों	प्लुतकी सहनाणी ता आगे अंक है सो तालहै आगे तीन लीकहै सो मात्राहै गोल कुंडालो हातकी परिक्रमाहै बिंदी नीचेको झालो है

३.	प्लुत ताल मात्रा गोल कुंडालो हातका झालो झालपे मान ऽ ३।।।०	थेई तित तत थेई थेई.	धिमि किर थरि थरि दांदा थरि	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहै सो ताल है आगे लीकहै सो मात्रा गोल कुंडालो हातकी पारिक्रमाहै विंदी झालो हातको नीचेको
४.	प्लुत ताल मात्रा गोल कुंडालो हातको झालो झालपे मान ऽ ४।।।०	थेई तित तत थेई थेई.	ताहं कुक तदि तदि दा	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहै सो ताल है आगे लीकहै सो मात्रा है गोल कुंडालो हातकी पारिक्रमाहै सो नीचेको झालो है
५.	प्लुत तालमात्रा गोल कुंडालो हातको झालो झालपे मान ऽ ५।।।०	थेई तित तत थेई थेई.	नक धिधितगथों धिमि तग	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहै सो ताल है आगे लीकहै सो मात्राहै गोल कुंडालो हातकी पारिक्रमाहै विंदी झालो हातको नीचेको
६.	प्लुत ताल मात्रा गोल कुंडालो हातकी परिक्रमा विंदी हातको झालो झालपे मान ऽ ६।।।०	थेई तित तत थेई थेई.	दां दां दां धधि णथों	प्लुतकी सहनाणी आगे अंकहै सो तालहै आगे लीकहै सो मात्राहै गोल कुंडालो हातकी परिक्रमा है दाहिने हातको बांये हातमें फेर नीचेको झालो दीजिये झाला परही मान है

सर्व ताल सात तालो.

अथ सर्व तालकी उत्पत्ति लिख्यते. शिवजीनें उन मार्ग तालनमेंसों विचारिकें गीत, नृत्य, वाद्य, नाटचमें, वरतवेको अणु आदिक सातों अंगनसों क्रम करिके देशी ताल उत्पन्न किनो वांको सर्व ताल नाम ताल धरयो अथ सर्व तालको लछन लिख्यते. जा तालमें प्रथम एक अणु होय दूसरो द्रुत होय तीसरो द्‌ विराम होय चोथो लघु होय पांचवो ल विराम होय छटो गुरु होय सातवोप्लुत होय या रीतिसों सातों अंगनके सात माल जांमे होय सो सर्व ताल जांनिये अथ सर्व तालको लछन लिख्यते ⌣०ो। IऽS अथ पाठाक्षर लिख्यते त ⌣ जग० तत्‌ ० तकथो तनकथो ।े तो थोताकथो ऽ धधि कट तकथो S इति सर्व ताल.

सर्व ताल सात तालो ॥ ७ ॥

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	अनुद्रुत ⌣ १ –	चचकार ति १	तालके परमलु त	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे आगे लीकहे सो मात्राहे
२.	द्रुत तालमात्रा ० २ =	चचकार ते २	तालके परमलु जग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे लीकहे सो आधि मात्रा
३.	द्वविराम ताल मात्रा ०३ ≡	चचकार तत ३	तालके परमल	प्रथम द्‌ विरामकी सहनाणी अकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा
४.	लघु तालमात्रा । ४ ।	चचकार थेई	तालके परमलु तकथों	लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा
५.	लविराम ताल मात्रा ।५॥ =	चचकार तथइ	तालके परमलु तनकथों	ल विरामकी सहनाणी अकहे सो तालहे लीकहे सो मात्राहे

६.	गुरु तालमात्रा ऽ ६॥०	चचकार थेई तित तत	तालके परमलु ताके तकथों	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा विंदी हाथको झालो
७.	प्लुत तालमात्रा ऽ̆ ७॥०	चचकार थेई तित तत थेईथेई	तालके परमलु धिधिकट तकथों	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो झालापे मानहे

पंचम ताल तितालो.

अथ पंचमतालकी उत्पत्ति लिख्यते. शिवजीनें उन मार्गतालमेंसों बिचारिकें गीत नत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवको अणुद्रुत लेकें देशी ताल उत्पन्न करि वांको पंचम नाम कीनों अथ पंचम तालको लछन लिख्यते. जा तालमें एक अणु होय अर दोय द्रुत होय या छंदसों गीतादिकमें सुख दुख उपजावें सो पंचम ताल जांनिये ये ताल तितालोहे अथ पंचम तालको सरूप लिख्यते ꣸०० अथ पाठाक्षर त० गण०

पंचम ताल तितालो ३.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्य.
१.	अनु. तालमात्रा ˘१—	चचकार ति	तालके परमलु त	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे आगे लीकहे सो मात्राहे
२.	द्रुत तालमात्रा ०२ =	चचकार ते	तालके परमलु गण	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्राहे
३.	द्रुत तालमात्रा ०३ ≡	चचकार त्ते	तालके परमलुथों	प्रथम द्रुतको सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्राहै मात्रापे विरामपें मानहै

द्वितीय ताल दोय तालो.

अथ द्वितीय तालकी उत्पति लिख्यते. शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिके गीत, नृत्य, नाट्यमे वरतिवेको द्रुतकी आवृत्तिसो देशी ताल उत्पन्न कीये याको द्वितीय ताल नाम कियो अथ द्वितीय तालको लक्षण लिख्यते. जा तालनम दोय द्रुत होय और गीतनत्य आदिमें रस नुपजावे, सो द्वितीय ताल जानिये. ये ताल दुतालो हैं अथ द्वितीय तालको सरूप लिख्यंते०० अथ पाठाक्षर जग० जग इति द्वि. ता.

द्वितीय ताल जंत्र दोय तालो २.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द्रुत ताल मात्रा ०१–	चचकार ते	जग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा
२.	द्रुत ताल मात्रा ०२ =	चचकार ते	जग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा मात्रापै विश्राम विश्राममें मानहै

अथ आदि ताल तितालो.

अथ आदितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत लघु लेके देशी ताल उत्पन्न करिवेको आदि ताल नाम कीनो अथ आदि तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें प्रथम दोय द्रुत होय ओर एक लघु होय या रीतिसो तीन तालमें होय । सो आदि ताल जांनिये ॥ ये ताल तितालो हे आदि तालको स्वरूप लिख्यते ०० । अथ पाठाक्षर जग० जग० थो इ० आदि० ता० स०

आदि ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार ते	प्रथम तालके परमलु जग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक हे सो मात्राहे
२.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार ते	दुसरी तालके परमलु जग	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक हे सो मात्रा हे
३.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार थेई	तीसरी तालके परमलु तकथो	प्रथम लघकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा मात्रा पे मानहे

चतुर्थ ताल तितालो.

अथ चतुर्थ तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्यमें वरतिवेकों अणु ओर द्रुत लेके देशी ताल उत्पन्न करि वाको चतुर्थ नाम ताल कीनो अथ चतुर्थ ताल लिख्यते ॥ जा तालमें एक अणु होय ओर एक द्रुत होय या छंदसों गीतादिकनमे सुख उपजविंसो चतुर्थ ताल जांनिये ॥ ये ताल तितालो हे ॥ अथ चतुर्थ तालको स्वरूप लिख्यते ॥ ◡ ◡ ० अथ पाठाक्षर त ◡ त ◡ थों इति चतुर्थ ताल संपूर्णम् ॥

अथ चतुर्थ ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	अनु ताल मात्रा ◡ १ —	चचकार ति १	प्रथम तालके परमलु त	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे लीक हे सो मात्रा चोथाई

चतुर्थ ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
२.	अनु ताल मात्रा ◡२ =	चचकार ति २	दुसरी तालके परमलु त	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ठीकहे सो मात्रा चोथाई
३.	द्रुत ताल मात्रा ०३ ≡	चचकार ते ३	तीसरी तालके परमलु थो	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे ठीक मात्रा मात्रापें विश्राम विश्रामपे मान हे

सप्तम ताल तितालो.

अथ सप्तम तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनषार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटयेमें वरतिवेको अणु द विराम लेके देशी ताल नुत्पन्न करि वांको सप्तम ताल नाम किनों अथ सप्तम तालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक अणु होय और दोय द विराम होय या रीतीसो तालनमें गीतादिकमें सुख उपजावें सो सप्तम ताल जांनिये ॥ ये ताल तितालो हे ॥ अथ सप्तम तालको सरूप लिख्यते ॥ ० । ◡० ० अथ पाठाक्षर लि० तथलांथो इति सप्तम ताल संपूर्णम् ॥

सप्तम ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	अनु ताल मात्रा ◡ १ —	चचकार ति १	परमलु त १	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे ठीक हे सो मात्रा
२.	द विराम ताल मात्रा ० २ =	चचकार तत २	परमलु थ तां २	प्रथम अनुद्रुतकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे ठीक हे सो मात्रा हे
३.	द विराम ताल मात्रा ० ३ ≡	चचकार तत ३	परमलु थो ३	प्रथम द विरामकी सहनाणी आगे अंक हे सो ताल हे ठीक हे सो मात्रा हे मात्रापें विश्राम

अष्टम ताल तितालो.

अथ अष्टम तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाटच वरतिवेको द विराम अणु लघु लेके देशी तालनमें उत्पन्न करि वांको अष्टम नाम किनों अष्टम तालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक द विराम होय और एक अणु होय एक लघु होय, या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो अष्टम ताल जांनिये ॥ ये ताल तितालो हे ॥ अथ अष्टम तालको सरूप लिख्यते ०।ॅ ॅ अथ पाठाक्षर लि०। ध ला तत कथों इति अष्टम ताल संपूर्णम् ॥

अष्टम ताल तितालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द विराम ताल मात्रा ॅ १ ≡	चचकर तत ॥ १ ॥	प्रथम त लके परमलु धलां	प्रथम द विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा लीक तीन आडी
२.	अणु ताल मात्रा ॅ २ –	चचकार ति ॥ २ ॥	दूसरी तालके परमलु त	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक आडीहे सो मात्रा
३.	लघु ताल मात्रा । ३ ।	चचकार थेई ॥ ३ ॥	तीसरी तालके परमलु तकथों	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान

निःशंकलीला ताल पंचतालो.

अथ निःशंकलीला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटचनें वरतिवेको षट् पितापुत्रकी जातिसों ओर चंचतपुटसों प्लुत गुरु लघु लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांकों निःशंकलीला ताल नाम किनों ॥ अथ निःशंकलीला तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें दोय प्लुत होय दोय गुरु होय एक लघु होय या रीतिसों गीतादिकमें सुख

उपजावे सो ताल निःशंकलीला ताल जांनिये ॥ ये ताल पंचतालोहै ॥ अथ निःशंकलीला तालको सरूप लिख्यते ॥ ऽऽ ऽऽ। पाठाक्षर लि० धिकतां तांधि मिऽधु किट थडिगथा ऽत किट किटऽत किट कीडथों १ इति निःशंकलीला ताल.

निःशंकलीला ताल पंचतालो ५.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	प्लुत ताल मात्रा ऽ१॥।०	चचकार थेई तित तत थेईथेई	परमलु धिक तां तां तां धिम	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकेहै सो तालेहै लीकेहै सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
२.	प्लुत ताल मात्रा ऽ२॥।०	चचकार थेई तित तत थेईथेई	परमलु थूकिट थडिग था	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकेहै सो तालेहै लीकेहै सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
३.	गुरु ताल मात्रा ऽ३॥।०	चचकार थेई तित तत	परमलु त किट किट	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकेहै सो तालेहै लीकेहै सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
४.	गुरु ताल मात्रा ऽ४॥।०	चचकार थेई तित तत ४	परमलु त किटकी	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकेहै सो तालेहै लीकेहै सो मात्रा विंदी हाथको झालो
५.	गुरु ताल मात्रा ऽ५॥।०	चचकार थेई तित तत ॥५॥	परमलु थों	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकेहै सो तालेहै लीकेहै सो मात्रा मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान

चंद्रकला ताल सात तालो.

अथ चंद्रकला तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको उद्धट षट् पितापुत्र चंचतपुटमेंसों गुरु प्लुत लघु लेकें देशीताल उत्पन्न करि वांको चंद्रकला ताल नामकिनों ॥ अथ चंद्रकला तालको लछन लिख्यते ॥ जामें तीन गुरु होय तीन प्लुत होय एक लघु होय या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो चंद्रकला ताल

जानिये ॥ ये सात तालोंहैं ॥ अथ चंद्रकलातालको सरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ तक्किट किट तक्किट किट तक्किट किट धिक तां तां तां धिम धिक तां तां तां धिम धिक तां तां तां धिमथो इति चंद्रकला तालकी उत्पत्ति संपूर्णम् ॥

चंद्रकला ताल सात तालो.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	गुरु ताल मात्रा	चचकार थेई तित तत १	प्रथम तालके परमलु तक्किट किट १	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा विंदी हाथको झालो
२.	गुरु ताल मात्रा	चचकार थेई तित तत २	दूसरी तालके परमलु तक्किट किट २	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा विंदी हाथको झालो
३.	गुरु ताल मात्रा	चचकार थेई तित तत ३	तीसरी तालके परमलु तक्किट किट ३	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा विंदी हाथको झालो
४.	प्लुत ताल मात्रा	चचकार थेई तित तत ४	तालके परमलु धिक तांतांतां धिम ४	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा
५.	प्लुत ताल मात्रा	चचकार थेई तित तत ५	तालके परमलु धिक तांतांतां धिम ५	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
६.	प्लुत ताल मात्रा	थेई तित तत थेई थेई ६	तालके परमलु धिक तांतांतां धिम ६	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
७.	लघु ताल मात्रा	चचकार थेई ७	तालके परमलु थो ७	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल हे लीकहे सो मात्रा गोल कुंडालो मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान

ब्रह्मताल दश तालो.

अथ ब्रह्मतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीने देशी तालनमें वरतिवेको मार्ग तालनसों द्रुत लघु लेके उत्पन्नकरि वांको ब्रह्मताल नामकिनों ॥ अथ ब्रह्मतालको लछन लिख्यते ॥ जामें प्रथम लघु होय दूसरो द्रुत होय ओर तीसरो लघु होय फेर दोय द्रुत होय फेर एक लघु होय तीन द्रुत होय फेर एक लघु होय तेसे रीतसों द्रुत लघु मिलि जामें दश ताल होय। सो ब्रह्मताल जांनिये ॥ यह दश तालो हें ॥ याको प्रबंधनमें गीत गान नृत्य नाट्य वाद्यनमें वरतित हें ॥ अथ ब्रह्मतालको पाठाक्षर लिख्यते ॥ |०|००|०|०००| उदाहरण तत धिम किट० धिमिथो । तग० तग० धिमि तग । नग० धिमि० गण० थो । १ । तथरिकि । धिमि० तथरिकी । थरि० थरि० धिमि थरि । कुकु० धधि० गण० थो २ कुंदरिकि । कुकु० कुंदरिकी। दां० दां० दां धिमि। धिमि ० धधि गणथो० । ३ । डेडकि ऽ । केणं झगनग ऽ तग० धिमि० नग धिमि० नग तग नग० धिधि० गणथो । ४ । इति ब्रह्मताल संपूर्णम् ॥

अथ ब्रह्मतालको जंत्र दश तालो हे १०.

ताल.	अक्षर तालमात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	लघु ताल मात्रा ।१।	चचकार थेई १	ततधिम तथरिकि कुदरिकि डेडक	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे आगे लीक हे सो मात्रा हे
२.	द्रुत ताल मात्रा ०२ =	चचकार ते २	किट०धिमि कुकु-किण	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे ता आगे लीकहे सो मात्राहे
३.	लघु ताल मात्रा ।३।	चचकार थेई ३	धिमिथो तथरिकि कुंदरिकि झगनग	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे ता आगे लीकहे सो मात्रा हे

ब्रह्म ताल दश तालो.

४.	द्रुत ताल मात्रा ०४ =	चचकार ते ४	तग० थिरदां तग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे वा आगे लीकहे सो मात्राहे
५.	द्रुत ताल मात्रा ०५ =	चचकार ते ५	तग थिरदां धिमि	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीकहे सो मात्राहे
६.	लघु ताल मात्रा ० ।६।	चचकार थेई ६	धिमि तगथरि दा धि तगतग	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीकहे सो मात्रा
७.	द्रुत ताल मात्रा ०७ =	चचकार ते ७	तत कुकु धिमि नग	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक मात्रा
८.	द्रुत ताल मात्रा ०८ =	चचकार ते ८	धिधि धधि धाधि धधि	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक मात्रा
९.	लघु ताल मात्रा ०९ =	चचकार ते० ९	गण गण गण गण	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीक मात्रा
१०.	लघु तालमात्रा । १० ।	चचकार थेई १०	थो थो थो थो	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ता आगे लीकहे सो मात्रा हे मात्रापें विश्राम

इडावांन ताल पंचतालो.

अथ इडावांन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमेंसों विचारक गीत, नृत्य, वाद्य, नाटचमें वरतिवेकों द्रुत लघु लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको इडावांन ताल नाम किनों ॥ अथ इडावांन तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक द्रुत

होय एक लघु होय फेर दोय द्रुत होय फेर एक लघु होय या रितिसा गीतादिकमें सुख उपजावें सो इडावांन ताल जांनिये ॥ ये पंच तालोहै ॥ अथ इडावांन तालको सरूप लिख्यते ॥ ० ० ० अथ पाठाक्षर नग नग धिमि जग जग धिमिथों इडावांन ताल संपूर्णम् ॥

अथ इडावांन ताल जंत्र पंचतालो ५.

ताल.	अक्षर ताल मात्रा सहनाणी.	चचकार.	परमलु.	समस्या.
१.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार ते १	परमलु धिमिनग थरि किणतथि १	प्रथम द्रतकी सहनाणी अंकहे सो तालहें लीकहे सो मात्रा आधिहें
२.	लघु ताल मात्रा	चचकार थेई २	किटि नग तग धिमि नग थरि तत कुकथों गा २	प्रथम लघकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्राहे
३.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार ते ३	तग डग थरिन कंधधि ३	प्रथम द्रतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा
४.	द्रुत ताल मात्रा	चचकार ते ४	धिमि नग नग दागण ४	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे आगे लीकहे सो मात्रा
५.	लघु ताल मात्रा	चचकार थेई ५	नगथो धिमिथो थ रिथोकिणथोथो ५	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा मात्रापे विश्राम विश्रामपें मान

चतुस्ताल चोतालो.

अथ चतुस्तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उनमार्ग तालनमेंसों विचारिके गीत, नृत्य, वाद्य, नाट्यमें वरतिवेकों द्रुत लघु लेकें देशी ताल उत्पन्न करि वांको चतुस्ताल नामकिनों ॥ अथ चतुस्तालको लछन लिख्यते ॥ जामे तीन द्रुत होय ओर एक

लघु होय या रीतिसों गीतादिकर्मं सुख उपजावें सो ताल चतुस्ताल जांनिये ॥ ये चोतालोहें ॥ अथ चतुस्तालको सरूप लिख्यते ॥ ००० । अथ पाठाक्षर कु कु ० थरि ० नक ० थरि था ॥१॥ था ० थरि ० धिमि० थिरिथा ॥२॥ था० धधि ०गण०थों ई ॥३॥ इ०

चतुस्ताल जंत्र चोतालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सह्नाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	कु कु	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लिकहे सो आधी मात्राहे
२.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो आधी मात्राहे
३.	ते	नक	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो आधी मात्राहे
४.	थेई	थरि था	लघु ताल मात्रा । ४ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो एक मात्रा मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान.

कुंभक ताल चोदह तालो.

अथ कुंभक तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमेंसो विचारिकें गीत, नृत्य, वाद्य, नाटचमें वरतिवेको अणुद्रुत द विराम लघु ल विरामनकी क्रम उतक्रमसों आवृति तें देशीताल उत्पन्न करि ॥ वांको कुंभक ताल नामकिनों ॥ अथ कुंभक ताल लछन जामें पांच द्रुत होय फेर एक अणु होय एक द विराम होय ओर एक लघु होय फेर एक द्रुत होय एक अणु होय फेर एक द विराम होय एक लघु होय एक द्रुत होय ओर एक ल विराम होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें सो कुंभकताल

जांनिये ॥ यह चोदह तालाह ॥ अथ कुंभकतालका सरूप लिख्यते ॥ ००००० ‿ꠋ । ०‿ꠋ । ०ꠋ याकी परमलु लिख्यते ॥ जग० जग० नग० तग० जग० त ‿ धलां ꠋ तगथों । जग० त ‿ धलां ꠋ तकथों । जग०तत्तकथां ꠋ॥ ये चोदह तालो हें ॥

अथ कुंभकताल जंत्र चोदह तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
२.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	अथ द्रुतकी सहनाणी अंकहें सो तालहे लीकहे सोमात्रा आधी
३.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा आधी
४.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहै सो मात्रा आधी
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहै सो मात्रा आधी
६.	ति	त	अणुद्रुत तालमात्रा ‿ ६ —	अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक हे सो मात्रा चौथाई.

कुंभक ताल चोवह तालो.

७.	तेतत	धलों	द्विराम तालमात्रा ꣳ ७ ≡	प्रथम द विरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा तीन चोथाई
८.	थेई	तगथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा एक
९.	ते	जग	लघु ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा आधी
१०.	ति	त	अणु ताल मात्रा ‿ १० –	अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा चोथाई
११.	तेतत	धलों	द्वि० ताल मात्रा ꣳ ११ ≡	द विरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा तीन चोथाई
१२.	थेई	त क थों	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा एक
१३.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१४.	तत थेई	ततक थों	लवि० ताल मात्रा ा १४ ।=	ल विरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा डेड

लक्ष्मी ताल अठारह तालो.

अथ लक्ष्मीतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमेंसों विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको ओर उत्सव

सुख उपजावेंको देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको लक्ष्मीताल नाम किनों ॥ अथ लक्ष्मीतालको लछन लिख्यते ॥ जामें प्रथम द्रुत दोय होय एक लघु होय फेर दोय अणु द्रुत होय ओर एक द्रुत होय एक द विराम होय एक द्रुत होय एक लघु दोय द्रुत होय फेर एक द विराम होय एक द्रुत होय एक द विराम होय ओर एक लघु होय दोय द्रुत होय ओर एक ल विराम होय ऐसें द्रुत लघु द विराम ल विराम मिलिके अठारह १८ जहां आवें सो देशी ताल लक्ष्मीताल कहिये ॥ अथ लक्ष्मीतालको सरूप लिख्यते ० ० । ᵕ ᵕ ० ό ० । ० ० ό ० ό । ० ० ॊ अथ लक्ष्मीतालको पाठाक्षर लिख्यते ॥ दं०दां० त कु थरि । त ᵕ त ᵕ थरि० थरि कु ό तग० दां धिमि । जग०अग०धलां ό जग० घलां ό तग धिमि । धधि० गण०थों इ ॊ इ०लक्ष्मीता०संपूर्णम् ॥

लक्ष्मीताल अठारह तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	तें	दं	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे आडी लीकहे सो आधी मात्रा
२.	तें	दां	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे आडी लीकहे सो आधी मात्रा
[illegible]	थेंई	तकु थरि	लघु ताल मात्रा । ३ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे एक लीकहे सो एक मात्रा
४.	ति	त	अणुद्रुत ताल मात्रा ᵕ ४ —	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल आगे लीक आडी सो चोथाई मात्रा
५.	ति	त	अणुद्रुत ताल मात्रा ᵕ ५ —	प्रथम अणुद्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल आगे लीक आडी सो चोथाई मात्रा

लक्ष्मीताल अठारह ताली.

६.	ते	थरि	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल ताल आगे लीक आडी सो आधी मात्रा
७.	तत	थरिक	द्वि० तालमात्रा ं ७ ≡	प्रथम द्र विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल आगे आडी लीक तीन सो चोथाई मात्रा
८.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक आडी सो आधी मात्रा
९.	थेई	दांधिमि	लघु ताल मात्रा । ९ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक मात्रा एक
१०.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक सो मात्रा आधी
११.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक मात्रा आधी
१२.	तत	धलां	द्वि० ताल मात्रा ं १२ ≡	प्रथम द्र विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक सो मात्रा तीन चौथाई
१३.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक सो मात्रा आधी
१४.	तत	धलों	द्वि० ताल मात्रा ं १४ ≡	प्रथम द्र विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे आगे आडी लीक सो मात्रा तीन चौथाई

लक्ष्मी ताल अठारह तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१५.	थेई	तग धि मि	लघु ताल मात्रा । १५ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक सो मात्रा
१६.	ते	धधि	द्रुत ताल मात्रा ० १६ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक आधी मात्रा
१७.	ते	गण	द्रुत ताल मात्रा ० १७ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे ताल आगे लीक मात्रा आधी
१८.	तथेई	थों	लवि० ताल मात्रा । १८ । =	प्रथम ल विरामकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो तालहे आगे लीक मात्रा डेढ.

कुंडनांचीताल बारह तालो.

अथ कुंडनांची तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालननेंसों विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत लघु ल विराम लेकें देशी ताल उत्पन्न करि वाको कुंडनांची ताल नाम कीनों याको लोकीकमें कुरनाची कहेहें ॥ अथ कुंडनांचीको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय एक लघु होय एक ल विराम होय ओर एक द्रुत होय एक लघु होय फेर एक ल वि-राम होय एक लघु होय फेर एक द्रुत होय एक लघु होय फेर एक ल विराम होय एक द्रुत होय ओर एक ल विराम होय ऐसें द्रुत लघु ल विराम लेके बारह ताल होयहे सो ताल कुंडनांची जांनिये॥ अथ कुंडनांचीको सरूप लिख्यते ०।ो०।ो।०।ो०ो त०त्थथा। थरिकुदरिति ो किट० कु थरि। तग नग थल ो नग धिमि । नग० धिमितग। थथ रिंध धिमि ो गण० थो ो इति कुंडनांची ताल संपूर्णम्॥

अथ कुंडनांची ताल बारह तालों १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	त	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल आडी लीक दोय आधी मात्रा
२.	थेई	त्थैथा	लघु ताल मात्रा । २ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल एक लीकहे सो मात्रा एक
३.	तथेई	थरि कुदरिति	दवि० ताल मात्रा ो ३ ।=	प्रथम द विरामकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल एक लीकहे सो मात्रा डेड
४.	ते	किट	द्रुत ताल मात्रा ० ४ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल आगे लीक आधी मात्रा
५.	थेई	कुं थरि	लघु ताल मात्रा । ५ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
६.	तथेई	तग नग धलां	लवि० ताल मात्रा ो ६ ।=	प्रथम ल विरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो डेड मात्रा
७.	थेई	नग धिमि	लघु ताल मात्रा । ७ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो मात्रा एकहे
८.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक आडी आधी मात्रा

कुंडनांची ताल बारह तालो १२.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई	धिमि तग	लघु ताल मात्रा । ९ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल आगे लीकहे सो एक मात्रा
१०.	त थेई	थ थरि धधि	लवि० ताल मात्रा ो १० ।=	प्रथम ल विरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो डेड मात्रा
११.	ते	गण	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल आगे दोय आडी लीकहे सो आधी मात्रा
१२.	तथेई	थों	लवि० ताल मात्रा ो १२ ।=	प्रथम ल विरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीकहे सो डेड मात्रा मात्रापे विश्राम विश्रामपे मानहे.

अर्जुन ताल दश तालो.

अथ अर्जुन तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत लघु ल विराम लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको अर्जुन ताल नामकिनों अथ अर्जुन तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक द्रुत होय ओर एक लघु होय फेर एक द्रुत होय फेर एक लघु होय ओर तीन द्रुत होय एक लघु होय एक द्रुत होय एक ल विराम होय ॥ या रीतिसों गीवादिकमें सुख उपजांवे ॥ सो अर्जुन ताल जांनिये ॥ ये ताल दस तालो हे ॥ अथ अर्जुन तालको सरूप लिख्यते ॥ ०।०।०००।० ो ॥ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकीकमें परमलु कहतहे नग०तकथों । जग०तकथों । जम० जग० जग० तकथों । जग० तातकथों ो ॥ इति अर्जुन ताल संपूर्णम् ॥

अथ अर्जुन ताल जंत्र लिख्यते ॥ यह दश तालो है ॥

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर तालमात्रा.	समस्या.
१.	ते	नंगं	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा एक
३.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा एक
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
६.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
७.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
८.	थेई	तक थों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा एक

अथ अर्जुन ताल जंत्र लिख्यते ॥ यह दश तालो है ॥

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा आधी
१०.	तथेई	ततक थों	लविराम ताल मात्रा ा १० | =	प्रथम लविरामकी सहनाणी अंकहे सो तालहे लीक मात्रा डेड मात्रापे विश्राम विश्रामपे मान.

कुलताल पंद्रह तालो.

अथ कुलतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्ग तालनमेंसों विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों द्रुत लघु लेके उलटि सूधेकरवि उनसों देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको कुल ताल नामकिनों ॥ अथ कुल तालको लछन लिख्यते ॥ प्रथम एक द्रुत होय एक लघु होय फेर एक द्रुत होय एक लघु होय फेर एक द्रुत होय एक लघु होय अरु तीन द्रुत होय फेर एक लघु होय फेर चार द्रुत होय एक लघु होय ॥ या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो कुलताल जांनिये ॥ यह ताल पंद्रह तालोहें ॥ अथ कुलतालको सरूप लिख्यते ० । ० । ० । ००० । ०००० । अथ पाठाक्षर लिख्यते जग० तकथों । नग० तकथों । तग० तकथों । जग० तग० नग० तकथों । जग० जग० नग० जग० थकथों । इति कुलताल संपूर्णम् ॥

॥ कुलताल पंदरह तालो १५ ॥

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी

२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
५.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
७.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
८.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
९.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ९ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१०.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक

कुलताल पंद्रह तालो.

ताल.	पचकार.	परनलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
११.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ११ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१२.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १२ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१३.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० १३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१४.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १४ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
१५.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १५ ।	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक मात्रापें विश्राम विश्राममें मान.

रचा ताल दोय तालो.

अथ रचा तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमेंसों विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको लघु द विराम लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको रचा नाम किनों ॥ अथ रचा तालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें एक लघु होय और एक द्र विराम होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो रचा ताल जांनिये ॥ यह ताल दोय तालो है ॥ अथ रचा तालको स्वरूप लिख्यते । ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ तकथों । धलों ऽ इति रचा ताल संपूर्णम् ॥

रच्चा ताल द्वाय तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा | १ |	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२.	तत	धर्लां	द्रवि० ताल मात्रा ऽ २ ≡	प्रथम द विरामकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन चोथाई मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान.

सन्नितास आठ तालो.

अथ सन्नितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत लघु लेकें देशी ताल उत्पन्न करि वांको सन्निताल नाम कीनों ॥ अथ सन्नितालको लछन लिख्यते ॥ जा तालमें तीन द्रुत होय ओर एक लघु होय फेर दोय द्रुत होय दोय लघु होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो सन्निताल जांनिये ॥ ये ताल आठ तालो हे ॥ अथ सन्नितालको सरूप लिख्यते ००० । ०० ॥ अथ पाठाछर लिख्यते ॥ जग० तग० नग० तकथों । जग० नग० तकथों । तकथों । इति सन्निताल संपूर्णम् ॥

सन्नितास आठ तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी

सम्बितालके आठ ताल.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
३.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे हे सो मात्रा एक
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा आधी
६.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ६ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
८.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा एक मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान.

सिंहविक्रम ताल आठ तालो.

अथ सिंहविक्रम तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें इन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको उद्धट चंचत्पुट तालसों गुरु लघु प्लुत लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको सिंहविक्रम ताल नामकिनों ॥ अथ सिंहविक्रम तालको लछन लिख्यते ॥ जामें तीन गुरु होय एक लघु होय एक प्लुत होय फेर एक लघु होय ओर एक गुरु होय फेर एक प्लुत होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें। सो सिंहविक्रम ताल जांनिये ॥ यह आठ तालो हे ॥ अथ सिंहविक्रम तालको सरूप लिख्यते ऽ ऽ ऽ । ऽ३ । ऽ ऽ३ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहीको लोकीकमें परमलु कहते हैं ॥ ता ता थोंकिटऽ धिधिनकथोंकिट ऽ धिधिकिटधिधिकिट ऽ थों गा। धिधिमि धिधिमि भिमिथों ऽ३ ताथों । ततथरि ताथुं ऽ तकि तकि भिधि तगथों ऽ३ इति सिंहविक्रम ताल संपूर्णम् ॥

सिंहविक्रम ताल आंठ ताको.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	ताताथों किट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ó	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक मात्रा दोय विंदी झालो हातको
२.	थेई तिततत	धिधिनकथों किट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ó	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक मात्रा दोय विंदी झालो हातको
३.	थेई तिततत	धिधिकिटधि धिकट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ó	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल ठीक मात्रा दोय विंदी झालो हातको

सिंहविक्रम ताल आठ तालो.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी. अक्षर ताल मात्रा	समस्या.
४.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
५.	थेई तिततत थेई थेई	धिधिमि धिधि मि धिमिथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ५ ।।।)	प्लतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
६.	थेई	ताथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा एक
७.	थेई तिततत	ततथरिताथुं	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ं।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
८.	थेई तिततत थेई थेई	तकितकिधि धितगथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ८ ।।।)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकि परिक्रमा विंदी झालो.

महासन्नितताल चोदह तालो.

अथ महासन्नितालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको द्रुत लघु लेके देशी ताल उत्पन्न करि वांको महासन्निवाल नाम किनो ॥ अथ महासन्निवालको लछन लिख्यते ॥ जामें प्रथम तीन द्रुत ओर दोय लघु होय फेर एक द्रुत होय एक लघु होय एक द्रुत होय फेर एक लघु होय ओर एक द्रुत ओर चार लघु होय ॥ या रीतिसो गीतादिकमें सुख उपजावें । सो महासन्नितताल जांनिये ॥ यह ताल चोदहतालो है ॥ अथ महासन्नितालको सरूप लिख्यते ॥

०००॥०।०।०॥। जग० तग० नग० तकथों । तकथों । जग० तकथो । तग० तकथों । नग० तकथों । तकथों । तकथों । तकथों । इति महा सन्नितालं संपूर्णम् ॥

महा सन्नितालं चोदह तालो, १४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा आधी
२.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा आधी
३.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० ३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक सो मात्रा आधी
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
५.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० ५ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा आधी
६.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकसो मात्रा एक
७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ७ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकसो मात्रा एक

महा सन्निताल चौदह तालो, १४.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
८.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
९.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१०.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० १० =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
११.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१२.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १२ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१३.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक.

ग्रहताल चोतालो.

अथ ग्रहतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिके गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें बरतिवेको गुरु प्लुत लेके गुरु दोय मात्राको प्लुत तीन मात्राको देशी ताल उत्पन्न करि वाको ग्रहताल नाम किनो ॥ अथ ग्रहतालको लक्षण लिख्यते ॥ जा तालमें एक गुरु ओर दोय प्लुत ओर एक गुरु होय या रितीसो गीतादिकमें सुख उपजावे सो ग्रहताल जानिये ॥ यह चोतालोहे ॥ अथ ग्रहतालोका सरूप लिख्यते ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ याके परमलु लिख्यते ॥ तत्था थातक ऽ थिमिथिमि थिधिनक ताथों ऽ̀ धिधिकधि धिकाधिक ताथों ऽ̀ धिधिकत ताथों ऽ ॥ ये चोतालोहे ॥

अथ ग्रहताल चोतालो, ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	तत्था थातक	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ꠋ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी झालो
२.	थेई तिततत थेई थेई	थिमिथिमि धिधिनक ताथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ २ ॥ꠋ)	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
३.	थेई तिततत थेई थेई	धिधिकधि धिकधिक ताथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ̀ ३ ॥ꠋ)	प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
४.	थेई तिततत	धिधिकत ताथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ४ ।ꠋ	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी झालो मात्रापे विश्राम विश्रामपे मान.

समताल तितालो.

अथ समतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालमेंसों विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेकों गुरु लघु लेके गुरु दोय मात्राको लघु एक मात्राको देशी ताल उत्पन्न करि वाको समताल नाम किनों॥ अथ समतालको लछन लिख्यते॥ जा तालमें दोय गुरु होय ओर एक लघु होय या रीतसों गीतादिकमें सुख उपजावे सो समताल जांनिये ॥ ये ताल तितालोहे॥ अथ समतालको सरूप लिख्यते ऽ ऽ। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकीकमें परमलू कहतहे ॥ थाकिन किनकिन ऽ हेकुकु टेहेऽ थाटे ॥ इति समताल संपूर्णम् ॥

समताल तितालो, ३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	थाकिन किनकिन	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।|०	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा बिंदीहे सो हाथको झालो
२.	थेई तिततत	हेकुकु टेहे	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।|०	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो हाथको झालो
३.	थेई	थाटे	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक.

संचयताल चोतालो.

अथ संचयतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमेंसो विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको द्रुत लघु लेकें । द्रुत आधि मात्राको जांनिये । लघु एक मात्राको जांनिये । देशी ताल उत्पन्न करि वाको संचयताल नाम किनो ॥ अथ संचयतालको लक्षण लिख्यत ॥ जा तालमें एक द्रुत होय ओर तीन लघु होय या रितीसों गीतादिकमें सुख उपजावें ।

सा संचयताल जांनिये ॥ ये ताल चोतालो हे ॥ अथ संचयतालको स्वरूप लिख्यते ०॥। अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ थै० थरिथों। ताहं। तकथों। इति संचयताल संपूर्णम् ॥

संचयताल चोतालो, ४.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ते	थै	द्रुत ताल मात्रा ० १ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधि
२.	थेई	थरिथों	लघु ताल मात्रा । २ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मान
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मान.

सिंहनंदनताल इकईस तालो.

अथ सिंहनंदनतालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमेंसो विचारिकें गीत नृत्य नाट्य वाद्यमें संगीतके चार अंग वरतिवेको चंचत्पुटकी जातिसों देशी ताल उत्पन्न करिके वाको सिंहनंदन नाम किनो ॥ अथ सिंहनंदनको लछन

लिख्यते ॥ जाकी आदिमें दोय गुरु होय । और लघु होय । चोथो प्लुत होय । पांचवो लघु होय । छटो गुरु होय । और आगे दोय द्रुत होय । ताउपरांति दोय गुरु होय । फेर एक लघु होय । ताउपरांत बारवो प्लुत होय । तेरवो लघु होय । चोदवो प्लुत होय पंद्रवो गुरु होय । फेर सोलवो सत्रवो लघु होय । ओर फेर च्यार लघुनसों च्यार निशब्द क्रिया होय । वहां प्रथमा आवापक वाई । ओर कोई हाथ चलावनो ॥ १॥ दूसरो विक्षेपक दाहिनी । ओरको हाथ चलावनों ॥ २ ॥ तीसरो निष्काम उपरको हाथ चलावनो ॥ ३ ॥ चोथो प्रवेशक जो धरतिको और हाथ पटकनो ॥ ४ ॥ या रितीसों इकईस तालको(२१) सिंहनंदनताल होतहें ॥ ताको स्वरूप लिख्यते ऽ ऽ । ऽ॑ । ऽ ० ० ऽ ऽ । ऽ॑ । ऽ॑ ऽ । । –। ।– ⊤ ⊥ अथ पाठाक्षर लिख्यते॥ ततथरि थरिकिट ऽ नगधिम थोंगा । तगधिमि नगधिमि धिमितग ऽ॑ तत्ता । कुकुथरि थरिधिधि ऽ दां ० दां ० कुदकिट कुंदरिथु ऽ थरिकु थरिकु ऽ तगधिमि । ताहं ताहं ततथरि ऽ॑ ताहं । नगधिमि नगनग झझे ऽ॑ धकिटत तकिटत ऽ तगथरि । तकथों और चार निशब्द किया आवापक –। विक्षेपक ।– निष्कामक ⊤ प्रवेशक ⊥ इति सिंहनंदन ताल संपूर्णम् ॥

सिंहनंदनताल इकईस तालो, २१.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	ततथरि थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।।०	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल जांनिये लीक दोय मात्रा बिंदी झालो
२.	थेई तितत	नगधिम थोगा	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।।०	प्रथम दीर्घ अक्षर अंकहे सो ताल जांनिये लीक मात्रा बिंदी झालो
३.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३ ।	प्रथम लघु अक्षर अंकहे सो ताल आगें लीक एक मात्रा

सिंहनंदन ताल इकईस तालो, २१.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४.	थेई तितत थेई थेई	तगाधिमि नगाधिमि धिमितग	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ४ ॥ॢ)	प्रथम प्लुत ताके आगे अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हावकी परिक्रमा विंदी झालो
५.	थेई	तत्ता	लघु ताल मात्रा । ५ ।	प्रथम लघु ताके आगे अंकहे सो ताल लीक मात्रा एक
६.	थेई तितत	कुकुथरि थारिधिधि	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ॢ	प्रथम गुरु ताके आगे अंकहे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
७.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ७ =	प्रथम द्रुत ताके आगे अंकहे सो ताल आडी लीक दोय आधि मात्रा
८.	ते	दां	द्रुत ताल मात्रा ० ८ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल आडी लीक दोय आधि मात्रा
९.	थेई तितत	कुदकिट कुंदरिकु	गुरु ताल मात्रा ऽ ९ ।ॢ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक दोय मात्रा विंदी झालो
१०.	थेई तितत	थरिकु थरिकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।ॢ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो दोय मात्रा विंदीहे सो झालो

सिंहनंदनताल इकईस तालो. २१.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
११.	थेई	तगधिमि	लघु ताल मात्रा ‌। ११ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल आगे एक लीकहे सो एक मात्रा
१२.	थेई तितत्त थेई थेई	ताहं ताहं ततथरि	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १२ ॥)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १३ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी आगे अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
१४.	थेई तितत्त थेई थेई	तगधिमि नगनग झेझे	प्लुत ताल मात्रा (ऽ १४ ॥)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी ता आगे अंकहे सो ताल लीक है सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
१५.	थेई तितत्त	धिकिटत तकिटत	गुरु ताल मात्रा (ऽ १५ ॥)	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीक मात्रा दोय विंदी झालो
१६.	थेई	तगथरि	लघु ताल मात्रा । १६ ।	प्रथम लघु आगे अंकहे सो ताल आगे लीक एक मात्रा
१७.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । १७ ।	प्रथम लघु अंकहे सो ताल लीक है सो मात्रा एक
१८.	थेई	–।	आवापक १८	निशब्द दाहिणो हाथकों बाई तरफ चलावणो

सिंहनंदन इकईस तालो. २१.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१९.	थेई	|–	विक्षेपक १९	निशब्द...दाहिणों हाथकों दाहणी तरफ चलावणों
२०.	थेई	͞।	निष्क्रामक २०	निशब्द...दाहिणों हाथकों उपरन चलावणों
२१.	थेई	͟।	प्रवेशक २१	निशब्द...दाहिणों हाथकों नीचेको चलावणों.

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

अथ अष्टतालिका तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेकों चंचत्पुटआदिकें पांचो तालनसों सातों अंगलेकें देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको अष्टतालिका ताल नामकिनों ॥ अथ अष्टतालिका तालको लछन लिख्यते ॥ जामें एक अणु होय ओर एक द्रुत होय एक द्रविराम होय एक लघु होय ओर एक ल विराम होय एक गुरु होय एक प्लुत होय एक लघु होय ॥ या रीतिसों गीतादिकमें सुख उपजावें । सो अष्टतालिका ताल जांनिये ॥ ये ताल आठ तालो हे ॥ अथ अष्टतालिका तालको सरूप लिख्यते ᵕ ० ०̆ । ।̆ ऽ ऽ̆ । अथ पाठाक्षर लिख्यते धि ᵕ किट० धिकिट ०̆ तकथों । तक तकथों ।̆ तातक तकथों ऽ तांधिमि तांधिमि ताथों ऽ̆ धिमिथों । इति अष्टतालिका ताल संपूर्णम् ॥

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	ति	धि	अणु ताल मात्रा ᵕ १ –	अणुद्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा चोथाई

अष्टतालिका ताल आठ तालो, ८.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	तें	किट	द्रुत ताल मात्रा ० २ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
३.	तत	धिकिट	द्रवि.ताल मात्रा ऽ ३ ≡	द्रविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो पोंण मात्रा
४.	थेई	तकथों	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	तथई	तक तकथों	लवि.ताल मात्रा ो ५ ।=	लविरामकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो डेड मात्रा
६.	थेई तिततत	तातक तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ॥	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय
७.	थेई तिततत थेई थेई	तांधिमि तांधिमि ताथों	प्लुत ताल मात्रा (३ ७ ॥ऽ)	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा बिंदी झालो
८.	थेई	थिमिथों	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक मात्रापे विश्राम विश्रामपे मान.

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालो, ४३.

अथ पृथ्वीकुंडली तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनके विचारीक गीत नृत्य वाद्य नाटयमें

वरतिवेको चंचत्पुट आदि पांच मार्ग तालनके द्विकलादि भेदनसों दुगुनिमात्राको मार्गताल ताहि द्विकल कहिये चोगुनी मात्राको मार्गताल ताहि चतुष्कल कहिये गुरु दोय मात्राको लघु एक मात्राको प्लुत तीन मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वाको पृथ्वीकुंडली नाम किनों ॥ अथ पृथ्वीकुंडलीको लछन लिख्यते ॥ जामें प्रथम दोय गुरु गुरुकी दोय मात्रा । एक लघु लघुकी एक मात्रा । एक प्लुत प्लुतकी तीन मात्रा । फेर तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ओर एक लघु ओर एक प्लुत ओर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ताआगे प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा । फेर एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ओर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । और च्यार अशब्द जामें अशब्दके लघुकी एक मात्रा । तहा प्रथम आवापक । दुसरो विक्षेपक । तीसरो निष्कामक । चोथो प्रवेशक । फेर च्यार जामें द्रुत होय द्रुतकी आधि मात्रा । ओर दोय लघु होय लघुकी एक मात्रा । ओर दोय गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । फेर एक लघु होय लघुकी एक मात्रा । फेर दोय प्लुत होय प्लुतकी तीन मात्रा । च्यार जामे लघु होय लघुकी एक मात्रा । एक गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा । ओर अशब्दके च्यारि लघु होय लघुकी एक मात्रा । तहा प्रथम आवापक । १ । दुसरो विक्षेपक । २ । तीसरो निष्कामक होय । ३ । चोथो प्रवेशक । ४ । ऐसो जो ताल ताहि पृथ्वीकुंडली जांनिये ॥ यह ताल तियालीस । ४३ । तालोहे ॥ अथ पृथ्वीकुंडली तालको सरूप लिख्यते ॥ ऽ ऽ । ऽ̆ ऽ ऽ ऽ । ऽ̆ । ऽ ऽ̆ ऽ । । । । । ० ० ० ० । । ऽ ऽ । ऽ̆ । ऽ । ऽ̆ ऽ̆ । । । । ऽ । । । । अथ पाठाक्षर लि० याकों लौकिकमें परमलू कहतहें ॥ थरिथों धिमिथकु ऽ नकधिधि धिगथों ऽ ताहं । थोंथों थोंगिण किणथों ऽ̆ नकधिमि थरिदां ऽ दांधिमि थरिदां ऽ थरिदां थरिदां ऽ ताहं । थाड्गु डुगुडुगु डुगुडुगु ऽ̆ ताहं । डुगुडुगु दांदां ऽ ततधल धलधल तधलां ऽ̆ नककिण किरिट ऽ ताहं । ताहं । ततथा । धिधिधिमि । थोंथों । तन्नन । तग० जग० नग० तग० ताहं । ताहं । नककिण तकथों ऽ धिमिधिमि तकथों ऽ ताहं । थरिकु थरिकु थरिकु ऽ̆ ताहं । किटथरि तदिदां ऽ ताहं । धाधा धलांग धलांग ऽ̆ तगधल धलांग धलांग ऽ̆ ताहं । ताहं । ताहं । तथरिथ । तथरिकु थरिथों ऽ तांधिमि । तगधिमि । धधिगण । गणथों । इति संपूर्णम् ॥

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालों, ४३.

ताल.	पचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तितत	थरिथों धिमि थकु	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।ऽ	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
२.	थेई तितत	नकधिधि धिग थों	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।।	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
४.	थेई तितत थेई थेई	थोंथों थोंगिण क्रिणथों	प्लुत ताल मात्रा (ऽ ४ ।ऽ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी झालो
५.	थेई तितत	नकधिमि थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ५ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
६.	थेई तितत	दांधिमि थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ६ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हे सो हाथको झालो
७.	थेई तितत	थरिदां थरिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ऽ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी सो हाथको झालो
८.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस ताला, ४३

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
९.	थेई तिततत थेई थेई	थाडुगु डुगुडुगु डुगुडुगु	प्लुत ताल मात्रा (३ ९ ॥ꣿ)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
१०.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १० ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
११.	थेई तिततत	डुगुडुगु दांदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ११ ꣿ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हे सो हाथको झालो
१२.	थेई तिततत थेई थेई	ततधल धलधल तधलां	प्लुत ताल मात्रा (३ १२ ॥ꣿ)	प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
१३.	थेई तिततत	नर्क्किण किर्रिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १३ ꣿ	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
१४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१६.	थेई	ततथा	लघु ताल मात्रा । १६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक —। निशब्द...आवापक...दाहिणो हाथको बाई तरफ चलावणो

पूर्व्वाकुंडली ताल तियालीस तालो, ४३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१७.	थेई	धिधिधिमि	लघु ताल मात्रा । १७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ।– निशब्द...विक्षेपक...दाहिणो हाथको दाहाणी तरफ चलावणो
१८.	थेई	थोंयों	लघु ताल मात्रा । १८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ꜔ निशब्द...निष्कामक...दाहिणो हाथको उपरन चलावणो
१९.	थेई	तन्नन	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक ꜕ निशब्द...प्रवेशक...दाहिणो हाथको नीचेको चलावणो
२०.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० २० =	द्रुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा आधी
२१.	ते	जग	द्रुत ताल मात्रा ० २१ =	प्रथम द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
२२.	ते	नग	द्रुत ताल मात्रा ० २२ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
२३.	ते	तग	द्रुत ताल मात्रा ० २३ =	द्रुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा आधी
२४.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २४ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालो, ४३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २५ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२६.	थेई तितत्त	नककिण तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।ó	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदीहे सो हाथको झालो
२७.	थेई तितत्त	धिमिधिमि तकथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २७ ।ó	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी हे सो हाथको झालो
२८.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । २८ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२९.	थेई तितत्त थेई थेई	थरिकु थरिकु थरिकु	प्लुत ताल मात्रा (ऽ २९ ॥ó)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा तीन विंदीहे सो हाथको झालो गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा
३०.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३० ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३१.	थेई तितत्त	किटथरि तदिदां	गुरु ताल मात्रा ऽ ३१ ।ó	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
३२.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३२ ।	प्रथम लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालो. ४३.

ताल.	नवकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३३.	थेई तिततत थेई थेई	धाधा धलांग धलांग	प्लुत ताल मात्रा (३ ३३ ।०)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
३४.	थेई तिततत थेई थेई	तगधल धलांग धलांग	प्लुत ताल मात्रा (३ ३४ ।०)	प्रथम प्लुतकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा तीन गोल कुंडालो हाथकी परिक्रमा विंदी हाथको झालो
३५.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३६.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३७.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ३७ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३८.	थेई	तथारिथ	लघु ताल मात्रा । ३८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
३९.	थेई तिततत	तथरिकु थरिथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३९ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय विंदी हाथको झालो
४०.	थेई	तांधिमि	लघु ताल मात्रा । ४० ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक —। निशब्द...आवापक...दाहिणों हाथको बाईं तरफ चलावणो

पृथ्वीकुंडली ताल तियालीस तालो ४३.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
४१.	थेई	तगधिमि	लघु ताल मात्रा । ४१ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक ।–निशब्द...विक्षेपक...दाहिणों हाथको दाहिणी त्रफ चलावनो
४२.	थेई	धधिगण	लघु ताल मात्रा । ४२ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा ┬ निशब्द...निष्कामक...दाहिणों हाथको उपरन चलावनो
४३.	थेई	थों थों	लघु ताल मात्रा । ४३ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक ⊥ निशब्द...प्रवेशक...दाहिणों हाथको नीचेको चलावनो मात्रापें विश्राम विश्रामपें मान.

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालिस तालो ३९.

अथ लघुपृथ्वीकुंडलीकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाटयमें वरतिवेको चंचत्पुट आदिकें पांचो तालनकी दुति मात्रा होय तब द्विकल भेद जांनिये ॥ ओर उन मानसों चोगुनी मात्रा होय तब चतुष्कल जांनिये ॥ इन द्विकल चतुष्कल भेदते ॥ गुरु दोय मात्राको लघु एक मात्राको लेके देशी ताल उत्पन्न करि ॥ वांको लघुपृथ्वी-कुंडली नाम किनों ॥ यह ताल गुनचालिस तालो है ॥ अथ लघुपृथ्वीकुंडलीको लछन लिख्यते ॥ प्रथम जामें तीन गुरु होय गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ओर तीन लघु होय । लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ओर दाय लघु होय । लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ एक लघु होय । लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ एक गुरु होय । गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ आगे दोय लघु होय । लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर

तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ओर दाये लघु होय। लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ फेर च्यार गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ एक लघु होय। लघकी एक मात्रा जांनिये ॥ ओर एक गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ ओर तीन गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ फेर एक लघु होय। लघुकी एक मात्रा जांनिये ॥ ओर पांच गुरु होय। गुरुकी दोय मात्रा जांनिये ॥ ऐसो जो ताल ताहि लघुपृथ्वीकुंडली जांनिये ॥ यह पिंगल किंकरि पृथ्वी-कुंडली हे ॥ यह ताल गुनचालिस तालो हे ॥ अथ लघुपृथ्वीकुंडलीको लछन लिख्यते ऽ ऽ ऽ ||| ऽ || ऽ | ऽ || ऽ ऽ ऽ || ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ | ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ अथ पाठाक्षर लिख्यते ॥ याहिको लोकिकमें परमलु कहते हें ॥ थरिकिट थरिकिट ऽ तत्थरि थरिकिट ऽ किटथरि तत्थरि ऽ ताकिट। ताकिट। ताकिट। ततकिट थोंगा ऽ ताहं। ताहं। ताकिट ताकिट ऽ ताकिट। ततकिट थोंगा ऽ ताहं। थोंगा। थोंकिट थोंथों ऽ ताकिट ततकिट ऽ ततकिट ताकिट ऽ तत्था। ताहं। तततत तत्था ऽ धुमु धुमु धुमुकिट ऽ तगधिमि धिमिधिमि ऽ धिधिकिट। धुगुदां धुगुदां ऽ धुगुद्दां धुगुद्दां ऽ धधिगिन गिनथों ऽ धधिगिन गिनथों ऽ ताहं। उजगज मजगज ऽ मटकिट। मटाकिट किटकिट ऽ किटकिट तकिकिट ऽ धिधिकिट थोंथों ऽ थोंगा। तगधिमि धिमिधिमि ऽ तगतग धिमिधिमि ऽ ताधिमि तगधिमि ऽ तकथों थोंगा ऽ धिधिगिन थोंथों ऽ इति लघुपृथ्वीकुंडली ताल संपूर्णम् ॥

अथ लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१.	थेई तिततत	थरिकिट थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १ ।।	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो हाथको झालो

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२.	थेई तितथत	तत्थरि थरिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ २ ।ं	प्रथम गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो हाथको झालो
३.	थेई तितथत	किटथरि तत्थरि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हे सो हाथको झालो
४.	थेई	ताकिट	लघु ताल मात्रा । ४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
५.	थेई	ताकिट	लघु ताल मात्रा । ५ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
६.	थेई	ताकिट	लघु ताल मात्रा । ६ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
७.	थेई तितथत	ततकिट थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ७ ।ं	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
८.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
९.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । ९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सा ताल लीक हे सो मात्रा एक

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१०.	थेई तितत	ताकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १० ।॰	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
११.	थेई	ताकिट	लघु ताल मात्रा । ११ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१२.	थेई तितत	ततकिट थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ १२ ।॰	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१३.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १३ ।	लघुकी सहनाणी अंक ह सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१४.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । १४ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१५.	थेई तितत	थोंकिट थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ १५ ।॰	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१६.	थेई तितत	ताकिट ततकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १६ ।॰	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
१७.	थइ तितत	ततकिट ताकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ १७ ।॰	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
१८.	थेई	तत्था	लघु ताल मात्रा । १८ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
१९.	थेई	ताहं	लघु ताल मात्रा । १९ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२०.	थेई तिततत	तततत तत्था	गुरु ताल मात्रा ऽ २० ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हे सो झालो
२१.	थेई तिततत	धुमुधुमु धुमु किट	गुरु ताल मात्रा ऽ २१ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२२.	थेई तिततत	तगधिमि धिमि धिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ २२ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२३.	थेई	धिधिकिट	लघु ताल मात्रा । २३ ।	लघुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा एक
२४.	थेई तिततत	धगुदां धुगुदां	गुरु ताल मात्रा ऽ २४ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२५.	थेई तिततत	धुगुड्दां धुगुड्-दां	गुरु ताल मात्रा ऽ २५ ।०	गुरुकी सहनाणी अंक हे सो ताल लीक हे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	थथकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
२६.	थेईं तितत	धधिगिन गिनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २६ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२७.	थेईं तितत	धधिगिन गिनथों	गुरु ताल मात्रा ऽ २७	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
२८.	थेईं	ताहं	लघु ताल मात्रा । २८	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
२९.	थेईं तितत	उभगज मजगज	गरु ताल मात्रा ऽ २९ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो हाथको झालो
३०.	थेईं	मटाकिट	लघु ताल मात्रा । ३० ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३१.	थेईं तितत	मटकिट किटकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३१ ।।०	गुरुकी णी अंकहे सा ताल लीकहे सा मात्रा दोय बिंदी हाथको झालो
३२.	थेईं तितत	किटकिट तकिकिट	गुरु ताल मात्रा ऽ ३२ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो
३३.	थेईं तितत	धिधिकिट थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३३ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदी झालो

लघुपृथ्वीकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

ताल.	चचकार.	परमलु.	सहनाणी अक्षर ताल मात्रा.	समस्या.
३४.	थेई	थोंगा	लघु ताल मात्रा । ३४ ।	लघुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा एक
३५.	थेई तितत	तगधिमि धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३५ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो
३६.	थेई तितत	तगतग धिमिधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३६ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो
३७.	थेई तितत	ताधिमि तगधिमि	गुरु ताल मात्रा ऽ ३७ ।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो
३८.	थेई तितत	तकथों थोंगा	गुरु ताल मात्रा ऽ ३८ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो
३९.	थेई तितत	धिधिगिन थोंथों	गुरु ताल मात्रा ऽ ३९ ।।०	गुरुकी सहनाणी अंकहे सो ताल लीकहे सो मात्रा दोय बिंदीहे सो झालो

पातालकुंडली ताल गुनचालीस तालो ३९.

अथ पातालकुंडली तालकी उत्पत्ति लिख्यते ॥ शिवजीनें उन मार्गतालनमें विचारिकें गीत नृत्य वाद्य नाट्यमें वरतिवेको चंचत्पुट आदिक पांचतालनसों लघु एक मात्राको प्लुत तीन मात्राको गुरु दोय मात्राको द्रुत आधिमात्राको लेकें